मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने वाली कलीसिया
(फिलिप्पियों की पत्री पर एक मनन)

विषय-सूची

परिचय

"जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ" (1:1–6)

तुम मेरे दिल में हो (1:7–11)

सुसमाचार फैलाने में तरक्की की सच्ची उम्मीद (1:12–19)

"मेरे साथ जो हुआ, असल में..." (1:12)

"मेरी सच्ची उम्मीद और आशा" (1:20–26)

मसीह के सुसमाचार के लायक जीवन जीने का क्या मतलब है? (1) (1:27)

मसीह के सुसमाचार के लायक जीवन जीने का क्या मतलब है? (2) (1:28)

मसीह के सुसमाचार के लायक जीवन जीने का क्या मतलब है? (3) (1:27–30)

एक ऐसी कलीसिया जो प्रभु को खुशी से भर देती है (2:1–4)

एक मन (2:2)

कलीसिया में झगड़े की वजह (2:3a)

हममें मसीह यीशु जैसा मन होना चाहिए (2:5–11)

"अपने उद्धार के लिए काम करो" (2:12–18)

वह जो मसीह यीशु की भलाई चाहता है (2:19–24)

"मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डालना..." (2:25–30)

सुरक्षा सबसे पहले (3:1–3)

हमें शरीर पर भरोसा नहीं करना चाहिए (3:4–6)

मसीह को जानने का बेमिसाल महत्व (3:7–9)

मैं बस एक बात साफ करना चाहता हूँ (3:10–14)

लक्ष्य की ओर आगे बढ़ो! (3:13–14)

आओ हम आत्मिक रूप से परिपक्व मसीही बनें (3:15-16)

"मेरे उदाहरण का पालन करो" (3:17-21)

"प्रभु में दृढ़ रहो" (4:1-5)

"परमेश्वर की अद्भुत शांति जो समझ से परे है" (4:6-7)

हमें उसी के अनुसार सोचना और काम करना चाहिए। (4:8-9)

"मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ..." (4:10-23)

निष्कर्ष

इंट्रोडक्शन

बुक ऑफ़ फिलिप्पियंस मेरे दिल में एक खास जगह रखती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी में मास्टर ऑफ़ थियोलॉजी (Th.M.) प्रोग्राम के लिए अपनी थीसिस फिलिप्पियंस 2:1–4 पर फोकस करते हुए लिखी थी। जब मैंने अपने एडवाइजर, प्रोफेसर किम सेयून को बताया कि मैं इस पैसेज पर अपनी थीसिस लिखना चाहता हूं, तो उन्होंने कहा कि उन आयतों में पूरी थीसिस के लिए ज़्यादा मटीरियल नहीं है। फिर भी, मैंने आगे बढ़ने का फैसला किया क्योंकि मुझे उस पैसेज में बताई गई एक्लेसियोलॉजी—या कम्युनिटी की थियोलॉजी—में बहुत दिलचस्पी थी। जैसे-जैसे मैंने थीसिस लिखने के लिए अलग-अलग मटीरियल पर रिसर्च और स्टडी की, बुक ऑफ़ फिलिप्पियंस में मेरी दिलचस्पी और भी बढ़ गई। इस प्रोसेस के दौरान, मैंने थियोलॉजिस्ट गॉर्डन फी (न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमेंट्री सीरीज़ का हिस्सा) की पूरी कमेंट्री *पॉल्स लेटर टू द फिलिप्पियंस* पढ़ी और उसका सारांश दिया। अब पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मुझे हैरानी होती है कि मैंने 500 से ज़्यादा पेज की कमेंट्री को पढ़ने और उसका सारांश देने का काम किया। बाद में, मैंने सेउंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च में पूरी बुक ऑफ़ फिलिप्पियंस पर एक सरमन सीरीज़ दी, जहाँ मैं पादरी के तौर पर काम करता हूँ। मेरा मोटिवेशन लेटर पर गहराई से सोचना था – जिसे अपॉस्टल पॉल ने लिखा था, जिनकी मैं तारीफ़ करता हूँ – और कम्युनिटी की बाइबिल थियोलॉजी के बारे में और जानना था, इस उम्मीद के साथ कि सेउंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च फिलिप्पी के चर्च जैसा एक ग्रुप बन जाएगा।

पूरी बुक ऑफ़ फिलिप्पियंस पर सोचने और उपदेश देने के बाद, मैंने आखिरकार अपने विचारों को इस किताब में इकट्ठा किया है। मटीरियल को ऑर्गनाइज़ करते समय, मैंने ध्यान से सोचा कि इसका टाइटल क्या होना चाहिए। मुझे याद आया कि थियोलॉजियन गॉर्डन फी ने अपनी कमेंट्री में "द गॉस्पेल" को फिलिप्पियंस का सेंट्रल थीम बताया था। हालाँकि मैं उनकी बात से सहमत हूँ, मुझे लगा कि गॉस्पेल के साथ-साथ जो चीज़ उतनी ही ज़रूरी है, वह है उस गॉस्पेल के लायक तरीके से जीना। इस यकीन का आधार फिलिप्पियों 1:27 में मिलता है: "बस तुम्हारा जीने का तरीका मसीह के सुसमाचार के लायक हो..." पर्सनली,

मेरा मानना है कि जीसस क्राइस्ट के सुसमाचार पर ध्यान देना ज़रूरी है, लेकिन हमें उस सुसमाचार के हिसाब से जीने को भी उतना ही ज़रूरी समझना चाहिए। असल में, जब अपॉस्टल पॉल ने फिलिप्पी में मानने वालों को लिखा, तो उन्होंने न सिर्फ़ मसीह के सुसमाचार पर ज़ोर दिया और ज़ोर दिया, बल्कि उसके लायक जीने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया। इसीलिए मैंने इस किताब के लिए "मसीह के सुसमाचार के लायक जीने वाला चर्च" टाइटल चुना। मेरी यह विनम्र प्रार्थना है कि जिस चर्च में मैं सेवा करता हूँ—विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—और असल में सभी चर्च जो प्रभु की बॉडी बनाते हैं, वे ऐसे चर्च बनें जो मसीह के सुसमाचार के लायक जीएं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु खुद अपने चर्च को ऐसा ही बनाएं।

अप्रैल 2017.

रेव. जेम्स किम

(इस प्रार्थना के साथ कि हम प्रभु के चर्च बनें—एक ऐसा चर्च जो उनके द्वारा बनाया गया हो और मसीह के सुसमाचार के लायक जी रहा हो)

“जब भी मैं सोचता हूँ”

[फिलिप्पियों 1:1–6]

आप उन लोगों के बारे में कितनी बार सोचते हैं जिनसे आप प्यार करते हैं? दिन में कितनी बार आप अपने प्यारे परिवार के सदस्यों के बारे में सोचते हैं? हज़ार बार? दस हज़ार बार? शायद हमने कभी ठीक-ठीक नहीं गिना कि हम दिन में कितनी बार अपने प्रियजनों के बारे में सोचते हैं। इसलिए, यह सवाल कि “आप दिन में कितनी बार उस व्यक्ति के बारे में सोचते हैं जिससे आप प्यार करते हैं?” हमें कुछ अजीब सा लगता है। अगर हम इस सवाल का जवाब देने की पूरी कोशिश करें, तो शायद हम कुछ ऐसा कहेंगे: “मैं दिन भर अनगिनत बार अपने प्रियजन के बारे में सोचता हूँ।”

पिछले मंगलवार को, सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने भजन संहिता 144 पर मनन किया और इस बात पर विचार किया कि हम ईसाई लोग खुश क्यों हैं। हमारी खुशी का कारण यह है कि जिस परमेश्वर पर हम भरोसा करते हैं (पद 15), वह “मेरा प्रेम” (हमारा प्रेम) है (पद 2)। भजन के लेखक दाऊद ने उस अनुग्रह के ज़रिए परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया, जिससे परमेश्वर—जो उसका “प्रेम” था—ने उसे युद्ध में जीत दिलाई (पद 10) और विदेशियों के हाथों से बचाया (पद 7, 11)। उस प्रेम का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने माना (पद 3–4): “हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि तू उसकी परवाह करता है, या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसके बारे में सोचता है? मनुष्य एक साँस की तरह है; उसके दिन गुज़रती हुई परछाईं की तरह हैं।” जब मैंने दाऊद के शब्दों पर मनन किया—कि “मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसके बारे में सोचता है?”—तो मुझे भजन संहिता 139:17–18 याद आया: “हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी गिनती

कितनी बड़ी है! अगर मैं उन्हें गिनूँ, तो वे रेत के कणों से भी ज़्यादा होंगे। जब मैं जागता हूँ, तो भी मैं तेरे साथ होता हूँ।" बाइबल हमें बताती है कि हमारे प्रति प्रभु के अनमोल विचारों की संख्या रेत से भी ज़्यादा है। जब आप यह सुनते हैं, तो क्या आपको अपने लिए परमेश्वर का प्रेम महसूस होता है? बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करते हैं कि हमारे बारे में उनके विचार अनगिनत हैं। माता-पिता अपने बच्चों से चाहे कितना भी गहरा प्रेम क्यों न करें—भले ही वे दिन में हज़ारों बार उनके बारे में सोचें—वे रात में सोते समय उनके बारे में नहीं सोच सकते। फिर भी परमेश्वर, जो न तो ऊंघते हैं और न ही सोते हैं (भजन संहिता 121:4), हमारी देखभाल और सुरक्षा करते हुए, लगातार अनगिनत तरीकों से हमारे बारे में सोचते रहते हैं। इंसान क्या हैं, हम जैसे नश्वर लोग क्या हैं, कि प्रभु हमें याद रखें और हमारे बारे में इस तरह सोचें?

आज के अंश, फिलिप्पियों 1:3–4 में, पौलुस—जो "मसीह यीशु का सेवक" है—फिलिप्पी में "मसीह यीशु के सभी पवित्र लोगों, साथ ही देखरेख करने वालों और सेवकों" (पद 1) को लिखता है और उनसे यह कहता है: "जब भी मैं तुम्हें याद करता हूँ, तो मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। तुम सभी के लिए अपनी प्रार्थनाओं में, मैं हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ" (पद 3–4)। इसका क्या मतलब है? जब पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के देखरेख करने वालों, सेवकों और सभी पवित्र लोगों को लिखता है, तो वह दो बातें बता रहा होता है:

पहली बात, पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के सभी पवित्र लोगों से कहता है, "जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, तो मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।"

आज के अंश, फिलिप्पियों 1:3 को देखें: "जब भी मैं तुम्हें याद करता हूँ, तो मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।" क्या आप अपने प्यारे परिवार के सदस्यों के बारे में सोचते समय परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं? यदि हाँ, तो जब आप अपने प्रियजनों के बारे में सोचते हैं तो परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करते हैं? इसका कारण क्या है? जब मैंने 4 मई, 2008 को—बाल दिवस से ठीक पहले—अपने प्यारे बेटे डिलन को लिखा पत्र दोबारा पढ़ा, तो मैंने देखा कि मैंने इसकी शुरुआत इस तरह की थी: “हमारे प्यारे बेटे डिलन, डैडी और मम्मी तुम्हारे बहुत आभारी हैं। हमारे बेटे होने के लिए धन्यवाद। हमारे और अपनी बहनों के प्रति अच्छा व्यवहार करने के लिए धन्यवाद। तुम जैसे हो, वैसे ही रहने के लिए धन्यवाद।" अपनी प्यारी बेटी येरी को

लिखे पत्र को दोबारा पढ़ने पर, मैंने पाया कि मैंने उसकी शुरुआत उसके मम्मी और पापा के जीवन में उसे लाने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए की थी। मैंने पत्र में इसका कारण बताया था: “क्योंकि तुम हमारे लिए परमेश्वर की ओर से एक अनमोल उपहार हो।”

प्रेरित पौलुस के फिलिप्पी के सभी पवित्र लोगों के बारे में सोचने पर परमेश्वर का धन्यवाद करने का कारण क्या था? मेरा मानना है कि इसका मुख्य कारण आज के अंश, फिलिप्पियों 1:2 में मिलता है: "हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम पर अनुग्रह और शांति हो।" यह बात न सिर्फ़ आज के हिस्से में, बल्कि पॉल की लिखी दूसरी चिट्ठियों की शुरुआत में भी मिलती है: "अनुग्रह और शांति" (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:3; 2 कुरिन्थियों 1:2; गलातियों 1:3; इफिसियों 1:2; कुलुस्सियों 1:2; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:2; 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2; तीतुस 1:4; फिलेमोन 1:3)। दूसरे शब्दों में, फिलिप्पी की कलीसिया के बारे में सोचते हुए पॉल ने परमेश्वर का धन्यवाद मुख्य रूप से इसी "अनुग्रह और शांति" के कारण किया। संक्षेप में कहें तो, यहाँ "अनुग्रह" का अर्थ है एक ऐसा उपहार जिसके हम हकदार नहीं थे—खासकर, परमेश्वर का वह काम जिसके ज़रिए उन्होंने यीशु मसीह के माध्यम से उन लोगों को बचाया और पापों से छुटकारा दिया, जो असल में विनाश के हकदार थे। इसके परिणामस्वरूप मसीह की कलीसिया को जो आशीष मिलती है, वह है "शांति"। यानी, यह उस आत्मिक शांति की बात करता है जो उन पापियों को मिलती है, जिन्होंने मसीह के ज़रिए परमेश्वर का अनुग्रह पाया है और उनके माध्यम से परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप किया है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर से मिलने वाले इस अनुग्रह और शांति पर विचार करते हुए, पॉल परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सके। फिलिप्पी की कलीसिया के सभी पवित्र लोगों को लिखते हुए, उन्होंने कहा कि जब भी उन्हें "उनकी याद आती थी, तो वे परमेश्वर का धन्यवाद" मुख्य रूप से इसलिए करते थे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें यीशु मसीह में यह अनुग्रह और शांति दी थी। संक्षेप में, जब पॉल ने परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह पर विचार किया, तो वे परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सके।

1 थिस्सलुनीकियों 5:18 में, पौलुस कहते हैं, “हर हाल में धन्यवाद करो; क्योंकि मसीह यीशु में तुम्हारे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।” बाइबल हमें बताती है कि हर हाल में धन्यवाद करना यीशु मसीह में हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा है। हमें परमेश्वर की इस इच्छा का पालन करना चाहिए। तो, हमें हर हाल में परमेश्वर का

धन्यवाद क्यों करना चाहिए—चाहे हम अपने बारे में सोचें या अपनी कलीसिया के बारे में? कारण यह है कि परमेश्वर ने हमारे सभी पापों को क्षमा कर दिया है और यीशु मसीह के द्वारा हमें बचाया है। दूसरे शब्दों में, जब भी हम उद्धार की उस कृपा पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है, तो हमें हर चीज़ के लिए उसका धन्यवाद करना चाहिए। उद्धार की इस कृपा पर विचार करना हमें जीवन भर और हमेशा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरी बात, फिलिप्पी की कलीसिया के संतों, अध्यक्षों और सेवकों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस कहते हैं, "तुम्हारे लिए अपनी सभी प्रार्थनाओं में, मैं हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ।"

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:4 को देखें: "तुम सबके लिए अपनी सभी प्रार्थनाओं में, मैं हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ।" जब मैंने 4 मई, 2008 को अपने प्यारे बेटे डिलन को पत्र लिखा, तो अपना आभार व्यक्त करने के बाद, मैंने यह लिखा: "डिलन, डैडी और मम्मी तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं। तुम्हारे लिए हमारी प्रार्थना है कि तुम जान सको कि यीशु मसीह कौन हैं और उन पर विश्वास कर सको। वह तुम्हारे प्रभु और उद्धारकर्ता हैं। हमारी प्रार्थना है कि तुम जीवन भर अपने प्रति उनके प्रेम को समझ सको और उसका अनुभव कर सको ताकि तुम भी उनसे प्रेम कर सको। तुम्हारे लिए हमारी प्रार्थना है कि तुम अपने नाम 'डिलन' (सच्चा और वफादार) के अर्थ के अनुसार अपना जीवन जियो। यीशु सत्य हैं। और वह वफादार हैं। प्रभु तुम्हें आशीष दें और तुम पर कृपा करें ताकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुकरण कर सको।"

पौलुस ने केवल फिलिप्पी की कलीसिया के संतों के बारे में सोचा ही नहीं; बल्कि उनकी ओर से परमेश्वर से प्रार्थना भी की। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने संतों के बारे में सोचा और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। जब भी उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने न केवल परमेश्वर का धन्यवाद किया, बल्कि हमेशा खुशी के साथ उनके लिए अपनी विनतियाँ भी कीं। जब भी उन्होंने फिलिप्पी की कलीसिया के संतों के बारे में सोचा और उनके लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने धन्यवाद क्यों किया और खुशी क्यों मनाई? इसके दो कारण हैं:

(1) पहला कारण आज के वचन, फिलिप्पियों 1:5 में बताया गया है: "(कारण यह है कि) क्योंकि आप पहले दिन से लेकर अब तक सुसमाचार के काम में हिस्सा लेते रहे हैं।"

पौलुस ने फिलिप्पी के संतों के लिए धन्यवाद और खुशी के साथ प्रार्थना इसलिए की क्योंकि वे उसके सुसमाचार के काम में हिस्सा ले रहे थे। फिलिप्पी के संतों ने पौलुस के सुसमाचार के काम में कैसे हिस्सा लिया? फिलिप्पियों 4:15–16 देखें: “हे फिलिप्पियों, आप खुद जानते हैं कि सुसमाचार के शुरुआती दिनों में, जब मैं मकिदुनिया से निकला, तो लेन-देन के मामले में आपके अलावा किसी और कलीसिया ने मेरा साथ नहीं दिया; क्योंकि जब मैं थिस्सलुनीके में था, तब भी आपने मेरी ज़रूरतों के लिए एक से ज़्यादा बार मदद भेजी।” फिलिप्पी के संतों ने पौलुस की ज़रूरतों की चीज़ों के लिए भौतिक मदद देकर उसके सुसमाचार के काम में सहयोग किया। वह मदद मिलने के बाद, जब भी पौलुस फिलिप्पी के संतों के बारे में सोचता और उनके लिए प्रार्थना करता, तो वह धन्यवाद देता और खुश होता।

(2) दूसरा कारण, जिसकी वजह से पौलुस फिलिप्पी के संतों के बारे में सोचते और उनके लिए प्रार्थना करते समय हमेशा धन्यवाद देता और खुश होता था, आज के वचन, फिलिप्पियों 1:6 में बताया गया है: “हमें पूरा भरोसा है कि जिसने आप में एक अच्छा काम शुरू किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूरा करेगा।” दूसरा कारण जिसकी वजह से पौलुस को परमेश्वर से प्रार्थना करते और फिलिप्पी कलीसिया के संतों को याद करते समय हमेशा कृतज्ञता और खुशी महसूस होती थी, वह उसका पक्का विश्वास था। यह पक्का विश्वास क्या था? यह निश्चितता थी कि वह अच्छा काम—खासकर उद्धार का काम—जो परमेश्वर ने फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच शुरू किया था, वह निश्चित रूप से पूरा किया जाएगा (पार्क युन-सन)। पौलुस का यह पक्का विश्वास खुद फिलिप्पी के विश्वासियों पर आधारित नहीं था; बल्कि, यह परमेश्वर पर टिका था। दूसरे शब्दों में, क्योंकि पौलुस को पक्का भरोसा था कि परमेश्वर प्यार से चुने गए विश्वासियों का उद्धार ज़रूर करेगा, इसलिए जब भी वह उनके बारे में सोचता और उनके लिए प्रार्थना करता, तो उसे हमेशा धन्यवाद और खुशी महसूस होती थी।

2 तीमुथियुस 2:13 में, पौलुस ने कहा: “अगर हम विश्वासघाती भी हों, तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है—क्योंकि वह खुद का इनकार नहीं कर सकता।” इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जब हम विश्वासघाती होते हैं, तब भी परमेश्वर हमारे प्रति विश्वासयोग्य बना रहता है क्योंकि वह सच्चाई और विश्वासयोग्यता का परमेश्वर है। भरोसेमंद परमेश्वर निश्चित रूप से हमारे अंदर शुरू किए गए उद्धार के काम को पूरा करेंगे, चाहे हम कितने भी अविश्वासी क्यों न हों। इसलिए, हमें जो उद्धार का भरोसा है, वह हम पर

नहीं, बल्कि परमेश्वर पर टिका है। भरोसेमंद परमेश्वर ने हमारे अंदर उद्धार का काम शुरू किया, उसे जारी रखा है, और जिस दिन प्रभु इस धरती पर लौटेंगे, उस दिन इसे पूरा करेंगे। फिलिप्पी कलीसिया के संतों की तरह, हमें भी उद्धार के इस भरोसे को थामे हुए सुसमाचार के प्रचार के काम में शामिल होना चाहिए।

पिछले रविवार, जब हमारी कलीसिया ने अपनी 34वीं वर्षगांठ मनाई, तो परमेश्वर की आराधना करते समय हमें यह संदेश मिला: "आइए हम सब परमेश्वर को और अधिक प्रसन्न करने का प्रयास करें।" आज जब हम परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठा हुए हैं, तो मैं पहले की गई घोषणाओं को दोहराना चाहूंगा: हमारे पास्टर एमेरिटस आज रात एक उड़ान से मिशन क्षेत्र के लिए रवाना हो रहे हैं, और डीकन किम चांग-मिन कल दोपहर मिस्र के लिए निकल रहे हैं। मेरी समझ के अनुसार, डीकन किम उस दूर देश में सुसमाचार फैलाने के लिए तीन साल के मिशन पर जा रहे हैं। हालांकि उनकी योजना इस दिसंबर में कुछ समय के लिए यहां लौटने की है, लेकिन वे मिस्र वापस जाकर तीन साल की अवधि के लिए एक मिशनरी के रूप में सुसमाचार प्रचार के लिए खुद को समर्पित करना चाहते हैं। मुझे उम्मीद है कि कलीसिया में हम सभी जब भी पास्टर एमेरिटस और डीकन किम के बारे में सोचेंगे, तो परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे। आइए हम प्रार्थना करें कि भरोसेमंद परमेश्वर इन दो लोगों के माध्यम से वहां के लोगों के बीच उद्धार का काम शुरू करें और उसे पूरा करें। प्रार्थना के अलावा, आइए हम सब उनके सुसमाचार प्रचार के कामों में भौतिक और आध्यात्मिक रूप से भाग लें। इसके अलावा, आइए हम उन सभी मिशनरियों के लिए भी प्रार्थना करें जिनका हम समर्थन करते हैं, साथ ही उनके परिवारों और उनके कामों के लिए भी, जब भी वे हमारे मन में आएं। (इसमें वे मिशनरी जोड़े भी शामिल हैं जो अभी हमारी क्वायर में सेवा कर रहे हैं; वे जल्द ही एन्सेनाडा, मैक्सिको—जहां डीकन किम चांग-मैन हैं—के लिए अपने मिशन के काम को पूरा करने के लिए जा रहे हैं, इसलिए आइए हम उन्हें भी अपनी प्रार्थनाओं में याद रखें।) आइए हम कृतज्ञता और खुशी से भरे दिलों के साथ ये प्रार्थनाएं करें। चूंकि परमेश्वर ने उनके माध्यम से उद्धार का काम पहले ही शुरू कर दिया है, इसलिए भरोसेमंद परमेश्वर निश्चित रूप से इसे पूरा करेंगे। इस विश्वास और भरोसे को थामे हुए, आइए हम प्रार्थना करें और उन्हें याद रखें, यह भरोसा रखते हुए कि यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार का काम और भी व्यापक रूप से फैलेगा; मैं यीशु के नाम से यह प्रार्थना करता हूं।

आप मेरे दिल में हैं।

[फिलिप्पियों 1:7-11]

जब आप अपने दिल के करीब लोगों के बारे में सोचते हैं, तो आपके मन में क्या विचार आते हैं? खासकर तब, जब वे लोग दूर हों—या इस दुनिया से जा चुके हों—तो उनके बारे में सोचते हुए कौन सी यादें ताज़ा हो जाती हैं? व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि माता-पिता के तौर पर हमें अपने बच्चों के दिलों में प्रभु के प्रेम की कई यादें गहराई से बसा देनी चाहिए। इस तरह, हमारे जाने के बाद भी, हमारे बच्चे एक-दूसरे और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेमपूर्ण जीवन जी सकेंगे, क्योंकि उनके दिलों में प्रभु के प्रेम की वे यादें बसी होंगी। इस लिहाज़ से, हमें प्रभु में अपने प्रियजनों के साथ कई अच्छी यादें बनानी चाहिए। खासकर, हमें सुंदर यादें बनानी चाहिए—ऐसी यादें जिन्हें प्रभु खुद हमारे लिए रचते हैं—जब हम उनके राज्य के लिए मिलकर काम करते हैं। तब, अगर हम कभी अलग भी हो जाएं, तो हम उन अच्छी यादों को याद करेंगे और परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे, क्योंकि उन्होंने हमें संगति और मुलाकातों के ज़रिए अपनी कृपा और प्रेम दिया। क्या आपमें ऐसी कृतज्ञता की भावना है? क्या आप परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं उस कृपा और प्रेम के लिए जो उन्होंने आपको उन रिश्तों और संगति के ज़रिए दिखाया है, जिनका अनुभव आपने प्रभु में किया है?

पिछले रविवार, फिलिप्पियों 1:1–6 के अंश के ज़रिए, हमने प्रेरित पौलुस की कही दो बातों पर चिंतन किया, जो उन्होंने फिलिप्पी कलीसिया के संतों को लिखते हुए कही थीं: (1) पौलुस ने उनसे कहा, "जब भी मैं तुम्हें याद करता हूँ, तो अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ" (वचन 3)। (2) उन्होंने उनसे कहा, "तुम सभी के लिए अपनी प्रार्थनाओं में, मैं हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ" (वचन 4)। पौलुस फिलिप्पी के संतों के बारे में सोचते ही परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करते थे और इतनी खुशी से प्रार्थना क्यों करते थे? इसका मुख्य कारण तो यही है कि परमेश्वर ने उन्हें यीशु मसीह में उद्धार की कृपा दी ("कृपा और शांति," 1:2)। हमने दो

और खास कारण भी जाने हैं: (1) पहला यह कि फिलिप्पी कलीसिया के संत पौलुस की सुसमाचार सेवा में हिस्सा ले रहे थे (वचन 5)। खास तौर पर, उन्होंने उन्हें ज़रूरी भौतिक सहायता देकर उनकी सेवा में सहयोग किया (4:15–16)। (2) दूसरा कारण यह है कि पौलुस को एक पक्का विश्वास था। उन्हें पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच जो उद्धार का काम शुरू किया था, उसे वह ज़रूर पूरा करेंगे।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:7 में, जब पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के सभी विश्वासियों को पत्र लिखते हैं, तो वे उनके प्रति अपना प्यार ज़ाहिर करते हुए कहते हैं, "...क्योंकि तुम मेरे दिल में बसे हो..."। दूसरे शब्दों में, वे उनसे कहते हैं, "तुम मेरे दिल में हो।" आइए उन तीन बातों पर गौर करें जो पौलुस ने फिलिप्पी के उन विश्वासियों के लिए कीं जो उनके दिल के इतने करीब थे, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी अपने प्रियजनों के लिए इन बातों को अपनाएँ।

पहली बात, पौलुस हमेशा फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को अपने विचारों में रखते थे।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:7 को देखें: "तुम सबके बारे में ऐसा सोचना मेरे लिए सही है, क्योंकि तुम मेरे दिल में बसे हो; क्योंकि मेरी कैद में और सुसमाचार के बचाव और उसकी पुष्टि में, तुम सब मेरे साथ परमेश्वर के अनुग्रह में भागीदार हो।" जब भी पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों के बारे में सोचते थे, तो वे परमेश्वर का धन्यवाद करते थे (वचन 3)। और जब भी वे उनके लिए प्रार्थना करते थे, तो खुशी के साथ करते थे (वचन 4)। इसका क्या कारण था? हमने सीखा है कि इसके तीन कारण हैं:

(1) मुख्य और सबसे बड़ा कारण यह है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में उन्हें उद्धार का अनुग्रह दिया, और इस तरह उन्हें अपने साथ मिला लिया (वचन 2)।

(2) दूसरा कारण जिसकी वजह से पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों के बारे में सोचने और उनके लिए प्रार्थना करने पर कृतज्ञता और खुशी महसूस करते थे, वह था सुसमाचार के काम में उनकी भागीदारी (वचन 5)। पौलुस इस बात के लिए आभारी थे कि उन्होंने उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भौतिक मदद देकर सुसमाचार फैलाने के काम में उनका साथ दिया था (4:15–16)।

(3) तीसरा कारण पौलुस का यह पक्का विश्वास था कि विश्वासयोग्य परमेश्वर निश्चित रूप से उद्धार के उस काम ("अच्छे काम") को पूरा करेंगे जिसे उन्होंने फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच शुरू किया था, और उसे "मसीह यीशु के दिन तक" जारी रखेंगे (वचन 6)।

फिर, आज के वचन के सातवें पद में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहते हैं, "तुम सबके बारे में ऐसा सोचना मेरे लिए सही है।" *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* इसका अनुवाद इस तरह करती है: "मेरे लिए तुम्हें अपने दिल में बसाए रखना बहुत स्वाभाविक है।" यहाँ साफ़ है कि पौलुस हमेशा फिलिप्पी के प्यारे विश्वासियों को अपने दिल में रखता था (वचन 7)। इसके अलावा, जब भी वह उनके बारे में सोचता, तो परमेश्वर का धन्यवाद करता (वचन 3)। फिलिप्पी के विश्वासियों के बारे में सोचने पर पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करता था? इसका कारण यह था कि चाहे पौलुस बेड़ियों में जकड़ा हो (जेल में हो), सुसमाचार का बचाव कर रहा हो, या उसकी पुष्टि कर रहा हो (उसकी गवाही दे रहा हो), फिलिप्पी के विश्वासी (परमेश्वर की) कृपा में उसके साथ सहभागी थे (वचन 7)। इसका क्या मतलब है? संक्षेप में, जब भी पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के संतों के बारे में सोचता, तो उसके धन्यवाद करने का कारण यह था कि वे सभी परमेश्वर की कृपा में हिस्सेदारी करने में उसके साथ सहभागी बन गए थे (वचन 7)। तो फिर, यहाँ पौलुस जिस "परमेश्वर की कृपा" की बात कर रहा है, वह क्या है? सबसे पहले, जैसा कि हमने वचन 5 में देखा, इसका मतलब है कि फिलिप्पी के संतों ने "सुसमाचार के काम में भाग लिया" (सुसमाचार की सहभागिता)—खासकर तब जब वह रोम में जेल में था ("मेरी कैद") और उन्होंने उसकी ज़रूरतों को पूरा किया (देखें 4:15), और इस तरह उसके सुसमाचार के काम में शामिल हुए। इसे ध्यान में रखते हुए, पौलुस असल में फिलिप्पी के संतों से कह रहा है: "तुम सबने (परमेश्वर की) कृपा में मेरे साथ हिस्सेदारी की है; इसीलिए जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, तो परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।" हालाँकि, फिलिप्पी के संतों के लिए पौलुस के परमेश्वर का धन्यवाद करने का यही एकमात्र कारण नहीं था। उसके धन्यवाद का एक और कारण यह था कि वे "सुसमाचार का बचाव करने और उसकी पुष्टि करने" की कृपा में भी उसके साथ सहभागी बन गए थे (1:7)। परमेश्वर की कृपा में इस साझा भागीदारी—सुसमाचार का बचाव करना और उसकी पुष्टि करना—का मतलब था कि वे उस दुख और मुश्किलों में भी सहभागी थे जो पौलुस के सुसमाचार के काम के साथ जुड़ी थीं। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पियों 1:29 में फिलिप्पी के संतों को यह लिखा: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है।" पॉल फिलिप्पी चर्च के संतों को

याद करते हुए हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए करते थे क्योंकि वे भी यीशु के लिए दुख सह रहे थे—ठीक वैसे ही जैसे पॉल सह रहे थे—और साथ ही विश्वास के ज़रिए यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार भी कर रहे थे। पॉल कहते हैं कि यह अनुभव परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है; दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हुए दुख सहना ईश्वरीय अनुग्रह का काम है। चूँकि फिलिप्पी के संत पॉल के साथ इस अनुग्रह में शामिल थे, इसलिए जब भी वे उनके बारे में सोचते, तो परमेश्वर का धन्यवाद करते थे।

क्या आपके अपनों में ऐसे लोग हैं—जो हमेशा आपके ख्यालों में रहते हैं—और जो फिलिप्पी के संतों की तरह आपके साथ परमेश्वर के इस अनुग्रह में शामिल हैं? क्या ऐसे प्रियजन हैं जो यीशु के सुसमाचार का प्रचार करते हुए उनके लिए दुख सहते हैं? क्या ऐसे लोग हैं जिनके बारे में सोचने पर आप परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए प्रेरित होते हैं? हमारी अपनी चर्च कम्युनिटी में भी ऐसे प्यारे लोग हैं—जिनमें यीशु मसीह के सुसमाचार को साझा करने का जुनून है और जो उस संदेश को फैलाने की प्रक्रिया में मेहनत, कठिनाई, मुश्किल हालात और यहाँ तक कि दुख भी सहते हैं। वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने अमेरिका में आराम से रहने का विकल्प होने के बावजूद, अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों के लोगों तक यीशु मसीह का सुसमाचार पहुँचाने का रास्ता चुना है। वे अक्सर बिना किसी पहचान या शोहरत की चाहत के, कृतज्ञता के साथ प्रभु की सेवा करते हैं। परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह के लिए आभारी होकर, वे अपना पूरा जीवन प्रभु की सेवा में समर्पित कर देते हैं, और यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने की एक अटूट प्रेरणा से प्रेरित होते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो अपने प्रचार के काम में किसी भी मुश्किल, कठिनाई या दुख से नहीं डरते, बल्कि ऐसी परीक्षाओं को परमेश्वर की ओर से मिला अनुग्रह मानते हैं। आइए हम भी उनके उदाहरण का पालन करें और परमेश्वर के इस अनुग्रह में भागीदार बनें।

दूसरी बात, पौलुस यीशु मसीह के दिल से फिलिप्पी कलीसिया के संतों के लिए तड़पता था।

आज का वचन देखें, फिलिप्पियों 1:8: "परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं यीशु मसीह के दिल से तुम सबके लिए कितना तड़पता हूँ।" फिलिप्पी संतों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने कहा, "तुम मेरे दिल में हो। जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, तो परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मेरे लिए ऐसा महसूस करना सही है, क्योंकि तुम अनुग्रह में मेरे साथी हो" (वचन 7)। फिर, वचन 8 में, वह उनसे कहता है, "परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं यीशु

मसीह के दिल से तुम्हारे लिए कितना तड़पता हूँ।" इस पत्र की बातों से, हम देख सकते हैं कि पौलुस यीशु के दिल से फिलिप्पी संतों से कितना गहरा प्यार करता था। वह इस पत्र के ज़रिए उनसे वह प्यार ज़ाहिर कर रहा है। इसके अलावा, उनके लिए अपने प्यार की सच्चाई दिखाने के लिए, पौलुस कहता है, "परमेश्वर मेरा गवाह है।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि पौलुस कह रहा है कि परमेश्वर जानता है कि फिलिप्पी संतों के प्रति उसका दिल सच्चे प्यार से भरा है।

क्या अपने पड़ोसियों के लिए हमारा प्यार सच में सच्चा है? क्या हम सच में यीशु मसीह के दिल से अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं? इस साल हमारी कलीसिया का आदर्श वाक्य यही है: "यीशु मसीह के दिल के साथ।" हमें यीशु मसीह के दिल से अपने पड़ोसियों के लिए तड़पने के लिए बुलाया गया है; इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है यीशु के प्यार के साथ अपने पड़ोसियों के लिए तड़पना। हम "अपने पड़ोसियों के लिए तड़पने" को दो तरह से देख सकते हैं:

(1) अपने पड़ोसियों के लिए तड़पने का मतलब है कि हमें यीशु के प्यार से प्रेरित होकर उन्हें दया की नज़र से देखना चाहिए। बाइबल में यिर्मयाह 31:20 देखें: "क्या एप्रैम मेरा प्यारा बेटा नहीं है, वह बच्चा जिससे मुझे खुशी मिलती है? हालाँकि मैं अक्सर उसके खिलाफ़ बोलता हूँ, फिर भी मुझे वह याद रहता है। इसलिए मेरा दिल उसके लिए तड़पता है; मैं ज़रूर उस पर दया करूँगा," प्रभु कहता है। जब भी परमेश्वर पिता हमें—अपने प्यारे बच्चों को जिनसे उसे खुशी मिलती है—डांटता है, तो वह गहराई से सोचता है। नतीजतन, उसका दिल हमारे लिए दया से भर जाता है। बाइबल हमारे प्रति परमेश्वर पिता के दिल का वर्णन ऐसे करती है जो हमारे लिए "तड़पता" है (या गहराई से हिल जाता है)। इसमें आगे कहा गया है, "मैं निश्चित रूप से उस पर [हम पर] दया करूँगा।" जैसे परमेश्वर पिता हम पर दया और करुणा करते हैं, वैसे ही हमें भी अपने पड़ोसियों के प्रति दया और करुणा रखनी चाहिए और उनसे प्रेम करते हुए उनके लिए तड़पना चाहिए।

(2) यीशु के हृदय से अपने पड़ोसियों के लिए तड़पने का अर्थ है कि हमें उनके लिए इतनी गहराई से तड़पना चाहिए कि उसमें एक तरह की 'जलन' (यानी उनके प्रति गहरी और तीव्र चाहत) हो।

बाइबल में याकूब 4:5 को देखें: "क्या आपको लगता है कि पवित्र शास्त्र बिना कारण कहता है कि वह आत्मा जो उसने हमारे भीतर बसाई है, जलन के साथ तड़पती है?" बाइबल कहती है कि हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा जलन के साथ तड़पती है। वही पवित्र आत्मा हमारे भीतर प्रेम का फल पैदा करती है, जिससे हम अपने पड़ोसियों से प्रेम कर पाते हैं और उसी तीव्र जलन वाली भावना के साथ उनके लिए तड़प पाते हैं। इसलिए, अपने पड़ोसियों से प्रेम करते और उनके लिए तड़पते समय, हमें उनके लिए इतनी गहराई से तड़पना चाहिए कि उसमें जलन जैसी तीव्रता हो। यहाँ हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हर तरह की जलन बुरी नहीं होती; जलन का एक रूप ऐसा भी है—खासकर पड़ोसियों के साथ हमारे रिश्तों में—जो ज़रूरी और अच्छा है। जैसे परमेश्वर हमसे—अपने लोगों से—इतने गहरे प्रेम से प्रेम करते हैं कि उसे "जलन" कहा गया है, वैसे ही हमें भी अपने जीवनसाथी की उसी ईश्वरीय जलन वाली भावना के साथ कद्र करनी चाहिए। यही सच्चे वैवाहिक प्रेम का सार है। इसी तरह, हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहिए और उनकी बहुत कद्र करनी चाहिए।

अंत में, तीसरी बात यह है कि पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों के लिए प्रार्थना की।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:9–11 को देखें: "और मेरी प्रार्थना यह है: कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और गहरी समझ में और अधिक बढ़ता जाए, ताकि तुम सबसे अच्छी बातों को परख सको और मसीह के दिन के लिए शुद्ध और निर्दोष बने रहो, और यीशु मसीह के द्वारा मिलने वाले धार्मिकता के फलों से भरे रहो—परमेश्वर की महिमा और प्रशंसा के लिए।" आप पड़ोसी के प्रति प्रेम का सबसे बड़ा इज़हार किसे मानते हैं? क्या आपको लगता है कि यह प्रार्थना है? यदि हम यीशु मसीह के हृदय से अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं और उनकी कद्र करते हैं—उनके प्रति करुणा और दया महसूस करते हैं—तो हम उनके लिए सबसे पहले क्या करेंगे? हम तुरंत घुटने टेकेंगे और परमेश्वर पिता से उनकी ओर से प्रार्थना करेंगे। हम पूरे मन से प्रार्थना करेंगे और परमेश्वर के सामने अपना दिल खोलकर रख देंगे। इसके अलावा, हम उनके लिए सिर्फ़ एक या दो बार प्रार्थना नहीं करेंगे; हम रोज़ परमेश्वर पिता से तब तक प्रार्थना करते रहेंगे जब तक हमारी प्रार्थना का जवाब न मिल जाए।

आज के वचन में पौलुस ने ठीक यही किया। उसने अपने पड़ोसियों—फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों—की ओर से परमेश्वर से प्रार्थना की (वचन 4)। और उसने सिर्फ़ एक या दो बार प्रार्थना नहीं की। फिलिप्पियों 1:4 में "आप सभी के लिए अपनी हर प्रार्थना में" (या "हर बार जब मैं कोई विनती करता हूँ") प्रार्थना करने की बात कही गई है। इसका मतलब है कि पौलुस लगातार फिलिप्पी के विश्वासियों के बारे में सोचता था (वचन 3) और जब भी वे उसे याद आते, वह उनके लिए परमेश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना करता था। जब भी वह इस तरह प्रार्थना करता, पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद करता था (वचन 3)। वह हमेशा खुशी के साथ फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों के लिए विनती भी करता था (वचन 4)। इसका कारण यह था कि वे पहले दिन से लेकर उस पल तक सुसमाचार के काम में हिस्सा ले रहे थे (वचन 5)। इसके अलावा, जब पौलुस ने फिलिप्पी के पवित्र लोगों की ओर से परमेश्वर से प्रार्थना की, तो उसने पूरे भरोसे के साथ ऐसा किया। यह भरोसा इस यकीन से आया था कि विश्वासयोग्य और वाचा निभाने वाला परमेश्वर, जिसने फिलिप्पी के पवित्र लोगों के बीच एक "अच्छा काम"—यानी उद्धार का काम—शुरू किया था, वह उसे पूरा भी करेगा। पौलुस, जिसने इतने भरोसे, कृतज्ञता और खुशी के साथ फिलिप्पी के पवित्र लोगों के लिए प्रार्थना की, उसने खास तौर पर "प्रेम" के बारे में परमेश्वर से प्रार्थना की (वचन 9)। किस तरह का प्रेम? यह ऐसा प्रेम है जो ज्ञान और हर तरह की समझ में बढ़ता ही जाता है। इस तरह के प्रेम के लिए प्रार्थना करने के पीछे पौलुस का मकसद क्या था? वचन 10 देखिए: "ताकि तुम उन बातों को परख सको जो उत्तम हैं और मसीह के दिन तक सच्चे और निर्दोष बने रहो।" पौलुस ने फिलिप्पी के पवित्र लोगों के लिए इस प्रेम—जो ज्ञान और समझ से भरपूर हो—की कामना की क्योंकि वह सच्चे दिल से चाहता था कि वे समझ सकें कि असल में क्या उत्तम है। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने परमेश्वर से प्रार्थना की ताकि फिलिप्पी के पवित्र लोग परमेश्वर की इच्छा को स्पष्ट रूप से समझ सकें (पार्क युन-सन)। नतीजतन, पौलुस को उम्मीद थी कि फिलिप्पी के पवित्र लोग मसीह के दिन तक सच्चे और निर्दोष बने रहेंगे (वचन 10)। यानी, उसने प्रार्थना की कि सच्चे मसीही होने के नाते वे ठोकर न खाएँ और न ही गिरें (पार्क युन-सन)। आखिरकार, पॉल की दिली इच्छा थी कि फिलिप्पी के संत धार्मिकता के फल से भर जाएं (पद 11)। उन्होंने प्रार्थना की कि विश्वास के ज़रिए परमेश्वर की धार्मिकता पाने के बाद, वे अच्छे कामों का भरपूर फल लाएं (पार्क युन-सन)।

हमें भी अपने पड़ोसियों के लिए परमेश्वर पिता से ऐसी ही प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर पिता से पूरे दिल से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे पड़ोसी प्यार का भरपूर फल पाएँ—खासकर, उनका प्यार ज्ञान और सही समझ के साथ और भी गहरा हो। ऐसा करते हुए, हमें सबसे अच्छी बात को पहचानना सीखना चाहिए, ताकि हम सच्चे और बेदाग़ ईसाई बन सकें और सुसमाचार के लायक जीवन जी सकें।

क्यों न आप भी किसी ऐसे व्यक्ति से—जिसे आप प्रभु के प्यार से प्यार करते हैं—ठीक वैसे ही कहें जैसा पौलुस ने कहा था: "तुम मेरे दिल में हो"? क्या आप उस प्यारे व्यक्ति से—जिसे आप हमेशा अपने ख्यालों में रखते हैं, यीशु के दिल से प्यार करते हैं, और जिसके लिए अभी से लेकर अपनी मौत के दिन तक प्रार्थना करते हैं—यह नहीं कहना चाहेंगे कि "तुम मेरे दिल में हो"? अभी भी, यीशु, जिनसे आप प्यार करते हैं, आपसे कह रहे हैं, "फलाँ व्यक्ति, तुम मेरे दिल में हो।" क्योंकि हम प्रभु के दिल में हैं, वे हमेशा हमारे बारे में सोचते हैं—हमारे लिए उनके विचार अनगिनत हैं, समुद्र के किनारे की रेत के कणों से भी ज़्यादा। वे हमें बहुत चाहते भी हैं। इसके अलावा, वे अभी भी परमेश्वर के दाहिने हाथ पर हमारे लिए विनती कर रहे हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे हमसे प्यार करते हैं—एक ऐसा गहरा प्यार कि उन्होंने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। आइए हम ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर के उस अपार प्यार के लिए शुक्रगुजार हों और अपने पड़ोसियों से प्यार करें।

मैं पूरे दिल से चाहता हूँ कि सुसमाचार (Gospel) का प्रचार और फैलाव हो।

[फिलिप्पियों 1:12–19]

आपको शायद पता होगा कि पोप ने हाल ही में कोरिया का दौरा किया था। आपको क्या लगता है, उस दौरे का क्या असर हुआ? एक उदाहरण 'किया सोल' (Kia Soul) कार है। इस गाड़ी को बहुत ज़्यादा अप्रत्यक्ष प्रचार मिला क्योंकि पोप ने अपनी यात्रा के दौरान एक साधारण, बिना आर्मर वाली 'किया सोल' में सवारी करने का फ़ैसला किया—यह फ़ैसला उन्होंने लोगों के करीब रहने के लिए किया था। खास तौर पर, 'सोल' की बिक्री का बाज़ार पहले उत्तरी अमेरिका तक ही सीमित था (जहाँ 80% माँग अमेरिका से आती थी); लेकिन, पोप द्वारा अपनी यात्रा में इस कार के इस्तेमाल से इसका नाम और रूप पूरी दुनिया के सामने आया, जिससे इसे ज़बरदस्त प्रचार मिला। इसके अलावा, 'किया' ने बताया कि 11 तारीख़ (दौरे से ठीक पहले) से 19 तारीख़ (उनके जाने के अगले दिन) तक के छह कामकाजी दिनों में, 'सोल' के लिए रोज़ाना औसतन 32.5 ऑर्डर मिले—जो पिछले महीने के रोज़ाना औसत 20 ऑर्डर से 62.5% ज़्यादा थे। इस व्यावसायिक असर के अलावा, मेरा मानना है कि पोप की यात्रा से कैथोलिक चर्च में भी लोगों की दिलचस्पी बढ़ेगी। असल में, पिछले हफ़्ते मैं 'काकाओटॉक' (KakaoTalk) पर एक ईसाई भाई से बात कर रहा था जो ग्वांगह्वामुन (Gwanghwamun) के पास काम करते हैं; उन्होंने मुझे बताया कि कंपनी के डिनर के दौरान एक नास्तिक सहकर्मी ने पोप के बारे में सकारात्मक राय ज़ाहिर की। उस सहकर्मी ने कहा कि "प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म बहुत स्वार्थी लगता है," और कहा कि जहाँ "पादरी अक्सर गलत काम करते हैं, वहीं कैथोलिक चर्च में ऐसी बातें कम होती हैं।" जिस ईसाई भाई से मैंने बात की, वे इस बात को लेकर चिंतित थे; उन्होंने इसे एक गंभीर मुद्दा बताया और चिंता जताई कि कई गैर-विश्वासी—जो शायद इनके बीच के अंतर को पूरी तरह नहीं समझते—

कैथोलिक धर्म की ओर आकर्षित हो सकते हैं। उस भाई ने कहा, "कोरियाई ईसाई धर्म में लोगों का भरोसा बहुत कम हो गया है।" ऐसा लगता है कि कुछ लोग ईसाई धर्म से इतने तंग आ चुके हैं कि वे कैथोलिक धर्म अपनाने पर विचार कर रहे हैं। इस बारे में आपकी क्या राय है? क्या आपको भी लगता है कि कोरियाई ईसाई धर्म में भरोसा अब तक के सबसे निचले स्तर पर है? मैंने उस भाई को यह सलाह दी: "इसकी शुरुआत मेरे अपने कार्यस्थल पर एक भरोसेमंद व्यक्ति बनने से होती है।" "शब्दों से ज़्यादा काम मायने रखते हैं, है ना? स्वार्थ के बजाय निस्वार्थ सेवा?" "चरित्र के माध्यम से?" "हाशिए पर रहने वाले लोगों की परवाह करना?" हम ईसाई वह भरोसा कैसे वापस पा सकते हैं? मेरा मानना है कि सबसे पहले हमें पछतावे के आँसू बहाने चाहिए, क्योंकि सच्चे पछतावे के बिना कोई सुधार नहीं हो सकता। इसलिए, हमें खुद को बदलना होगा; ऐसे बदलाव के बिना, हम कभी भी दुनिया का भरोसा नहीं जीत पाएँगे।

दुनिया के लिए नमक और रोशनी के तौर पर अपनी भूमिका निभाने के लिए, हमें सबसे पहले 1 तीमुथियुस 4:15 की बातों पर ध्यान देना और उन्हें मानना होगा: "इन बातों में मेहनत करो; खुद को पूरी तरह से इनमें लगा दो, ताकि हर कोई तुम्हारी तरक्की देख सके।" इस तरक्की को सबको दिखाने के लिए, हमें "बोलचाल, चाल-चलन, प्यार, विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए मिसाल बनना होगा" (वचन 12)। इसके अलावा, हमें उन लोगों के लिए भी मिसाल बनना होगा जो विश्वास नहीं करते। इस संदर्भ में, एक और वचन जिस पर हमें ध्यान देना और जिसे मानना चाहिए, वह है फिलिप्पियों 1:25: "इस बात का यकीन होने पर, मैं जानता हूँ कि मैं बना रहूँगा, और विश्वास में आपकी तरक्की और खुशी के लिए आप सबके साथ बना रहूँगा।" हमारे विश्वास में तरक्की होनी चाहिए; हमारा विश्वास बढ़ना चाहिए। हमें मसीह यीशु के वचनों को सुनना चाहिए और अपने विश्वास को तेज़ी से बढ़ने देना चाहिए। इसका मकसद क्या है? ताकि प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार हमारे ज़रिए फैलाया जा सके। दूसरे शब्दों में, विश्वास रखने वाले लोगों के ज़रिए सुसमाचार के प्रचार में तरक्की होनी चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:12 में, पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को लिखते हैं: "अब भाइयों और बहनों, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मेरे साथ जो हुआ है, उससे असल में सुसमाचार को आगे बढ़ाने में मदद मिली है।" इस वचन पर ध्यान देते हुए, मैं "मैं सुसमाचार के प्रचार में तरक्की की दिली इच्छा रखता हूँ" शीर्षक के तहत वचन 12 से 19 तक के हिस्से पर विचार करना चाहता हूँ और उन सीखों को अपनाना चाहता हूँ जो परमेश्वर हमें देते हैं।

सबसे पहले, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि पौलुस के साथ असल में "क्या हुआ था"।

फिलिप्पियों 1:12 में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहते हैं कि "मेरे साथ जो हुआ है, उससे असल में सुसमाचार को आगे बढ़ाने में मदद मिली है।" तो फिर, वे किस हालात का सामना कर रहे थे? आयत 13 देखिए: “नतीजतन, पूरे महल के पहरेदारों और बाकी सभी लोगों को यह पता चल गया है कि मैं मसीह के लिए बेड़ियों में जकड़ा हुआ हूँ।” इस पत्र से पता चलता है कि पौलुस “अपनी कैद” का अनुभव कर रहा था—वह जेल में बंद था। दूसरे शब्दों में, जब वह फिलिप्पियों को यह पत्र लिख रहा था, तब पौलुस एक रोमन जेल में बंद था। पौलुस इसी स्थिति का सामना कर रहा था। क्या यह बात दिलचस्प नहीं है? क्या यह अद्‌भुत नहीं है कि जेल में होने के बावजूद, जब भी पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों के बारे में सोचता था—और जब भी उनके लिए प्रार्थना करता था—तो वह खुशी के साथ ऐसा करता था? (आयत 3-4) जेल के अंदर से फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों के बारे में सोचते हुए पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद कैसे कर पाता था? जब भी वह विनती करता था, तो वह हमेशा खुशी के साथ उनके लिए प्रार्थना कैसे कर पाता था? ज़्यादातर लोग शायद पौलुस जैसी स्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद नहीं कर पाते। इसके अलावा, जब तक किसी मसीही का विश्वास असाधारण न हो, जेल में बंद होने पर अपने प्रियजनों के लिए खुशी-खुशी प्रार्थना करना उनके लिए मुश्किल होता। फिर भी, पौलुस ने—न केवल आज के अंश में बल्कि प्रेरितों के काम अध्याय 16 में भी—आधी रात को प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए (आयत 25), तब भी जब वह और सीलास “भीतरी जेल” में बंद थे और उनके पैर मज़बूती से बेड़ियों में जकड़े हुए थे (आयत 24)। ऐसी परिस्थितियों में पौलुस और सीलास कैसे प्रार्थना कर पाए और परमेश्वर की स्तुति के गीत गा पाए? उन्हें अन्यायपूर्ण तरीके से जेल में डाला गया था। फिलिप्पी पहुँचने के बाद (आयत 12) और प्रार्थना की जगह पर जाते समय, भविष्य बताने वाली आत्मा के वश में एक दासी (आयत 16) ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती हुई उनके पीछे हो ली। उसने ऐसा सिर्फ़ एक या दो दिन नहीं, बल्कि कई दिनों तक किया। आखिरकार, बहुत परेशान होकर पौलुस मुड़ा और उस आत्मा को आदेश दिया, "यीशु मसीह के नाम से, मैं तुझे आदेश देता हूँ कि तू उसमें से बाहर निकल आ," और वह आत्मा तुरंत बाहर निकल गई (आयत 17-18)। यह देखकर, उस दासी के मालिकों को—जिन्हें उसके भविष्य बताने से बहुत फ़ायदा होता था (आयत 16)—एहसास हुआ कि उनकी अच्छी-खासी कमाई का ज़रिया बंद हो गया है क्योंकि वह अब भविष्य नहीं बता सकती थी; नतीजतन,

उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ लिया और अधिकारियों के सामने पेश करने के लिए बाज़ार ले गए (पद 19)। वे पौलुस और सीलास को मजिस्ट्रेटों के सामने ले गए और उन पर आरोप लगाए (पद 22); नतीजतन, मजिस्ट्रेटों ने उनके कपड़े फाड़ने, उन्हें छड़ियों से बुरी तरह पिटवाने और जेल में डालने का आदेश दिया (पद 22–23)। बिना किसी कसूर के जेल में डाले जाने के बावजूद, पौलुस और सीलास ने आधी रात को प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति में गीत गाए। यह कैसे संभव था?

हम इंसान अक्सर अपनी परिस्थितियों से बहुत ज़्यादा प्रभावित होते हैं। खासकर, जब हम ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जिन्हें सहना मुश्किल होता है, तो हम अक्सर उनसे प्रभावित—या पूरी तरह से उनके वश में—हो जाते हैं, और अक्सर घबरा जाते हैं या रास्ता भटक जाते हैं। अगर हमें पौलुस की तरह बिना किसी कसूर के जेल में डाल दिया जाता, तो हम शायद धन्यवाद देने के बजाय शिकायत करते या मन में नाराज़गी पालते। आखिर, जिसने कोई गलत काम नहीं किया—जिसने जेल जाने लायक कुछ नहीं किया—वह बिना कसूर जेल में डाले जाने पर अपनी स्थिति के बारे में शिकायत करने या नाराज़ होने से कैसे बच सकता है? यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसके अलावा, ऐसी स्थिति में, अपने प्रियजनों के बारे में सोचते हुए हम खुशी के साथ प्रार्थना कैसे कर सकते हैं, जैसा पौलुस ने किया? ऐसी परिस्थितियों में खुशी कैसे हो सकती है? है ना? पुराने नियम के निर्गमन अध्याय 3 में, जब इस्राएलियों ने खुद को लाल सागर के सामने "घिरा हुआ" पाया (पद 3), तो उन्होंने फिरौन और मिस्रियों को अपने पीछे आते देखा; डर के मारे, वे परमेश्वर के सामने चिल्लाए (पद 10)। फिर उन्होंने मूसा के खिलाफ शिकायत की: "क्या इसलिए कि मिस्र में कब्रें नहीं थीं, तुम हमें जंगल में मरने के लिए बाहर ले आए? तुम हमें मिस्र से बाहर क्यों लाए और हमारे साथ ऐसा क्यों किया? क्या हमने मिस्र में तुमसे नहीं कहा था, 'हमें अकेला छोड़ दो; हमें मिस्रियों की सेवा करने दो'? जंगल में मरने से बेहतर होता कि हम मिस्रियों की सेवा करते" (पद 11–12)। क्या यह बात समझ में आती है? क्या मिस्र से बाहर लाए जाने के बारे में शिकायत करना उचित है? क्या संकट के इस पल में मूसा के खिलाफ हो जाना समझदारी है—यह याद दिलाते हुए कि जब वे मिस्रियों की सेवा करने वाले गुलाम थे, तब उन्होंने क्या कहा था? जब हम मुश्किलों और संकट का सामना करते हैं—चाहे अतीत में, वर्तमान में या भविष्य में—तो हमारी प्रवृत्ति धन्यवाद देने के बजाय शिकायत करने और बड़बड़ाने की होती है। फिर भी,

अगर हम सच में ईश्वर में विश्वास करते हैं, तो क्या हमें ऐसी स्थितियों में भी उनसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, उनकी स्तुति नहीं करनी चाहिए और उनका धन्यवाद नहीं करना चाहिए?

अगर पॉल की तरह जेल में होने या मूसा और इज़राइलियों की तरह चारों ओर से घिरे होने (जैसे मिस्र से निकलते समय हुआ था) के अनुभव को पूरी तरह समझना मुश्किल है, तो कैंसर होने की बात सोचकर देखिए। अगर आप बीमारी के कारण अस्पताल गए और कई टेस्ट के बाद डॉक्टर ने आपको बताया कि आपको कैंसर है, तो आप कैसा महसूस करेंगे? कहा जाता है कि कैंसर का पता चलने पर मरीज़ों की भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ आम तौर पर तीन चरणों में होती हैं (ऑनलाइन स्रोतों के अनुसार):

(1) शुरुआती प्रतिक्रिया का चरण बीमारी का पता चलने के एक हफ़्ते के भीतर होता है और इसमें इनकार, अविश्वास और निराशा की भावनाएँ होती हैं; इस दौरान, बहुत ज़्यादा घबराहट के कारण कुछ मरीज़ टेस्ट या इलाज के विकल्पों के बारे में गलत फ़ैसले ले सकते हैं।

(2) दूसरे चरण को भावनात्मक उथल-पुथल का समय कहा जाता है। इस चरण के दौरान, मरीज़ों के मन में कैंसर और मौत के विचार बार-बार आते हैं; वे एक से दो हफ़्ते तक डिप्रेशन, एंग्जायटी (बेचैनी), नींद न आना, ध्यान न लगा पाना और भूख न लगने जैसी समस्याओं से जूझते हैं, जिससे उनकी रोज़मर्रा की दिनचर्या बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

(3) तीसरा चरण तालमेल बिठाने का चरण है, जहाँ मरीज़ बीमारी का पता चलने और इलाज की प्रक्रिया को स्वीकार करते हैं, हालात से निपटने के अपने तरीके खोजते हैं और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में लौट आते हैं।

इन चरणों से गुज़रते हुए, मरीज़ों को अक्सर कुछ खास मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बताया जाता है कि 50–70% कैंसर मरीज़ों को बीमारी से जुड़ी चुनौतियों के कारण 'एडजस्टमेंट डिसऑर्डर' (हालात के साथ तालमेल न बिठा पाना) का अनुभव होता है—जिसमें नींद न आना, बेचैनी या डिप्रेशन जैसे लक्षण दिखते हैं। इसके अलावा, 10–20% मरीज़ क्लिनिकल डिप्रेशन से पीड़ित होते हैं जिसके लिए इलाज की ज़रूरत होती है; इस स्थिति में न केवल उदासी, प्रेरणा की कमी और नींद न आना जैसे लक्षण होते हैं,

बल्कि कई शारीरिक लक्षण भी दिखते हैं, जैसे कुछ खा न पाना और पूरे शरीर में दर्द होना। मरीज़ मौत के डर, कैंसर के दोबारा होने या शरीर के दूसरे हिस्सों में फैलने (मेटास्टेसिस) की चिंता, अनिश्चित भविष्य को लेकर घबराहट, और आने वाले बदलावों व तकलीफ़ों की चिंता से भी जूझ सकते हैं। उन्हें बहुत ज़्यादा बेचैनी हो सकती है, क्योंकि उन्हें डर लगता है कि शरीर में होने वाले छोटे-छोटे बदलाव भी किसी गंभीर बीमारी का संकेत हो सकते हैं। कभी-कभी, मरीज़ों में 'परसीक्यूटरी डिल्यूज़न' (सताए जाने का भ्रम) विकसित हो जाता है; उन्हें शक होने लगता है कि उनका परिवार उनकी मौत चाहता है या मेडिकल टीम जान-बूझकर गलत इलाज कर रही है। तो फिर, कैंसर का पता चलने पर एक ईसाई के तौर पर हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए? पादरी जॉन पाइपर, जिन्हें प्रोस्टेट कैंसर हुआ था, हमसे कहते हैं: "अपने कैंसर को बेकार न जाने दें।" उन्होंने कैंसर को बेकार न जाने देने के नौ तरीके बताए हैं, और मैं उनमें से पाँच आपके साथ साझा करना चाहता हूँ (पाइपर):

(1) अगर हम यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर ने हमारे लिए यह कैंसर तय किया है, तो हम इसे बेकार जाने देंगे।

(2) 2 कुरिन्थियों 1:9 परमेश्वर की योजना को स्पष्ट करता है: "सच तो यह है कि हमें लगा जैसे हमें मौत की सज़ा मिल गई हो। लेकिन ऐसा इसलिए हुआ ताकि हम खुद पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा करें, जो मरे हुओं को जिलाता है।"

(3) परमेश्वर की योजना मसीह के लिए हमारे प्रेम को गहरा करना है। हम सिर्फ़ मरकर कैंसर पर जीत हासिल नहीं करते; कैंसर तब जीतता है जब हम मसीह को महत्व देना छोड़ देते हैं। (4) परमेश्वर चाहता है कि कैंसर के ज़रिए हमारे अंदर दूसरों के लिए गहरा प्यार और परवाह करने वाला दिल पैदा हो।

(5) कैंसर मसीह के बारे में गवाही देने का एक शानदार मौका है (लूका 21:12–13)। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप सच में कैंसर को मसीह की गवाही देने के एक कीमती मौके के तौर पर देखते हैं?

पौलुस की तरह, हम जिस भी हालात से गुज़र रहे हों, उसे हमें मसीह की गवाही देने के मौके के तौर पर देखना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि हमारे हालात के बीच भी यीशु मसीह का सुसमाचार (अच्छी खबर) कैसे आगे बढ़ सकता है। हमें प्रार्थना के साथ सोचना चाहिए कि हम अपने अनुभवों के ज़रिए परमेश्वर की

महिमा कैसे कर सकते हैं और उसे कैसे खुश कर सकते हैं। हमें अपनी मुश्किलों में इतना नहीं खो जाना चाहिए कि हम सिर्फ़ अपने बारे में ही सोचने लगें। इसके बजाय, हमें अपने हालात का इस्तेमाल अपने आस-पास के लोगों की आत्माओं की परवाह करने और उन्हें प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने के मौके के तौर पर करना चाहिए। दूसरी और आखिरी बात, मैं पौलुस की कैद के दौरान सुसमाचार के आगे बढ़ने पर बात करना चाहता हूँ।

कृपया आज का वचन देखें, फिलिप्पियों 1:12: "भाइयों, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मेरे साथ जो हुआ है, उससे असल में सुसमाचार को आगे बढ़ने में मदद मिली है।" जब पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों को लिखता है, तो वह एक ऐसी बात बताता है जो वह उन्हें बताना चाहता है: यह सच कि, भले ही वह जेल में बंद था, लेकिन असल में इससे सुसमाचार आगे बढ़ा। यह कैसे मुमकिन हुआ? सुसमाचार कैसे आगे बढ़ सकता था जब पौलुस—जो सुसमाचार का प्रचार करने वाला था—जेल में बंद था और बाहर जाकर प्रचार नहीं कर सकता था? वचन 13 और 14 देखें: "नतीजतन, पूरे महल के पहरेदारों और बाकी सभी लोगों को यह साफ़ हो गया है कि मैं मसीह के लिए बेड़ियों में जकड़ा हुआ हूँ। और मेरी बेड़ियों की वजह से, प्रभु में ज़्यादातर भाइयों को हिम्मत मिली है कि वे परमेश्वर के वचन को और ज़्यादा साहस और निडरता से सुनाएँ।" पौलुस दो कारण बताता है कि उसकी कैद के बावजूद सुसमाचार क्यों आगे बढ़ा:

(1) सुसमाचार इसलिए आगे बढ़ा क्योंकि "पूरे महल के पहरेदारों" के सैनिकों को—जिन्हें पौलुस की कैद के दौरान उस पर नज़र रखने के लिए तैनात किया गया था—यह एहसास हुआ कि उसकी कैद मसीह की वजह से थी (वचन 13) (पार्क युन-सन)।

इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जब पॉल रोम में जेल में थे, तो उनकी रखवाली करने वाले सैनिकों को पता चला कि उन्हें यीशु मसीह की वजह से कैद किया गया है, और इससे सुसमाचार का प्रचार आगे बढ़ा। सिर्फ़ सैनिकों को ही नहीं, बल्कि आज के हिस्से की 13वीं आयत हमें बताती है कि यीशु मसीह के लिए पॉल की कैद की बात "बाकी सभी" को भी पता चल गई, जिससे सुसमाचार का प्रचार और बढ़ा। इससे पता चलता है कि यह बात कितनी व्यापक रूप से जानी गई थी कि उनकी कैद मसीह की वजह से थी। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार कहा था: "अगर कोई विश्वासी मसीह के लिए दुख सहता है, तो उसका

मूल्य बहुत अधिक होता है। इसके अलावा, जब यह स्पष्ट हो जाता है कि दुख ऐसे रिश्ते से उपजा है, तो यह देखने वालों को दिखाता है कि मसीह का सुसमाचार कितना कीमती और सच्चा है।" डॉ. पार्क की बातों पर विचार करते हुए, मुझे डॉ. केंट ब्रेंटली की याद आई, जो कुछ समय पहले चर्चा में आए थे जब वे पश्चिम अफ्रीका के लाइबेरिया में चिकित्सा कार्य करते हुए इबोला वायरस से संक्रमित हो गए थे। लाइबेरिया में अपने मिशन क्षेत्र के लिए रवाना होने से तीन महीने पहले, उन्होंने कहा था, "जब मुश्किल दिन आएंगे, तो मैं खुद को परमेश्वर के बुलावे की याद दिलाऊंगा।" यह बयान उनके उस संकल्प को दर्शाता है कि वे पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा और निर्भर रहेंगे और उनके बुलावे का पालन करेंगे, भले ही उन्हें अफ्रीका में सेवा करते समय परीक्षा के क्षणों का सामना करना पड़े। यह विश्वास का कितना सुंदर बयान है! हालाँकि उन्होंने लाइबेरिया में बिना किसी प्रसिद्धि या पहचान की चाहत के एक डॉक्टर के रूप में सेवा की, लेकिन इबोला वायरस से उनके संक्रमित होने से वे दुनिया की नज़र में आ गए; लोगों को पता चला कि वे एक विश्वासी थे जो परमेश्वर के बुलावे और आज्ञा का पालन करते हुए चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए उस दूर-दराज के इलाके में गए थे और बाद में वायरस से संक्रमित हो गए थे। जो लोग ऐसे बुलावे का पालन करते हैं, वे वास्तव में सुंदर होते हैं। परमेश्वर के लोग जो उनके बुलावे का पालन करते हैं, वे सुंदर होते हैं। ऐसे लोगों के माध्यम से, परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करता है और महिमा प्राप्त करता है। परमेश्वर के बुलावे का पालन करते हुए, ये लोग जहाँ भी जाते हैं, यीशु मसीह को प्रकट करते हैं। वे इस दुनिया में जहाँ भी यात्रा करते हैं—प्रभु के बुलावे का पालन करते हुए—वे यीशु मसीह की सुगंध फैलाते हैं। जिन लोगों ने इस बुलावे को स्वीकार किया है, वे प्रेरित पौलुस जैसी ही आस्था रखते हैं: “लेकिन, मैं अपनी ज़िंदगी को अपने लिए कुछ भी नहीं समझता; मेरा एकमात्र मकसद उस दौड़ को पूरा करना और उस काम को खत्म करना है जो प्रभु यीशु ने मुझे सौंपा है—यानी परमेश्वर की कृपा की खुशखबरी की गवाही देना” (प्रेरितों के काम 20:24)। मेरी दिली प्रार्थना है कि हम भी इसी तरह की आस्था रखें।

(2) पॉल के जेल में होने के बावजूद सुसमाचार का प्रचार आगे बढ़ता रहा, क्योंकि कई भाइयों को उसकी बेड़ियों से हिम्मत मिली और वे और भी ज़्यादा साहस और निडरता के साथ परमेश्वर का वचन सुनाने लगे।

आज का वचन देखिए, फिलिप्पियों 1:14: "और ज़्यादातर भाइयों को मेरी कैद की वजह से प्रभु पर भरोसा हो गया है, और वे बिना डरे वचन सुनाने में और भी ज़्यादा हिम्मत दिखा रहे हैं।" क्या यह अद्भुत नहीं है?

भले ही पॉल, जो उनका आध्यात्मिक नेता था, जेल में था, फिर भी फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों ने डर के आगे घुटने नहीं टेके; बल्कि, उन्होंने और भी ज़्यादा हिम्मत के साथ परमेश्वर का वचन सुनाया। यह कोई आम प्रतिक्रिया नहीं है जिसकी उम्मीद की जाए। सतावट के समय—जब उनका आध्यात्मिक नेता जेल में था—तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया यही होती कि वे मसीह और सुसमाचार का विरोध करने वालों से डरकर पीछे हट जाते; फिर भी, उन्हें इतनी हिम्मत के साथ परमेश्वर का वचन सुनाते हुए देखकर यह साफ़ हो जाता है कि यह पवित्र आत्मा का काम था। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "भले ही पॉल को जिस सतावट का सामना करना पड़ा वह डरावनी थी, लेकिन पवित्र आत्मा का काम—जिसने उसे सहने और मज़बूती से खड़े रहने की शक्ति दी—कहीं ज़्यादा शक्तिशाली था। इसलिए, मसीहियों को सिर्फ़ सतावट की डरावनी सच्चाई पर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की उस शक्ति पर ध्यान देना चाहिए जो उन्हें उस पर जीत पाने में मदद करती है, और इस तरह अपना अटूट भरोसा बनाए रखना चाहिए" (पार्क युन-सन)। फिलिप्पी विश्वासियों में इसी अटूट भरोसे के कारण वे इतनी हिम्मत और निडरता के साथ परमेश्वर का वचन सुना पाए, और पॉल के जेल में होने के बावजूद प्रभु पर भरोसा रख पाए (वचन 14)। हालाँकि, हर कोई जिसने इतनी हिम्मत के साथ परमेश्वर का वचन सुनाया, उसने नेक इरादे से ऐसा नहीं किया। वचन 15–17 देखिए: "यह सच है कि कुछ लोग जलन और होड़ की वजह से मसीह का प्रचार करते हैं, लेकिन दूसरे नेक इरादे से ऐसा करते हैं। दूसरे लोग प्यार की वजह से ऐसा करते हैं, यह जानते हुए कि मुझे यहाँ सुसमाचार की रक्षा के लिए रखा गया है। पहले वाले लोग स्वार्थ की वजह से मसीह का प्रचार करते हैं, सच्चे मन से नहीं, यह सोचकर कि वे मेरे जेल में रहते हुए मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर सकते हैं।" पॉल को इस बात का पता था। कुछ लोग "अच्छी नीयत" और "प्यार" से मसीह का प्रचार कर रहे थे, तो कुछ लोग "ईर्ष्या और होड़" की वजह से ऐसा कर रहे थे—वे "स्वार्थ" (या बेईमानी) से प्रचार कर रहे थे ताकि पॉल की जेल की सज़ा में और "मुसीबत" बढ़ाई जा सके (आयत 17)। जो लोग ईर्ष्या, होड़ और स्वार्थ की वजह से मसीह का प्रचार करके पॉल की तकलीफ़ बढ़ाना चाहते थे, वे शायद ऐसे लोग थे जो उससे जलते थे और नफ़रत करते थे। साफ़ बात यह है कि उन्होंने यीशु मसीह की खुशखबरी का प्रचार नेक नीयत से नहीं किया (आयत 18, "गलत नीयत से")। फिर भी, पॉल ने फिलिप्पियों को लिखा: "तो क्या हुआ? ज़रूरी बात यह है कि हर तरह से, चाहे गलत नीयत से हो या सही नीयत से, मसीह का प्रचार हो रहा है। और इसी वजह से मैं खुश हूँ। हाँ, और मैं खुश होता रहूँगा" (आयत 18)।

पॉल की खुशी की यही वजह थी। उसकी खुशी इस बात में थी कि यीशु मसीह का प्रचार हो रहा था। चाहे यीशु मसीह की खुशखबरी का प्रचार गलत नीयत से किया गया हो या सही नीयत से, जो संदेश सुनाया जा रहा था, वह यीशु मसीह की सच्ची खुशखबरी थी; इसलिए, पॉल खुश था और खुश होता रहेगा। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि प्रेरित पॉल ने गलत नीयत से खुशखबरी का प्रचार करने को सही माना। हम इसे फिलिप्पियों 2:3 के पहले हिस्से में देख सकते हैं: "स्वार्थ या घमंड की वजह से कुछ भी न करो..." आज के हिस्से में—फिलिप्पियों 1:17—कुछ लोग गलत नीयत से, खासकर "स्वार्थ" की वजह से मसीह का प्रचार कर रहे थे; फिर भी, फिलिप्पियों 2:3 में पॉल हमें सिखाता है कि ऐसे स्वार्थ की वजह से *कुछ भी* न करें। फिर भी, क्योंकि मसीह का प्रचार हो रहा था, पॉल ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा, "इसी वजह से मैं खुश हूँ। हाँ, और मैं खुश होता रहूँगा" (आयत 18)। वह आयत 19 में अपनी खुशी की वजह भी बताता है: "...क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह की आत्मा की मदद से मेरी रिहाई होगी।" इसका क्या मतलब है? पॉल जानता था। वह खुश था—और बार-बार खुश हो रहा था—क्योंकि वह जानता था कि फिलिप्पी के विश्वासियों की प्रार्थनाएँ और यीशु मसीह की आत्मा की मदद उसकी रिहाई का कारण बनेंगी। क्या हमें भी ऐसी खुशी नहीं होनी चाहिए?

कुछ समय पहले, मैंने CNN पर डॉ. केंट ब्रेंटली और नैन्सी राइटबोल के बारे में एक खबर पढ़ी कि उन्हें अटलांटा के एमोरी यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल से छुट्टी दे दी गई है; लाइबेरिया में मेडिकल मिशनरी का काम करते हुए उन्हें इबोला वायरस का संक्रमण हो गया था। खबर देखने के बाद, मैंने डॉ. ब्रेंटली का अस्पताल से छुट्टी मिलने पर दिया गया भाषण ऑनलाइन देखा। मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना, "भगवान ने मेरी जान बचाई।" उस भाषण को सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। लाइबेरिया में बिस्तर पर लेटे हुए—इबोला वायरस के संक्रमण के बाद दिन-ब-दिन बीमार और कमज़ोर होते हुए—उन्होंने भगवान से जो प्रार्थना की थी, उसमें विश्वास की जो अनमोल बात कही थी, उसने मुझे गहराई से छू लिया। उनकी प्रार्थना थी: "हे भगवान, मेरी बीमारी में भी मुझे वफादार बने रहने में मदद करें। हे भगवान, आपकी महिमा हो, चाहे मेरे जीवन से हो या मेरी मृत्यु से।" नैन्सी राइटबोल के शब्दों ने भी मुझे प्रभावित किया, जो एक और मरीज़ थीं जिन्हें इबोला हुआ था और जिन्हें पिछले मंगलवार को चुपचाप छुट्टी दे दी गई थी। उनके शब्द बस यही थे, "भगवान की महिमा हो!" हम पूरी तरह से यह नहीं समझ सकते कि इन दोनों—इस भाई और बहन—ने क्या सहा होगा जब वे

इबोला से संक्रमित हुए थे, जो 90% मृत्यु दर वाली एक जानलेवा बीमारी है। हम उनके दिलों की हालत को पूरी तरह से नहीं समझ सकते, खासकर तब जब वे जीवन और मृत्यु के दोराहे पर खड़े थे। फिर भी, हम जो स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं वह यह है कि उस मुश्किल स्थिति में भी, उन्होंने अपना विश्वास नहीं खोया; इसके बजाय, वे केवल भगवान की महिमा करना चाहते थे, चाहे जीवन में हो या मृत्यु में। खासकर, जब मैंने डॉ. केंट ब्रेंटली को—अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद आधिकारिक प्रेस कॉन्फ्रेंस में—इतने सारे पत्रकारों के सामने खुद से बोलते हुए और यह कहते हुए देखा कि "भगवान ने मेरी जान बचाई" और "भगवान ने अनगिनत लोगों की प्रार्थनाओं का जवाब दिया," और साथ ही वे सच्चे दिल से केवल भगवान की महिमा करना चाहते थे, चाहे जीवन में हो या मृत्यु में, तो मुझे इस अनुभव के ज़रिए यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने में भगवान के काम की एक झलक मिली। इसलिए, प्रभु में भाई-बहनों के तौर पर, हम खुशी मनाते हैं—और खुशी मनाते रहेंगे—ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने किया था।

“मेरे साथ जो हुआ है, उसने असल में...”

“भाइयों और बहनों, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मेरे साथ जो हुआ है, उसने असल में सुसमाचार को आगे बढ़ाने में मदद की है” (फिलिप्पियों 1:12)।

मैं अपनी मौजूदा स्थिति को कैसे देखता हूँ? क्या यह सच में वैसी स्थिति है जैसी मैं चाहता था या जिसकी मुझे उम्मीद थी? ज़्यादातर संभावना यही है कि अभी मैं जिन हालात का सामना कर रहा हूँ, वे न तो मेरी चाहत के मुताबिक हैं और न ही मैंने उनके बारे में ऐसा सोचा था। इसलिए, मैं अपनी स्थिति से खुश नहीं हूँ और इसकी वजह से परेशान हूँ। यह सब बहुत दुखद और तकलीफदेह है। मुझे निराशा महसूस हो रही है; पता नहीं कब तक मुझे ऐसी मुश्किल और दर्दनाक हालत में रहना पड़ेगा। मैं जितना ज़्यादा अपने हालात के बारे में सोचता हूँ, उतना ही निराश—और यहाँ तक कि हताश—होता जाता हूँ। मुझे कोई उम्मीद नज़र नहीं आती। मैं क्या करूँ?

आज मैंने फिलिप्पियों 1:12 पढ़ा। पढ़ते समय, प्रेरित पौलुस के इन शब्दों ने मेरा ध्यान खींचा: “मेरे साथ जो हुआ है” (मेरे हालात) ने “असल में” (नतीजतन) एक मकसद पूरा किया है। सबसे पहले, मैंने सोचा कि पौलुस के साथ असल में क्या हुआ था—यानी वह किस स्थिति का सामना कर रहा था। ठीक अगली आयत में, पौलुस इस स्थिति को “मेरी कैद” बताता है (आयत 13)। इसके अलावा, “महल के सारे पहरेदारों” का ज़िक्र यह बताता है कि वह सचमुच जेल में बंद था। अगर मुझे भी पौलुस की तरह जेल में डाल दिया जाता, तो मैं कैसा महसूस करता? अगर मैं यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने किसी कम्युनिस्ट या मुस्लिम देश में जाता और जेल पहुँच जाता, तो मैं क्या करता? प्रेरितों के काम 16:25 के शब्द याद आए: “आधी रात के करीब पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और दूसरे कैदी उन्हें सुन रहे थे।” जेल की भीतरी कोठरी में बंद होने और

बेड़ियों में जकड़े होने के बावजूद (आयत 24), पौलुस ने सीलास के साथ मिलकर प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति में गीत गाए। अगर मिशन के काम के दौरान सुसमाचार सुनाते हुए मुझे जेल में डाल दिया जाता, तो क्या मैं सचमुच पौलुस की तरह प्रार्थना कर पाता और परमेश्वर की स्तुति में गीत गा पाता? शायद मैं परमेश्वर से जेल से छुड़ाने की विनती करता। लेकिन, मुझे पक्का नहीं पता कि क्या मैं इतनी ज़ोर से स्तुति के गीत गा पाता कि दूसरे कैदी भी सुन सकें। अगर मैं सिर्फ़ अपनी ताकत पर निर्भर रहता, तो शायद मैं गीत नहीं गा पाता। फिर भी, मेरा मानना है कि अगर परमेश्वर अपनी कृपा दें, तो मेरे अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा मुझे ऐसे हालात में भी उनकी स्तुति करने के काबिल बनाएगी। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ क्योंकि अपनी पहली संतान की राख बिखेरने के बाद, पवित्र आत्मा ने मुझे परमेश्वर के बचाने वाले प्रेम के लिए उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित किया। चूँकि परमेश्वर ने मुझे यह विश्वास दिया है, इसलिए अगर मैं कभी ऐसी स्थिति में फँस जाऊँ जिसकी मैंने न तो इच्छा की थी और न ही उम्मीद, तो मैं परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा को मानूँगा और उस स्थिति को नकारने के बजाय विश्वास के साथ स्वीकार करूँगा। इसके अलावा, भले ही मुझे पता न हो कि परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा क्या है, मैं भरोसा रखूँगा कि वह "अच्छी, मनभावन और सिद्ध" (रोमियों 12:1) है और इस विश्वास में सुकून पाऊँगा कि मैं उस दिव्य इच्छा के दायरे में हूँ। उस स्थिति में, परमेश्वर द्वारा दिए गए धैर्य के सहारे, मैं प्रार्थना करते हुए और उम्मीद के साथ इंतज़ार करूँगा कि देखूँ कैसे परमेश्वर सब कुछ भलाई के लिए काम में लाते हैं (रोमियों 8:28)। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि फिलिप्पियों 1:12 में प्रेरित पौलुस ने कहा था कि जिन घटनाओं का उन्होंने सामना किया, उनसे "असल में" सुसमाचार को आगे बढ़ाने में मदद मिली। इन शब्दों पर मनन करते हुए, मुझे एक-दो ज़रूरी सच्चाइयाँ समझ आईं। एक सच्चाई यह है कि जब पौलुस बेड़ियों में जकड़े हुए थे, तब भी यीशु मसीह के सुसमाचार को कैद नहीं किया जा सका। इसलिए, मैं यह विश्वास करने का संकल्प लेता हूँ कि भले ही मैं मुश्किल हालात में फँसा होऊँ, यीशु मसीह का सुसमाचार कैद नहीं किया जा सकता; मुझे प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरी कैद के बावजूद सुसमाचार आगे बढ़े। एक और बात जो मुझे समझ आई, वह यह है कि परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा दूसरों के ज़रिए पूरी होती है, यहाँ तक कि सुसमाचार का प्रचार करने वाले पौलुस की अनुपस्थिति में भी। इस तरह, मुझे एक बार फिर याद दिलाया जाता है कि मैं यह सोचना छोड़ दूँ कि मेरे बिना काम नहीं चल सकता। जब पौलुस बेड़ियों में थे, तब परमेश्वर ने लोगों के दो समूहों के ज़रिए सुसमाचार को आगे बढ़ाया। पहले समूह के बारे में, आयत 14 कहती है: "ज़्यादातर भाइयों को मेरी कैद की वजह से प्रभु पर भरोसा हो गया है, और वे बिना डरे परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए और भी हिम्मत दिखा रहे हैं।" उन्होंने "अच्छी नीयत" से मसीह का प्रचार किया (आयत 15)। यह जानते हुए कि पौलुस को सुसमाचार की रक्षा के लिए नियुक्त

किया गया था, उन्होंने "प्रेम से" मसीह का प्रचार किया (आयत 16)। उन्होंने "सच्चाई से" मसीह का प्रचार किया (आयत 18)। हालाँकि, एक और समूह ने "ईर्ष्या और झगड़े" से मसीह का प्रचार किया (आयत 15)। यह सोचकर कि वे पॉल की जेल की सज़ा में और मुश्किलें बढ़ा सकते हैं, उन्होंने शुद्ध इरादों के बजाय स्वार्थ की भावना से मसीह का प्रचार किया (पद 17)। उन्होंने "दिखावे के लिए" मसीह का प्रचार किया (पद 18)। फिर भी, क्योंकि मसीह का प्रचार "हर तरह से" हो रहा था, प्रेरित पॉल खुश हुए और आगे भी खुश होते रहेंगे (पद 18)। आखिरकार, पॉल इसलिए खुश थे क्योंकि जिन हालात से वे गुज़रे, उनसे असल में सुसमाचार के प्रचार को बढ़ावा मिला।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे मौजूदा हालात से भी सुसमाचार का प्रचार आगे बढ़े। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस स्थिति में हम अभी हैं, उसके ज़रिए मसीह का प्रचार हो। चूँकि जिन हालात का हम सामना कर रहे हैं, उनसे असल में सुसमाचार का प्रचार आगे बढ़ रहा है, इसलिए मैं हमारे विश्वास और हमारी खुशी के बढ़ने के लिए प्रार्थना करता हूँ (पद 25)।

“मेरी सच्ची उम्मीद और आशा”

[फिलिप्पियों 1:20-26]

हम इंसान उम्मीद के सहारे जीते हैं। इसके बिना हम ज़िंदा नहीं रह सकते। उम्मीद की वजह से ही हम खाते-पीते हैं, काम करते हैं और हर दिन कुछ अच्छा होने की उम्मीद के साथ जीते हैं। हममें से कुछ लोग मुश्किलों और दर्दनाक हालात से उबरने की कोशिश करते हैं, इस उम्मीद और भरोसे के साथ कि चीज़ें बेहतर होंगी। दूसरे लोग डटे रहते हैं और हार नहीं मानते—ज़िंदगी से मुँह नहीं मोड़ते—क्योंकि उन्हें उम्मीद होती है कि वे भी आखिरकार कामयाब होंगे। हम दिन-ब-दिन आगे बढ़ते रहते हैं, क्योंकि हमारे अंदर उम्मीद होती है। अगर वह उम्मीद खत्म हो जाए, तो हम मरे हुए के बराबर हैं, भले ही हम साँस ले रहे हों। लेकिन अगर वे चीज़ें ही छिन जाएँ जिनका हमें बेसब्री से इंतज़ार और उम्मीद थी, तो हम कैसा महसूस करेंगे?

आज के हिस्से में, फिलिप्पियों 1:20-21 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों को लिखते हैं: “मेरी सच्ची उम्मीद और आशा है कि मुझे किसी भी बात में शर्मिंदगी न उठानी पड़े, बल्कि पूरी हिम्मत के साथ, जैसा हमेशा होता आया है, वैसा ही अब भी मेरे शरीर के ज़रिए मसीह की महिमा हो, चाहे ज़िंदगी से हो या मौत से। क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना फ़ायदा है।” पौलुस की सच्ची उम्मीद और आशा क्या थी? इसे एक लाइन में कहें तो, वह यह थी कि “मेरे शरीर के ज़रिए मसीह की महिमा हो, चाहे ज़िंदगी से हो या मौत से” (वचन 20)। इसका क्या मतलब है? किसी के शरीर में मसीह की महिमा होने का क्या मतलब है? यहाँ “महिमा” (magnified) के तौर पर अनुवाद किए गए मूल ग्रीक शब्द का मतलब है “महान बनाना” या “बड़ा करना”। दूसरे शब्दों में, पौलुस की सच्ची उम्मीद और आशा यह थी कि उनके शरीर में मसीह की महिमा हो। अगर

पौलुस दिल से चाहते थे कि उनके शरीर में मसीह की महिमा हो, तो पौलुस के अपने शरीर के साथ क्या होना था? क्या उसे छोटा नहीं होना था? आसान शब्दों में कहें तो: पौलुस का नाम छोटा और कम अहम होना था ताकि यीशु मसीह का नाम महान और ऊँचा हो सके। इसका एक और बाइबिल वाला उदाहरण यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों में मिलता है, यूहन्ना 3:30 में: “उसे बढ़ना है, और मुझे घटना है।” मुझे भजन 323, "Called to Serve" (सेवा के लिए बुलाए गए) के तीसरे पद के बोल याद आते हैं: "सम्मान, महिमा और सारी शक्ति केवल आपको ही मिले; मैं तिरस्कार और अपमान का क्रूस उठाऊंगा। मैं बिना किसी प्रसिद्धि या पहचान की चाहत के, कृतज्ञता के साथ सेवा करूंगा।"

सचमुच, पौलुस ने कृतज्ञ हृदय से प्रभु की सेवा की। हम इसे 1 तीमुथियुस 1:12–14 में देख सकते हैं: "मैं हमारे प्रभु मसीह यीशु का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे सामर्थ्य दिया है, कि उन्होंने मुझे भरोसेमंद समझा और अपनी सेवा के लिए नियुक्त किया। हालाँकि मैं कभी निंदा करने वाला, सताने वाला और हिंसक व्यक्ति था, फिर भी मुझ पर दया की गई क्योंकि मैंने अज्ञानता और अविश्वास में ऐसा किया था। हमारे प्रभु का अनुग्रह मुझ पर भरपूर मात्रा में बरसा, साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है।" पौलुस प्रभु द्वारा दिखाए गए अनुग्रह और प्रेम के लिए कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सके—एक ऐसा व्यक्ति जो कभी उनकी तरह ही निंदा करने वाला, सताने वाला और हिंसक व्यक्ति था, और "पापियों में सबसे बुरा" (पद 15) था। प्रभु ने न केवल उन्हें बचाया बल्कि उन्हें विश्वासयोग्य भी माना और उन्हें एक सेवा-कार्य सौंपा, और उन्हें अन्यजातियों के लिए प्रेरित नियुक्त किया। इसी कृतज्ञता से प्रेरित होकर उन्होंने प्रभु की सेवा की; अपनी सेवा में, उनकी एकमात्र इच्छा प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना थी। 1 कुरिन्थियों 1:17 पर विचार करें: "क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा था—बुद्धिमानी और वाक्पटुता के साथ नहीं, ताकि मसीह का क्रूस अपनी शक्ति न खो दे।" चूँकि पौलुस ने प्रभु यीशु से मिले मिशन—परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देना—की तुलना में अपने जीवन को कोई महत्व नहीं दिया, इसलिए उन्होंने हर तरह की मुसीबत और पीड़ा सहते हुए भी यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने में अपना जीवन लगा दिया। उनके लिए, प्रभु द्वारा सौंपा गया मिशन—सुसमाचार का प्रचार—उनके अपने जीवन से अधिक महत्वपूर्ण था। इसलिए, जब उन्होंने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा, तो वे चाहते थे कि वे जानें कि सुसमाचार के लिए उनकी कैद ने वास्तव में सुसमाचार के प्रसार को आगे बढ़ाने का काम किया है, न कि केवल इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया

जाए कि वे शारीरिक रूप से जेल में बंद थे (फिलिप्पियों 1:12)। उन्होंने फिलिप्पी चर्च के संतों के साथ अपनी खुशी बांटी। उन्हें यह जानकर बहुत खुशी हुई कि उनकी कैद के कारण यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार हुआ—एक ऐसा सुसमाचार जिसे बांधा नहीं जा सकता था। फिर, आज के वचन—फिलिप्पियों 1:20—में पौलुस ने उनके साथ अपनी गहरी उम्मीद और आशा साझा की: कि उनके शरीर में मसीह की महिमा हो। पौलुस की ज़बरदस्त इच्छा थी कि वह हमेशा की तरह, बिना किसी शर्म के, पूरी निडरता और हिम्मत के साथ यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते रहें। उनका मानना था कि यह वह मिशन है जो प्रभु ने उन्हें सौंपा है, और इस मिशन को ईमानदारी से पूरा करने से ही मसीह की महिमा होगी। वह मसीह की इस महिमा को इतनी शिद्दत से चाहते थे कि वह चाहते थे कि यह "चाहे जीवन में हो या मृत्यु में" (वचन 20) हो। इस गहरी इच्छा का कारण उनका यह पक्का विश्वास था कि "मेरे लिए जीना मसीह है और मरना लाभ है" (वचन 21)। इसका क्या मतलब है? क्योंकि मसीह ही वर्तमान में उनका जीवन थे, इसलिए वह जानते थे कि मृत्यु भी लाभ ही होगी; इसलिए, वह सुसमाचार की निडरता से गवाही देकर मसीह की महिमा करने की गहरी इच्छा रखते थे, और इस प्रक्रिया में किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते थे—यहाँ तक कि अपने जीवन की भी नहीं।

क्या आप मानते हैं कि यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना आपके अपने जीवन से ज़्यादा कीमती है? यदि हाँ, तो क्या आप उस सुसमाचार—जो जीवन से भी ज़्यादा अनमोल संदेश है—को फैलाते हुए मरने को तैयार हैं? इसके अलावा, क्या आप प्रेरित पौलुस की तरह यह मानते हैं कि चूँकि मसीह अब आपका जीवन हैं, इसलिए मृत्यु के बाद आपकी स्थिति भी लाभ की होगी? यदि आप सचमुच विश्वास करते हैं, तो आप—प्रेरित पौलुस की तरह—प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करके मसीह की महिमा करने में अपना पूरा जीवन लगा देंगे, चाहे जीवन में हो या मृत्यु में। वास्तव में, आज के वचन—फिलिप्पियों 1:23—में प्रेरित पौलुस कहते हैं कि "इस दुनिया से विदा होना और मसीह के साथ होना कहीं बेहतर है" और वह ठीक ऐसा ही करने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं। वह खुद को "दोनों के बीच फंसा हुआ" (वचन 23) बताते हैं। यहाँ "दोनों" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है इस धरती पर शरीर में जीना (वचन 22) और मसीह के साथ रहने के लिए इस दुनिया से विदा होना (वचन 23)। क्या आपने भी खुद को पौलुस की तरह इन दो विकल्पों के बीच फंसा हुआ नहीं पाया है? एक तरफ़ तो इस दुनिया को छोड़कर स्वर्ग जाने और प्रभु के साथ रहने की इच्छा होती है; दूसरी तरफ़ यह सोच होती है कि हमें धरती पर ही रहना चाहिए ताकि उस मिशन को पूरा कर सकें जो प्रभु ने हमें सौंपा है। बेशक, मेरा मानना

है कि जब तक हम प्रभु द्वारा दिए गए मिशन को पूरा नहीं कर लेते, तब तक वे हमें इस धरती से अपने पास नहीं बुलाते। फिर भी, कभी-कभी उस मिशन को पूरा करना इतना मुश्किल और दर्दनाक हो जाता है कि हम चाहते हैं कि प्रभु हमें जल्द ही अपने पास बुला लें। यह बात तब और भी सच लगती है जब हमें 'प्रकाशितवाक्य 21:4' का वह वादा याद आता है—कि स्वर्ग में प्रभु "उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देंगे," और "वहाँ न तो मौत होगी, न मातम, न रोना-धोना और न ही कोई दर्द।" इस बारे में सोचते हुए, हम अक्सर स्वर्ग जाने के लिए और भी ज़्यादा तड़पने लगते हैं, खासकर तब जब हम इस दुनिया के जमा हुए दुखों, दर्दों और नश्वरता का सामना कर रहे होते हैं। धरती पर शरीर में जीने और मसीह के साथ रहने के लिए चले जाने के बीच फँसे पौलुस को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या चुने (फिलिप्पियों 1:22–23)। अगर वह सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहे होते, तो वह इस दुनिया को छोड़कर मसीह के साथ रहना पसंद करते, क्योंकि धरती पर शरीर में जीने की तुलना में वह कहीं बेहतर था (वचन 23)। फिर भी, पौलुस जानते थे कि शरीर में बने रहना फिलिप्पी कलीसिया के संतों के लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद था (वचन 24)। धरती पर पौलुस का जीवन बने रहना उनके लिए किस तरह फ़ायदेमंद था? इसलिए, क्योंकि उनकी मौजूदगी से उनके "विश्वास में तरक्की और खुशी" को बढ़ावा मिलता था (वचन 25)।

जब भी मैं इस हिस्से पर सोचता हूँ, मुझे याद आता है कि हम ईसाइयों के होने का एक साफ़ मकसद होना चाहिए। हमारी ज़िंदगी का मकसद क्या है? यह बस भगवान की बड़ाई करना और हमेशा उनका आनंद लेना है (वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म, सवाल 1)। तो फिर, हम भगवान की बड़ाई कैसे कर सकते हैं और हमेशा उनका आनंद कैसे ले सकते हैं? यह मौत तक भगवान की मर्ज़ी मानकर किया जा सकता है, जैसा कि यीशु ने किया था (फिलिप्पियों 2:8)। मौत तक इस बात को मानने में, पॉल ने अपनी जान को अपने लिए प्यारा नहीं समझा, क्योंकि उसने प्रभु से मिले मिशन को पूरा किया: भगवान की कृपा की खुशखबरी की गवाही देना। इस तरह, भले ही वह कैद में रहते हुए फिलिप्पी के संतों को लिख रहा था, फिर भी वह खुश हुआ—और खुश होता रहेगा—यह खबर सुनकर कि खुशखबरी आगे बढ़ रही है (पद 12; पद 18)। जब उसने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा, तो उसने कहा कि शरीर में रहना उनके विश्वास में तरक्की और खुशी के लिए फायदेमंद है (verse 24) और उसे पूरा यकीन था कि वह उनके साथ रहेगा और उनके साथ बना रहेगा (verse 25)। इसके अलावा, पॉल चाहता था कि उनके साथ उसकी मौजूदगी—उनकी तरक्की और विश्वास में खुशी के लिए—उसकी वजह

से मसीह यीशु में उनके घमंड को बढ़ाए (verse 26)। दूसरे शब्दों में, पॉल चाहता था कि फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच उसकी मुलाकात और मौजूदगी का नतीजा मसीह यीशु में उनके खुशी भरे घमंड में बह निकलना हो (verse 26)। जेल में रहते हुए भी, पॉल खुशखबरी की तरक्की की खबर से बहुत खुश हुआ और चाहता था कि फिलिप्पी के विश्वासी भी उसकी वजह से बहुत खुशी महसूस करें। यह खुशी यीशु मसीह के खुशखबरी की तरक्की और फिलिप्पी के चर्च में विश्वासियों के विश्वास में बढ़ोतरी से आती है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी इस खुशी का अनुभव कर सकें।

बाइबल में प्रेरितों के काम 4:12 में साफ़-साफ़ लिखा है: "किसी और में उद्धार नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे इंसानों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिससे हम बच सकें।" ठीक इसीलिए पॉल यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए इतने प्रेरित हुए। वह इतने जोश से सुसमाचार का प्रचार करना चाहते थे कि उन्होंने 1 कुरिन्थियों 9:16 में कहा: "क्योंकि अगर मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ, तो मुझे घमंड करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि यह मेरे लिए ज़रूरी है; हाँ, अगर मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ तो मुझ पर अफ़सोस!" पॉल के पास घमंड करने के लिए अपनी कोई चीज़ नहीं थी; वह सिर्फ़ प्रभु यीशु मसीह पर घमंड करना चाहते थे। वह मसीह के सुसमाचार के अलावा कुछ भी प्रचार नहीं करना चाहते थे। क्योंकि सुसमाचार का प्रचार करना एक फ़र्ज़ था जिसे पूरा करना उनके लिए मजबूरी थी, इसलिए उन्होंने कहा कि अगर वह ऐसा करने में नाकाम रहे तो "मुझ पर अफ़सोस"। पॉल को सुसमाचार का प्रचार करने की इतनी ज़्यादा इच्छा क्यों थी? उन्होंने सुसमाचार को आगे बढ़ाने के लिए अपनी ज़िंदगी – सब कुछ दांव पर लगाकर – क्यों लगा दी? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह चाहता था कि मसीह उसके शरीर में महान हो, चाहे जीवन से या मृत्यु से, उसे मिले मिशन को ईमानदारी से पूरा करने के ज़रिए (फिलिप्पियों 1:20)। हम भी, ईमानदारी से सुसमाचार का प्रचार करने का मिशन पूरा करें और ऐसे लोग बनें जो मसीह को महान बनाएं, चाहे जीवन में या मृत्यु में।

"मेरे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपने सारे मामले तुझे सौंपता हूं और चुपचाप स्वर्ग के शहर की ओर यात्रा करता हूं; चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं, तेरी इच्छा पूरी हो।"

(न्यू हाइमनल नंबर 549, "मेरे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो," श्लोक 3)।

मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का क्या अर्थ है? (1)

“बस तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो, ताकि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ या दूर रहूँ, तुम्हारे बारे में यह सुन सकूँ कि तुम एक आत्मा में दृढ़ खड़े हो, और एक मन होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए कंधे से कंधा मिलाकर प्रयास कर रहे हो” (फिलिप्पियों 1:27)।

जब आप अपने प्यारे बच्चों के बारे में सोचते हैं, तो क्या आपके मन में उनके लिए कुछ खास उम्मीदें और प्रार्थनाएँ नहीं होतीं? उन उम्मीदों में से एक शायद यह होती है कि आपके बच्चे एक-दूसरे से प्यार करें और मिल-जुलकर रहें। कोई भी माता-पिता अपने बच्चों को मरने से पहले लड़ते-झगड़ते नहीं देखना चाहता; हर माता-पिता की इच्छा होती है कि उनके बच्चे आपस में अच्छी तरह रहें, एक-दूसरे से प्यार करें और शांति से जीवन बिताएँ। विश्वास के एक पिता के तौर पर, मेरे अपने तीन बच्चों के लिए मेरी एक खास उम्मीद और प्रार्थना है: कि वे सभी यीशु में अपने विश्वास में मज़बूत हों, प्रभु की कलीसिया की सेवा मिलकर करें, और प्रभु का काम करने के लिए एकजुट हों। हालाँकि यह बहुत अच्छा होगा अगर वे एक ही कलीसिया में प्रभु की सेवा कर सकें, लेकिन अगर वे बाद में शादी करके अलग-अलग कलीसियाओं में सेवा भी करते हैं, तो भी मेरी इच्छा है कि तीनों जोड़े प्रभु के लिए काम करते हुए एक-दूसरे का समर्थन करें—भले ही अप्रत्यक्ष रूप से ही सही। मेरी योजना है कि किसी दिन मैं अपनी यह इच्छा अपने तीनों बच्चों के साथ साझा करूँ।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:27 में, प्रेरित पौलुस रोम की जेल से फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखता है। वह उन्हें "मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने" (वचन 27) के लिए प्रोत्साहित करता है और बताता है कि

एक खास बात है जो वह उनके बारे में सुनना चाहता है (वचन 28)। पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों के बारे में क्या सुनना चाहता था? वह यह खबर सुनना चाहता था कि फिलिप्पी कलीसिया के सभी भाई-बहन "एक आत्मा में दृढ़ खड़े हैं, और एक मन होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए कंधे से कंधा मिलाकर प्रयास कर रहे हैं" (वचन 27)। यहाँ हमारे विचार करने के लिए लगभग चार बातें हैं:

पहली बात है "दृढ़ खड़े रहने" का विचार।

जब मैं सोचता हूँ कि हमारे चर्च के संस्थापक पादरी—जो अब रिटायर हो चुके हैं और मिशन के काम में लगे हैं—हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के बारे में क्या खबर सुनना सबसे ज़्यादा पसंद करेंगे, तो मुझे लगता है कि वे यही सुनना चाहेंगे कि हमारे चर्च परिवार के सभी सदस्य अपने विश्वास में मज़बूती से खड़े हैं। मुझे लगता है कि उन्हें यह सुनकर बहुत खुशी होगी और वे परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे कि तरह-तरह की मुश्किलों और परेशानियों के बावजूद हमारे चर्च परिवार का विश्वास डगमगाया नहीं है; बल्कि, वे बिना दाएं-बाएं भटके और भी मज़बूती से खड़े हैं। आज के वचन—फिलिप्पियों 1:27–28—में पौलुस फिलिप्पी चर्च के संतों से कहते हैं कि "मसीह के सुसमाचार के योग्य चाल चलो," और फिर वे एक खास बात का ज़िक्र करते हैं जो वे उनके बारे में सुनना चाहते हैं। वे जो बातें सुनना चाहते थे, उनमें से एक यह थी कि वे मज़बूती से खड़े रहें (वचन 27)। वे खास तौर पर यह सुनना चाहते थे कि वे अपने "विरोधियों" (वचन 28) की वजह से होने वाले "दुख" (वचन 29–30) का सामना करते हुए भी मज़बूती से खड़े हैं। इसीलिए उन्होंने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा: "इसलिए, मेरे भाइयों, जिनसे मैं प्यार करता हूँ और जिनसे मिलने की इच्छा रखता हूँ, जो मेरी खुशी और मेरा ताज हैं, प्रभु में इसी तरह मज़बूती से खड़े रहो" (4:1)। बाइबल हमें बताती है: "सावधान रहो; विश्वास में मज़बूती से खड़े रहो; हिम्मत रखो; मज़बूत बनो" (1 कुरिन्थियों 16:13), और "इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मज़बूती से खड़े रहो। किसी भी चीज़ से मत डगमगाओ। हमेशा प्रभु के काम में पूरी तरह से लगे रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु के लिए तुम्हारी मेहनत बेकार नहीं जाती" (1 कुरिन्थियों 15:58)। हम दुख के बीच भी मज़बूती से कैसे खड़े रह सकते हैं? विश्वास के ज़रिए ही हम मज़बूती से खड़े रह पाते हैं (2 कुरिन्थियों 1:24)। हम विश्वास में तब मज़बूती से खड़े रह सकते हैं जब हम परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं को मज़बूती से थामे रहते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। सच तो यह है कि परमेश्वर ही हमें मसीह में मज़बूती से स्थापित करता है (2 कुरिन्थियों 1:21)।

दूसरी बात है "एक आत्मा।"

क्या आपको लगता है कि आपके चर्च के सदस्य आत्मा में एक हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं और प्रभु का काम करने के लिए मिलकर काम करते हैं? शायद ही ऐसे लोग मिलें जो इस सवाल का जवाब बिना किसी हिचकिचाहट के—यहाँ तक कि अपने मन में भी—"हाँ" में दे सकें। असल परिवारों में भी—चाहे पति-पत्नी हों, भाई-बहन हों, या माता-पिता और बच्चों का रिश्ता हो—एक मन और एक भावना बनाए रखना कितना मुश्किल होता है; इसे देखते हुए कोई भी सोच सकता है कि चर्च के आध्यात्मिक परिवार के सदस्य प्रभु के काम में एक-दूसरे के साथ एक मन होकर कैसे सहयोग कर सकते हैं। आज के वचन, फिलिप्पियों 1:27 में, जब प्रेरित पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से "एक आत्मा" (या एक मन) की बात करते हैं, तो धर्मशास्त्री क्रेडेनस का कहना है कि इस शब्द का अर्थ "समझ" है (पार्क युन-सन)। अगर यह व्याख्या सही है, तो पौलुस फिलिप्पी चर्च के विश्वासियों को एक-दूसरे को समझने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। क्या आप एक-दूसरे को देखते समय हमारे चर्च के सदस्यों को समझते हैं? हममें अनगिनत अंतर होने के बावजूद, क्या आप सच में एक-दूसरे को समझते हैं और एक ही चर्च परिवार के सदस्य के रूप में प्रभु में संगति रखते हैं? चर्च के जीवन में, ऐसे लोगों से मिलना तय है जिन्हें आप पूरी तरह से नहीं समझते। अगर शादीशुदा जोड़ों में भी एक-दूसरे से इतना अंतर होता है, तो चर्च के सदस्यों के बीच यह अंतर कितना ज़्यादा हो सकता है! फिर भी, फिलिप्पियों 1:27 में, बाइबल हमें सुसमाचार के विश्वास के लिए "एक मन" होकर सहयोग करने के लिए कहती है। खासकर, फिलिप्पियों 4:2 में, पौलुस ने दो बहनों—यूओदिया और सुन्तुखे—से आग्रह किया कि वे "प्रभु में एक-दूसरे से सहमत हों।" ऐसा इसलिए था क्योंकि फिलिप्पी चर्च में जोश के साथ सेवा करने के बावजूद, वे एक मन नहीं हो पा रही थीं।

तो फिर, हम एक मन होकर कैसे सहयोग कर सकते हैं? मुझे इसका जवाब फिलिप्पियों 2:2–3 में मिला: "एक जैसा सोचकर, एक जैसा प्यार रखकर, आत्मा में एक और मन में एक होकर मेरी खुशी पूरी करो। स्वार्थ या घमंड में आकर कुछ न करो। बल्कि, नम्रता के साथ दूसरों को खुद से बेहतर समझो।" सुसमाचार के लिए चर्च के सदस्यों का एक मन होकर सहयोग करने के लिए, हम सभी का दिल नम्र होना चाहिए। जब हम सब यीशु के नम्र दिल को अपनाते हैं, तभी हम एक-दूसरे को समझ सकते हैं, सहयोग कर सकते हैं

और एकता के साथ प्रभु का काम कर सकते हैं। इसके उलट, अगर हमारे अंदर अहंकार है, तो हम कभी भी एक मन होकर प्रभु का काम नहीं कर सकते। अगर हम यह सोचते हैं कि "मैं उस व्यक्ति से बेहतर हूँ," तो हम प्रभु का काम पूरा करने के लिए एक-दूसरे का पूरा सहयोग नहीं कर सकते। इसलिए, अगर हमें एक दिल और आपसी सहयोग से प्रभु के लिए काम करना है, तो हमें सबसे ज़्यादा अहंकार से बचना चाहिए। खासकर, हमें आध्यात्मिक श्रेष्ठता की भावना से सावधान रहना चाहिए। मेरी उम्मीद है कि हम सब यीशु के विनम्र दिल का अनुकरण करें, एकता में मज़बूती से खड़े रहें और एक-दूसरे का सहयोग करें।

तीसरी बात है "एक मन"।

कैल्विन के अनुसार, यहाँ "एक मन" का मतलब है "इच्छा और चाहत"। फिलिप्पी के संतों को लिखे अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस ने यह सुनने की इच्छा जताई कि वे सुसमाचार के विश्वास के लिए एक मन होकर सहयोग कर रहे थे। दूसरे शब्दों में, वह यह सुनना चाहते थे कि वे प्रभु का काम कर रहे थे—उनकी इच्छा पूरी कर रहे थे—एक जैसी इच्छा और चाहत के साथ, प्रभु के विनम्र दिल से एकजुट होकर। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पियों 2:2 में फिलिप्पी के विश्वासियों से "एक मकसद" रखने का आग्रह किया। हम अपने मकसद को कैसे एकजुट कर सकते हैं, ताकत कैसे मिला सकते हैं और प्रभु के काम में एक-दूसरे की मदद कैसे कर सकते हैं? अगर हममें से हर कोई अपने विचारों और इच्छाओं के अनुसार काम करता है, तो हम चर्च—मसीह की देह—की सेवा एक दिल और एक मन से नहीं कर सकते; इसके बजाय, हम बस अपनी व्यक्तिगत पसंद और इच्छाओं के अनुसार प्रभु का काम कर रहे होंगे। हालाँकि, अगर हम सब अपनी इच्छाओं को एक तरफ रख दें और मिलकर प्रभु की इच्छा को पूरा करें, तो हम एक दिल और एक मन से प्रभु का काम करने में सहयोग कर सकेंगे। इसलिए, हम सभी को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को एक तरफ रखना चाहिए और मिलकर प्रभु की इच्छा को जानना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए: "हे प्रभु, मेरी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि तेरी इच्छा के अनुसार हो।"

चौथी और आखिरी बात है "सुसमाचार के विश्वास के लिए।"

इसका क्या मतलब है? "सुसमाचार का विश्वास" क्या है? इसका अर्थ समझने के लिए, हमें फिलिप्पियों 1:20 को फिर से देखना होगा, जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं। प्रेरित पौलुस ने स्वीकार किया कि चाहे जीवन हो या मृत्यु, उनकी यही इच्छा थी कि प्रभु यीशु मसीह की महिमा हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हम कह सकते हैं कि सुसमाचार का विश्वास मसीह-केंद्रित जीवन है। दूसरे शब्दों में, मसीह-केंद्रित जीवन असल में पूरी तरह से सुसमाचार पर केंद्रित जीवन है। "पौलुस के लिए, सुसमाचार ही सब कुछ है; प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार ही उनके पूरे जीवन का सार है। इसीलिए उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के इसे 'सुसमाचार का विश्वास' कहा। इससे पता चलता है कि वे मसीह के सुसमाचार से कितने गहरे जुड़े हुए थे और उन्होंने इसे कितनी मजबूती से थामे रखा था। मसीह के सुसमाचार के लिए वे किसी भी खतरे का सामना करने से पीछे नहीं हटते थे। 'सुसमाचार का विश्वास' का अर्थ है सुसमाचार पर केंद्रित जीवन... विश्वास ही सुसमाचार है, और सुसमाचार ही विश्वास है; विश्वास के द्वारा जीवन प्रकट होता है, और सुसमाचार के द्वारा विश्वास प्रकट होता है। पौलुस ने अपने जीवन को—जो पूरी तरह से मसीह के सुसमाचार पर केंद्रित था—सुसमाचार के विश्वास के रूप में वर्णित किया" (इंटरनेट)। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि वे एक मन और एक आत्मा के साथ दृढ़ रहें और सुसमाचार के इस विश्वास के लिए एक-दूसरे का सहयोग करें। इसका कारण यह है कि ऐसा करना "मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीना" है (वचन 27)।

मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का अर्थ है एक मन और एक आत्मा के साथ खड़े होना और सुसमाचार के विश्वास के लिए एक-दूसरे का सहयोग करना। प्रेरित पौलुस की इन बातों को सुनकर, हमें भी एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। हम सभी को एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए और मिलकर काम करना चाहिए। हमारी कलीसिया के सभी सदस्यों को यीशु मसीह के सुसमाचार के विश्वास के लिए एक हृदय और एक मन से सहयोग करना चाहिए। हम सभी को अपने अहंकार को त्याग देना चाहिए, यीशु की विनम्रता का अनुकरण करना चाहिए और यीशु मसीह के मन के साथ मसीह-केंद्रित जीवन जीना चाहिए। हम सभी को पूरी लगन से अपनी इच्छाओं को क्रूस के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए और केवल प्रभु की इच्छा को ही खोजना चाहिए। चाहे हम जिएं या मरें, हम प्रभु के हैं; हमें केवल उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए।

मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का क्या अर्थ है? (2)

"...और किसी भी बात में अपने विरोधियों से न डरो; क्योंकि यह उनके लिए विनाश का, और तुम्हारे लिए उद्धार का प्रमाण है, और यह परमेश्वर की ओर से है" (फिलिप्पियों 1:28)।

जाने-माने लेखक पास्टर जॉन मैक्सवेल, जिन्होंने लीडरशिप (नेतृत्व) पर बहुत कुछ लिखा है, ने *पावर लीडरशिप* नाम की एक किताब लिखी। इसमें वे एडी रिकेनबैकर की कहानी बताते हैं, जो एक मशहूर अमेरिकी फाइटर पायलट थे और "एस पायलट" (बेहतरीन पायलट) के तौर पर जाने जाते थे। पहले विश्व युद्ध के आखिर तक, रिकेनबैकर ने 300 घंटे की कॉम्बैट फ्लाइट (लड़ाई के दौरान उड़ान) पूरी कर ली थी—जो अमेरिकी पायलटों में सबसे ज़्यादा थी—और उन्होंने 134 बार दुश्मन के विमानों का सामना किया था, जिनमें से 26 को मार गिराया था। उनकी सेवा के सम्मान में, उन्हें मेडल ऑफ़ ऑनर, आठ डिस्टिंग्विश्ड सर्विस क्रॉस और फ्रेंच लीजन ऑफ़ ऑनर मिला। उन्होंने जो हिम्मत दिखाई, उसके लिए उन्हें "अमेरिकन एस ऑफ़ एसेस" का खिताब मिला। जब एक दिन उनसे लड़ाई के दौरान दिखाई गई हिम्मत के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा था: "हिम्मत वह काम करना है जिससे आपको डर लगता है।" "हिम्मत वह काम करना है जिससे आपको डर लगता है; जब तक आप डरते नहीं, तब तक हिम्मत नहीं हो सकती।"

आपको किस चीज़ से डर लगता है? किन खास हालात से आप डरते हैं? हैरानी की बात है कि कनाडा में हुई एक स्टडी से पता चला कि दुनिया में लोग सबसे ज़्यादा प्रेजेंटेशन देने से—यानी सबके सामने बोलने से—डरते हैं (41%)। इसके बाद ऊँचाई से डर (32%), पैसों की दिक्कतें (22%), गहरे पानी से डर (22%), बीमारी (19%),

मौत (19%) और अंधेरे से डर (8%) का नंबर आता है। लोग मौत से ज़्यादा प्रेजेंटेशन से क्यों डरते हैं, इसकी वजह यह हो सकती है कि मौत एक अनजान अनुभव है, जबकि प्रेजेंटेशन ऐसी चीज़ है जिसका वे पहले ही सामना कर चुके हैं और जिसे उन्होंने डरावना पाया है। प्रेजेंटेशन के बाद, हो सकता है कि किसी को याद न रहे कि क्या कहा गया था, ज़रूरी बातें भूल जाएँ या हकलाने लगें; यह फीडबैक मिलना कि ऑडियंस एक शब्द भी नहीं समझ पाई, या बॉस से डांट सुनना, ऐसे डर और शर्म को जन्म दे सकता है—बस कहीं गायब हो जाने की इच्छा—जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी के डर से कहीं ज़्यादा होता है। ऐसे डरावने अनुभवों का बार-बार सामना करने से आसानी से एंथ्रोपोफोबिया (सोशल फोबिया या लोगों के बीच जाने का डर) हो सकता है। इस स्थिति को एक फोबिया (डर) के तौर पर देखा जाता है, जिसमें व्यक्ति को सामाजिक स्थितियों—जैसे अजनबियों से बात करना या सबके सामने बोलना—से डर और घबराहट होती है। इस वजह से, वह व्यक्ति जब भी हो सके, ऐसी स्थितियों से बचने की कोशिश करता है। खास तौर पर, इसके लक्षणों में दूसरों से ठीक से बात न कर पाना या मन में यह लगातार डर बने रहना शामिल है कि दूसरे उन्हें गलत नज़रिए से देख सकते हैं; सामाजिक मेल-जोल या दूसरों के साथ रहने को लेकर होने वाली इसी घबराहट और डर की वजह से वे लोगों से मिलना-जुलना ही छोड़ देते हैं।

ज़रा उस स्थिति की कल्पना कीजिए। आज के हिस्से में बताए गए फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों के नज़रिए से सोचिए। जब उन्होंने फिलिप्पियों के नाम लिखा पत्र पढ़ा—जिसे प्रेरित पौलुस ने जेल से लिखा था—तो उन्हें पक्का पता था कि पौलुस को रोम में यीशु मसीह और उनके सुसमाचार की वजह से कैद किया गया था। इसलिए, उन्हें यह अंदाज़ा ज़रूर रहा होगा कि अगर वे भी यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो उन्हें भी जेल या किसी और तरह के ज़ुल्म का सामना करना पड़ सकता है। इस उम्मीद को देखते हुए—और यह जानते हुए कि सुसमाचार सुनाने पर ज़ुल्म हो सकता है—इंसानी फितरत उन्हें स्वाभाविक रूप से ऐसे दुख से डरने और उन स्थितियों से बचने के लिए प्रेरित करती जिनसे ऐसा दुख हो सकता है; हो सकता है कि वे पौलुस की तरह सबके सामने सुसमाचार सुनाने के बजाय चुपके से सुनाना चुनते, या शायद इसे फैलाने से पूरी तरह बचते। फिर भी, जैसा कि हमने पहले भी सोचा है, फिलिप्पियों 1:14 बताता है कि "ज़्यादातर भाई मेरी [पौलुस की] कैद की वजह से प्रभु में हिम्मत वाले हो गए हैं और बिना डरे परमेश्वर के वचन का प्रचार करने की और भी ज़्यादा हिम्मत कर रहे हैं।" यह निश्चित रूप से सिर्फ़ इंसानी कोशिश से नहीं हुआ था। यह काम पवित्र आत्मा ने फिलिप्पी

कलीसिया के विश्वासियों के दिलों में काम करके किया था। इस बात को जानते हुए—और यह समझते हुए कि मसीह का ही प्रचार किया जा रहा था—पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा, "मैं खुश हूँ, और खुश होता रहूँगा" (पद 18)। इसके बाद उन्होंने अपनी गहरी उम्मीद और आशा के बारे में बताया (पद 20–26)। खास तौर पर, उन्होंने कहा कि उनकी गहरी इच्छा यह थी कि उन्हें किसी भी तरह से शर्मिंदा न होना पड़े, बल्कि वे पूरी तरह हिम्मत बनाए रखें—जैसा कि वे हमेशा से रहे थे—ताकि उनके शरीर के ज़रिए मसीह की महिमा हो, चाहे ज़िंदगी से हो या मौत से (पद 20)। जब प्रभु द्वारा सौंपे गए मिशन—परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देने—की बात आई, तो पौलुस ने अपनी जान की परवाह नहीं की। चाहे ज़िंदगी हो या मौत, उनकी दिली इच्छा बस यही थी कि वे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें। वे जानते थे कि इस सुसमाचार को फैलाने के लिए उन्हें सताया जाएगा, और सचमुच, उन्होंने बहुत कष्ट सहे। फिर भी, पौलुस को सुसमाचार पर कोई शर्म नहीं थी और वे पूरी निडरता के साथ इसका प्रचार करते रहे। फिलिप्पी के कई विश्वासी भी परमेश्वर के वचन का निडरता और बढ़ते साहस के साथ प्रचार कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस करते थे। यह खबर सुनकर पौलुस ने उन्हें लिखे अपने पत्र में खुशी ज़ाहिर की और कहा, "मैं आनंदित हूँ, और आनंदित होता रहूँगा।" फिर, आज के हिस्से—फिलिप्पियों 1:27—में उन्होंने विश्वासियों से आग्रह किया कि वे "मसीह के सुसमाचार के योग्य चाल चलें।" ऐसा करके, पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा कि वे ऐसा जीवन जिएं जो मसीह के सुसमाचार के अनुकूल हो... जीवन जीने के तरीके पर चर्चा करते हुए, पौलुस ने आज के हिस्से की आयत 28 में दूसरी बात यह कही: "अपने विरोधियों से किसी भी बात में न डरो।" पौलुस ने उनसे ऐसा क्यों कहा? वे चाहते थे कि फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी अपने विरोधियों के सामने निडर होकर खड़े रहें; कम से कम, वे यह सुनना चाहते थे कि जो लोग उनका विरोध कर रहे थे, उनसे वे डरे नहीं। पौलुस की इच्छा थी कि जिस तरह वे खुद निडर होकर परमेश्वर के वचन (प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार) का प्रचार कर रहे थे—भले ही उसी सुसमाचार के कारण उन्हें जेल में डाल दिया गया था—उसी तरह फिलिप्पी के लोग भी अपने जीवन के ज़रिए निडरता से इसका प्रचार करें। इसलिए, उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे "मसीह के सुसमाचार के योग्य चाल चलें" (आयत 27) और उन्हें सलाह दी कि वे "अपने विरोधियों से किसी भी बात में न डरें" (आयत 28)। इसके अलावा, आयत 28 के दूसरे हिस्से में, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को दिलासा देते हुए कहा: "...यह उनके लिए विनाश का संकेत है, लेकिन तुम्हारे उद्धार का—और वह भी परमेश्वर की ओर से।" इसका क्या मतलब है? पॉल फिलिप्पी चर्च के

विश्वासियों को दिलासा देते हुए कहते हैं: "तुम पर जो ज़ुल्म हो रहे हैं, वे तुम्हारे विरोधियों के विनाश का सबूत हैं, लेकिन तुम्हारे लिए, ये उद्धार का सबूत हैं। विश्वास के साथ आखिर तक उन ज़ुल्मों को सहने और उन पर जीत हासिल करने की तुम्हारी क्षमता इस बात का सबूत है कि तुम उद्धार पा चुके हो। परमेश्वर तुम्हें सहने की शक्ति देगा और उन ज़ुल्मों पर जीत हासिल करने के काबिल बनाएगा।" पॉल यह पत्र फिलिप्पी के विश्वासियों को दिलासा देने के लिए लिख रहे हैं—जो उनकी तरह ही यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए ज़ुल्म सह रहे हैं—और वे यह सुनना चाहते हैं कि वे अपने विरोधियों से डरते नहीं हैं। यीशु और उनके सुसमाचार के लिए ज़ुल्म और तकलीफ़ें सहना हमारे उद्धार का सबूत है। परमेश्वर हमें ऐसे ज़ुल्मों और तकलीफ़ों को सहने और उन पर जीत हासिल करने की शक्ति और हिम्मत देगा। इसलिए, जो लोग यीशु मसीह के कारण हमारा विरोध करते हैं, उनसे हमें डरना नहीं चाहिए।

कुछ समय पहले, मुझे एक महिला का काकाओटॉक (KakaoTalk) मैसेज मिला जिसमें लिखा था, "ज़रूरी सूचना: आज सुबह (21 सितंबर) मिडिल ईस्ट में एक मिशनरी से प्रार्थना के लिए अनुरोध मिला है।" इसमें एक वेबसाइट का लिंक था, जिसे मैंने खोला। उस साइट पर दो ईमेल की जानकारी थी जो एक महिला ने अपने मिशनरी दोस्तों को भेजे थे। ये ईमेल उस इलाके से भेजे गए थे जहाँ IS (इस्लामिक स्टेट, इराक का एक चरमपंथी आतंकवादी समूह) का हमला हो रहा था। ईमेल से पता चला कि जहाँ UN (संयुक्त राष्ट्र) IS के कब्ज़े वाले इलाकों से हट चुका था, वहीं मिशनरियों ने वहाँ रुकने का फ़ैसला किया। उन्होंने रुकने का फ़ैसला इसलिए किया क्योंकि वहाँ अभी भी ईसाई परिवार मौजूद थे। इन ईसाई परिवारों के रुकने की वजह—जबकि दूसरे लोग भाग गए थे—यह थी कि उनके बच्चे शहीद हो चुके थे। एक मिशनरी के अनुसार, IS के आतंकवादी घर-घर जाकर बच्चों को जीसस (ईसा मसीह) को छोड़ने के लिए मजबूर कर रहे थे; फिर भी, एक भी बच्चे ने उन्हें नहीं नकारा, और सभी को मार डाला गया। ऐसा लगता है कि IS के आतंकवादियों ने बच्चों का सिर काट दिया था। हालाँकि, जिन बच्चों ने धर्म बदलने से इनकार किया, उन्हें तो आतंकवादियों ने मार डाला, लेकिन ज़ाहिर है कि उन्होंने माता-पिता को नहीं मारा। नतीजतन, माता-पिता उसी इलाके में बने हुए हैं और अपने बच्चों की तरह शहादत का सामना करने के लिए तैयार हैं, और मिशनरियों ने इन ईसाई परिवारों का साथ देने के लिए वहाँ रुकने का फ़ैसला किया है। ईमेल का एक हिस्सा इस प्रकार है: "उन्होंने वहाँ के ईसाई परिवारों की खातिर रुकने का फ़ैसला किया है, भले ही इसका मतलब उनकी अपनी मौत ही क्यों न हो। वे डरे हुए हैं और उन्हें समझ नहीं आ रहा कि उन माता-पिता की सेवा कैसे शुरू करें जिन्होंने अपने बच्चों को शहीद होते देखा है। फिर भी, हमारे

मिशनरी दोस्त का कहना है कि उन्हें विश्वास है कि परमेश्वर ने उन्हें इस जगह और इस समय अपनी आवाज़ और अपने हाथ बनने के लिए बुलाया है। इसके बावजूद, वे सच्चे दिल से प्रार्थना की अपील करते हैं कि उन्हें ऐसे खतरनाक हालात में अपनी बुलाहट के लायक जीने का साहस मिले—ताकि, अगर परमेश्वर उन्हें भी वैसे ही बुलाएँ जैसे उन बच्चों को बुलाया था, तो वे भी शहादत को सह सकें।" दोस्तों, ऐसी डरावनी स्थितियों का सामना करने से डरने के बजाय, हमें उस विश्वास की कमी से डरना चाहिए जो हमें उन स्थितियों से उबरने से रोकेगा। जो लोग हमारा विरोध करते हैं उनसे डरने के बजाय, हमें उस विश्वास की कमी से डरना चाहिए जो जीसस क्राइस्ट के सुसमाचार (गॉस्पेल) का निडरता से प्रचार करने के लिए ज़रूरी है। जो लोग जीसस क्राइस्ट और उनके सुसमाचार के कारण हमसे नफ़रत करते हैं, हमें तुच्छ समझते हैं, हमारा विरोध करते हैं और हमें सताते हैं, उनसे डरने के बजाय हमें परमेश्वर से डरना चाहिए। हम ईश्वर से डरें ताकि चाहे कैसी भी डरावनी परिस्थितियाँ हमारे सामने आएँ, हम उनकी मदद से हिम्मत जुटाकर अपने विश्वास पर मज़बूती से डटे रहें और हमें सौंपी गई ज़िम्मेदारी को पूरा करें: न केवल प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें, बल्कि उस सुसमाचार के योग्य जीवन भी जिएँ।

मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का क्या अर्थ है? (3)

[फिलिप्पियों 1:27–30]

आप "दुख" को कैसे देखते हैं? भजन संहिता 119:71 (पहला भाग) कहता है: "मेरे लिए दुख उठाना अच्छा था..." दुख हमारे लिए कैसे फायदेमंद है? इसके कम से कम दो कारण हैं:

(1) पहला, दुख का फायदा यह है कि यह हमें अपनी गलतियों का एहसास कराता है। भजन संहिता 119:67 (पहला भाग) देखें: "दुख उठाने से पहले मैं भटक गया था..." अक्सर, दुख आने से पहले, हमें पता नहीं होता कि हम गलत काम कर रहे हैं या गलत रास्ते पर चल रहे हैं। बेशक, कई बार हम जान-बूझकर गलत रास्ता चुनते हैं। हालाँकि, हम अक्सर आध्यात्मिक रूप से अंधे और बहरे होते हैं, और बिना किसी मकसद के भटकते रहते हैं—कभी बाएँ तो कभी दाएँ मुड़ते हुए—जबकि हमें उस सँकरे रास्ते पर चलना चाहिए जिस पर प्रभु चले थे। ऐसे समय में, प्रभु द्वारा आने दिया गया दुख हमें होश में लाता है। जैसे एक चरवाहा लड़का अपनी लाठी का इस्तेमाल करके भटकी हुई भेड़ को सही रास्ते पर वापस लाता है, वैसे ही प्रभु—हमारे चरवाहे—दुख की लाठी का इस्तेमाल करके हमें वापस लाते हैं जब हम भटक जाते हैं। यशायाह 53:6 में, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा: "हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे, हममें से हर कोई अपने ही रास्ते पर चल पड़ा था..." जब हम प्रभु के सँकरे रास्ते के बजाय दुनिया के चौड़े रास्ते पर चलते हैं, तो प्रभु हमें दुख भेजते हैं ताकि हमें अपनी भटकन (अपनी गलतियों) का एहसास हो।

(2) दूसरा, दुख का एक फायदा यह है कि यह हमें प्रभु के वचन को मानने के लिए प्रेरित करता है। भजन संहिता 119:67 देखें: "दुख उठाने से पहले मैं भटक गया था, लेकिन अब मैं तेरे वचन का पालन करता हूँ।"

यहाँ, हमें उन छह तरीकों पर विचार करना चाहिए जिनसे दुख हमें प्रभु के वचन को मानने के लिए प्रेरित करता है:

(1) दुख हमें प्रभु की आज्ञाओं पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है।

भजन संहिता 119:66 देखें: "मैंने तेरी आज्ञाओं पर विश्वास किया है..." दुख, जो गलत रास्ते पर चलने पर हमारी भटकन को उजागर करता है, हमें यू-टर्न लेने (वापस मुड़ने) के लिए मजबूर करता है; यह हमें विश्वास दिलाता है कि केवल प्रभु की आज्ञाएँ ही सही रास्ता दिखाती हैं। हर दिन, हम दो रास्तों में से एक को चुनकर जीते हैं: प्रभु का संकरा रास्ता या दुनिया का चौड़ा रास्ता। दूसरे शब्दों में, हर पल हम या तो प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना चुनते हैं या शैतान या दुनिया की बातों पर ध्यान देते हैं। दुख न केवल हमें अपनी गलत पसंद का एहसास कराता है, बल्कि—उन गलतियों के नतीजों से मिलने वाली प्यार भरी सीख के तौर पर—हमें सही रास्ते (प्रभु के रास्ते) पर ले जाता है, जिससे हम उनकी आज्ञाओं पर विश्वास करते हैं और उनके बताए रास्ते पर चलते हैं।

(2) दुख हमें "सही-गलत की समझ और ज्ञान" सिखाता है।

भजन संहिता 119:66 देखें: "...मुझे सही-गलत की समझ और ज्ञान सिखा।" हममें से कितने ईसाई हैं जिन्होंने "सही समझ"—यानी सही और गलत में फ़र्क करने की काबिलियत—खो दी है और अपनी अज्ञानता में गलत रास्ते पर चल रहे हैं? आध्यात्मिक समझ खोने की यह हालत पक्के यकीन के बजाय उलझन पैदा करती है। आखिर में, यह हमें प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर लगातार चलने से रोकती है; इसके बजाय, यह हमें दुनिया के रास्तों—यानी उलझन भरे रास्तों—पर भटकने के लिए मजबूर करती है। फिर भी, दुख के ज़रिए प्रभु हमें अज्ञानता और समझ खोने की उस दलदल से बचाते हैं। वह हमें सही आध्यात्मिक समझ और अपनी इच्छा का ज्ञान देते हैं, जिससे हम उनके वचन की ओर दौड़ पाते हैं।

(3) दुख हमें प्रभु की भलाई का अनुभव कराता है।

भजन संहिता 119:68 देखें: "तू भला है, और तू भलाई करता है..." दुख के ज़रिए प्रभु की भलाई का अनुभव करने (भजन संहिता 34:8) का सबसे बड़ा फ़ायदा या आशीष उस भले परमेश्वर को जानना है जो सब कुछ—दुख समेत—भलाई के लिए काम में लाता है (रोमियों 8:28)। हमारे भले परमेश्वर की महिमा हमारे जीवन में तब सबसे ज़्यादा चमकती है जब हम संघर्ष कर रहे होते हैं, तकलीफ में होते हैं, या थकान से टूट चुके होते हैं—यानी जब हम बहुत ज़्यादा दर्द और दुख के बीच होते हैं। इसीलिए, गहरे दुख में भी हम गा सकते हैं, "भले परमेश्वर, भले परमेश्वर, मेरे सचमुच भले परमेश्वर।"

(4) दुख हमें घमंडी लोगों के झूठ से नफ़रत करना सिखाता है।

भजन संहिता 119:69 देखें: "घमंडियों ने मेरे ख़िलाफ़ झूठ गढ़ा है..." दुख सहने से पहले, घमंडियों के झूठ हमारे कानों में इतनी साफ़ सुनाई देते हैं कि हम अक्सर उनके धोखे भरे रास्तों पर चलने लगते हैं। हम ईसाई लोग भ्रमित हो सकते हैं और दुनिया के घमंडी लोगों के झूठ को सच मान सकते हैं—यानी झूठ को असलियत मानकर गलत रास्ता चुन सकते हैं; क्या हम अभी ऐसे ही धोखे भरे रास्तों पर तेज़ी से नहीं बढ़ रहे हैं? दुनिया के घमंडी लोग जो झूठी सफलता, सम्मान और भौतिकवाद दिखाते हैं, वे हमें लुभाते हैं। फिर भी, दुख सहने के बाद, हमें घमंडी लोगों के उन धोखे भरे रास्तों से नफ़रत होने लगती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दुख सही रास्ते—प्रभु के रास्ते—को साफ़-साफ़ दिखाता है। यह क्रूस का संकरा रास्ता है, जिसे पवित्र शास्त्र में दीन-हीन यीशु ने हमें दिखाया है। और उस रास्ते की आखिरी मंज़िल मौत है। यह दुनिया के रास्तों के नतीजे से कितना अलग है! क्या आपको इसमें कोई आध्यात्मिक आकर्षण महसूस होता है? क्या आप और मैं सच में इस बात से खिंचाव महसूस करते हैं कि जिस संकरे रास्ते पर हम चल रहे हैं, उसका अंत मौत है? क्या आप इस विचार से प्रभावित हैं कि आप जैसे पापी व्यक्ति को प्रभु की महिमा के लिए शहीद होने का मौका मिल सकता है? ऐसा लगता है कि हर कोई ऐसे सच को अपना नहीं सकता। घमंडी लोग इस सच को थामे नहीं रख सकते या इसे स्वीकार नहीं कर सकते। फिर भी, दुख के ज़रिए प्रभु इस सच को हमारे दिलों में बसाते हैं। इस बसाने की प्रक्रिया में, वे दुख का इस्तेमाल करके हमें घमंडी लोगों के झूठ से नफ़रत करना सिखाते हैं।

(5) दुख दिल से चर्बी को हटाता है।

भजन संहिता 119:70 को देखें: "उनके दिल चर्बी जैसे हैं..." आजकल अमेरिका में मोटापा एक बड़ी समस्या बन गया है। अनगिनत लोग वज़न कम करने की कोशिश में डाइटिंग और कसरत कर रहे हैं। असल में, कई लोग शरीर की अतिरिक्त चर्बी हटाने के लिए सर्जरी भी करवाते हैं। शारीरिक चर्बी कम करने की इस व्यापक कोशिश के बीच, मेरा मानना है कि हम ईसाइयों को भी अपने दिलों से "चर्बी" हटाने की कोशिश करनी चाहिए। आखिरकार, शरीर की अतिरिक्त चर्बी कई तरह की परेशानियाँ पैदा करती है और आखिर में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ हो जाती हैं; इसी तरह, अगर हम "दिल की चर्बी"—यानी वे पापी बातें जो हमारे विश्वास के जीवन में रुकावट डालती हैं—को हल्के में लेते हैं, तो हम और भी गंभीर पाप में पड़ सकते हैं। ऐसी आध्यात्मिक स्थिति में, दुख उस आध्यात्मिक चर्बी को हटाने के लिए एक ज़रूरी, और शायद सबसे अच्छा, उपाय है। हमें दुख के अनुभव से अपने दिलों को इस चर्बी से मुक्त करना चाहिए।

(6) दुख हमें परमेश्वर के वचन की सबसे बड़ी कीमत को गहराई से समझने में मदद करता है।

भजन संहिता 119:72 पर विचार करें: "तेरे मुँह की व्यवस्था मेरे लिए सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से कहीं बेहतर है।" मिस्र से निकलने के बाद, परमेश्वर चाहते थे कि इस्राएली लोग जंगल में बिताए अपने चालीस साल के कठिन समय से यह सीखें कि "मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि हर उस वचन से जीवित रहता है जो प्रभु के मुँह से निकलता है" (व्यवस्थाविवरण 8:3)। इसी तरह, जब हम इस जंगल जैसी दुनिया में उस संकरे रास्ते—क्रूस के रास्ते—पर चलते हैं और कई तरह के दुखों का सामना करते हैं, तो हमें यह एहसास होना चाहिए कि हम ऐसे प्राणी हैं जो असल में केवल प्रभु के मुँह से निकले वचन से ही जीवित रह सकते हैं। तभी हम मानते हैं कि वचन जीवन से भी ज़्यादा कीमती है। पृथ्वी पर हमारे इंसानी जीवन की छोटी सी अवधि की तुलना उस अनंत वचन से कैसे की जा सकती है? दुख हमें वचन की कीमती चीज़—उसकी सबसे बड़ी कीमत—के बारे में बताता है और दिखाता है कि यह भौतिक धन-दौलत से कहीं ज़्यादा बढ़कर है। संक्षेप में, इब्रानियों 5:8 हमारे लिए दुख के फ़ायदे के बारे में बताता है: "हालाँकि वह पुत्र थे, फिर भी उन्होंने जो दुख उठाए, उनसे आज्ञा मानना सीखा।" दुख का फ़ायदा यह है कि इसके ज़रिए हम आज्ञा मानना सीखते हैं।

आज के वचन में, फिलिप्पियों 1:27 के पहले हिस्से में, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहते हैं: "बस तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो..." इस आयत पर ध्यान देते हुए, हमने पहले ही मसीह के

सुसमाचार के योग्य जीवन जीने के दो तरीके सीख लिए हैं। पहला, सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का मतलब है एक दिल और एक मन से साथ खड़े होना—एक-दूसरे का सहयोग करना—सुसमाचार के विश्वास के लिए (फिलिप्पियों 1:27)। दूसरा, मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का मतलब है विरोधियों से किसी भी तरह न डरना (फिलिप्पियों 1:28)।

मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का मतलब है विश्वास के ज़रिए मसीह के लिए दुख उठाना।

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:29 को देखें: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख उठाने का भी सौभाग्य मिला है।" आप "दुख उठाने" को किस नज़रिए से देखते हैं? जुलाई 2009 के आस-पास, हमारे चर्च के एक डीकन ने एक ईमेल भेजा जिसमें यह विचार था: "दुख हमें असल में इस बात से बचाता है कि हम इस ज़िंदगी को ही अपना आराम करने की जगह समझ बैठें।" इसका क्या मतलब है? ईसाई होने के नाते, हम इस दुनिया में यीशु पर अपने विश्वास के लिए जितना ज़्यादा दुख सहते हैं, हमें उतना ही ज़्यादा एहसास होता है कि यह दुनिया हमारी हमेशा की आराम करने की जगह नहीं है, बल्कि बस कुछ समय के लिए रुकने की जगह है। और हमें जितना ज़्यादा यह एहसास होता है, हम—इब्रानियों 11 में बताए गए विश्वास के नायकों की तरह—"एक बेहतर देश," यानी "स्वर्ग का देश"—यानी स्वर्ग, जो हमारा हमेशा का घर है—की उतनी ही ज़्यादा चाहत करने लगते हैं। इस नज़रिए से, कोई भी इस बात से सहमत हुए बिना नहीं रह सकता कि "दुख हमें असल में इस बात से बचाता है कि हम इस ज़िंदगी को ही अपना आराम करने की जगह समझ बैठें।"

आज के वचन, फिलिप्पियों 1:29 में, हम देखते हैं कि पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हुए कहा: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है।" इसका क्या मतलब है? इसे दो बातों में समझाया जा सकता है। एक सच्चाई यह है कि जो अनुग्रह परमेश्वर ने फिलिप्पी चर्च के संतों को दिया—मसीह की खातिर—वह यीशु पर विश्वास करने का वरदान है। हम इस सच्चाई पर विश्वास करते हैं। हम मानते हैं कि यीशु पर विश्वास करना पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह का नतीजा है। इस विश्वास का आधार इफिसियों 2:8 में मिलता है: "क्योंकि अनुग्रह ही से विश्वास के द्वारा तुम्हारा

उद्धार हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर का वरदान है।" पवित्र शास्त्र साफ-साफ कहता है: विश्वास परमेश्वर की ओर से एक वरदान है। यीशु पर विश्वास के ज़रिए उद्धार भी परमेश्वर का वरदान है। बाइबल साफ़ तौर पर बताती है कि यह हमारी ओर से शुरू नहीं होता है। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे हम सभी शायद मानते और स्वीकार करते हैं। हालाँकि, आज के वचन—फिलिप्पियों 1:29—के दूसरे हिस्से में एक और सच्चाई बताई गई है जिसे स्वीकार करने में हमें शायद मुश्किल होती है: वह यह कि मसीह की खातिर परमेश्वर ने हमें जो अनुग्रह दिया है, उसमें यीशु के लिए दुख सहना भी शामिल है। कोई पूछ सकता है, "क्या यीशु पर विश्वास करने से दुख के बजाय आशीषें नहीं मिलनी चाहिए?" इस सवाल पर सोचते हुए मुझे अय्यूब 2:10 की बात याद आती है: “उसने जवाब दिया, ‘तुम एक मूर्ख औरत की तरह बात कर रही हो। क्या हम परमेश्वर से सिर्फ़ अच्छी चीज़ें ही स्वीकार करें और मुसीबतें नहीं?’ इन सब बातों में, अय्यूब ने अपनी बातों से कोई पाप नहीं किया।”

यह बात कि हम यीशु पर विश्वास करने लगे हैं, परमेश्वर की कृपा का एक अद्भुत उपहार है। क्या बस इतना ही? परमेश्वर से हमें जो आशीष मिली है, वह यीशु मसीह में अनंत जीवन है। प्रेम के कारण, परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही हमें चुन लिया था; अपने सही समय पर, उन्होंने हमें नया जन्म दिया, हमें यीशु पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया और हमें बचाया। हमें यह अद्भुत आशीष पहले ही मिल चुकी है। इसके अलावा, हमें पवित्र आत्मा के हमारे अंदर बसने की अद्भुत आशीष भी मिली है, जो हमें पवित्र बनाता है और हमें यीशु जैसा बनाता है। हम परमेश्वर की संतान भी बन गए हैं—उन्हें "अब्बा, पिता" कहकर बुलाते हैं—और परमेश्वर के वारिस भी हैं। इस तरह, हमें परमेश्वर से हर आध्यात्मिक आशीष पहले ही मिल चुकी है (इफिसियों 1:3–6)। तो क्या हमें यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए दुख सहने को तैयार नहीं होना चाहिए, बजाय इसके कि हम परमेश्वर से केवल आशीषों की उम्मीद करें जैसा अय्यूब ने किया था? प्रेरित पौलुस ने ठीक यही किया; उन्होंने यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए बहुत दुख सहे। जब उन्होंने सोचा कि प्रभु ने उन्हें बचाने के लिए कितनी दया और कृपा दिखाई है—एक ऐसा व्यक्ति जो कभी निंदा करने वाला, सताने वाला और हिंसक व्यक्ति था, "पापियों में सबसे बुरा" (1 तीमुथियुस 1:15)—और उन्हें गैर-यहूदियों के लिए प्रेरित होने की सेवा सौंपने के लायक समझा, तो वे परमेश्वर की कृपा और प्रेम के लिए कृतज्ञता से भर गए। इसी कृतज्ञता से प्रेरित होकर, उन्होंने प्रभु यीशु से मिले मिशन—परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देना—की तुलना में

अपने जीवन को कोई महत्व नहीं दिया। उन्होंने यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, भले ही उन्हें हर तरह की मुसीबतें और दुख सहने पड़े। जिन मुश्किलों का उन्होंने सामना किया, उनके बारे में पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों से कहा: "मुसीबतों, कठिनाइयों और संकटों में; मार-पीट, जेल और दंगों में; कड़ी मेहनत, बिना सोए रातें बिताने और भूख में बहुत धैर्य दिखाया" (2 कुरिन्थियों 6:4–5)। उन्होंने गलातियों 6:17 में यहाँ तक कहा, "मैं अपने शरीर पर यीशु के निशान लिए हुए हूँ।" पौलुस, जिन्होंने यीशु मसीह और उनके सुसमाचार का प्रचार करते हुए बहुत दुख सहे, आज के वचन—फिलिप्पियों 1:29—में कहते हैं कि यीशु मसीह के लिए दुख सहना "परमेश्वर की कृपा" का एक रूप है। क्या हम सच में मानते हैं कि यीशु मसीह के लिए दुख सहना परमेश्वर की कृपा है? क्या हम यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने में आने वाली मुश्किलों को परमेश्वर की आशीष मानते हैं? क्या हम उनके चेले के तौर पर यीशु के दुखों में थोड़ा-सा भी हिस्सा लेने को परमेश्वर की कृपा मानते हैं?

जब हमें परमेश्वर से आशीषें मिलती हैं, तो अक्सर वे हमारी नज़रों में महान लगते हैं। फिर भी, जब हम दुख का सामना करते हैं, तो वही परमेश्वर हमें छोटे लगते हैं, जबकि हमारा दुख बहुत बड़ा लगने लगता है। ऐसे पलों में, हमें अपने दुख को अपने ही फायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। हमें दुख सहकर आज्ञाकारी बनना सीखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया। इस आज्ञाकारिता के बारे में, बाइबल हमें सिखाती है कि हम मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जिएं (फिलिप्पियों 1:27)। इसलिए, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो मसीह के सुसमाचार के अनुकूल हो। हमें एक मन और एक मकसद के साथ एकजुट होकर खड़े रहना चाहिए और एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। इसके अलावा, हमें किसी भी स्थिति में अपने विरोधियों से डरना नहीं चाहिए। आखिर में, हमें विश्वास के साथ मसीह के लिए दुख सहने को स्वीकार करना चाहिए। परमेश्वर की कृपा आप पर बनी रहे।

एक ऐसा चर्च जो प्रभु को खुशी से भर देता है

[फिलिप्पियों 2:1–4]

सैडलबैक चर्च के सीनियर पास्टर रिक वॉरेन ने एक बार यह बात कही थी: "21वीं सदी के चर्च के लिए सबसे ज़रूरी बात चर्च का बढ़ना नहीं, बल्कि चर्च की सेहत है। लोगों की संख्या मायने नहीं रखती; सेहत मायने रखती है।" उन्होंने चर्च की ग्रोथ को मापने के पाँच तरीके बताए: (1) फेलोशिप के ज़रिए चर्च को ज़्यादा मिलनसार बनना चाहिए, (2) शिष्यत्व के ज़रिए और गहरा होना चाहिए, (3) आराधना के ज़रिए मज़बूत होना चाहिए, (4) सेवा-कार्य के ज़रिए और व्यापक होना चाहिए, और (5) सुसमाचार प्रचार के ज़रिए और बड़ा होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, "आराधना सभाओं में आने वाले लोगों की संख्या की तुलना में, सेवा-कार्य और मिशन के लिए तैयार किए गए सदस्यों का प्रतिशत चर्च की सेहत का ज़्यादा सही पैमाना है।" इस पर सोचते हुए, मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या हमारा चर्च सच में सेहतमंद है। हालाँकि, "सेहतमंद चर्च" शब्द के बजाय, मैं "एक ऐसा चर्च जो सच में चर्च है"—या दूसरे शब्दों में, एक ऐसा चर्च जो वैसा ही है जैसा एक चर्च को होना चाहिए—इस बात को ज़्यादा पसंद करता हूँ। तो फिर, ऐसे चर्च की क्या खासियतें होती हैं? संक्षेप में, मेरा मानना है कि "एक ऐसा चर्च जो सच में चर्च है, वह बाइबल में दी गई चर्च की परिभाषा के अनुसार चलता है।"

प्रेरितों के काम 2:42–43 में बाइबल के अनुसार चर्च की चार खासियतें बताई गई हैं: (1) एक ऐसा चर्च जो सच में चर्च है, वह परमेश्वर के वचन को सीखने में लगा रहता है। पतरस के उपदेश से जिन 3,000 लोगों ने यीशु को अपनाया, वे नए विश्वासी थे; विश्वास में उनके विकास के लिए, उन्होंने खुद को प्रेरितों की शिक्षा में समर्पित कर दिया (प्रेरितों के काम 2:42)। एक सच्चे चर्च के सदस्य वफ़ादारी और लगन से परमेश्वर का

वचन सीखते हैं। (2) एक ऐसा चर्च जो सच में चर्च है, वह पूरे दिल से फेलोशिप में लगा रहता है। संक्षेप में, फेलोशिप का मतलब है चीज़ों को आपस में बाँटना और जो हमारे पास है उसे दूसरों तक पहुँचाना। एक सच्चे चर्च के सदस्य प्रभु में एक-दूसरे की मदद करते हैं और चीज़ें आपस में बाँटते हैं। (3) एक ऐसा चर्च जो सच में चर्च है, वह पूरे दिल से प्रभु-भोज में लगा रहता है। कम्युनियन सेवा के ज़रिए, सदस्य विश्वास के साथ रोटी और दाख-रस—जो यीशु के शरीर और लहू के प्रतीक हैं—को विनम्रता से ग्रहण करते हैं, और इस तरह प्रभु की कृपा का अनुभव और आनंद लेते हैं। (4) वे पूरे दिल से प्रार्थना में लगे रहते थे। यरूशलेम की कलीसिया हर तरह की प्रार्थना में पूरी तरह से लगी हुई थी। इसके अलावा, 120 चेलों (1:14) की मिसाल पर चलते हुए, वे प्रार्थना में तब भी लगे रहे जब कलीसिया के लोगों की संख्या बढ़कर 3,000 हो गई। यरूशलेम की कलीसिया के लिए, संख्या में बढ़ोतरी का मतलब था प्रार्थना करने वाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी। एक सच्ची कलीसिया के सदस्य प्रार्थना के प्रति समर्पित होते हैं।

आज के पाठ में, फिलिप्पियों 2:4 के दूसरे हिस्से में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हैं और उनसे आग्रह करते हैं कि वे "मेरी खुशी को पूरा करें।" फिर वे चार खास बातें बताते हैं कि वे इस आग्रह को कैसे पूरा कर सकते हैं। आज, मैं इन चार बातों को अपनी कलीसिया पर लागू करना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि इन चार शिक्षाओं को विनम्रता से स्वीकार करके और उनका पालन करके, हमारी कलीसिया एक ऐसा समुदाय बने जो प्रभु—जो कलीसिया के मुखिया हैं—की खुशी को पूरा करे।

सबसे पहले, जो कलीसिया प्रभु की खुशी को पूरा करती है, वह ऐसी कलीसिया है जहाँ मसीह में प्रोत्साहन मिलता है।

आज के पाठ में फिलिप्पियों 2:1 के पहले हिस्से को देखें: "इसलिए यदि मसीह में कोई प्रोत्साहन है..." यहाँ "प्रोत्साहन" (exhortation) शब्द का क्या मतलब है? नेवर डिक्शनरी के अनुसार, कोरियाई शब्द *गवोनम्योन* (gwonmyeon) का अर्थ है "किसी को किसी लक्ष्य को समझने और उसकी ओर बढ़ने के लिए आग्रह करना और प्रोत्साहित करना।" हालाँकि, मूल ग्रीक शब्द का अर्थ है "गंभीर सलाह" (exhortation), "प्रोत्साहन" और "सांत्वना।" आज के पाठ—फिलिप्पियों 2:1—के संदर्भ में, यह शब्द विश्वासियों को गंभीरता से आग्रह करने (exhorting), समझाने (चेतावनी देने), या प्रोत्साहित करने (सांत्वना

देने) के लिए इस्तेमाल किया गया है, ताकि उनके विश्वास को मजबूत और पक्का किया जा सके (ज़ोधिआट्स)। पौलुस ने इस पाठ के अलावा भी अपनी चिट्ठियों में कई बार इस शब्द का इस्तेमाल किया है; ऐसा ही एक उदाहरण 2 कुरिन्थियों 8:4 में मिलता है: "पवित्र लोगों की सेवा में हिस्सा लेने के मौके के लिए हमसे गंभीरता से विनती करना।" तो, आज के पाठ (फिलिप्पियों 2:1) में पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से मसीह में क्या करने का गंभीरता से आग्रह करते हैं—या उन्हें क्या करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं? वह है "एक मन का होना।" फिलिप्पियों 2:2 के पहले हिस्से को देखिए: "एक मन के हो जाओ..." यहाँ "एक मन के होने" का मतलब है "एक सोच" रखना, जैसा कि पौलुस ने पहले ही फिलिप्पियों 1:27 में कहा था। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने मसीह में विश्वास करने वाले फिलिप्पी लोगों से एक जैसा मन रखने को कहा। इसका कारण यह है कि ऐसी एकता मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का हिस्सा है (1:27)। लेकिन दुर्भाग्य से, फिलिप्पी कलीसिया मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने में नाकाम हो रही थी। हम इसे फिलिप्पियों 4:2 में देख सकते हैं: "मैं यूओदिया और सुन्तुखे से विनती करता हूँ कि वे प्रभु में एक मन की हों।" क्योंकि फिलिप्पी कलीसिया की ये दो महिलाएँ एक मन की नहीं थीं, इसलिए पौलुस ने—जिन्होंने पहले ही पूरी कलीसिया से "एक आत्मा में दृढ़ खड़े रहने" (1:27) और "एक मन के होने" (2:2) का आग्रह किया था—4:2 में खास तौर पर यूओदिया और सुन्तुखे का नाम लिया और उनसे गंभीरता से "एक मन के होने" का आग्रह किया। इसके अलावा, फिलिप्पियों 2:3 का पहला हिस्सा—जो आज हमारा मुख्य विषय है—दिखाता है कि पौलुस विश्वासियों से कह रहे हैं कि वे "स्वार्थ या व्यर्थ घमंड" के कारण कुछ न करें, जिससे पता चलता है कि उनके बीच सचमुच झगड़ा था। ऐसा लगता है कि इस झगड़े की जड़ "व्यर्थ घमंड" थी।

"व्यर्थ घमंड" क्या है? नेवर डिक्शनरी (Naver Dictionary) इसे इस तरह बताती है: "ऐसी महिमा जो किसी व्यक्ति की असल स्थिति से ज़्यादा हो और जिसमें कोई सच्चाई न हो, जो सिर्फ़ बाहरी दिखावे में हो; या, बहुत ज़्यादा बाहरी दिखावा" (इंटरनेट)। अगर कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो ऐसी खोखली महिमा के पीछे भागते हैं—अपनी सही हद से ज़्यादा बाहरी दिखावा चाहते हैं—तो झगड़ा होना तय है। इसका एक बड़ा उदाहरण गिनती की किताब के 16वें अध्याय में मिलता है। कोरह (एक लेवी) और दातान, अबीराम और ओन (रूबेन के वंशज) ने एक गुट बनाया (आयत 1) और "मंडली के ढाई सौ नेताओं को, जो सभा में से चुने गए थे और मशहूर लोग थे" (आयत 2) अपने साथ मिला लिया; और सब मिलकर अपने नेता मूसा के खिलाफ़ खड़े हो

गए (आयत 2)। जब वे मूसा और हारून के ख़िलाफ़ इकट्ठा हुए, तो उन्होंने कहा, "तुमने हद पार कर दी है" (वचन 3)। उन्होंने तर्क दिया, "पूरी मंडली पवित्र है, उनमें से हर एक, और प्रभु उनके बीच है; तो फिर तुम प्रभु की मंडली से ऊपर खुद को क्यों ऊँचा समझते हो?" (वचन 3)। यह सुनकर, मूसा पहले मुँह के बल गिर पड़ा और परमेश्वर से प्रार्थना की (16:4)। फिर उसने कोरह और उसके पूरे समूह को डाँटा और कहा, "तुम लेवीवंशियों ने हद पार कर दी है" (वचन 7)। मूसा ने कोरह और लेवीवंशियों से आगे पूछा: "क्या तुम्हारे लिए यह छोटी बात है कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम्हें इस्राएल की मंडली से अलग करके अपने करीब बुलाया है, ताकि तुम प्रभु के पवित्र डेरे का काम कर सको और मंडली के सामने खड़े होकर उनकी सेवा कर सको? परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे सभी साथी लेवीवंशियों को अपने करीब लाया है—क्या यह छोटी बात है? फिर भी तुम याजक का पद भी चाहते हो?" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि कोरह और लेवीवंशियों ने परमेश्वर की कृपा को मामूली समझा। हालाँकि परमेश्वर ने उन्हें अपने पवित्र डेरे में सेवा करने और मंडली की ओर से काम करने के लिए अलग किया था, फिर भी उन्होंने इस कीमती बुलाहट को हल्के में लिया। जबकि यह कोई मामूली बात नहीं थी, उन्होंने इसे कम आंका और इसके बजाय याजक का पद—हारून जैसा—चाहने लगे। चूँकि कोरह और लेवीवंशियों ने परमेश्वर द्वारा दिए गए पद को कमतर समझा और हल्के में लिया, इसलिए वे घमंडी हो गए और मूसा और हारून से ऐसी बातें कहीं जो उनकी मर्यादा से कहीं बाहर थीं। आखिरकार, उन्होंने न केवल मूसा और हारून का, बल्कि स्वयं परमेश्वर का भी विरोध किया था (वचन 11)। नतीजा यह हुआ कि कोरह और उसका पूरा समूह, जिसने मूसा और हारून का विरोध किया था, मौत से बच नहीं सका (वचन 33, 35)। हमें अपनी मर्यादा से बाहर सोचने से बचना चाहिए, और हमें ऐसे शब्दों और कामों से सावधान रहना चाहिए जो हमारी हैसियत से ज़्यादा हों। परमेश्वर के सामने, हमें अपनी स्थिति के अनुसार सोचना, बोलना और काम करना चाहिए। हमें स्वार्थ या व्यर्थ घमंड में आकर कुछ भी नहीं करना चाहिए (फिलिप्पियों 2:3)। हमें कभी भी उस पद को मामूली या तुच्छ नहीं समझना चाहिए जो परमेश्वर ने कृपापूर्वक हमें सौंपा है। इसके बजाय, हमें उस भूमिका में आभारी मन, विनम्रता और खुशी-खुशी सेवा करनी चाहिए, जिसके लिए परमेश्वर ने अपने प्रेम में हमें सेवा करने के लिए चुना है।

फिलिप्पी के विश्वासियों से पौलुस की ज़ोरदार अपील के पीछे क्या भावना थी, जो मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने में नाकाम हो रहे थे? दूसरे शब्दों में, जब पौलुस ने उनसे "एक मन" होने या "एक जैसी सोच" रखने का आग्रह किया, तो उनके मन में किस तरह की सोच थी? आज के वचन, फिलिप्पियों 2:3 को देखें: "स्वार्थ या

घमंड के कारण कुछ न करें, बल्कि नम्रता से दूसरों को अपने से बेहतर समझें।" पौलुस जिस सोच की बात कर रहे हैं, वह है "नम्रता"। और इस नम्रता को "दूसरों को खुद से बेहतर समझना" (वचन 3) के रूप में परिभाषित किया गया है। यह कैसे संभव है? हम दूसरों को खुद से बेहतर कैसे समझ सकते हैं? असल में, जब हम किसी और को देखते हैं, तो हम सोच सकते हैं, "मेरा विश्वास उनसे मज़बूत है और मेरा आध्यात्मिक जीवन उनसे बेहतर है" — तो हम उन्हें खुद से बेहतर कैसे समझ सकते हैं? मुझे इसका जवाब रोमियों 5:20 के दूसरे हिस्से में मिला: "...लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी ज़्यादा बढ़ा।" दूसरे शब्दों में, एक पवित्र परमेश्वर के सामने हमें अपने पाप की गंभीरता का जितना ज़्यादा एहसास होता है, उतना ही हमें हमारे प्रति परमेश्वर के अनुग्रह की महानता का भी एहसास होता है। जब ऐसा होता है, तो हम — प्रेरित पौलुस की तरह — नम्रता से यह स्वीकार करने के लिए मजबूर हो जाते हैं: "क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ और प्रेरित कहलाने के लायक भी नहीं हूँ, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर ज़ुल्म किया था" (1 कुरिन्थियों 15:9)। फिर भी, असल में, पौलुस किसी भी तरह से "बड़े प्रेरितों" से कम नहीं थे (2 कुरिन्थियों 11:5; 12:11)। इसके बावजूद, उन्होंने स्वीकार किया, "मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ" (1 कुरिन्थियों 15:9)। बाद में, इफिसियों 3:8 में, पौलुस ने स्वीकार किया: "मुझ पर, जो सभी पवित्र लोगों में सबसे छोटा हूँ, यह अनुग्रह किया गया..."। फिर, अपने जीवन के अंत में, उन्होंने स्वीकार किया: "...जिनमें मैं सबसे बड़ा हूँ" (2 तीमुथियुस 1:15b)। जैसे-जैसे हम ज़्यादा नम्र होते जाते हैं — लोगों के सामने नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने — हम दूसरों को खुद से बेहतर समझने में सक्षम हो जाते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम "प्रेम से एक-दूसरे की सेवा" कर सकते हैं (गलातियों 5:13)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम "भाईचारे के प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम कर सकते हैं और एक-दूसरे का आदर करने में आगे बढ़ सकते हैं" (रोमियों 12:10)।

जब हम सब पौलुस की गंभीर सलाह को मानते हैं और नम्र हृदय अपनाते हैं, तो हमारी कलीसिया एक मन और एक सहमति से परमेश्वर की महिमा कर सकती है। हमें जो नम्र हृदय अपनाना चाहिए, वह और कोई नहीं बल्कि "मसीह यीशु का मन" है। सुनिए प्रेरित पौलुस फिलिप्पियों 2:5 में क्या कहते हैं: "तुम में वही मन हो जो मसीह यीशु में भी था।" जब हमारी कलीसिया के सभी सदस्य मिलकर यीशु के नम्र हृदय को अपनाते हैं, तो हम प्रभु की खुशी को पूरा कर सकेंगे।

"भले ही नम्रता से प्रभु की सेवा करने में कई मुश्किलें आती हैं,
हे उद्धारकर्ता, मुझे उन्हें अच्छी तरह सहने की शक्ति दे।"

(न्यू हिमनल नंबर 212, पद 1)।

दूसरी बात, जो कलीसिया प्रभु की खुशी को पूरा करती है, उसमें प्रेम का सुकून होता है।

जब आप मुश्किलों से जूझ रहे हों और आपको सुकून की बहुत ज़रूरत हो, तो आप क्या करते हैं? ऐसे पलों में, हम स्वाभाविक रूप से सहारे के लिए अपने करीबी परिवार के सदस्यों या दोस्तों की ओर देखते हैं। और इसलिए, हम अपने दिल की बात बताते हैं, यहाँ तक कि सब कुछ कह देते हैं। फिर भी, चाहे हम सुकून पाने के लिए दूसरों के कितने भी करीब क्यों न जाएँ, वे हमें अजनबी लग सकते हैं (भजन संहिता 69:8)। हो सकता है कि उनकी वजह से हमें समझने या सुकून मिलने के बजाय और ज़्यादा निराशा महसूस हो।

बाइबल में गिनती 32:7 उन लोगों के बारे में बताती है जिन्होंने इस्राएल के लोगों को निराश किया था। वे और कोई नहीं बल्कि गाद और रूबेन के वंशज थे। गाद और रूबेन के गोत्रों ने दूसरे गोत्रों को कैसे निराश किया? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जॉर्डन नदी के पार कनान के लोगों के खिलाफ लड़ने के लिए अपने भाइयों—बाकी दस गोत्रों—का साथ देने के बजाय, उन्होंने मूसा से याजेर और गिलियद की ज़मीनों (पद 1, 4, 5) में बसने की अनुमति माँगी, जो पशुपालन के लिए उपयुक्त थीं। उन्होंने मूसा से कहा, "अगर हम आपकी नज़र में कृपा पाए हैं, तो यह ज़मीन आपके सेवकों को दे दी जाए; हमें जॉर्डन पार न कराएँ" (पद 5)। यह सुनकर मूसा ने गाद और रूबेन के वंशजों को डांटा और पूछा, "क्या तुम्हारे भाई युद्ध के लिए जाएँगे और तुम यहाँ बैठे रहोगे?" (पद 6)। उन्होंने आगे पूछा, "तुम इस्राएल के लोगों को उस देश में जाने से क्यों रोक रहे हो जो प्रभु ने उन्हें दिया है?" (पद 7)। इस तरह, गाद और रूबेन के वंशजों ने बाकी दस गोत्रों के अपने भाइयों का हौसला तोड़ा। हालाँकि, मूसा ने देखा कि न केवल वे, बल्कि उनके पूर्वजों ने भी इस्राएल के लोगों का हौसला तोड़ा था (पद 9, 14)। उनके पूर्वजों ने कनान देश में भेजे गए दस जासूसों की नकारात्मक रिपोर्टों (गिनती 13:32; 14:35–36) के कारण पूरे इस्राएली राष्ट्र का हौसला तोड़ दिया था (व्यवस्थाविवरण 1:28); इससे लोग पूरी रात रोते रहे और मूसा और हारून के खिलाफ शिकायत करने लगे (गिनती 14:1)। आखिरकार, गाद और रूबेन के वंशजों के पूर्वजों के अविश्वास ने—जो दस जासूसों में दिखाई दिया था—न केवल जासूसों का हौसला तोड़ा, बल्कि उन इस्राएलियों को भी निराश किया जिन्होंने उनकी अविश्वास भरी रिपोर्टें सुनी थीं। इसके अलावा, गाद और रूबेन के वंशजों ने अपनी स्वार्थी इच्छाओं को प्राथमिकता देकर और पूरे समुदाय के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को भूलकर इस्राएली

समुदाय का हौसला तोड़ा। संक्षेप में, अपने पूर्वजों की तरह, गाद और रूबेन के वंशजों ने इस्राएल के लोगों को निराश किया क्योंकि—सीधे शब्दों में कहें तो—उन्होंने पूरे दिल से परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया (पद 24 देखें)।

यदि हम पूरे दिल से परमेश्वर का अनुसरण नहीं करते हैं, तो हम उस समुदाय के सभी लोगों का हौसला तोड़ सकते हैं जिससे हम जुड़े हैं। यदि हम परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करने में विफल रहते हैं और अविश्वास रखते हैं, तो हम अपने भाइयों का हौसला तोड़ सकते हैं। इसके अलावा, जब हम कलीसिया में अपनी व्यक्तिगत और सामुदायिक ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से पूरा करने में विफल रहते हैं, तो हम मसीह की देह के अन्य सदस्यों का हौसला तोड़ सकते हैं। हमें निराशा के बजाय सांत्वना का स्रोत बनना चाहिए। जिस तरह पवित्र आत्मा हमें सांत्वना देता है, उसी तरह हमें उसके मार्गदर्शन में जीना चाहिए और अपने पड़ोसियों को भी सांत्वना देनी चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:1 को देखें: "...प्रेम से कोई सांत्वना..."। जब पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया में विश्वासियों को लिखता है, तो वह "...प्रेम से कोई सांत्वना..." के बारे में बात करता है। जहाँ कोरियाई बाइबिल में सिर्फ़ "प्यार" शब्द का इस्तेमाल हुआ है, वहीं अंग्रेज़ी वर्शन में "उसका प्यार" कहा गया है—यानी मसीह का प्यार। पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के भाई-बहनों से ज़ोर देकर कहा कि वे मसीह के प्यार से एक-दूसरे को दिलासा दें। पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को यह सलाह क्यों दी? इसका कारण हमें फिलिप्पियों 1:30 में मिलता है: "तुम उसी संघर्ष में लगे हो जो तुमने मुझे करते देखा था और अब सुनते हो कि मैं अभी भी कर रहा हूँ।" कारण यह है कि फिलिप्पी के विश्वासी, पौलुस की तरह ही, यीशु मसीह और उसके सुसमाचार के लिए संघर्ष कर रहे थे; दूसरे शब्दों में, वे दुख सह रहे थे (आयत 29)। क्योंकि वे—पौलुस की तरह—उन लोगों के हाथों दुख सह रहे थे जो यीशु मसीह और सुसमाचार का विरोध करते थे (आयत 28), इसलिए पौलुस ने उनसे ज़ोर देकर कहा कि वे मसीह के प्यार से एक-दूसरे को दिलासा दें। इसी संदर्भ में, पौलुस आज के हिस्से—फिलिप्पियों 2:2—में उनसे कहता है कि वे "एक मन के हों" और "एक जैसा प्यार रखें।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जब फिलिप्पी कलीसिया दुख का सामना कर रही थी, तो सभी विश्वासियों को मसीह के उसी प्यार से एक-दूसरे से प्यार करना और दिलासा देना था। तो फिर, पौलुस ने उन्हें मसीह के इस साझे प्यार से एक-दूसरे से प्यार करने और दिलासा देने के लिए क्या निर्देश दिया? फिलिप्पियों 2:4 देखें: "सिर्फ़ अपने ही

भले की न सोचो, बल्कि दूसरों के भले की भी सोचो, और इस तरह मेरी खुशी पूरी करो" [या जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* कहती है: "सिर्फ़ अपने भले के बारे में न सोचो; दूसरों के भले के बारे में भी सोचो"]। मसीह के उसी प्यार से एक-दूसरे को दिलासा देने का तरीका है दूसरों के भले के बारे में सोचना। दूसरे शब्दों में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह कर रहा है कि वे अपने भले के बजाय दूसरों के भले का ध्यान रखें, ताकि वे यीशु मसीह के प्यार से एक-दूसरे को दिलासा दे सकें। दूसरों के मामलों की परवाह करने की इस सलाह का मतलब है कि पड़ोसियों के लिए हमारा प्यार ऐसा स्वार्थी प्यार नहीं होना चाहिए जो सिर्फ़ अपना फ़ायदा देखता हो, बल्कि ऐसा निस्वार्थ प्यार होना चाहिए—जैसा यीशु का था—जो दूसरों की भलाई चाहता हो। ऐसा लगता है कि पौलुस खास तौर पर चाहता था कि फिलिप्पी के विश्वासी मसीह के निस्वार्थ प्यार से अपने साथी भाई-बहनों की परवाह करें; वह चाहते थे कि वे अपने फ़ायदे के बजाय एक-दूसरे के भले के बारे में सोचें और इस तरह प्रभु में एक जैसी सोच रखें। मेरा ऐसा मानना इसलिए है क्योंकि फ़िलिप्पियों 4:2 में, पौलुस ने यूओदिया और सुन्तुखे का नाम लेकर उनसे कहा है कि वे "प्रभु में एक मन की हों।"

अगर हम सब सिर्फ़ अपने फ़ायदे के बारे में सोचें और अपने ही कामों में लगे रहें, तो कलीसिया का क्या होगा? अगर हर कोई अपनी मर्ज़ी से सोचे, बोले, काम करे और सेवा करे, तो कलीसिया कैसी दिखेगी? ऐसी कलीसिया कभी भी प्रभु को खुश नहीं कर पाएगी। इसके अलावा, जिस कलीसिया में लोग सिर्फ़ अपना फ़ायदा देखते हैं, वहाँ मसीह का प्यार महसूस नहीं किया जा सकता। बाइबल प्यार के बारे में क्या कहती है? प्यार के बारे में मशहूर अध्याय, 1 कुरिन्थियों 13:5 में बाइबल कहती है कि प्यार "अपना फ़ायदा नहीं ढूँढ़ता" (यह स्वार्थी नहीं होता)। जब पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहता है कि वे एक-दूसरे से "वही प्यार" करें और एक-दूसरे को दिलासा दें (फिलिप्पियों 2:2), तो वह उन्हें अपना फ़ायदा नहीं, बल्कि दूसरों का फ़ायदा देखने के लिए कह रहा होता है। तो फिर, हम दूसरों का फ़ायदा कैसे देख सकते हैं? हेनरी नूवेन ने अपनी किताब *द स्पिरिचुअलिटी ऑफ़ केयर* (देखभाल की आध्यात्मिकता) में लिखा है: "केयर" (देखभाल) शब्द की जड़ "कारा" (kara) का मतलब है—दुखी होना, शोक मनाना, दुख में शामिल होना और दर्द बाँटना। ... देखभाल का मतलब है बीमार, उलझन में पड़े, अकेले, अलग-थलग और भुला दिए गए लोगों के साथ मिलकर रोना; इसका मतलब है यह पहचानना कि उनका दर्द हमारे अपने दिलों में भी है। देखभाल का मतलब है टूटे हुए और कमज़ोर लोगों की दुनिया में जाना और कमज़ोरों के बीच भाईचारा निभाना। इसका मतलब यह भी है कि जो लोग दुख झेल रहे हैं, उनके साथ खड़े रहना और उनके साथ बने रहना, तब भी जब हालात सुधरने की कोई उम्मीद न हो (नूवेन)।

अगर हम एक-दूसरे की ऐसी देखभाल करें, तो हम एक-दूसरे के लिए कितना बड़ा दिलासा बन सकते हैं! आज के वचन (फिलिप्पियों 2:1) में आए वाक्यांश "उसके प्यार से कोई दिलासा" के बारे में, पादरी जॉन मैकआर्थर "दिलासा" (comfort) के लिए इस्तेमाल हुए ग्रीक शब्द का मतलब इस तरह समझाते हैं: यह दिखाता है कि प्रभु एक विश्वासी के पास आते हैं और धीरे से हिम्मत बढ़ाने वाली बातें या प्यार भरी सलाह उनके कान में कहते हैं। मेरा मानना है कि जब हम यीशु की तरह मसीह के प्यार से किसी भाई को दिलासा देने की कोशिश करते हैं, तो हमें भी उसके पास जाना चाहिए और धीरे से हिम्मत बढ़ाने वाली बातें या प्यार भरी सलाह देनी चाहिए।

मैंने एक बार प्रेरितों के काम 15:35–41 के हिस्से पर ध्यान करते हुए "दिलासा देने की सेवा" (ministry of comfort) के बारे में सोचा था। उस समय, मैंने उन तीन तरीकों पर विचार किया जिनसे हम सांत्वना देने की इस सेवा को पूरा कर सकते हैं। (1) पहला, सांत्वना देने की सेवा को पूरा करने के लिए, हमारा प्रभु के साथ सच्चा मिलन होना चाहिए—एक ऐसा मिलन जहाँ हम एक-दूसरे की आध्यात्मिक स्थिति के बारे में जानें। (2) दूसरा, सांत्वना देने की सेवा को निभाने के लिए, हमें आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए। पौलुस और बरनबास के बीच इस बात पर तीखा मतभेद हुआ और वे अलग हो गए कि अपनी पहली यात्रा के मिशन क्षेत्रों में दोबारा जाने के लिए जॉन मार्क को साथ ले जाएं या नहीं। इससे हमें क्या सीख मिलती है... सीख यह थी कि हमें प्रभु के लिए अपने उत्साह को सही ढंग से नियंत्रित करना सीखना चाहिए। हमारा उत्साह इतना बेकाबू नहीं होना चाहिए कि वह नियंत्रण से बाहर हो जाए (कैल्विन)। (3) तीसरा, सांत्वना देने की सेवा को पूरा करने के लिए, हमें कलीसिया को मजबूत करना होगा। कलीसिया को कैसे मजबूत किया जा सकता है? कलीसिया तब मजबूती से खड़ी रहती है जब वह परमेश्वर का वचन सुनती है और विश्वास बढ़ता है। यही सांत्वना देने की सच्ची सेवा है। जब हम प्रभु में सांत्वना देने की इस सेवा को ईमानदारी से पूरा करते हैं, तो हम प्रभु के आनंद को पूर्णता तक पहुँचा सकते हैं।

तीसरा, जो कलीसिया प्रभु के आनंद को पूर्णता तक पहुँचाती है, वह पवित्र आत्मा की संगति का अनुभव करती है।

मैंने एक बार इंग्लिश मिनिस्ट्री के लीडर्स से बात की और उनसे पूछा कि यूनिवर्सिटी में जाने पर लोग कलीसिया क्यों छोड़ देते हैं। एक भाई ने कहा कि एक या दो बार कलीसिया न जाने की आदत आसानी से पड़ सकती है। दूसरे भाई ने सुझाव दिया कि शायद ऐसा कलीसिया में "मेल-जोल" (socializing) की कमी के कारण होता है,

लेकिन उन्होंने एक अलग अंग्रेज़ी शब्द का भी इस्तेमाल किया: "फेलोशिप" (संगति)। ऐसा लगा कि उन्होंने "सोशलज़िंग" और "फेलोशिप" शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे की जगह पर किया। आप क्या सोचते हैं? व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि "फेलोशिप" उन ईसाई शब्दों में से एक है जिनका कलीसिया में सबसे ज़्यादा गलत इस्तेमाल होता है। यह गलत इस्तेमाल इसलिए होता है क्योंकि कई विश्वासी फेलोशिप को सिर्फ़ "गतिविधि" (activity) समझ लेते हैं। हालाँकि, फेलोशिप कोई गतिविधि नहीं है; यह एक "रिश्ता" है (जेरी ब्रिजेस)। हमें समुदाय में अपने भाई-बहनों के साथ रिश्ते बनाने चाहिए (हॉरिज़ॉन्टल फेलोशिप) और साथ ही गहरे जुड़ाव के ज़रिए परमेश्वर के साथ अपना रिश्ता भी बनाना चाहिए (वर्टिकल फेलोशिप)।

बाइबल में प्रेरितों के काम 2:42 में शुरुआती कलीसिया के सदस्यों के "एक-दूसरे के साथ संगति करने" की बात कही गई है। यहाँ "संगति" (fellowship) के लिए इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द *koinonia* दो अर्थों को समेटे हुए है। पहला है आपस में मिल-बाँटकर रहना (आपसी साझेदारी), और दूसरा है अपनी चीज़ें दूसरों को देना (बाँटना या वितरित करना)। विश्वासियों के बीच जिस संगति की हम बात कर रहे हैं, वह सिर्फ़ साथ बैठकर खाना खाने या अच्छी-अच्छी बातें करने तक सीमित नहीं है। इसका मतलब सिर्फ़ ईसाई माहौल में खेल खेलना या पिछले हफ़्ते की घटनाओं पर बातचीत करना नहीं है। ऐसी चीज़ें तो 'नया जन्म' पाने से पहले भी की जाती थीं। इसमें एक अलग तरह की साझेदारी शामिल थी: खास तौर पर, "परमेश्वर के वचन से सीखी गई बातों को साझा करना और साथ मिलकर प्रार्थना करना," "दूसरे विश्वासियों की मुश्किलों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना करना," और "अपनी चीज़ें एक-दूसरे के साथ बाँटना।" तो फिर, प्रेरितों के काम 2:42 में जिस "संगति" का ज़िक्र है, वह क्या है? मूल ग्रीक भाषा में, इसके लिए खास तौर पर "द" (the) शब्द का इस्तेमाल किया गया है, यानी "*वह* संगति" (the fellowship)। "*वह* संगति" का क्या मतलब है? इसका मतलब है "पवित्र आत्मा की संगति।" पेंटेकोस्ट के दिन, पवित्र आत्मा के शक्तिशाली काम के बीच, लगभग 3,000 नए विश्वासियों ने जो चीज़ साझा की, वह थी उनके भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा। इस तरह, हम देखते हैं कि शुरुआती यरूशलेम की कलीसिया पवित्र आत्मा की संगति के प्रति समर्पित थी। आत्मा की संगति, आत्मा के समुदाय की एक स्वाभाविक विशेषता है। इसलिए, शुरुआती यरूशलेम की कलीसिया सिर्फ़ लोगों के एक साथ आने से बना इंसानों का समुदाय नहीं था; यह पवित्र आत्मा में संगति का समुदाय था, जिसके केंद्र और मूल में पवित्र आत्मा थी (यू सांग-सेओप)। आज के वचन, फिलिप्पियों 2:1 को देखिए: "...यदि आत्मा के साथ कोई संगति हो..." जब पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों को लिखता है, तो वह उन्हें "आत्मा के साथ संगति" करने के लिए गंभीरता से प्रोत्साहित करता है। इस प्रोत्साहन का मकसद कलीसिया की एकता है। हालाँकि कलीसिया में

अलग-अलग वरदान (1 कुरिन्थियों 12:4), अलग-अलग पद (वचन 5), और अलग-अलग सेवा-कार्य (वचन 6) हैं, फिर भी "एक ही आत्मा इन सब कामों को करती है, और हर एक को अलग-अलग वही देती है जो वह चाहती है" (वचन 11)। कलीसिया में—जो प्रभु का शरीर है—परमेश्वर ने "हर एक अंग को शरीर में वैसे ही रखा है जैसा उसे अच्छा लगा" (पद 18); खास तौर पर, परमेश्वर ने "शरीर को इस तरह बनाया है... कि शरीर में कोई फूट न हो, बल्कि अंग एक-दूसरे का समान रूप से ध्यान रखें" (पद 24–25)। इसलिए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम "मेल-मिलाप के बंधन में आत्मा की एकता को बनाए रखें" (इफिसियों 4:3)। तो फिर, पवित्र आत्मा द्वारा बनाई गई एकता को हम कैसे पूरी लगन से बनाए रख सकते हैं? आज के वचन, फिलिप्पियों 2:2 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से "आत्मा में एक होने" के लिए कहते हैं। इसका क्या मतलब है? असल में, यह उन लोगों के बारे में बताता है जो आपस में मेल-जोल के साथ "एक प्राण" होकर जुड़े हुए हैं, और जिनकी इच्छाएँ, भावनाएँ और मकसद एक जैसे हैं। फिलिप्पियों 1:27 में—जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं—प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह किया था कि वे "मसीह के सुसमाचार के योग्य चाल चलें।" हमने सीखा कि सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का मतलब है "एक आत्मा में दृढ़ खड़े रहना, और एक मन होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए कंधे से कंधा मिलाकर प्रयास करना।" यहाँ, "एक मन" का मतलब है "इच्छा और चाहत।" पौलुस विश्वासियों को प्रभु की विनम्रता वाली एक जैसी सोच अपनाने और प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए एक ही इच्छा और जोश के साथ प्रभु का काम करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

हम "एक मकसद" के साथ प्रभु का काम करने के लिए कैसे मिलकर काम कर सकते हैं और एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं? अगर हम सब अपनी-अपनी सोच और इच्छा के अनुसार काम करेंगे, तो हम प्रभु की कलीसिया—यानी उनके शरीर—की सेवा एक मन और एक दिल से नहीं कर पाएँगे; बल्कि हम अपनी निजी इच्छाओं और इरादों के आधार पर ही प्रभु का काम करेंगे। लेकिन, अगर हम सब अपनी निजी इच्छाओं को छोड़कर मिलकर प्रभु की इच्छा को जानें, तो हम एकता और एक मकसद के साथ उनके काम को पूरा करने में सहयोग कर सकते हैं। इसलिए, हम सभी को अपनी इच्छाओं को छोड़कर मिलकर प्रभु की इच्छा को पूरा करना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए: "हे परमेश्वर, मेरी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि आपकी इच्छा के अनुसार हो।" इसके अलावा, हमें *गुरेजिल* (नाप-जोख करके फिट करने) की प्रक्रिया को अपनाना होगा। *गुरेजिल* क्या है? पारंपरिक कोरियाई घर (*हानोक*)

बनाते समय, पहला कदम आमतौर पर *जुचू*—यानी नींव के पत्थर—रखना होता है जो खंभों को सहारा देते हैं। इन पत्थरों को रखने के बाद ही खंभे सीधे उन पर खड़े किए जाते हैं। फिर, खंभों को आड़ी बीम से जोड़कर ढांचा तैयार किया जाता है। हालाँकि, नींव के पत्थर पर खंभा रखते समय एक ज़रूरी कदम उठाना पड़ता है: *गुरेजिल*। चूँकि नींव के पत्थर आमतौर पर प्राकृतिक चट्टानें होती हैं, इसलिए चौड़े और सपाट पत्थर की सतह भी शायद ही कभी ऐसी होती है जिस पर खंभा अपने आप बिल्कुल सीधा खड़ा हो सके। इसलिए, यह पक्का करने के लिए तैयारी का काम ज़रूरी है कि खंभे की सतह नींव के पत्थर की सतह के साथ बिल्कुल सही तरह से फिट हो; इस प्रक्रिया को *गुरेजिल* कहा जाता है। इसका तरीका आसान है: खंभे के निचले हिस्से को तराशा और घिसा जाता है ताकि वह नींव के पत्थर के आकार के बिल्कुल अनुरूप हो जाए। आप नींव के पत्थर को नहीं बदलते; बल्कि, आप हमेशा खंभे के निचले हिस्से को नींव के पत्थर के अनुसार आकार देते और काटते-छाँटते हैं। पैमाना हमेशा नींव का पत्थर होता है, खंभा नहीं। यह फिटिंग की प्रक्रिया—जिसे *स्क्राइबिंग* (नाप-जोख करके फिट करना) भी कहते हैं—जितनी कुशलता से की जाती है, घर उतना ही सुरक्षित और मज़बूत बनता है। इस पर विचार करते हुए, मैंने "आध्यात्मिक स्क्राइबिंग" के बारे में सोचा। आध्यात्मिक जीवन जीने का मतलब है प्रभु के वचन का पालन करना, जो हमारी चट्टान हैं (मत्ती 7:24)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब सिर्फ़ "हे प्रभु, हे प्रभु" कहना नहीं है, बल्कि स्वर्ग में हमारे पिता की इच्छा को पूरा करना है (पद 21)। यहाँ मुख्य बात यह है कि जैसे निर्माण कार्य में खंभा नहीं, बल्कि कोने का पत्थर (cornerstone) मानक का काम करता है, वैसे ही प्रभु और उनकी इच्छा हमारे जीवन का मानक होनी चाहिए। इसका मतलब है कि हमें अपनी इच्छा को उनकी इच्छा के अनुसार ढालना चाहिए, न कि उनकी इच्छा को अपनी इच्छा के अनुसार—ठीक वैसे ही जैसे खंभे को कोने के पत्थर के अनुसार आकार दिया जाता है, न कि इसके विपरीत। यीशु के शिष्यों के रूप में, हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में पूरी तरह से प्रभु की इच्छा के अनुसार जीना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा पूरा कलीसिया परिवार प्रभु को भरपूर आनंद दे पाएगा, जो कलीसिया के मुखिया हैं।

चौथी और आखिरी बात, जो कलीसिया प्रभु को भरपूर आनंद देती है, वह दया और करुणा दिखाने वाली कलीसिया होती है।

इस साल हमारे चर्च का आदर्श वाक्य है "यीशु मसीह के हृदय के साथ।" इस आदर्श वाक्य के साथ जुड़ा वचन फिलिप्पियों 1:8 है: "परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं यीशु मसीह के हृदय के साथ आप सभी के लिए कितनी तड़प

रखता हूँ।" इस साल हमारा लक्ष्य यीशु मसीह के हृदय के साथ अपने पड़ोसियों से प्रेम करना है। इस साल की नए साल की प्रार्थना सभा में हमें सिखाया गया कि हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहिए—खासकर, यीशु मसीह के हृदय के साथ उनके लिए तड़पना चाहिए (पद 8), उनके प्रति करुणा महसूस करनी चाहिए (यिर्मयाह 31:20), और यहाँ तक कि प्रेम से उपजी जलन के साथ भी उनके लिए तड़पना चाहिए (याकूब 4:5)। इसके अलावा, हमें चुनौती दी गई कि हम हमेशा अपने पड़ोसियों का ध्यान रखें और यीशु मसीह के हृदय के साथ उनके लिए प्रार्थना करें (फिलिप्पियों 1:9–11)। नए साल का स्वागत करते हुए हमें वचन के माध्यम से यह चुनौती भी दी गई कि हम यीशु मसीह के हृदय के साथ सुसमाचार के काम में भाग लें (पद 5)। पिछले ग्यारह महीनों पर नज़र डालें तो, आपको क्या लगता है कि आप इन लक्ष्यों को हासिल करने के कितने करीब पहुँचे हैं? क्या हमने सचमुच अपने पड़ोसियों के लिए तड़प महसूस की—यहाँ तक कि जलन भरी तड़प भी—और साथ ही उनके प्रति करुणा भी महसूस की? क्या हमने हमेशा अपने पड़ोसियों को याद किया और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की? क्या हमने यीशु मसीह के दिल से सुसमाचार के काम में हिस्सा लिया? क्या कभी ऐसा हुआ है जब हमने अपने पड़ोसियों को देखा, दया भरे दिल से उनके लिए प्रार्थना की, और उनकी देखभाल या मदद की?

आज के वचन पर विचार करें, फिलिप्पियों 2:1 का बाद वाला हिस्सा: "...यदि कोई स्नेह और दया है।" यहाँ "स्नेह" के तौर पर अनुवादित शब्द वही यूनानी शब्द है जिसका इस्तेमाल फिलिप्पियों 1:8 में "स्नेह" (या "दिल") के लिए किया गया है। जैसे पौलुस ने रोम की जेल से लिखते हुए यीशु मसीह के दिल से फिलिप्पी कलीसिया के संतों के लिए तड़प महसूस की थी (1:8), वैसे ही वह उन्हें मसीह की दया के साथ एक-दूसरे के लिए तड़प रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (2:1)। 1 यूहन्ना 3:17–18 पर विचार करें: "यदि किसी के पास भौतिक चीज़ें हों और वह किसी भाई को ज़रूरत में देखे लेकिन उस पर दया न करे, तो परमेश्वर का प्रेम उसमें कैसे हो सकता है? प्यारे बच्चों, आओ हम केवल शब्दों या ज़बान से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्रेम करें।" यदि कोई यीशु मसीह के दया भरे दिल से पड़ोसी से प्रेम और परवाह करता है, तो वह ज़रूरत में किसी भाई को देखकर अपना दिल बंद नहीं करेगा—बल्कि कर ही नहीं पाएगा। न ही ऐसा व्यक्ति बिना कुछ किए सिर्फ़ ज़बानी बातें करेगा—जैसे "कितनी बुरी बात है" या "मुझे तुम्हारे लिए बहुत दुख है" कहना। इसके बजाय, परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होकर, वे सच्चे कामों और ईमानदारी से उस ज़रूरतमंद भाई की मदद करेंगे। भाइयों के बीच रिश्तों में इस तरह की दया को गहरा करने का तरीका मसीह के प्रेम के ज़रिए एक-दूसरे का स्वागत करना और आज्ञा मानना है। इसका एक बेहतरीन उदाहरण 2 कुरिन्थियों 7:15 में मिलता है: "और तुम्हारे प्रति उसका स्नेह और भी बढ़ जाता

है जब उसे याद आता है कि तुम सब आज्ञाकारी थे, और तुमने डर और कांपते हुए उसका स्वागत किया था।" इस अंश में, पौलुस कुरिन्थ के विश्वासियों को बताते हैं कि उनके प्रति टाइटस का स्नेह—उसका दिल, प्रेम और दया—इसलिए गहरा हो गया क्योंकि उसे याद आया कि कैसे उन्होंने उसकी यात्रा के दौरान डर और कांपते हुए उसका स्वागत किया था और उसकी आज्ञा मानी थी। इसके अलावा, पौलुस ने बताया कि कुरिन्थ के विश्वासियों से टाइटस की आत्मा को ताज़गी मिली (वचन 13); दूसरे शब्दों में, टाइटस को उनके प्रेम और दिलासे से ताकत और हिम्मत मिली। टाइटस को इस हालत में देखकर पॉल को न सिर्फ़ तसल्ली मिली, बल्कि वह "और भी ज़्यादा खुश" हुआ (आयत 13)। तो, आज के वचन (फिलिप्पियों 2:1) में पॉल जिस "दया" की बात कर रहा है, उसका क्या मतलब है? अंग्रेज़ी शब्द "compassion" (दया) लैटिन शब्दों *pati* (दुख सहना) और *cum* (साथ) से बना है, जिनका मतलब है "साथ मिलकर दुख सहना।" अपनी किताब *Compassion* में हेनरी नूवेन ने लिखा है: "दया हमसे कहती है कि हम वहाँ जाएँ जहाँ दुख है, दर्द वाली जगहों पर जाएँ, और टूटेपन, डर, उलझन और तकलीफ़ में हिस्सेदार बनें।" यीशु ने कहा, "दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पिता दयालु है" (लूका 6:36)। यहाँ पिता परमेश्वर की दया का मतलब है अपने दुश्मनों से प्यार करना और एहसान न मानने वालों और बुरे लोगों के साथ भी भलाई करना। यीशु ने हमारे पापों का प्रायश्चित करके हम पर अपनी दया दिखाई। यीशु से ऐसी दया पाकर, हमें भी ज़रूरतमंद पड़ोसियों पर दया करनी चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए (मत्ती 6:2–4; याकूब 1:27 देखें), और अगर कोई पड़ोसी हमारे साथ बुरा करता है, तो हमें उन पर दया करनी चाहिए और उन्हें माफ़ कर देना चाहिए (मत्ती 18:35)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें प्रभु का वादा किया हुआ आशीर्वाद मिलेगा—"दया पाना" (मत्ती 5:7)—और प्रभु हम पर दया करेंगे, हमें माफ़ करेंगे और हमारी मदद करेंगे।

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:1 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से "स्नेह और दया" के बारे में बात करते हैं क्योंकि वह चाहते हैं कि वे ऐसे दयालु हृदय के साथ एक ही मकसद के लिए जिएं। फिलिप्पियों 2:2 को देखें: "एक मन के हो जाओ, एक ही प्रेम रखो, आत्मा में एक हो जाओ, और एक ही मकसद पर ध्यान लगाओ।" "एक ही मकसद पर ध्यान लगाना" वाक्यांश मूल ग्रीक भाषा के एक शब्द से मेल खाता है, जिसे अंग्रेज़ी अनुवादों ने अच्छी तरह से समझाया है। इसका मतलब है एक खास, एकमात्र इरादा या लक्ष्य रखना। यही शब्द फिलिप्पियों 2:5 में फिर से आता है: "अपने आप में यह सोच रखो..." यहाँ, "यह सोच रखना" वाक्यांश का अर्थ है एक मानसिकता या सोच का तरीका—एक खास मकसद के साथ आगे बढ़ने का स्वभाव। दूसरे शब्दों में,

पौलुस फिलिप्पी विश्वासियों को "मसीह यीशु की सोच" को अपना लक्ष्य बनाने और उस मकसद की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। और यीशु की सोच की खासियत सिर्फ़ नम्रता ही नहीं, बल्कि "स्नेह और दया" भी है। इस पत्र के ज़रिए, पौलुस पूरी कलीसिया से आग्रह करते हैं कि वे एक-दूसरे का आदर करें, प्रेम करें और एक-दूसरे को दिलासा दें, और प्रभु में सच्ची संगति का अनुभव करें, और साथ ही उसी दयालु हृदय को अपनाएं।

क्या हमें पौलुस की इस गंभीर सलाह पर ध्यान नहीं देना चाहिए? क्या हम सभी को यीशु मसीह के दयालु और करुणामयी हृदय को नहीं अपनाना चाहिए, जैसा कि पौलुस ने सलाह दी थी? उस हृदय के साथ, हमें एक-दूसरे का आदर करना, प्रेम करना और दिलासा देना चाहिए, दया और करुणा दिखानी चाहिए, और इस तरह प्रभु में सच्ची संगति का अनुभव करना चाहिए। ऐसा करने से, हमारी कलीसिया प्रभु के आनंद से भर सकती है।

हमें प्रभु के लिए भरपूर आनंद लाना चाहिए, जो कलीसिया के मुखिया हैं। ऐसा करने के लिए, हमें मसीह में एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए—खासकर, एक मन होकर। इसके लिए ज़रूरी है कि हम स्वार्थ या व्यर्थ घमंड के कारण कुछ न करें। इसके अलावा, हमें मसीह के प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए और एक-दूसरे को दिलासा देना चाहिए। हमें सिर्फ़ अपने ही हितों के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि दूसरों के हितों का भी ध्यान रखना चाहिए; हमें निस्वार्थ प्रेम का अभ्यास करना चाहिए जो दूसरों की भलाई चाहता हो, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने प्रेम किया था। हमें पवित्र आत्मा में संगति भी करनी चाहिए और उनके मार्गदर्शन में अपने मकसद को एक करना चाहिए। प्रभु की इच्छा को मिलकर पूरा करने के लिए हमें अपने व्यक्तिगत एजेंडे को एक तरफ़ रख देना चाहिए। दया और करुणा से भरे दिलों के साथ, हमें एक साझा लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि हमारा चर्च पवित्र आत्मा की अगुवाई में और पूरी तरह से परमेश्वर की महिमा पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक मन और एक हृदय से आगे बढ़े, और इस तरह चर्च के मुखिया, प्रभु को भरपूर आनंद दे।

“एक मन”

“...एक मन हो जाओ, और एक ही प्रेम रखो, और एक चित्त होकर एक ही मन हो” (फिलिप्पियों 2:2)।

चर्च में महिलाओं की सेवा का बहुत महत्व है। जिस तरह यीशु के आस-पास रहने वाली महिलाओं ने उनसे प्रेम किया और उनकी सेवा की, उसी तरह चर्च की वे बहनें जो यीशु से प्रेम करती हैं और चर्च—जो उसका शरीर है—की सेवा करती हैं, सचमुच बहुत अनमोल हैं। उनकी त्यागपूर्ण सेवा और समर्पित प्रार्थनाएँ उनकी सेवा-कार्य के ज़रूरी हिस्से हैं। युवा महिलाएँ अक्सर त्याग की भावना से चर्च की सेवा करती हैं, जबकि बड़ी उम्र की महिलाएँ समर्पित प्रार्थना का जीवन जीती हैं। उनकी सेवा और प्रार्थनाएँ चर्च की शोभा बढ़ाती हैं और उसे मज़बूती देती हैं। उनकी माँ जैसी कोमलता (1 थिस्सलुनीकियों 2:7) और स्नेहपूर्ण दयालुता चर्च समुदाय को रोशन करती है। हालाँकि, मेरा मानना है कि महिलाओं की सेवा में आपसी कलह (फिलिप्पियों 2:3) एक संभावित ख़तरा है। बेशक, कलह सिर्फ़ पुरुषों या महिलाओं तक ही सीमित नहीं है; हमारे जन्मजात पापी स्वभाव के कारण, हम सभी चर्च के भीतर झगड़ते और लड़ते हुए पाए जा सकते हैं। ऐसा लगता है कि फिलिप्पी के चर्च में भी ऐसी ही कलह थी (2:3)। यूओदिया और सुन्तुखे बहनों के बीच हुए झगड़े (4:2) के बारे में, पौलुस ने उनसे आग्रह किया कि वे “प्रभु में एक मन हों” (4:2)। सच तो यह है कि चर्च के सभी पवित्र लोगों को प्रभु में एक मन होना चाहिए। ऐसा करके, हम दुनिया को दिखाते हैं कि यीशु मसीह का शरीर एक है। दूसरे शब्दों में, हमें चर्च की एकता को बनाए रखना चाहिए—खासकर, हमें अपनी विविधता के बावजूद उस एकता को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए।

हम गलत इरादों (1:17) के साथ चर्च के भीतर झगड़ते हुए पाए जा सकते हैं। ऐसी कलह हमारे अपने घमंड (2:3) या अहंकार से भड़क सकती है। प्रेरित याकूब ने पूछा, “तुम्हारे बीच लड़ाइयाँ और झगड़े क्यों होते हैं? क्या वे तुम्हारी उन इच्छाओं से नहीं आते जो तुम्हारे भीतर लड़ती रहती हैं?” (याकूब 4:1)। हमारे भीतर मौजूद “लालच” और “ईर्ष्या” (पद 2) के कारण, हम एक-दूसरे से झगड़ और लड़ सकते हैं। अपने भाइयों और बहनों से मन में नफ़रत करके, हम हत्या का पाप भी कर बैठते हैं (याकूब 4:2; 1 यूहन्ना 3:15)। इसलिए, फिलिप्पियों 2:2 का यह अंश आज हमारे लिए बहुत ज़रूरी और अहम है। हमारे चर्च को पौलुस की इस सलाह पर ध्यान देना चाहिए। प्रेरित पौलुस तीन खास बातें कहते हैं: (1) एक मन के होना (या एक जैसा सोचना), (2) एक जैसा प्यार रखना, और (3) एक मकसद के लिए एकजुट होना।

पहली बात, हमें एक मन का होना चाहिए।

यह कैसे हो सकता है? हममें से हर एक की अपनी सोच होती है; इतनी अलग-अलग सोच वाले लोग एक कैसे हो सकते हैं? इसका बस एक ही तरीका है: यीशु जैसी सोच अपनाना। फिलिप्पियों 2:5 देखिए: "आपस के रिश्तों में, वैसी ही सोच रखें जैसी मसीह यीशु की थी।" अगर हम सब यीशु जैसी सोच अपनाएँ और उनके जैसा बनने की कोशिश करें, तो सचमुच हम एक मन के हो सकते हैं। हमें नम्र सोच अपनानी चाहिए जो यीशु की तरह खुद को नीचा करती है। हमें "नम्रता के साथ, दूसरों को खुद से बेहतर समझकर" (वचन 3) चर्च की एकता बनाए रखनी चाहिए।

दूसरी बात, हमें एक जैसा प्यार रखना चाहिए।

वह प्यार और कोई नहीं, बल्कि परमेश्वर का प्यार है। हमारे अंदर परमेश्वर का प्यार होना चाहिए और हमें एक-दूसरे से प्यार करने के लिए उसका इस्तेमाल करना चाहिए। रोमियों 5:5 कहता है कि "परमेश्वर का प्यार पवित्र आत्मा के ज़रिए हमारे दिलों में डाला गया है, जो हमें दिया गया है।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का प्यार—पवित्र आत्मा के साथ—हममें से उन लोगों के अंदर रहता है जो यीशु पर विश्वास करते हैं। हमें उस प्यार से और ज़्यादा भरते जाना चाहिए; खासकर, हमें उस प्यार से भरना चाहिए जो पवित्र आत्मा का फल है। इसके लिए, हमें परमेश्वर से वैसे ही प्रार्थना करनी चाहिए जैसे पौलुस ने की थी: "...कि तुम्हारा प्यार ज्ञान और गहरी समझ में और

ज़्यादा बढ़ता जाए" (फिलिप्पियों 1:9)। इसके अलावा, हमें परमेश्वर के इस भरपूर प्यार के साथ एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए। हमें परमेश्वर के प्यार से एक-दूसरे को दिलासा देना चाहिए (2:1) और उस प्यार में संगति रखनी चाहिए (वचन 1)। हमें सिर्फ़ अपने फ़ायदे के बारे में नहीं, बल्कि दूसरों के फ़ायदे के बारे में भी सोचना चाहिए (वचन 4)। ऐसा करके, हम अपनी विभिन्नताओं के बावजूद चर्च की एकता बनाए रख पाएँगे।

तीसरी बात, हमें एक मन का होना चाहिए।

इसे पाने के लिए, हमें अपनी इच्छाओं को छोड़कर प्रभु की इच्छा को अपनाना होगा। दूसरे शब्दों में, प्रभु की इच्छा ही हमारी इच्छा बन जानी चाहिए। यीशु की तरह हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए, "मेरी इच्छा नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो" (मरकुस 14:36)। हमें अपनी इच्छाओं को छोड़कर प्रभु की इच्छा पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए। जैसे यीशु ने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए क्रूस पर अपनी जान देने तक आज्ञा मानी, वैसे ही हमें भी प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए अपनी जान देने को तैयार रहना चाहिए। प्रभु की इच्छा यह है कि हम "मसीह के सुसमाचार के योग्य चाल चलें" (फिलिप्पियों 1:27)। हमें "एक आत्मा में दृढ़ खड़े रहना चाहिए और सुसमाचार के विश्वास के लिए एक व्यक्ति की तरह लड़ना चाहिए" (पद 27)। जब हम एक आत्मा में दृढ़ खड़े रहेंगे और सुसमाचार के लिए एक मन से सहयोग करेंगे, तो हम कलीसिया की एकता बनाए रख सकेंगे। प्रेरित पौलुस और उनके आध्यात्मिक बेटे तीमुथियुस वे लोग थे जो सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ खड़े रहे और एक मकसद के साथ सहयोग किया (2:19–22)। ये दोनों साथी "एक मन" के थे (पद 20); यानी, पौलुस और तीमुथियुस का इरादा एक ही था। भेजने वाले पौलुस और भेजे जाने वाले तीमुथियुस ने प्रभु की इच्छा से एकजुट होकर, भाइयों और बहनों के सुसमाचार में विश्वास के लिए मिलकर काम किया। वे एक-दूसरे से वैसा ही प्रेम करते थे जैसा परमेश्वर अपने विश्वासियों से करता है। वे सचमुच अपने भाइयों और बहनों की भलाई की परवाह करते थे (पद 20)। वे दिल से एक थे, और अपना स्वार्थ नहीं बल्कि केवल यीशु मसीह की बातों को चाहते थे (पद 21)। हमें भी पौलुस और तीमुथियुस के आदर्श जीवन का अनुकरण करना चाहिए—जिन्होंने प्रभु के हृदय और परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होकर उनकी इच्छा पूरी करने की कोशिश की—ठीक वैसे ही जैसे फिलिप्पी कलीसिया की महिला नेताओं, यूओदिया और सुन्तुखे को करने के लिए कहा गया था। हमारी कलीसिया लगन से अपनी एकता बनाए रखे, जिससे परमेश्वर की महिमा हो और वह दुनिया के लिए एक चमकती हुई मिसाल बने।

कलीसिया में झगड़े की वजह

"स्वार्थ या व्यर्थ के घमंड में आकर कुछ न करो" (फिलिप्पियों 2:3a)।

कलीसिया में झगड़े की एक वजह व्यर्थ का घमंड है (फिलिप्पियों 2:3)। अगर कुछ लोग ऐसी महिमा पाने की कोशिश करते हैं जो सिर्फ़ दिखावे की हो—जिसमें कोई असलियत न हो और जो उनकी हद से ज़्यादा हो—तो कलीसिया में झगड़ा होना तय है। इसका एक बड़ा उदाहरण "जंगल की कलीसिया" है (प्रेरितों के काम 7:38)।

अगर हम जंगल की कलीसिया को एक प्रेस्बिटेरियन कलीसिया मानें, तो मूसा पास्टर होते और हारून एल्डर। कलीसिया की समिति में मूसा (सिखाने वाले एल्डर/पास्टर) और हारून (शासन करने वाले एल्डर) शामिल होते। लेकिन, कुछ लोगों के एक समूह ने—कोराह (एक लेवी) और दातान, अबीराम और ओन (रूबेन के वंशज)—एक गुट बना लिया (गिनती 16:1)। (यह हैरानी की बात है कि कलीसिया के अंदर कुछ लोग ऐसे गुट क्यों बनाते हैं।) उन्होंने इस्राएली मंडली के 150 जाने-माने नेताओं—जो कलीसिया में अहम लोग थे—को अपने साथ मिलाया ताकि वे पास्टर मूसा और एल्डर हारून के खिलाफ़ खड़े हो सकें (वचन 2)। (कोई सोच सकता है कि जो लोग इसमें शामिल हुए, उनमें इतनी आध्यात्मिक समझ की कमी कैसे हो सकती थी।) उन्होंने दोनों नेताओं को चुनौती देते हुए कहा, "तुमने हद पार कर दी है... पूरी मंडली पवित्र है, उनमें से हर एक, और प्रभु उनके बीच है। तो फिर तुम खुद को प्रभु की सभा से ऊपर क्यों समझते हो?" (वचन 3)। यह सुनकर, पास्टर मूसा सबसे पहले मुँह के बल गिरे और परमेश्वर से विनती की (वचन 4)। (वह और क्या कर सकते थे? एक पास्टर के पास परमेश्वर से पुकारने के अलावा कोई चारा नहीं होता।) फिर, पास्टर मूसा ने कोराह और उसके पूरे समूह को डांटते हुए कहा, "तुम लेवियों ने हद पार कर दी है" (वचन 7)। कोराह और उसके साथियों ने किस तरह अपनी हद पार की थी? उन्होंने परमेश्वर की कृपा को कम करके आंका था। उन्होंने उस कीमती पद को हल्के में लिया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था—उन्हें मिलापवाले तम्बू में इस्राएल के लोगों की सेवा करने के लिए अलग किया था

(वचन 9)। नतीजतन, वे हारून की तरह ही याजक का पद पाने की कोशिश करने लगे। क्योंकि उन्होंने उस भूमिका को कम आंका और हल्के में लिया जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी, इसलिए उनके मन में अपनी सही जगह से बढ़कर सोचने के विचार आए—एक ऐसा अहंकार जिसने उन्हें खुद को बड़ा समझने पर मजबूर किया—जिसके कारण उन्होंने पादरी मूसा और एल्डर हारून के साथ गुस्ताखी भरी बातें कीं और वैसा ही व्यवहार किया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उनके दिल घमंड से भरे हुए थे; उन्होंने जंगल की कलीसिया के नेतृत्व का विरोध किया क्योंकि वे झूठी शान-शौकत के पीछे भाग रहे थे। बाइबल कहती है कि ऐसा करके, वे न केवल पादरी मूसा और एल्डर हारून का विरोध कर रहे थे, बल्कि परमेश्वर का भी विरोध कर रहे थे, जिन्होंने उन दोनों नेताओं को जंगल की कलीसिया पर नियुक्त किया था (वचन 11)।

ठीक जैसे जंगल की कलीसिया में ऐसे लोग थे जो घमंड से भरे हुए थे और अपनी सही सीमा से बाहर जाकर सोचते, बोलते और काम करते थे, वैसे ही अब—एक बड़े शहर की कलीसिया (शायद एक मेगाचर्च?) में—एक "कोराह जैसा" व्यक्ति है जो घमंड से भरा हुआ है। यह व्यक्ति गुट बनाता है, कलीसिया के प्रभावशाली या जाने-माने सदस्यों को अपने साथ मिलाता है, और कलीसिया के भीतर झगड़े और मुसीबतें पैदा करता है। यह हैरानी की बात है—लगभग यकीन न होने वाली बात—कि कैसे एक अकेला व्यक्ति कलीसिया के भीतर इतनी बड़ी समस्याएँ पैदा कर सकता है। वह अभी इतनी बड़ी गड़बड़ी क्यों पैदा कर रहा है? असल में, उसका असली मकसद क्या है? मुझे याकूब 4:1–2 के शब्द याद आते हैं: "तुम्हारे बीच लड़ाइयाँ और झगड़े क्यों होते हैं? क्या वे तुम्हारी उन इच्छाओं से नहीं आते जो तुम्हारे अंदर लड़ती रहती हैं? तुम इच्छा तो करते हो पर तुम्हें मिलता नहीं, इसलिए तुम हत्या करते हो। तुम लालच करते हो पर जो चाहते हो वह पा नहीं सकते, इसलिए तुम झगड़ते और लड़ते हो। तुम्हारे पास इसलिए नहीं है क्योंकि तुम परमेश्वर से माँगते नहीं हो।" अभी, वह झगड़ रहा है क्योंकि वह उन इच्छाओं से प्रेरित है जो उसके अंदर लड़ रही हैं। और उसके इतना झगड़ने का कारण यह है कि वह लालच में डूबा हुआ है। आखिर वह किस चीज़ का लालच करता है? शायद, अपनी सही जगह से कहीं आगे की सोचते हुए, वह कलीसिया के बीच ऊँचा पद पाना चाहता है। शायद वह खोखली शान चाहता है—एक ऐसा दिखावा जिसमें कोई असली सच्चाई नहीं है। फिर भी, क्योंकि वह अपनी लालची कोशिशों के बावजूद वह चीज़ नहीं पा पाता जिसकी उसे चाहत है, इसलिए वह और भी ज़्यादा झगड़ता और लड़ता है। यह व्यक्ति कौन है? प्रेस्बिटेरियन कलीसिया के भीतर कौन है जो घमंड से भरा है, अपनी सही सीमा से बाहर जाकर सोचता,

बोलता और काम करता है, और इस तरह झगड़े पैदा करता है? क्या यह कोई कलीसिया का एल्डर हो सकता है? क्या यह कोई पादरी हो सकता है?

यह सचमुच एक गंभीर मामला है। मुझे लगता है कि प्रेस्बिटेरियन चर्च में मुख्य समस्या आम सदस्यों के साथ नहीं, बल्कि खुद पादरियों और एल्डर्स के साथ है। एल्डर्स पादरी को इतनी नापसंदगी से क्यों देखते हैं? क्या एल्डर हारून—जो बहुत अच्छी तरह बोलते थे—मूसा से इसलिए नाराज़ थे कि मूसा अच्छी तरह बोल नहीं पाते थे, और क्या उन्होंने उन्हें जंगल की मंडली से बाहर निकाल दिया था? क्या एल्डर्स सच में इतने ऊँचे दर्जे के हैं कि उन्हें पादरी में कमियाँ नज़र आती हैं? और पादरी भी एल्डर्स को इतनी नापसंदगी से क्यों देखते हैं? क्या मूसा—जो परमेश्वर से आमने-सामने मिले थे (निर्गमन 33:11)—ने एल्डर हारून को इसलिए अनुशासित किया था कि उन्होंने इस्राएली मंडली को बेलगाम होने दिया (32:25) और उनसे उनकी एल्डरशिप छीन ली थी? कोई चर्च शांति से कैसे रह सकता है जब पादरी और एल्डर्स—जो चर्च सेशन के ही सदस्य हैं—एकमत नहीं हो पाते और आपस में झगड़ते रहते हैं?

पादरी और एल्डर्स, मंडली को अभी चोट पहुँच रही है। सदस्य चर्च छोड़कर जा रहे हैं। हमारा चर्च लोगों की आलोचना का सामना कर रहा है—न केवल दुनिया से, बल्कि दूसरे चर्चों के साथी विश्वासियों से भी। हम प्रभु का दिल दुखा रहे हैं जो हमारे चर्च की देखभाल करते हैं। पादरी और एल्डर्स, कृपया लड़ना बंद करें। कृपया सुलह करें और मिल-जुलकर रहें। कृपया एक मन होकर रहें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यीशु के नम्र स्वभाव को अपनाएँ (फिलिप्पियों 2:3, 5)।

हमें मसीह यीशु जैसा मन रखना चाहिए।

[फिलिप्पियों 2:5–11]

क्या आप स्वस्थ हैं? हम सभी शायद अपनी सेहत को लेकर चिंतित रहते हैं। मैंने भी अपनी तीस-पैंतीस साल की उम्र के बाद अपनी सेहत में दिलचस्पी लेना और उसे ठीक रखने के लिए कसरत करना शुरू किया था। हालाँकि, जैसे-जैसे मैं विश्वास का जीवन जी रहा हूँ, मुझे यह एहसास हो रहा है कि शारीरिक सेहत की तुलना में दिल की सेहत कितनी ज़्यादा ज़रूरी है। बाइबल की जिस आयत से मुझे यह एहसास हुआ, वह नीतिवचन 4:23 है: "सबसे बढ़कर अपने दिल की रक्षा करो, क्योंकि तुम जो कुछ भी करते हो, वह उसी से निकलता है।" हम अपने दिल की सही तरह से रक्षा कैसे कर सकते हैं? हमें अपने दिल की सेहत का ध्यान कैसे रखना चाहिए? मैंने एक बार "दिल की अच्छी तरह रक्षा करना" शीर्षक से एक छोटा सा लेख लिखा और साझा किया था, जिसमें लिखा था: "जब दिल में परमेश्वर के प्रति शक पैदा होने लगता है, तो वह अविश्वास में बदल जाता है; अविश्वास से शिकायतें और असंतोष से पैदा होने वाली नाराज़गी आती है; और आखिरकार, इसका नतीजा परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानना होता है। इसलिए, हमें अपनी शारीरिक सेहत से भी ज़्यादा सावधानी से अपने दिल की रक्षा करनी चाहिए।" क्या आपका दिल अभी स्वस्थ है? कलीसिया तभी स्वस्थ हो सकती है जब हमारे दिल स्वस्थ हों। स्वस्थ दिल वह है जो परमेश्वर पर पूरा भरोसा करता है और उससे प्रेम करता है। यह वह दिल भी है जो भाइयों और बहनों से परमेश्वर के प्रेम के साथ प्रेम करता है। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पी के संतों को लिखे अपने पत्र में कहा कि वे "उसके दिल में" हैं (फिलिप्पियों 1:7), उनसे "एक आत्मा में दृढ़ खड़े रहने" का आग्रह किया (1:27), और उनसे "एक जैसा मन रखने" (2:2) और "एक जैसा मन साझा करने" (2:2) के लिए कहा।

इस संदर्भ में, पौलुस ने आज के अंश, फिलिप्पियों 2:5 में फिलिप्पी के संतों को गंभीरता से प्रोत्साहित किया: "एक-दूसरे के साथ अपने रिश्तों में, वैसा ही मन रखो जैसा मसीह यीशु का था।" इस अंश और "हमें मसीह यीशु का मन अपनाना चाहिए" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं यीशु के मन के उन तीन पहलुओं पर विचार

करना चाहता हूँ जिन्हें हम सभी को अपनाना चाहिए, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम उन सीखों को स्वीकार करें और उनका पालन करें जो प्रभु हमें देते हैं। सबसे पहले, मसीह यीशु का वह मन जिसे हम सभी को अपनाना चाहिए, वह यह है कि दूसरों के साथ बराबरी को अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करने या हथियाने की चीज़ न माना जाए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:6 को देखें: "जो परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी, परमेश्वर के साथ बराबरी को अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करने की चीज़ नहीं मानते थे।" स्विट्ज़रलैंड में वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम (WEF) द्वारा 28 अक्टूबर, 2014 को जारी जेंडर इक्वालिटी (लिंग समानता) रैंकिंग के अनुसार, सर्वे किए गए 142 देशों में दक्षिण कोरिया 117वें स्थान पर रहा। यह पिछले साल की 111वीं रैंकिंग से छह स्थान नीचे है। ये रैंकिंग रोज़गार, शिक्षा के अवसर, स्वास्थ्य और राजनीतिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में लिंग-आधारित अंतर को मापकर तय की जाती हैं; जहाँ दक्षिण कोरिया निचले स्तर पर रहा, वहीं आइसलैंड पहले स्थान पर रहा, और उसके बाद नॉर्डिक देश—फ़िनलैंड, नॉर्वे, स्वीडन और डेनमार्क—शीर्ष पाँच में शामिल रहे। एशिया में, फ़िलीपींस 9वें स्थान के साथ सबसे ऊपर था, जबकि चीन 87वें और जापान 104वें स्थान पर था। तो, लिंग समानता में दक्षिण कोरिया की कम रैंकिंग का कारण क्या है? इस असमानता का मुख्य कारण "लिंग-आधारित भूमिकाओं के बारे में रूढ़िवादी सोच" (47.8%) बताया गया है। इसके बाद बताए गए कारणों में "पुरुषों और महिलाओं के बीच शारीरिक अंतर" (22.5%), "सामाजिक और आपसी रिश्तों में अंतर" (10.8%), और "घर के कामों और बच्चों की देखभाल के बोझ से जुड़ी लिंग-आधारित असमानताएँ" (9.3%) शामिल हैं (इंटरनेट)।

बाइबल लिंग समानता के बारे में क्या कहती है? बाइबल पढ़ते समय, किसी को यह लग सकता है कि यह महिलाओं के साथ भेदभाव करती है। इसका एक उदाहरण 1 कुरिन्थियों 14:34 है, जहाँ पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को लिखते हुए कहा, "महिलाओं को कलीसिया में चुप रहना चाहिए।" इस तरह के वचन से आसानी से यह धारणा बन सकती है कि कलीसिया में महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। हालाँकि, ऐसा नहीं है। कोरिया की चोंगशिन यूनिवर्सिटी थियोलॉजिकल सेमिनरी के प्रोफ़ेसर ली सांग-वोन के अनुसार, यहाँ ध्यान देने वाली एक ज़रूरी बात यह है कि पौलुस का "चुप रहने" का आदेश सिर्फ़ महिलाओं के लिए नहीं था; यह कलीसिया के सभी विश्वासियों के लिए दिया गया आदेश था। हम इसे महिलाओं के चुप रहने के निर्देश से ठीक पहले वाली आयत को देखकर समझ सकते हैं: "जैसा कि संतों की सभी कलीसियाओं में होता है" (आयत 33)।

तो फिर, पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में सभी विश्वासियों को "चुप रहने" का आदेश क्यों दिया? कारण यह था कि कुरिन्थ की कलीसिया में बहुत से लोगों को 'अन्य भाषाएँ बोलने' (speaking in tongues) का वरदान मिला था; क्योंकि हर कोई एक साथ अन्य भाषाएँ बोल रहा था, इसलिए कलीसिया में अव्यवस्था फैल गई थी। पौलुस ने मंडली को "चुप रहने" का आदेश इसलिए दिया ताकि वे सार्वजनिक आराधना सभाओं के दौरान, जहाँ बहुत से लोग इकट्ठा होते थे, अन्य भाषाएँ बोलने से बचें। हालाँकि, चूँकि अन्य भाषाएँ बोलने का वरदान पाने वालों में ज़्यादातर महिलाएँ थीं, इसलिए उन्होंने अपने आदेश में विशेष रूप से महिलाओं को चुप रहने के लिए कहा। दूसरे शब्दों में, उनका कहना था कि अगर कोई अन्य भाषा में बोलना चाहता है, तो उसे चुपचाप ऐसी जगह पर करना चाहिए जहाँ दूसरों को परेशानी न हो; यह किसी भी तरह से महिलाओं को कलीसिया में बोलने या साथी विश्वासियों को सिखाने से रोकने का आदेश नहीं था (इंटरनेट)। उत्पत्ति की पुस्तक... अध्याय 1 की आयत 27 में कहा गया है कि परमेश्वर ने "मनुष्य" को—खासकर "पुरुष और स्त्री" को—अपने ही स्वरूप में रचा। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को समान बनाया। हालाँकि, परमेश्वर ने हर एक को उनके लिंग के अनुसार अलग-अलग व्यक्तित्व, विशेषताएँ और कार्य दिए। इस प्रकार, उन्होंने पुरुषों और स्त्रियों को सहयोग करने और उस बुलाहट को पूरा करने में सक्षम बनाया जो उन्होंने उन्हें दी थी। इसका एक मुख्य उदाहरण "फलो-फूलो और बढ़ो" का ईश्वरीय आदेश है; यह एक ऐसी बुलाहट है जिसे न तो कोई पुरुष और न ही कोई स्त्री अकेले पूरा कर सकता है। आखिरकार, बच्चा तभी बन सकता है जब पुरुष का शुक्राणु (sperm) स्त्री के अंडे (egg) से मिलता है। बच्चे पैदा करके ही कोई व्यक्ति "फलो-फूलो और बढ़ो" के परमेश्वर के आदेश का पालन कर सकता है।

हम जिस परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वह त्रिएक परमेश्वर (Triune God) है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु) और परमेश्वर पवित्र आत्मा मूल रूप से एक ही हैं—तीन समान व्यक्ति। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (Westminster Shorter Catechism) का छठा सवाल पूछता है, "ईश्वरत्व (Godhead) में कितने व्यक्ति हैं?" और इसका जवाब देता है: "ईश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा; और ये तीनों एक ही परमेश्वर हैं, जो तत्व में समान हैं और शक्ति व महिमा में भी बराबर हैं।" परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु) और परमेश्वर पवित्र आत्मा—जो एक ही परमेश्वर हैं और हर तरह से बराबर हैं—अलग-अलग भूमिकाओं वाले तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मौजूद हैं, फिर भी वे एक ही सत्ता (परमेश्वरत्व की एकता) हैं। तो फिर, त्रिएक परमेश्वर की भूमिकाएँ कैसे अलग-अलग हैं? पवित्र त्रिएक द्वारा रची गई उद्धार की योजना और

इतिहास को देखकर हम इसे समझ सकते हैं। हमारे उद्धार के काम में, परमेश्वर पिता ने योजना बनाई, परमेश्वर पुत्र ने उसे पूरा किया, और परमेश्वर पवित्र आत्मा उसे लागू करते हैं (देखें रोमियों 8:1–17; 2 कुरिन्थियों 13:14; इफिसियों 1:3–14; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13–14; 1 पतरस 1:2) (पैकर)। बाइबल के परमेश्वर, जिन पर हम विश्वास करते हैं, वे त्रिएक परमेश्वर हैं जो हमें बचाने के लिए तीनों व्यक्तियों के रूप में मिलकर काम करते हैं। हम परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु) और परमेश्वर पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं (देखें प्रेरितों का विश्वास-सार)। हालाँकि, आज के वचन—फिलिप्पियों 2:6—में बाइबल कहती है कि यीशु मसीह, "परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी, परमेश्वर के बराबर होने को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए या पकड़कर रखा जाए।" यहाँ इसका मतलब यह है कि हालाँकि यीशु महिमा में परमेश्वर पिता के बराबर थे, फिर भी उन्होंने उस दिव्य समानता को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे अपने लिए ज़बरदस्ती हासिल किया जाए या पकड़कर रखा जाए (पार्क युन-सन)। तो फिर, पौलुस ने—वचन 5 में फिलिप्पी के विश्वासियों से मसीह यीशु का मन अपनाने का आग्रह करने के बाद—वचन 6 में यह क्यों कहा कि यीशु, परमेश्वर के स्वरूप में होने के बावजूद, महिमा के मामले में परमेश्वर के बराबर होने को ऐसी चीज़ नहीं मानते थे जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए? मुझे इसका कारण वचन 3 में मिला: "स्वार्थ या व्यर्थ घमंड के कारण कुछ न करो, बल्कि नम्रता से दूसरों को... समझो..." "...दूसरों को अपने से बेहतर समझो।" पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के संतों से कह रहे हैं कि "नम्रता से दूसरों को अपने से बेहतर समझो"; वचनों 5–6 के संदर्भ में, इसका मतलब है मसीह यीशु का मन अपनाना—जिन्होंने, परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी, परमेश्वर के बराबर होने को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए। दूसरे शब्दों में, पॉल उन्हें मसीह यीशु जैसी विनम्र सोच अपनाने के लिए कह रहे हैं—जिन्होंने परमेश्वर के बराबर होने पर ज़ोर नहीं दिया—और अपनी बराबरी या ओहदे का दावा करने के बजाय, अपने साथी भाई-बहनों को खुद से बेहतर समझने के लिए कह रहे हैं।

गलातियों 3:28 में, पौलुस कहते हैं: "न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास और न स्वतंत्र, न कोई पुरुष और न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" मसीह यीशु में, हम सब परमेश्वर की संतान बन गए हैं। और परमेश्वर की संतान होने के नाते, हम मसीह यीशु में एक हैं। चाहे हम पुरुष हों या स्त्री; कोरियाई, अमेरिकी या दक्षिण अमेरिकी हों; मालिक हों या कर्मचारी; अमीर हों या गरीब—हम सब मसीह यीशु में एक हैं। यीशु मसीह में बिल्कुल भी भेदभाव नहीं है (रोमियों 10:12; कुलुस्सियों 3:11)। यीशु मसीह में विश्वास रखने वाले

मसीहियों के तौर पर, हमें कभी भी एक-दूसरे के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए (याकूब 2:1)। अगर हम लोगों के साथ भेदभाव करते हैं, तो हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर रहे हैं (वचन 9)। हालाँकि, हमें समझदारी से काम लेना चाहिए। हमें क्या समझना चाहिए? परमेश्वर के पवित्र और अलग किए गए लोगों के रूप में, हमें पवित्र और साधारण, तथा अशुद्ध और शुद्ध के बीच अंतर करना चाहिए (लैव्यव्यवस्था 10:10)। इस समझ के साथ, हमें दुनिया से अलग जीवन जीना चाहिए। हमें उस पापपूर्ण जीवन को छोड़ देना चाहिए जिसमें हम कलीसिया में अपने भाई-बहनों से अलग होकर दुनिया के साथ एक हो जाते हैं; इसके बजाय, हमें मसीह में मिली एकता को ईमानदारी से बनाए रखना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें मसीह यीशु जैसा विनम्र हृदय अपनाना चाहिए और समानता को स्वार्थ के लिए हासिल करने की चीज़ नहीं समझना चाहिए।

दूसरी बात, मसीह यीशु की जिस सोच को हम सभी को अपनाना चाहिए, वह है खुद को खाली करके एक सेवक की तरह दूसरों की सेवा करना।

क्या आप *द प्रिंस एंड द पॉपर* (राजकुमार और कंगाल) की कहानी जानते हैं? यह एक राजकुमार और एक कंगाल की कहानी है जो मिलते हैं और अपने कपड़े बदल लेते हैं; राजकुमार कंगाल के रूप में जीवन का अनुभव करता है और अपनी शाही स्थिति में लौटने की कोशिश करता है, जबकि कंगाल राजकुमार बन जाता है और धीरे-धीरे शासन-व्यवस्था को समझने लगता है। शुरू में, राजकुमार भिखारी के जीवन का आदी नहीं था; उसने लोगों को यह बताकर अपनी असली पहचान बताने की कोशिश की कि "मैं एक राजकुमार हूँ," लेकिन इसके बजाय, लोग उसे पागल समझने लगे और उससे दुश्मनी करने लगे। इस बीच, भिखारी धीरे-धीरे राजकुमार के जीवन का आदी हो गया और राज्य के कामकाज संभालने लगा; हालांकि उन्होंने भी यह कहकर सच बताने की कोशिश की कि "मैं तो बस एक भिखारी हूँ," लोगों ने बस यही सोचा कि "राजकुमार पागल हो गया है!" और उनके साथ और भी ज़्यादा सम्मान से पेश आए। आखिरकार, राजकुमार और भिखारी की मुलाक़ात हुई, और राजकुमार अपनी सही जगह पर लौट आया—सिर्फ़ एक राजकुमार के तौर पर नहीं, बल्कि राजा के तौर पर। आखिर में वह राजा इसलिए बन पाया क्योंकि तमाम मुश्किलों के बावजूद उसने अपनी पहचान नहीं खोई और आखिर तक डटा रहा। मुझे यह कहानी इसलिए याद आई क्योंकि आज का वचन—फिलिप्पियों 2:7—कहता है कि यीशु, जो "असल में परमेश्वर थे," उन्होंने खुद को खाली कर दिया, "एक सेवक का रूप" धारण किया, और इंसानों जैसे बन गए। बेशक, एक भिखारी की तरह रहने वाले राजकुमार और

यीशु—जो परमेश्वर हैं—के सेवक बनने के बीच ज़मीन-आसमान का फ़र्क है; फिर भी, मैंने इस कहानी पर इसलिए सोचा क्योंकि मुझे लगा कि यह यीशु के अवतार को समझने में थोड़ी मदद कर सकती है।

आज का वचन, फिलिप्पियों 2:7 देखें: "बल्कि खुद को खाली कर दिया, एक दास का रूप धारण किया, और इंसानों के रूप में आए।" वह घटना जिसमें यीशु, जो परमेश्वर हैं, इंसानी शरीर धारण करके इस धरती पर आए, उसे "अवतार" (Incarnation) कहा जाता है। यूहन्ना 1:14 के आधार पर, अवतार का मतलब उस घटना से है जिसमें "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच रहा।" यह वचन दुनिया के बनने से पहले से मौजूद था; वचन न केवल परमेश्वर के साथ था, बल्कि वचन खुद परमेश्वर था (यूहन्ना 1:1)। यूहन्ना की गवाही के अनुसार, सभी रची हुई चीज़ें इसी वचन के ज़रिए अस्तित्व में आईं (यूहन्ना 1:3)। यह वचन देहधारी हुआ और इंसानों के बीच रहा; वह सच्ची ज्योति और सभी लोगों का जीवन है। यह वचन, देहधारी होकर, यीशु मसीह के रूप में हमारे पास आया; यीशु मसीह के आने की घटना ही अवतार की घटना है। अवतार की अवधारणा का मतलब है परमेश्वर का इंसानी शरीर धारण करना—खुद को खाली करना और हर तरह से इंसान जैसा बन जाना। इसका मतलब है कि जिसने सब कुछ रचा, वह खुद रची हुई चीज़ों में से एक बन गया। यहाँ, इस बात का कि यीशु ने "खुद को खाली कर दिया" (या "खुद को कुछ नहीं समझा"), यह मतलब नहीं है कि उन्होंने अपने ईश्वरीय स्वभाव, सार या ईश्वर के रूप में अपनी पहचान को त्याग दिया; बल्कि, इसका मतलब है कि उन्होंने अपनी ईश्वरीय महिमा को एक तरफ रख दिया। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु मसीह ने अपनी दिव्यता छोड़ दी, बल्कि यह है कि उन्होंने स्वर्ग की महिमा को पीछे छोड़ दिया। इस तरह स्वर्गीय महिमा को एक तरफ रखकर, यीशु—जो "स्वभाव से ही ईश्वर थे"—इस धरती पर आए और "एक सेवक का स्वभाव" अपना लिया (फिलिप्पियों 2:6–7); इसका मतलब है कि हालाँकि वे प्रभु हैं, फिर भी वे सबके सेवक बनने के निचले स्तर पर आ गए।

क्या यह अद्‌भुत नहीं है? यह बात कि यीशु, जो प्रभु हैं, एक सेवक के निचले स्तर पर आ गए? यीशु इतनी नीची स्थिति में क्यों आए? मत्ती 20:27–28 को देखिए: "जो कोई तुममें सबसे आगे रहना चाहता है, उसे तुम्हारा सेवक बनना होगा। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपनी जान की कीमत (फिरौती) देने आया है।" हालाँकि यीशु हमारे प्रभु हैं, फिर भी वे हमारी सेवा करने और बहुतों के लिए अपनी जान की कीमत चुकाने के लिए हमारे सेवक बने। यहाँ "फिरौती" (ransom) के लिए इस्तेमाल किए गए ग्रीक शब्द का मतलब है वह कीमत जो किसी गुलाम या कैदी को आज़ाद करने के लिए चुकाई जाती है। दूसरे

शब्दों में, यीशु ने हमारे सारे पाप अपने ऊपर ले लिए और क्रूस पर मर गए ताकि हमें—जो पाप के कारण बर्बाद हो चुके थे—पाप की गुलामी के बंधन से आज़ाद कर सकें। भले ही हमारे प्रभु यीशु सेवा पाने के हकदार थे, फिर भी वे इस दुनिया में हमारी सेवा करने के लिए आए। यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाया और कहा, "अगर कोई सबसे आगे रहना चाहता है, तो उसे सबसे पीछे और सबका सेवक बनना होगा" (मरकुस 9:35)। प्रभु आज भी हमसे यही शब्द कह रहे हैं। वे हमसे सेवक बनने के लिए कह रहे हैं। तो फिर, हम अपने पड़ोसियों की सेवा कैसे कर सकते हैं?

2007 में, हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च का आदर्श वाक्य था "एक सेवा करने वाला चर्च।" एक सेवा करने वाले चर्च के तौर पर, हमने खुद को चुनौती दी कि हम नम्रता के साथ चर्च की, खुशी-खुशी अपने परिवारों की और स्वेच्छा से अपने पड़ोसियों की सेवा करें। उस साल के पहले हफ़्ते में, सुबह-सुबह होने वाली हमारी खास प्रार्थना सभाओं में हर दिन सेवा के विषय पर उपदेश दिए गए। उस हफ़्ते, मैंने इफिसियों 6:5–7 पर आधारित एक उपदेश दिया; सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, चर्च के एक डीकन ने मुझे एक ईमेल भेजा जिसमें यह संदेश था: “हमारी ज़िंदगी में—चाहे घर पर हों, समाज में, काम पर या चर्च में—ऐसे लोग होते हैं जिनकी सेवा करने के लिए हमें बुलाया गया है। हमें उनकी सेवा कैसे करनी चाहिए? हमें आज्ञाकारी बनकर उनकी सेवा करनी चाहिए। हम उनकी बात मानने में इसलिए नाकाम रहते हैं क्योंकि हमारी अपनी इच्छाएँ और राय बहुत मज़बूत और हावी होती हैं। काम पर अपने सीनियर, टीचर, माता-पिता और चर्च के पादरी और बुज़ुर्गों की बात न मानने की वजह यह है कि हममें सेवक वाली सोच या सेवक वाली भावना की कमी होती है। यह इसलिए भी होता है क्योंकि हमें प्रभु को अपने जीवन का स्वामी मानकर उनकी आज्ञा मानने की सही ट्रेनिंग नहीं मिली होती” (किम चांग-मैन)।

1 कुरिन्थियों 3:5 में, पौलुस ने खुद को और अपोलोस को "सेवक" (*diakonoi*) बताया है। यह ग्रीक शब्द ही "डीकन" (deacon) शब्द का मूल है। इसका शाब्दिक अर्थ है "सेवा करने वाले"। बाद में, 1 कुरिन्थियों 4:1 में, पौलुस ने खुद को और अपने साथियों को "मसीह के सेवक" कहा। हालाँकि अंग्रेजी में दोनों शब्दों का अनुवाद "सेवक" ही होता है, लेकिन मूल ग्रीक भाषा में इनके बीच अंतर है। दूसरी बार इस्तेमाल किए गए "सेवक" शब्द के लिए ग्रीक शब्द *huperetes* है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "नीचे बैठकर चप्पू चलाने वाला"—यानी वह व्यक्ति जो जहाज के निचले डेक से चप्पू चलाता है। पादरी जॉन मैकआर्थर के अनुसार, उन दिनों निचले डेक

से चप्पू चलाने वाले गुलाम सबसे निचले दर्जे का काम करते थे; वे ऐसे लोग थे जिनसे कोई ईर्ष्या नहीं करता था और जिन्हें बहुत हीन दृष्टि से देखा जाता था। हालाँकि, समय के साथ इस शब्द का अर्थ ऐसे व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होने लगा जो अधिकार के प्रति पूरी तरह आज्ञाकारी हो (मैकआर्थर)। असल में, पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया के सदस्यों से—जो पौलुस, अपोलोस या पतरस के बारे में डींगें मारकर अपनी शारीरिक इच्छाओं के अनुसार काम कर रहे थे—यह कह रहे थे कि वह और उनके साथी मसीह के "सेवक" (या पार्क युन-सन के शब्दों में, "अधीन गुलाम") हैं, प्रभु के ऐसे गुलाम जो उनकी आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करते हैं। भाइयों और बहनों, मसीह के सेवकों के तौर पर हम भी प्रभु के गुलाम हैं और उनकी आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करने के लिए बाध्य हैं। हमें एक गुलाम जैसी सोच रखनी चाहिए। मुझे याद है कि एक बार मैंने उपदेश में कहा था कि हमें "गुलाम जैसी मानसिकता" रखने की ज़रूरत है। हालाँकि, मुझे लगता है कि "गुलाम जैसी मानसिकता" या "गुलाम जैसी चेतना" के बजाय, हममें अक्सर "मालिक जैसी मानसिकता" या "मालिक जैसी चेतना" होती है। हम यह पता लगा सकते हैं कि हमारी मानसिकता कैसी है, यह देखकर कि क्या हम प्रभु के वचन का पालन करते हुए उनकी सेवा करते हैं या उनके वचन की अनदेखी करते हुए सेवा पाने की उम्मीद करते हैं। हमें सेवा करने की मानसिकता की ज़रूरत है; हमें एक सेवक जैसी चेतना विकसित करनी चाहिए। इस मानसिकता के साथ, हमें अपने भाइयों और बहनों के साथ बराबरी का दावा नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें खुद से बेहतर समझना चाहिए और विनम्रता के साथ उनकी सेवा करनी चाहिए।

लगभग तीन साल पहले, अपनी प्यारी बेटी येरी के कान छिदवाने से पहले, मैंने उसके साथ निर्गमन 21:1–6 का अंश साझा किया था। बाइबल की उस कहानी में हिब्रू नौकरों के बारे में परमेश्वर के नियम बताए गए हैं: अगर कोई किसी हिब्रू नौकर को खरीदता था, तो वह नौकर छह साल तक सेवा करता था और सातवें साल में आज़ाद हो जाता था (वचन 2)। लेकिन, अगर नौकर कहता, "मैं अपने मालिक, अपनी पत्नी और बच्चों से प्यार करता हूँ—[ध्यान दें कि अगर मालिक ने ही पत्नी दी थी, तो वह मालिक की होती थी और नौकर के साथ आज़ाद नहीं हो सकती थी (वचन 4)]—और मैं आज़ाद नहीं होना चाहता" (वचन 5), तो मालिक को उसे जजों के सामने और फिर दरवाज़े या दरवाज़े की चौखट पर ले जाना होता था, जहाँ वह एक नुकीले औज़ार से नौकर का कान छेद देता था। बाइबल कहती है कि इसके बाद वह नौकर "जीवन भर उसकी सेवा करता था" (वचन 6)। मैंने यह कहानी येरी को सुनाई, और अच्छी बात यह थी कि वह पहले से ही उस हिस्से के बारे में जानती थी। फिर मैंने उसे हिम्मत बंधाते हुए कहा, "अगर तुम सच में अपने कान छिदवाना चाहती हो, तो बाइबल की उस कहानी

वाले गुलाम की तरह यीशु—हमारे मालिक—के नौकर बनने का पक्का इरादा करो।" मैंने उससे कहा, "अगर तुम ऐसा करोगी, तो मैं तुम्हें कान छिदवाने की इजाज़त दे दूँगा।" जब मैं बाइबल की इस कहानी के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे अमेरिकी गॉस्पेल गाना "पियर्स माई इयर्स" (Pierce My Ears) याद आता है, जो उसी हिस्से पर आधारित है। मैंने इसके बोल का कोरियाई भाषा में अनुवाद किया है: (वचन 1) हे प्रभु, मेरे परमेश्वर / आज मुझे अपने दरवाज़े तक ले चल / मैं किसी और देवता की सेवा नहीं करूँगा / प्रभु, मैं यहीं रहने आया हूँ; (वचन 2) तूने मेरे लिए कीमत चुकाई / तूने अपने लहू से मुझे छुड़ाया / अब मैं हमेशा सिर्फ़ तेरी सेवा करूँगा / प्रभु, मैं यहीं रहने आया हूँ; (कोरस) इसलिए, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मेरे कान छेद दे / आज मुझे अपने दरवाज़े तक ले चल / अब मैं किसी और देवता की सेवा नहीं करूँगा / हे प्रभु, मैं यहीं रहने आया हूँ। एक दिन, सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान यह भजन गाते हुए, मुझे यीशु की याद आई, जिन्हें मेरे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया और जो मेरे लिए मरे। मैंने सोचा कि कैसे यीशु मेरे लिए—जो हमेशा के विनाश की ओर बढ़ रहा था—क्रूस पर मरे, और कैसे उनके ज़रिए मैं पाप का गुलाम बनने से बचा और यीशु मसीह का सेवक बना, और पाप से आज़ादी का आनंद लेने लगा। ठीक वैसे ही जैसे निर्गमन 21 में एक सेवक—जो अपने मालिक, पत्नी और बच्चों से प्यार करता था—ने सातवें साल में अपनी आज़ादी लेने से इनकार कर दिया और अपने प्यारे मालिक की हमेशा सेवा करने के लिए सुए से अपना कान छिदवाना चुना; मैंने भी प्रभु, अपनी पत्नी और अपने बच्चों की खातिर अपनी आज़ादी छोड़ने का फैसला किया और प्रभु की हमेशा सेवा करने के संकल्प के साथ "अपने दिल का कान छिदवाया"। मैंने प्रभु के सामने अपना दिल पूरी तरह से उन्हें समर्पित करने और हमेशा सिर्फ़ उनकी सेवा करने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। ऐसी बातों को स्वीकार करने के बावजूद, पवित्र परमेश्वर ने मुझे अपने पाप को पहचानने के लिए प्रेरित किया और दिखाया कि मेरे दिल में "मालिक जैसी सोच"—न कि प्रभु के सेवक के लिए सही "दास जैसी सोच"—घर कर गई थी। इसके अलावा, पवित्र आत्मा ने मुझे फिलिप्पियों 2:4 में बताए गए यीशु के नम्र मन को अपनाने के लिए प्रेरित किया। आइए हम सब इस मालिक जैसी सोच को छोड़ दें और दास जैसी सोच अपनाकर नम्रता के साथ प्रभु की सेवा करें। मेरी प्रार्थना है कि हम सब ऐसे लोग बनें जो मसीह यीशु के नम्र दिल के साथ अपने पड़ोसियों की सेवा करें।

तीसरी बात, मसीह यीशु का वह मन जो हम सबको अपनाना चाहिए, वह है खुद को नम्र करना और मौत तक प्रभु की आज्ञा मानना।

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:8 को देखिए: "और मनुष्य के रूप में पाए जाने पर, उन्होंने खुद को नम्र किया और मौत तक, यहाँ तक कि क्रूस की मौत तक आज्ञाकारी बने रहे।" जो लोग बेकार में परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे सिर्फ़ होंठों से उनका सम्मान करते हैं, जबकि उनके दिल उनसे दूर होते हैं (मत्ती 15:8–9)। वे बोलते तो हैं पर वैसा करते नहीं (23:3)। इसके अलावा, वे दूसरों से तारीफ़ और बड़ाई पाना चाहते हैं (5–7)। नतीजतन, जब वे ज़रूरतमंदों को कुछ देते भी हैं, तो वे लोगों से वाह-वाही पाना चाहते हैं (6:2)। यही हमारी पापी प्रवृत्ति है। आज कलीसिया में भी ऐसे लोग हैं जो—फरीसियों की तरह—बाहर से तो परमेश्वर की सेवा करते दिखते हैं, लेकिन अंदर से पैसे की सेवा करते हैं, और यह सब दूसरों से ऊँचा दर्जा पाने की चाहत में करते हैं (लूका 16:13)। वे इस तरह पैसे की सेवा इसलिए करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि "पैसा ही ताकत है," और वे उस पैसे का इस्तेमाल लोगों के बीच रुतबा और सम्मान पाने के लिए करना चाहते हैं। ठीक वैसे ही जैसे बाइबल में साइमन द सॉर्सरर ने सोचा था कि वह पैसे से परमेश्वर का वरदान खरीद सकता है (प्रेरितों के काम 8:20), वैसे ही वे भी दूसरों के सामने सम्मान पाने के लिए पैसे से चर्च के पद खरीदने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, लूका 16:15 में कहा गया है: "जो चीज़ इंसानों की नज़र में बहुत ऊँची और सम्माननीय है, वह परमेश्वर की नज़र में घृणित है।"

हमें ऐसे अहंकारी लोग नहीं बनना चाहिए। अहंकारी व्यक्ति की ऊँचा उठने की इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकती। जो घमंड दूसरों से महिमा पाना चाहता है, वह कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। हमें कभी भी महिमा का लालच नहीं करना चाहिए। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "इसलिए, महिमा का लालच करने के बजाय उसे ठुकराने का सिद्धांत ही अहंकार को शुरुआत से ही रोकता है" (पार्क युन-सन)। हमें विनम्र लोग बनना चाहिए। हमें खुद को विनम्र बनाना चाहिए। हमें खुद को और अधिक विनम्र बनाना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें मसीह यीशु जैसी विनम्र सोच अपनानी चाहिए (फिलिप्पियों 2:5)। हालाँकि यीशु का स्वभाव परमेश्वर जैसा था, फिर भी उन्होंने परमेश्वर के बराबर होने को पकड़कर रखने वाली चीज़ नहीं माना; बल्कि, उन्होंने खुद को खाली कर दिया, एक सेवक का रूप धारण किया और मनुष्यों जैसे बन गए (पद 6–7)। इसके अलावा, बाइबल हमें आज के अंश—फिलिप्पियों 2:8—में बताती है कि यीशु मनुष्य के रूप में प्रकट हुए, खुद को विनम्र किया, और यहाँ तक कि क्रूस पर—जो श्राप का पेड़ है—मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे। तो फिर, परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया? फिलिप्पियों 2:9–11 देखें: "इसलिए परमेश्वर ने उन्हें सबसे ऊँचा स्थान दिया और उन्हें वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुके, और हर जीभ यह

स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु हैं, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए।" यीशु की विनम्रता का परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को सबसे ऊँचा स्थान दिया। यीशु फिर से जी उठे और स्वर्ग चले गए, और उन्होंने हर घुटने को अपने सामने झुकने पर मजबूर किया। मेरे जीवन के मुश्किल समय में परमेश्वर ने मुझे जो सबक सिखाया, उनमें से एक यह है कि लोगों द्वारा ऊँचा उठाए जाने से कहीं बेहतर है परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाया जाना। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाए जाने के लिए, व्यक्ति को परमेश्वर और दूसरों के सामने खुद को विनम्र करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर और लोगों के सामने विनम्र रहते हैं, तो वह हमें अपने समय पर ऊँचा उठाएगा (देखें फिलिप्पियों 2:5–11)। इस अर्थ में, संकट एक अवसर है—परमेश्वर के लिए हमें विनम्र करने का अवसर और साथ ही, उनके लिए हमें ऊँचा उठाने का एक अद्भुत अवसर। यीशु की तरह, हमें खुद को खाली करना चाहिए और दूसरों के सामने विनम्र होना चाहिए। हमें विनम्र बनना चाहिए और यीशु की तरह, पूरी विनम्रता के साथ प्रभु की आज्ञा माननी चाहिए—यहाँ तक कि मरने की हद तक भी। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर सही समय आने पर हमें ऊँचा उठाएँगे।

हम सभी को मसीह यीशु जैसी सोच अपनानी चाहिए। यह ऐसी सोच है जो दूसरों के बराबर होने को कोई ऐसी चीज़ नहीं मानती जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए। यह यीशु की सोच है, जिन्होंने एक सेवक बनकर दूसरों की सेवा करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया। आखिर में, मसीह यीशु की जिस सोच को हमें अपनाना है, वह है खुद को विनम्र बनाना और मरने की हद तक भी प्रभु की आज्ञा मानना।

“अपने उद्धार को पूरा करो”

[फिलिप्पियों 2:12–18]

क्या आपका उद्धार हो गया है? प्रेरितों के काम 4:12 में कहा गया है, “किसी और से उद्धार नहीं मिलता, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सके।” दूसरे शब्दों में, बाइबल बताती है कि उद्धार केवल “नासरत के यीशु मसीह के नाम” से ही संभव है (पद 10)। यह सिखाती है कि हम यीशु में “विश्वास के द्वारा” बचाए जाते हैं—पूरी तरह से “प्रभु यीशु की कृपा से” (प्रेरितों के काम 15:11; इफिसियों 2:8)। 1 पतरस 1:9 हमें बताता है कि हमारे विश्वास का परिणाम हमारी आत्माओं का उद्धार है। क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं?

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:12 में, पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों से कहता है: “इसलिए, मेरे प्यारे दोस्तों... डर और कांपते हुए अपने उद्धार को पूरा करते रहो—न केवल तब जब मैं तुम्हारे साथ हूँ, बल्कि अब मेरी अनुपस्थिति में और भी ज़्यादा।” आज, इस वचन और फिलिप्पियों 2:12–18 के पूरे हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं “अपने उद्धार को पूरा करो” विषय पर मनन करना चाहता हूँ और उस कृपा को पाना चाहता हूँ जो प्रभु हमें देता है।

सबसे पहले, आइए “अपने उद्धार को पूरा करो” वाक्यांश के अर्थ पर विचार करें।

मैं सबसे पहले इस वाक्यांश के अर्थ पर इसलिए बात करना चाहता हूँ क्योंकि कुछ बातें स्पष्ट करने की ज़रूरत है। (1) सबसे पहले, हमें यह स्पष्ट करना होगा कि जब पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से “अपने उद्धार को पूरा करो” कहता है, तो उसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उद्धार अच्छे कामों से मिलता है।

हम पौलुस की लिखी अन्य पत्रियों को देखकर इसकी पुष्टि कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इफिसियों 2:8–9 में, पौलुस कहता है कि हम “परमेश्वर की कृपा से” बचाए जाते हैं और यह निश्चित रूप से हमारे अपने कामों का परिणाम नहीं है। हमारा उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा का मामला है—यह “परमेश्वर का वरदान” है। इसके अलावा, रोमियों 3:22–24 में, पौलुस समझाता है कि हमें “उसकी कृपा से” और “यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा” “मुफ़्त में धर्मी ठहराया गया है।” इसलिए, असल बात यह है कि जब पौलुस आज के वचन (फिलिप्पियों 2:12) में फिलिप्पियों से "अपने उद्धार को पूरा करने" के लिए कहता है, तो वह उनसे यह नहीं कह रहा है कि वे अपने कामों से उद्धार कमाएँ।

(2) हमें यह भी अच्छी तरह समझना होगा कि उद्धार में भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल तीनों शामिल हैं।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि हम आम तौर पर उद्धार के केवल भूतकाल और भविष्यकाल वाले पहलुओं के बारे में ही जानते हैं। उद्धार का भूतकाल वाला पहलू क्या है? इसका मतलब है कि जिस पल हम परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र—पर विश्वास करते हैं, हमें उद्धार मिल चुका होता है। इसका एक मुख्य उदाहरण 1 यूहन्ना 5:12–13 में मिलता है, जो "उद्धार के पक्के भरोसे" के बारे में बताता है: "जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। मैंने ये बातें तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखी हैं ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है।" यह वचन साफ तौर पर बताता है कि जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु पर विश्वास करते हैं, उन्हें अनंत जीवन (उद्धार) पहले ही मिल चुका है। हालाँकि, बाइबल उस उद्धार के बारे में भी बताती है जो हमें भविष्य में मिलेगा; यह उद्धार का भविष्य वाला पहलू है। इसे समझाने वाले मुख्य वचन प्रेरितों के काम 16:31 और रोमियों 10:9 हैं: "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा—तू और तेरा घराना" (प्रेरितों के काम 16:31), और "यदि तू अपने मुँह से कहे कि 'यीशु प्रभु है,' और अपने मन में विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो

तू उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)। ये वचन यह नहीं कहते कि प्रभु यीशु पर विश्वास करने से ही कोई व्यक्ति *पहले से ही* उद्धार पा चुका है; बल्कि, वे भविष्यकाल का इस्तेमाल करते हैं, जिससे पता चलता है कि उद्धार वह चीज़ है जो आने वाले समय में मिलेगी। हम इस भविष्य के उद्धार को प्रभु यीशु के इस धरती पर लौटने (दूसरी बार आगमन) और हमें स्वर्ग के अनंत राज्य में ले जाने के अनुभव के रूप में समझते हैं, जहाँ हम हमेशा रहेंगे। इस प्रकार, हम आम तौर पर "उद्धार" को दो तरह से समझते हैं: यह तथ्य कि यीशु पर विश्वास करने से हमें पहले ही उद्धार मिल चुका है, और यह उम्मीद कि उनके लौटने पर हमें उद्धार मिलेगा। लेकिन, आज के वचन—फिलिप्पियों 2:12—में एक बात सामने आती है, जहाँ पौलुस विश्वासियों को "अपने उद्धार को पूरा करने" का निर्देश देता है। यह वर्तमान काल में उद्धार की ओर इशारा करता है; यह *अभी* उद्धार को पूरा करने का बुलावा है—न तो अतीत में और न ही भविष्य में, बल्कि वर्तमान क्षण में। पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के संतों से कहा कि वे "अपने उद्धार को पूरा करें," फिर भी हमारी समझ यह है कि उद्धार कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे इंसान खुद हासिल कर सकें, बल्कि यह परमेश्वर द्वारा पूरा किया जाने वाला काम है। क्या ऐसा नहीं है? उदाहरण के लिए, योना 2:9 का बाद का हिस्सा कहता है, "...उद्धार प्रभु का है" (या "उद्धार प्रभु की ओर से है")। इसके अलावा, प्रकाशितवाक्य 7:10 कहता है, "और उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारकर कहा, 'उद्धार हमारे परमेश्वर का है, जो सिंहासन पर विराजमान है, और मेमने का है!'" ये वचन बिल्कुल साफ़ करते हैं कि उद्धार वह चीज़ है जिसे परमेश्वर पूरा करता है—या देता है—और यह किसी भी तरह से ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम, पापी इंसान, अपनी कोशिशों या अच्छे कामों से खुद हासिल कर सकें। फिर भी, आज के वचन—फिलिप्पियों 2:12—में पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहता है कि वे "अपने उद्धार को पूरा करें।" हम इसे कैसे समझें? अगर बाइबल साफ़ तौर पर सिखाती है कि उद्धार परमेश्वर का काम है, तो पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को अपने उद्धार को "पूरा करने" का निर्देश क्यों देता है? क्या उसका मतलब यह है कि उन्हें अपनी ताकत या कोशिश से उद्धार हासिल करना चाहिए? इसका कोई मतलब नहीं बनता, क्योंकि उद्धार साफ़ तौर पर परमेश्वर का काम है, इंसान का नहीं। असल में, क्या पौलुस ने फिलिप्पियों 1:6 में—जिस वचन पर हम पहले ही सोच-विचार कर चुके हैं—फिलिप्पी के विश्वासियों से यह नहीं कहा था कि उसे "इस बात का भरोसा है कि जिसने तुममें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूरा करेगा"? इसका क्या मतलब है? यह इस विश्वास को ज़ाहिर करता है कि फिलिप्पी के विश्वासियों में परमेश्वर ने जो उद्धार का काम शुरू किया है, उसे वह मसीह यीशु के दिन तक—यानी उनके दूसरी बार आने के समय तक—पूरा करेगा।

तो फिर, जब पौलुस कहता है, "अपने उद्धार को पूरा करो," तो उसका क्या मतलब है? मेरा मानना है कि इसे समझने के लिए, हमें सबसे पहले यह साफ़ तौर पर समझना होगा कि "उद्धार" असल में क्या है। मुक्ति क्या है? पुराने नियम (Old Testament) में, मुक्ति के लिए हिब्रू शब्द *येशुआ* (Yeshua) का इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ है पाप और खतरनाक हालात से छुटकारा या बचाव। नए नियम (New Testament) में, "मुक्ति" के लिए ग्रीक शब्द *सोटेरिया* (soteria) का इस्तेमाल किया गया है; इसका अर्थ है पाप से जुड़ी सज़ा, ताकत और जीवन-शैली से छुटकारा पाना, जिससे इंसान स्वर्ग के अनंत राज्य के नागरिक के तौर पर जी सके (इंटरनेट)। जब मैंने इस सवाल पर सोचा कि "मुक्ति" क्या है, तो मैंने रोमियों 5:6, 8 और 10 में दिए गए वचनों पर गौर किया:

(1) रोमियों 5:6 को देखें: "क्योंकि जब हम अभी भी बेबस थे, तो सही समय पर मसीह ने अधर्मियों के लिए अपनी जान दी।"

इस आयत के आधार पर, हम कह सकते हैं कि उद्धार का अर्थ है परमेश्वर का हमारी मदद करना—हम जो पूरी तरह से बेबस और अधर्मी थे—मसीह की मृत्यु के द्वारा हमें हमारी कमज़ोरी से छुड़ाकर और हमें धर्मी बनाकर।

(2) रोमियों 5:8 को देखें: "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम अभी भी पापी थे, मसीह हमारे लिए मरा।"

इस आयत के आधार पर, उद्धार का अर्थ है कि परमेश्वर ने, हमारे प्रति प्रेम के कारण जब हम पापी थे, अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को हमारे लिए क्रूस पर मरने दिया, और इस तरह हमें धर्मी ठहराया (आयत 9)। इसका मतलब है कि उद्धार—"उद्धार" के लिए ग्रीक शब्द के सही अर्थ के अनुसार—न केवल पाप की सज़ा, शक्ति और जीवन से हमारे बचाव को दर्शाता है, बल्कि इसमें यह तथ्य भी शामिल है कि हमें धर्मी ठहराया गया है।

(3) रोमियों 5:10 को देखें: "क्योंकि यदि जब हम दुश्मन थे, तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेल-मिलाप हुआ, तो मेल-मिलाप होने के बाद, हम उसके जीवन के द्वारा और भी निश्चित रूप से बचाए जाएँगे।"

इस आयत के आधार पर, उद्धार का अर्थ है कि परमेश्वर ने हमारा—जो उसके दुश्मन थे—अपने एकलौते पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने साथ मेल-मिलाप कराया और हमें अपनी संतान बनाया। "उद्धार" का ठीक यही अर्थ है।

तो फिर, वह "उद्धार" क्या है जिसके बारे में पौलुस आज के अंश, फिलिप्पियों 2:12 में बात करता है? मेरा मानना है कि वर्तमान काल वाला यह "उद्धार" असल में "अनंत जीवन" की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के संतों से कह रहा है कि "अपने अनंत जीवन को सिद्ध करो।" मेरा तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि, जैसा कि हमने पहले देखा था, जब बाइबल भविष्य काल में उद्धार की बात करती है, तो वह उस समय की ओर इशारा करती है जब यीशु इस पृथ्वी पर लौटेंगे और हमें स्वर्ग के अनंत राज्य में ले जाएँगे, जहाँ हम हमेशा रहेंगे। साथ ही, इस शिक्षा के संबंध में कि हमें यीशु में विश्वास के द्वारा पहले ही उद्धार मिल चुका है—जिसका समर्थन 1 यूहन्ना 5:12–13 करता है—हम जानते हैं कि हममें से जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं, उनके पास पहले से ही अनंत जीवन है। इसलिए, चाहे हम उद्धार को बीते हुए समय के नज़रिए से देखें या आने वाले समय के, अगर हम "उद्धार" का मतलब "अनंत जीवन" समझें, तो हम फिलिप्पियों 2:12 में पौलुस की बातों—"अपने उद्धार को पूरा करो"—का मतलब लगातार "अपने अनंत जीवन को पूरा करो" के तौर पर समझ सकते हैं। हमारे लिए इसका मतलब है कि बाइबल हमसे कह रही है कि "हम ऐसे लोगों की तरह जिएं जिनके पास अनंत जीवन है।" इसे एक लाइन में कहें तो: बाइबल हमसे कह रही है, "स्वर्ग के राज्य के नागरिकों की तरह जियो।"

दूसरी बात जिस पर हमें सोचना चाहिए, वह यह है: फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों—और हमारे—के लिए, जिन्होंने यीशु पर विश्वास करके अनंत जीवन पाया है, इस धरती पर ऐसे लोगों की तरह जीना कैसा होगा जिनके पास अनंत जीवन है, या जो स्वर्ग के राज्य के नागरिक हैं?

इसका मतलब है यीशु की "दोहरी आज्ञा" को मानकर जीना, जो स्वर्ग के राज्य की आज्ञा है। मत्ती 22:37–39 देखें: “यीशु ने जवाब दिया: ‘अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो।’ यह पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी भी इसी जैसी है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे

तुम खुद से करते हो।'" दूसरे शब्दों में, इस धरती पर स्वर्ग के नागरिकों की तरह जीना—यानी उन लोगों की तरह जिन्होंने अनंत जीवन पाया है—इसका मतलब है परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्रेम करना जैसे हम खुद से करते हैं। हमें ऐसा करने के काबिल कौन बनाता है? आज का वचन देखें, फिलिप्पियों 2:13: "क्योंकि परमेश्वर ही है जो तुममें काम करता है ताकि तुम उसकी भली इच्छा को पूरा करने के लिए चाहो और काम करो" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "परमेश्वर तुम्हारे अंदर काम करता है ताकि तुम अपनी मर्ज़ी से उसकी भली इच्छा के अनुसार काम करो"]। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर हमारे अंदर काम करता है। यह बताती है कि परमेश्वर हमारे अंदर इच्छा पैदा करता है और हमें अपनी भली इच्छा के अनुसार काम करने के काबिल बनाता है। इसका मतलब है कि "परमेश्वर विश्वास करने वाले को अच्छा काम करने की इच्छा और उसे पूरा करने की ताकत, दोनों देता है" (पार्क युन-सन)। परमेश्वर अच्छा काम करने की यह इच्छा और ताकत कैसे देता है? यह हमारे अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा के ज़रिए होता है, जो हमारे अंदर प्रेम का फल पैदा करता है (गलातियों 5:22–23), और इस तरह हमें परमेश्वर और अपने पड़ोसियों, दोनों से प्रेम करने के काबिल बनाता है।

लेकिन, समस्या क्या है? समस्या यह है कि कई बार हम आत्मा के अनुसार नहीं चलते (गलातियों 5:16) बल्कि आत्मा का विरोध करते हैं, शरीर की इच्छाओं को पूरा करते हैं (वचन 17) और शरीर के काम करते हैं (वचन 19)। "शरीर के कामों" में "झगड़ा, जलन, गुस्से का दौरा, स्वार्थ और फूट" शामिल हैं (वचन 20)। ऐसी समस्याएँ फिलिप्पी की कलीसिया में भी थीं। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि पौलुस कलीसिया के दो सदस्यों—यूओदिया और सुन्तुखे—का ज़िक्र करता है और उनसे कहता है कि वे "प्रभु में एक-दूसरे से सहमत हों" (फिलिप्पियों 4:2) और पूरी कलीसिया को सलाह देता है कि वे "एक मन के हों, एक जैसा प्रेम रखें, आत्मा में एक और एक मन के हों," और "स्वार्थ या घमंड" के कारण कुछ भी न करें (2:2-3)। इसके अलावा, फिलिप्पियों 1:15 में, पौलुस बताता है कि "कुछ लोग" हिम्मत के साथ परमेश्वर का वचन सुनाते थे—हालाँकि "जलन और होड़" के कारण (वचन 17)—ताकि जब वह जेल में हो तो उसे और ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचा सकें। इसी माहौल में वह आज के वचन (फिलिप्पियों 2:12) में फिलिप्पियों से कहता है: "इसलिए, मेरे प्यारे दोस्तों... डर और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करते रहो—न केवल मेरी मौजूदगी में, बल्कि मेरी गैर-मौजूदगी में और

भी ज़्यादा।" दूसरे शब्दों में, मसीह के प्रायश्चित वाले प्रेम को पाने वालों के तौर पर, फिलिप्पी के विश्वासियों को आपसी प्रेम में जीने के लिए बुलाया गया था—जो अनंत जीवन पाने वालों के लिए सही है—हर समय (जब पौलुस मौजूद था और उससे भी ज़्यादा, जब वह मौजूद नहीं था) परमेश्वर की आज्ञा मानकर और नम्र दिल और परमेश्वर के प्रति आदरपूर्ण डर बनाए रखकर (भजन संहिता 2:11)। मेरी प्रार्थना है कि हम, यीशु मसीह में अनंत जीवन पाने वालों के तौर पर, परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हुए जीएँ, और हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करे।

तो, खास तौर पर, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए कैसे प्रोत्साहित करते हैं? मैंने तीन बातें पहचानी हैं:

पहली बात, पौलुस ने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे "बिना बड़बड़ाए या बहस किए सब काम करें।"

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:14 को देखें: "बिना बड़बड़ाए या बहस किए सब काम करें।" हेनरी नूवेन ने अपनी किताब *द स्पिरिचुअलिटी ऑफ़ लिविंग* में लिखा है: "बड़बड़ाने से हम असफलता या निराशा पर ही ध्यान केंद्रित करने लगते हैं और अपने जीवन में हुए नुकसानों के बारे में शिकायत करने लगते हैं।" ये शब्द मेरे दिल को छूते हैं। सचमुच, ऐसे समय आए हैं जब मैंने बड़बड़ाहट की है और खुद को असफलता या निराशा में उलझा हुआ पाया है। जैसा कि नूवेन ने बताया, मैंने भी जीवन में हुए नुकसानों के बारे में शिकायत की है। मैंने एक वचन देखा जिस पर मैंने कुछ समय पहले मनन किया था, व्यवस्थाविवरण 1:27: "और तुम अपने तंबुओं में बड़बड़ाए और कहा, 'क्योंकि प्रभु हमसे नफ़रत करते थे, इसलिए वे हमें मिस्र देश से बाहर लाए ताकि हमें एमोरियों के हाथों में सौंपकर नष्ट कर सकें।'" मैंने पहले "बड़बड़ाने का पाप" शीर्षक के तहत इस वचन पर मनन किया था, और मैंने उन विचारों को फिर से देखा। हमारी बड़बड़ाहट की मूल वजह हमारा "अविश्वास" है। व्यवस्थाविवरण 1:32 कहता है, "इस मामले में, तुमने अपने परमेश्वर प्रभु पर भरोसा नहीं किया।" यह अविश्वास ही बड़बड़ाहट की कड़वी जड़ है। नतीजतन, जब हम मुश्किल हकीकतों का सामना करते हैं, तो हम बड़बड़ाते हैं—"क्यों?" पूछते हुए—और खुद को पीड़ित महसूस करते हैं। हालाँकि, आज के वचन—फिलिप्पियों 2:14—में पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कहते हैं कि वे "बिना बड़बड़ाए या बहस किए सब काम करें।" इसका मतलब है कि फिलिप्पी कलीसिया में सचमुच बड़बड़ाहट (शिकायत) और बहस (झगड़ा) हो रही थी। असल में,

यह देखते हुए कि पौलुस ने पहले ही फिलिप्पियों 2:3 में स्वार्थ या व्यर्थ घमंड के कारण कुछ भी करने के खिलाफ चेतावनी दी थी, हम ऐसी शिकायतों और झगड़ों की मौजूदगी की पुष्टि कर सकते हैं। इसके अलावा, इस बड़बड़ाहट और झगड़े की मूल वजह घमंड थी (वचन 3)। दूसरे शब्दों में, अगर कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो अपनी हैसियत से बढ़कर खोखली, दिखावटी महिमा चाहते हैं, तो शिकायतें और झगड़े पैदा होना तय है। लगता है कि फिलिप्पी की कलीसिया में यही स्थिति थी। इसीलिए पौलुस ने विश्वासियों को लिखा और उन्हें निर्देश दिया कि वे "सब कुछ बिना बड़बड़ाहट या बहस के करें" (पद 14)।

पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से ऐसा क्यों कहा? उन्होंने उनसे "सब कुछ बिना बड़बड़ाहट या बहस के करने" के लिए क्यों कहा? वे पद 15 में इसका कारण बताते हैं: "ताकि तुम निर्दोष और पवित्र बन सको, एक टेढ़ी-मेढ़ी पीढ़ी के बीच परमेश्वर की निष्कलंक संतान बन सको, और तब तुम उनके बीच आकाश के तारों की तरह चमकोगे" [(समकालीन कोरियाई संस्करण): "तब, एक टेढ़ी-मेढ़ी और गुमराह पीढ़ी के बीच, तुम परमेश्वर की निष्कलंक संतान के रूप में पवित्र और शुद्ध जीवन जी सकोगे, और स्वर्ग के तारों की तरह चमकोगे"]। हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह एक "टेढ़ी-मेढ़ी" (या कुटिल) दुनिया है। परमेश्वर द्वारा बताए गए सही और सीधे रास्ते पर चलने के बजाय, यह एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलती है। फिर भी, वे मानते हैं कि यही टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता सही है। यह दुनिया परमेश्वर के परम सत्य को नकारती है और झूठ को सच मानती है। लोगों के दिल भी टेढ़े-मेढ़े हो गए हैं; और क्योंकि दिल टेढ़े-मेढ़े हैं, इसलिए शब्द और काम भी टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं। तो फिर, हम मसीहियों को ऐसी टेढ़ी-मेढ़ी दुनिया में कैसे रहना चाहिए? हमें परमेश्वर की निष्कलंक संतान के रूप में जीना चाहिए और इस टेढ़ी-मेढ़ी और बिगड़ी हुई दुनिया में यीशु की ज्योति फैलानी चाहिए (फिलिप्पियों 2:15)। ऐसा करने के लिए, हमें सब कुछ बिना बड़बड़ाहट या बहस के करना होगा।

दूसरी बात, पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों से "जीवन के वचन को थामे रखने" का आग्रह किया।

आज के वचन, फिलिप्पियों 2:16 को देखें: "जीवन के वचन को थामे रखना, ताकि मसीह के दिन मैं गर्व कर सकूं कि मैंने व्यर्थ में दौड़ नहीं लगाई या व्यर्थ में मेहनत नहीं की" [(समकालीन बाइबल) "ऐसा करके, तुम जीवन के वचन को थामे रखते हो; इस प्रकार, मेरी कोशिशें और मेहनत व्यर्थ नहीं जाएंगी, और जब मसीह लौटेंगे तो मेरे पास गर्व करने के लिए कुछ होगा"]। यहाँ, "जीवन के वचन" का अर्थ "सुसमाचार" है। निर्देश यह है कि उस

सुसमाचार को "थामे रखें" (या "प्रस्तुत करें"); इस शब्द का अर्थ है "दूसरों के लेने के लिए कुछ पेश करना" (मैकआर्थर)। साथ ही, इस शब्द का अर्थ "मजबूती से थामे रहना" भी है (वाल्वोर्ड)। इसका क्या मतलब है? पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों से कह रहा है कि वे सुसमाचार को मजबूती से थामे रहें और उस सुसमाचार को दूसरों के सामने पेश करें—या उन्हें बताएं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "...एक मसीही को अपने अस्तित्व और कामों से यह दिखाना चाहिए कि सुसमाचार सचमुच जीवन और शक्ति देने वाला वचन है..." (पार्क युन-सन)। हम मसीही अपने अस्तित्व और कामों से असल में कैसे दिखा सकते हैं कि सुसमाचार सचमुच जीवन और शक्ति देने वाला संदेश है? ऐसा तब होता है जब हमारी कलीसिया "एक मन की हो, एक सा प्रेम रखे, आत्मा में एक और एक मन की हो," और कोई भी काम स्वार्थ या घमंड से न करे, बल्कि नम्रता से दूसरों को खुद से बेहतर समझे, और न केवल अपने हितों को बल्कि दूसरों के हितों को भी देखे (फिलिप्पियों 2:2–4)। इसीलिए पौलुस आज के भाग (वचन 14) में फिलिप्पी के विश्वासियों से कहता है कि "सब कुछ बिना बड़बड़ाहट या बहस के करें।" बिना बड़बड़ाहट या बहस के सब कुछ करके, वे एक टेढ़ी और बिगड़ी हुई दुनिया के बीच परमेश्वर की बेदाग संतान के रूप में जी सकते थे—यीशु की ज्योति को दर्शाते हुए। उस संदर्भ में, बाइबिल उन्हें यीशु मसीह के सुसमाचार—जीवन के वचन—को दूसरों तक पहुँचाने के लिए बुलाती है। हालाँकि, एक सवाल उठता है: फिलिप्पियों 1:5 में, पौलुस ने पहले ही कहा था कि विश्वासियों ने "पहले दिन से लेकर अब तक सुसमाचार के काम में हिस्सा लिया है"; तो फिर, वह 2:16 में उन्हें दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिए दोबारा क्यों कहता है? मेरा मानना है कि इसका कारण यह है कि, हालाँकि फिलिप्पी के विश्वासी पौलुस की सुसमाचार प्रचार की सेवा में हिस्सा ले रहे थे, फिर भी वे सुसमाचार पर मजबूती से खड़े रहने और उसके योग्य जीवन जीने में पीछे रह रहे थे। दूसरे शब्दों में, उन्हें एक मन और एक प्रेम के साथ, नम्रता से और बिना बड़बड़ाहट या बहस के यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए था, फिर भी ऐसा लगता है कि वे ऐसा करने में असफल रहे। चूँकि फिलिप्पी की कलीसिया में ऐसी कमियाँ सुसमाचार प्रचार की सेवा में कभी मदद नहीं कर सकती थीं, इसलिए पौलुस ने विश्वासियों से आग्रह किया कि वे सब कुछ बिना बड़बड़ाहट या बहस के करें और सुसमाचार—जीवन के वचन—का प्रचार करें। तो फिर, प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को सुसमाचार—यानी जीवन का वचन—दूसरों के साथ बांटने के लिए क्यों कहा? इसका क्या कारण था? आज के वचन में फिलिप्पियों 2:16 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...ताकि मसीह के दिन मैं गर्व कर सकूँ कि मेरी दौड़ या मेरी मेहनत बेकार नहीं गई" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "...ताकि मेरी कोशिशें और मेहनत बेकार न जाएँ, और जब मसीह वापस

आएँ तो मेरे पास गर्व करने के लिए कुछ हो"]। कारण यह था कि जब फिलिप्पी के विश्वासी यीशु मसीह का सुसमाचार दूसरों के साथ बांटते थे, तो पौलुस यह पक्का करना चाहते थे कि उनकी अपनी कोशिशें और मेहनत बेकार न जाएँ और जब मसीह वापस आएँ (दूसरी बार आएँ), तो उनके पास गर्व करने के लिए कुछ हो।

थिसलुनिके की कलीसिया को लिखे अपने पत्र में, पौलुस वहाँ के विश्वासियों से कहते हैं (1 थिसलुनिकियों 2:19): "क्योंकि जब हमारे प्रभु यीशु आएँगे, तो उनकी उपस्थिति में हमारी आशा, हमारा आनंद या वह मुकुट क्या होगा जिस पर हम गर्व करेंगे? क्या वह आप लोग नहीं हैं?" पौलुस ने थिसलुनिके के विश्वासियों को अपनी आशा, अपना आनंद और अपना "गर्व का मुकुट" बताया; इसी तरह, फिलिप्पियों 4:1 में, वह फिलिप्पी के विश्वासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं: "इसलिए, मेरे भाइयों और बहनों, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ और जिनसे मिलने के लिए तरसता हूँ—जो मेरा आनंद और मुकुट हैं—प्रभु में दृढ़ बने रहो।" पौलुस के लिए, फिलिप्पी के विश्वासी उनका आनंद और (गर्व का) मुकुट थे। खास तौर पर, पौलुस की दिली इच्छा थी कि फिलिप्पी के विश्वासी परमेश्वर की निर्दोष संतान के रूप में जिएं और टेढ़ी-मेढ़ी और बिगड़ी हुई दुनिया के बीच सुसमाचार की ज्योति फैलाएं, क्योंकि मसीह यीशु के लौटने पर वे ही उनके गर्व का मुकुट होंगे। मुझे भजन 502, "मैसेंजर्स ऑफ़ लाइट" (ज्योति के दूत) के बोल याद आते हैं: (पद 1) ज्योति के दूतों, अंधकार को दूर करने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ो; उन लोगों पर सुसमाचार की ज्योति चमकाओ जो प्रभु के सत्य को नहीं जानते। (पद 2) अच्छे काम के लिए शक्ति जुटाओ, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ हैं; उनके महान प्रेम का प्रचार करो और सुसमाचार की ज्योति फैलाओ। (पद 3) प्रभु की आज्ञा मानो और इस सत्य का प्रसार करो; सुसमाचार की ज्योति फैलाने के लिए पूरी ताकत से पहाड़ों और सागरों को पार करो। (पद 4) पृथ्वी के छोर तक—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण—केवल प्रभु पर भरोसा करते हुए, उन लोगों पर सुसमाचार की ज्योति चमकाओ जिनकी आँखें अंधी हो गई हैं और जो देख नहीं सकते। <कोरस> ज्योति के दूतों, सुसमाचार की ज्योति चमकाओ; पाप से घिरी अंधेरी रात को रोशन करो, हे ज्योति के दूतों। मेरी प्रार्थना है कि हम सब यीशु के शिष्य बनें—मसीह जैसा हृदय रखें और उन आत्माओं से प्रेम करें जो उन्हें जाने बिना मर रही हैं—और हम उन पर सुसमाचार की ज्योति, यानी जीवन के वचन की ज्योति, चमकाएं।

तीसरी और आखिरी बात, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों को "मिलकर आनंद मनाने" के लिए प्रोत्साहित किया। आज के वचन, फिलिप्पियों 2:17–18 को देखिए: "लेकिन अगर मुझे तुम्हारे विश्वास से मिलने

वाली कुर्बानी और सेवा पर एक 'पेय-बलि' (drink offering) की तरह बहा दिया जाए, तो भी मैं खुश हूँ और तुम सबके साथ आनंद मनाता हूँ। इसलिए तुम्हें भी खुश होना चाहिए और मेरे साथ आनंद मनाना चाहिए" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "भले ही मुझे अपने जीवन का लहू तुम्हारे विश्वास की कुर्बानी और सेवा पर एक पेय-बलि की तरह बहाना पड़े, तो भी मैं तुम सबके साथ आनंद मनाऊँगा और खुश रहूँगा। इसलिए, तुम्हें भी मेरे साथ आनंद मनाना चाहिए और खुश रहना चाहिए"]। पौलुस के पास आनंद था। जिस समय वह फिलिप्पी के संतों को यह पत्र लिख रहा था—सुसमाचार का प्रचार करने के कारण जेल में होने के बावजूद—तब भी उसने उस आनंद को बनाए रखा। कुछ लोग उसका विरोध करते थे (1:28), फिर भी इन विरोधियों के कारण होने वाली तकलीफों के बीच भी (वचन 29), पौलुस ने आनंद का अनुभव किया। असल में, पौलुस ने कुलुस्सियों 1:24 में कहा: "अब मैं उन तकलीफों में आनंद मनाता हूँ जो मैं तुम्हारे लिए सहता हूँ, और अपने शरीर में मैं मसीह की तकलीफों में जो कमी रह गई है, उसे उनकी देह यानी कलीसिया के लिए पूरा कर रहा हूँ" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। हम पौलुस को कुरिन्थियों की कलीसिया के संतों से 2 कुरिन्थियों 7:4 में बात करते हुए भी देखते हैं: "मुझे तुम पर बहुत भरोसा है और तुम पर बहुत गर्व है; मैं तसल्ली से भरा हुआ हूँ और हमारी सभी तकलीफों में आनंद से लबालब हूँ" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "मुझे तुम पर बहुत भरोसा और गर्व है, और मुझे बहुत तसल्ली मिलती है। इसलिए, हर तरह की मुश्किलों का सामना करते हुए भी, मैं आनंद से भरा हुआ हूँ"]। आज के वचन, फिलिप्पियों 2:17 में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखता है कि अगर उसे उनके विश्वास की कुर्बानी और सेवा पर एक पेय-बलि की तरह बहा दिया जाए, तो भी वह आनंद मनाएगा। यहाँ, "पेय-बलि" का मतलब है कुर्बानी पर डाली जाने वाली वाइन; पौलुस असल में यह कह रहा है कि अगर उसका अपना लहू भी एक भेंट के तौर पर बहा दिया जाए, तो भी वह आनंद मनाएगा (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, पौलुस कह रहा है कि अगर उसे शहादत का सामना करना पड़े, तो भी वह आनंद मनाएगा। इसके अलावा, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों के साथ मिलकर आनंद मनाना चाहता था (वचन 17)। इसीलिए उन्होंने उनसे कहा, "इसलिए, तुम्हें भी खुश होना चाहिए और मेरे साथ खुशी मनानी चाहिए" (पद 18, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं और चर्च में साथ मिलकर अपने विश्वास के अनुसार जीते हैं, यह हमारे लिए साथ मिलकर खुशी मनाने की एक वजह है। हमें साथ मिलकर खुशी मनानी चाहिए—भले ही हमें विरोधियों के हाथों दुख सहना पड़े—क्योंकि हम न केवल अपने होंठों से यीशु मसीह (जीवन का वचन) के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, बल्कि अपने जीवन के ज़रिए उसे असल में करके भी दिखाते हैं। जैसा कि पौलुस ने कहा, हमें प्रभु में

साथ मिलकर खुशी मनानी चाहिए, भले ही सुसमाचार के काम में हमारी भागीदारी हमें शहादत तक ले जाए। असल में, एक-दूसरे से सक्रिय रूप से प्यार करते हुए जीवन जीने का यही मतलब है, और इसी तरह हम अपने उद्धार को पूरा करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम सब ऐसा जीवन जिएं जो हमारे उद्धार को पूरा करे।

जो मसीह यीशु की बातों को खोजता है

[फिलिप्पियों 2:19-24]

हम मसीही अक्सर "प्रभु का काम" करने की बात करते हैं, लेकिन असल में प्रभु का काम क्या है? मैंने बाइबल के एक या दो खास हिस्सों पर ध्यान देते हुए प्रभु के काम के स्वरूप पर विचार किया है:

(1) पहला हिस्सा प्रेरितों के काम 14:21-23 है: "उन्होंने उस शहर में सुसमाचार का प्रचार किया और बहुत से लोगों को चेला बनाया। फिर वे लुस्त्रा, इकोनियम और अंताकिया लौट आए, चेलों को मज़बूत किया और उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा, 'परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें बहुत सी मुश्किलों से गुज़रना होगा।' पौलुस और बरनबास ने हर कलीसिया में उनके लिए अगुवे नियुक्त किए और प्रार्थना और उपवास के साथ उन्हें प्रभु को सौंप दिया, जिस पर उन्होंने अपना भरोसा रखा था।"

इस हिस्से के आधार पर, मैंने प्रभु के काम के चार पहलू पहचाने हैं:

(a) प्रभु का काम सुसमाचार का प्रचार करना है (पद 21)। पौलुस ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली क्योंकि ऐसे लोग थे जो सुसमाचार और उसके प्रचारकों, दोनों का विरोध करते थे। लुस्त्रा में, प्रचार करते समय पौलुस की जान लगभग चली ही गई थी; इस तरह, उसने अपनी जान जोखिम में डालकर सुसमाचार का प्रचार किया।

(b) प्रभु का काम चेले बनाना है (पद 21)। पौलुस और बरनबास दर्बे गए, सुसमाचार का प्रचार किया और बहुत से चेले बनाए। उन्होंने मत्ती 28:19-20 में दिए गए यीशु के महान आदेश का पालन किया: "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।"

(c) प्रभु का काम चेलों के दिलों को मज़बूत करना है (प्रेरितों के काम 14:22c-23)। दर्बे में सफल सेवकाई के बाद, पौलुस और बरनबास उन मिशन क्षेत्रों में फिर से गए जहाँ उन्होंने पहले सेवकाई की थी, और चेलों के विश्वास को मज़बूत किया। (d) प्रभु के काम में कलीसिया में अगुवों को नियुक्त करना शामिल है (प्रेरितों के काम 14:23)। पौलुस और बरनबास हर कलीसिया के लिए अगुवों को चुनने और नियुक्त करने के लिए अपने मिशन क्षेत्रों में फिर से गए। फिर उन्होंने प्रार्थना और उपवास के ज़रिए इन अगुवों को प्रभु को सौंप दिया। (2) बाइबल का दूसरा अंश यूहन्ना 6:29 है: "यीशु ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर का काम यह है: उस पर विश्वास करना जिसे उसने भेजा है।'"

हमें अपनी प्राथमिकताओं को स्पष्ट करना होगा। हमारा मुख्य काम केवल परमेश्वर की सेवा करना नहीं है; बल्कि, हमारी पहली प्राथमिकता "परमेश्वर का काम" है। परमेश्वर का वह काम यीशु मसीह पर विश्वास करना है, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है। तो, यीशु पर विश्वास करने की इस प्राथमिकता को पूरा करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हमें यीशु मसीह के वचनों को सुनना चाहिए। रोमियों 10:17 को देखें: "इसलिए, विश्वास संदेश सुनने से आता है, और संदेश मसीह के वचन के द्वारा सुना जाता है।" विश्वास मसीह के वचन को सुनने से पैदा होता है। इसलिए, हमें प्रभु के वचनों को ध्यान से सुनना चाहिए। ऐसा करने से, हम अपने विश्वास में प्रगति का अनुभव करेंगे (फिलिप्पियों 1:25)।

आज के अंश, फिलिप्पियों 2:19 में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखता है और प्रभु में यह आशा व्यक्त करता है कि वह जल्द ही तीमुथियुस को उनके पास भेजेगा। इसका कारण क्या था? इसका कारण यह था कि पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों की स्थिति के बारे में जानकर उत्साहित होना चाहता था (पद 19)। दूसरे शब्दों में, फिलिप्पी की कलीसिया में तीमुथियुस को भेजकर, पौलुस वहाँ के विश्वासियों के बारे में समाचार प्राप्त करना चाहता था और उस रिपोर्ट के माध्यम से सांत्वना और प्रोत्साहन पाना चाहता था (पद 19, *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* [आधुनिक कोरियाई संस्करण])। ऐसा करते हुए, पौलुस ने अपने पत्र के माध्यम से तीमुथियुस का परिचय फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कराया—यह बताते हुए कि वह किस तरह का व्यक्ति था। जिन बातों को उसने साझा किया, उनमें से पद 21 ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया: "क्योंकि वे सब अपने हितों की खोज करते हैं, न कि मसीह यीशु के हितों की" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "हर कोई

अपने मामलों में कड़ी मेहनत करता है लेकिन मसीह यीशु के काम में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता है"]। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि जहाँ हर कोई अपने मामलों में लगा हुआ था, वहीं वे मसीह यीशु के काम को खोजने में विफल हो रहे थे। पौलुस के दृष्टिकोण से, यह उसकी शिक्षाओं के विपरीत था। उसकी शिक्षा क्या थी? फिलिप्पियों 2:4 को देखिए, जिस पर हमने पहले ही मनन किया है: "तुममें से हर कोई न केवल अपने भले की सोचे, बल्कि दूसरों के भले की भी सोचे, ताकि मेरी खुशी पूरी हो सके।" पौलुस ने उन्हें सिखाया कि वे अपने साथ-साथ दूसरों के भले का भी ध्यान रखें। तो फिर, मसीह यीशु के काम में दिलचस्पी लेना और प्रभु के काम को खोजना कितना सही है! फिर भी, जैसे-जैसे पौलुस ने फिलिप्पियों को अपना पत्र लिखा, उसने आयत 21 में बताया कि केवल तीमुथियुस ही—जो सचमुच उनकी भलाई की परवाह करता था—मसीह यीशु के काम को खोज रहा था, जबकि बाकी लोग "सिर्फ अपने ही भले की सोच रहे थे।" इसीलिए उसने तीमुथियुस को जल्द ही उनके पास भेजने की उम्मीद जताई—तीमुथियुस, जो फिलिप्पी विश्वासियों की सचमुच परवाह करता था और मसीह यीशु के काम को खोजता था (आयत 20-21)। इसलिए, आज, "जो मसीह यीशु के काम को खोजता है" शीर्षक के तहत, मैं तीमुथियुस पर विचार करना चाहता हूँ—जिसने प्रभु के काम को खोजा—और उन सीखों को पाना चाहता हूँ जो परमेश्वर हमें देता है। मेरी प्रार्थना है कि हम सब ऐसे लोग बनें जो तीमुथियुस की तरह मसीह यीशु के काम को खोजें।

तो, वह कौन व्यक्ति है जो मसीह यीशु के काम को खोजता है? मैं आज के अंश से दो सीखें बताना चाहूँगा जिन पर हम विचार कर सकें।

पहली बात, जो लोग मसीह यीशु की बातों को खोजते हैं, वे कलीसिया में अपने भाई-बहनों की परिस्थितियों की सचमुच परवाह करते हैं।

आज के पाठ में फिलिप्पियों 2:20 को देखिए: "क्योंकि मेरे पास कोई और ऐसा एक-मन वाला व्यक्ति नहीं है, जो सचमुच तुम्हारी हालत की परवाह करेगा" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "तीमुथियुस के अलावा कोई और नहीं है जो मेरे दिल की बात समझता हो और सचमुच तुम्हारी परवाह करेगा"]। पौलुस तीमुथियुस का

परिचय देता है—वह व्यक्ति जिसे वह फिलिप्पी विश्वासियों के पास भेजने का इरादा रखता है—एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो कलीसिया के मामले में उसके "एक-मन" का है (एक जैसा दिल रखने वाला; आयत 2 देखें)। क्या यह परिचय दिलचस्प नहीं है? इसने मुझे इसलिए आकर्षित किया क्योंकि फिलिप्पी कलीसिया के वे ही विश्वासी जिन्हें यह पत्र मिलना था, आपस में एक-मन होने में नाकाम हो रहे थे (आयत 2)। खासकर, यूओदिया और सुन्तुखे—दो ऐसी महिलाएँ जिन्होंने सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ मिलकर काम किया था—प्रभु में एक मन की नहीं थीं (4:2–3)। इस स्थिति को जानते हुए, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा कि उसे प्रभु पर भरोसा है कि वह तीमुथियुस को—जो उसके दिल के बहुत करीब था—जल्द ही उनके पास भेजेगा; वह तीमुथियुस के ज़रिए उनके हालात जानकर तसल्ली पाना चाहता था। मेरा मानना है कि यहाँ पौलुस का फिलिप्पी के विश्वासियों के लिए एक छिपा हुआ संदेश है। ऐसा लगता है कि वह यह संदेश खास तौर पर यूओदिया और सुन्तुखे को दे रहा है, जिन्होंने सुसमाचार के लिए उसके साथ काम किया था। संदेश यह है कि पौलुस सिर्फ़ यूओदिया, सुन्तुखे और फिलिप्पी कलीसिया के सदस्यों से—जो एक मन या मकसद के नहीं थे—यह नहीं कह रहा था कि "एक मन के हो जाओ, एक जैसा प्यार रखो, एक साथ मिल-जुलकर रहो, एक ही सोच रखो" (फिलिप्पियों 2:2); बल्कि वह उनसे अपने और तीमुथियुस के उदाहरण का पालन करने का आग्रह कर रहा था, जिनकी सोच पहले से ही एक जैसी थी। पौलुस और तीमुथियुस की सोच एक जैसी कैसे हो पाई? वे एक मन के कैसे हो पाए? मुझे इसका जवाब फिलिप्पियों 2:5 में मिला, जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं: "तुममें वही सोच होनी चाहिए जो मसीह यीशु में थी।" मसीह यीशु की सोच क्या है? मसीह यीशु की वह कौन सी सोच थी जो पौलुस और तीमुथियुस में भी थी? यह सोच है "खुद को नम्र बनाना और प्रभु की आज्ञा मानना, यहाँ तक कि मौत तक" (आयत 8)। प्रभु द्वारा भेजे गए लोगों के तौर पर, पौलुस और तीमुथियुस का दिल नम्र था; वे उसे भेजने वाले की इच्छा मानने को तैयार थे—यहाँ तक कि मौत तक भी। इसीलिए वे एक जैसी सोच रख पाए और एक मन के हो पाए।

पॉल ने तिमुथियुस का परिचय फिलिप्पी कलीसिया के संतों से इसलिए कराया क्योंकि उनका मानना था कि तिमुथियुस ही वह व्यक्ति है जो सचमुच उनकी भलाई की परवाह करेगा (पद 20)। यहाँ, "सचमुच" (genuinely) शब्द का अर्थ है "एक पिता का अपने बेटे के प्रति सच्चा लगाव" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, पॉल फिलिप्पियों से कह रहे थे कि तिमुथियुस उनकी भलाई की उतनी ही ईमानदारी से परवाह करेगा जितनी ईमानदारी एक

पिता अपने बेटे के प्रति दिखाता है। पॉल किस तरह तिमुथियुस का परिचय उनसे इस तरह करा पाए? इसका जवाब मुझे पॉल और तिमुथियुस के रिश्ते में मिला। पॉल की चिट्ठियों से पता चलता है कि उन्होंने तिमुथियुस का वर्णन कैसे किया: "विश्वास में मेरा सच्चा बेटा" (1 तीमुथियुस 1:2), "मेरा प्यारा बेटा" (2 तीमुथियुस 1:2), और "प्रभु में मेरा प्यारा और वफादार बेटा" (1 कुरिन्थियों 4:17)। ये शब्द दिखाते हैं कि तिमुथियुस पॉल का "प्यारा और वफादार बेटा" और "विश्वास में सच्चा बेटा" था। उनका रिश्ता एक आध्यात्मिक पिता और आध्यात्मिक बेटे का था—एक ऐसा बंधन जो आपसी प्यार पर टिका था। इसीलिए पॉल को कोई शक नहीं था कि तिमुथियुस, जो उनका प्यारा और वफादार आध्यात्मिक बेटा था, खुद उनकी तरह ही फिलिप्पी संतों की भलाई की सचमुच परवाह करेगा (फिलिप्पियों 2:20)। उन्हें उम्मीद थी कि वे जल्द ही तिमुथियुस को उनके पास भेज पाएंगे। वे तिमुथियुस को "तुरंत" (पद 23) भेजना चाहते थे, जैसे ही उन्हें पता चलता कि उनकी अपनी स्थिति क्या है—या "जैसे ही चीजें साफ हो जातीं" (पद 23, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। कारण यह था कि पॉल तिमुथियुस के ज़रिए उनकी स्थिति के बारे में जानना चाहते थे (पद 19)।

क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि हम उन लोगों की भलाई के बारे में जानना चाहें जिनसे हम प्यार करते हैं? माता-पिता के तौर पर, क्या हमारी स्वाभाविक इच्छा यह नहीं होती कि हम जल्दी से जानें कि हमारे प्यारे बच्चे—जो दूर हैं—कैसे हैं? जैसे माता-पिता अपने बच्चे की परवाह करते हैं, वैसे ही पॉल फिलिप्पी कलीसिया के प्यारे संतों की भलाई की सच्ची परवाह करते थे; इसलिए, वे उनकी स्थिति जानने के लिए तिमुथियुस को जल्दी उनके पास भेजना चाहते थे। उन्हें उम्मीद थी कि तिमुथियुस के ज़रिए फिलिप्पी विश्वासियों की खबर सुनकर उन्हें हिम्मत मिलेगी (पद 19)। ऐसा ही एक उदाहरण 1 थिस्सलुनीकियों के अध्याय 3 में मिलता है। पौलुस ने अपने आध्यात्मिक बेटे, तीमुथियुस को थिस्सलुनीके की कलीसिया में भेजा (1 थिस्सलुनीकियों 3:6)। उसने तीमुथियुस को उनके विश्वास का हाल जानने के लिए भेजा क्योंकि वह और ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता था—या जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* कहती है, "और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था" (पद 1, 5)—वह यह पक्का करना चाहता था कि वे बहुत सी तकलीफों के बीच डगमगा न जाएं (पद 3) और उसे डर था कि कहीं परीक्षा लेने वाला उसके साथी की मेहनत को बेकार न कर दे (पद 5)। तीमुथियुस, जो पौलुस का सचमुच वफादार और प्यारा आध्यात्मिक बेटा था, ने अपनी ज़िम्मेदारी ईमानदारी से पूरी की और पौलुस के पास लौट आया। वह थिस्सलुनीके के विश्वासियों के विश्वास और प्रेम की खुशी भरी खबर लेकर आया (पद 6)। उसने

उनके विश्वास के बारे में बताकर पौलुस को दिलासा दिया और बताया कि थिस्सलुनीके के विश्वासी हमेशा पौलुस और उसके साथियों के बारे में अच्छा सोचते थे और उनसे मिलने के लिए तरसते थे (पद 6-7)। तीमुथियुस के ज़रिए थिस्सलुनीके की कलीसिया की खबर सुनकर पौलुस की प्रतिक्रिया पर गौर करें: "क्योंकि अब हम सचमुच जी रहे हैं, क्योंकि तुम प्रभु में मज़बूती से खड़े हो। तुम्हारी वजह से हमारे परमेश्वर की उपस्थिति में हमें जो खुशी मिलती है, उसके बदले हम तुम्हारे लिए परमेश्वर का कितना धन्यवाद करें?" (1 थिस्सलुनीकियों 3:8-9)। इस तरह भेजे जाने पर, तीमुथियुस ने पौलुस का दिल खुश कर दिया और उसे दिलासा दिया, जिसने उसे थिस्सलुनीके की कलीसिया में भेजा था।

हमारे दिलों को क्या चीज़ दिलासा और खुशी देती है? क्या हमें उन लोगों के हालात के बारे में जानकर दिलासा और खुशी मिलती है जिनसे हम सचमुच प्यार करते हैं? मसीह यीशु की बातों को चाहने वालों के तौर पर (जो उसके काम में रुचि रखते हैं), हमें एक मन का होना चाहिए और एक-दूसरे के हालात की सच्ची परवाह करनी चाहिए। हमें एक-दूसरे की स्थितियों को समझने की भी कोशिश करनी चाहिए। जहाँ आज का यह अंश थिस्सलुनीकियों के हालात जानने की पौलुस की सच्ची इच्छा को दिखाता है—यहाँ तक कि उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजा—वहीं इफिसियों और कुलुस्सियों की पत्रियाँ बताती हैं कि पौलुस यह भी चाहता था कि कलीसिया के सदस्य न केवल उसके अपने हालात (इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7) बल्कि उसके साथी काम करने वालों के हालात भी जानें (इफिसियों 6:22; कुलुस्सियों 4:8)। इस तरह, पॉल और चर्च के बीच आपसी देखभाल का रिश्ता था, जहाँ वे जानकारी शेयर करते थे और एक-दूसरे की स्थितियों को समझने की कोशिश करते थे। नतीजतन, वे एक-दूसरे के लिए सुकून और खुशी का ज़रिया बन गए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी, पॉल और टिमोथी की तरह, सच में चर्च की हालत की परवाह करें—अपनी मंडली और अपने साथी विश्वासियों के हालात को समझने की कोशिश करें—और इस तरह एक-दूसरे के लिए सुकून का ज़रिया बनें।

आखिर में, दूसरी बात: जो लोग मसीह यीशु की चीज़ों को चाहते हैं, वे सुसमाचार के लिए मेहनत करते हैं।

आज के हिस्से, फिलिप्पियों 2:22 को देखें: "आप टिमोथी के परखे हुए चरित्र को जानते हैं; उसने सुसमाचार के लिए मेरे साथ वैसे ही मेहनत की है जैसे एक बच्चा अपने पिता के साथ करता है।" पॉल ने फिलिप्पी के विश्वासियों के पास जल्द ही टिमोथी को भेजने की प्रभु से उम्मीद ज़ाहिर करते हुए (आयत 19), सबसे पहले उसका परिचय

इस तरह दिया: टिमोथी ऐसा व्यक्ति है जिसकी सोच पॉल जैसी ही है और जो फिलिप्पी के विश्वासियों की भलाई की सच में परवाह करता है (आयत 20)। पॉल की परिचय की दूसरी बात यह थी कि टिमोथी ऐसा व्यक्ति है जो मसीह यीशु की भलाई चाहता है (आयत 21)। कुरिन्थुस के चर्च को लिखे अपने पत्र में, पॉल ने टिमोथी के बारे में इसी तरह बात की थी: "जब टिमोथी आए, तो ध्यान रखें कि आप उसे अपने बीच सहज महसूस कराएँ, क्योंकि वह प्रभु का काम कर रहा है, ठीक वैसे ही जैसे मैं कर रहा हूँ" (1 कुरिन्थियों 16:10)। फिर, आज के हिस्से—फिलिप्पियों 2:22—में पॉल ने फिलिप्पी के विश्वासियों से टिमोथी का परिचय तीसरे तरीके से दिया: वह परखे हुए चरित्र वाला व्यक्ति है (आयत 22)। आज के हिस्से की आयत 22 में, 'रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन' इस वाक्यांश का अनुवाद "टिमोथी का परखा हुआ चरित्र" करता है, जबकि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* इसका अनुवाद "टिमोथी का बेहतरीन चरित्र" करती है। "परखा हुआ चरित्र" या "बेहतरीन चरित्र" के पीछे का ग्रीक शब्द "जाँच-परख के बाद मिली मंज़ूरी" को दर्शाता है (फ़िफ़र)। इसका मतलब है कि टिमोथी के चरित्र को आज़माइशों या निखार के ज़रिए बेहतरीन माना गया था। उन्हें फिलिप्पी चर्च के संतों से यह पहचान शायद इसलिए मिली क्योंकि उनका चरित्र निखर चुका था—उन्होंने "कठिन परीक्षाओं और कष्टों" (2 कुरिन्थियों 8:2) का सामना किया था और विश्वास में डटे रहे थे (रोमियों 5:4)। इसके अलावा, तीमुथियुस के चरित्र की जिस खास खूबी को फिलिप्पी के विश्वासियों ने पहचाना और माना, वह थी उनकी "सच्चाई" या "ईमानदारी" (वचन 20)।

जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, उनके चरित्र का बहुत महत्व है; ईमानदारी—या सच्चाई—खास तौर पर ज़रूरी है। मैंने अक्सर इस बारे में सोचा है: कितना धन्य होगा वह व्यक्ति जिसका दोस्त सच्चे चरित्र वाला हो! जब मैं आज के वचन से प्रेरित पौलुस और तीमुथियुस के बारे में सोचता हूँ, तो कल्पना करता हूँ कि हमारा चर्च—मसीह की देह—कितना आनंदित होगा अगर हम सब, जो साथ मिलकर सेवा करते हैं, बेहतरीन चरित्र वाले लोग बनें, और खास तौर पर पौलुस और तीमुथियुस की तरह ईमानदार लोग बनें। इसलिए, मैं खुद भी ईमानदार व्यक्ति बनने की कोशिश करने का संकल्प लेता हूँ—परमेश्वर के सामने भी और कलीसिया के सामने भी। जैसे पिता परमेश्वर, जो वाचा निभाने वाले हैं, मेरे प्रति वफादार हैं—उन्होंने मसीह के ज़रिए मुझे अपनी संतान बनाया है—वैसे ही मुझे भी अपने घर के परिवार और चर्च के परिवार के प्रति वफादार रहना चाहिए। हालाँकि, जब मैं परमेश्वर के सामने खुद को परखता हूँ और अपने परिवार या चर्च समुदाय के प्रति अपनी वफादारी की कमी को

देखता हूँ—तो दोषी ज़मीर की चुभन महसूस होती है और मैं खुद से निराश हो जाता हूँ—तब पवित्र आत्मा बाइबल के एक खास वचन को मेरे मन में लाता है और मुझे हिम्मत देता है। वह वचन है 2 तीमुथियुस 2:13: "यदि हम विश्वासघाती भी हों, तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है—क्योंकि वह स्वयं का इनकार नहीं कर सकता।"

अगर हम प्रेरितों के काम 16 को देखें—जिसमें फिलिप्पी की कलीसिया की स्थापना का ज़िक्र है—तो आयत 2 में तीमुथियुस का परिचय इन शब्दों में दिया गया है: "लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों के बीच तीमुथियुस की अच्छी चर्चा थी।" तीमुथियुस—जो विश्वास में पौलुस का प्यारा और सच्चा बेटा और एक वफादार आध्यात्मिक बेटा था—का चरित्र इतना बढ़िया था कि उसने लुस्त्रा और इकुनियुम के विश्वासियों की तारीफ़ पाई। पौलुस आज के वचन, फिलिप्पियों 2:22 में उसके बारे में कहते हैं, "उसने सुसमाचार के लिए मेरे साथ वैसे ही मेहनत की है जैसे एक बच्चा पिता की सेवा करता है।" इस आयत को बेहतर ढंग से समझने के लिए, हमें तीमुथियुस के बारे में थोड़ा और जानना होगा। एक यूनानी पिता और एक यहूदी माँ के घर जन्मे (प्रेरितों के काम 16:1), तीमुथियुस एक धार्मिक माहौल में पले-बढ़े। हालाँकि उनके पिता यूनानी थे—जिससे उन पर यूनानी संस्कृति और कई देवताओं को मानने का असर पड़ सकता था—फिर भी तीमुथियुस अपने नाम के अनुरूप जिए, जिसका अर्थ है "जो परमेश्वर का सम्मान करता है," और उन्होंने केवल परमेश्वर पर विश्वास किया और उनकी सेवा की। वह ऐसा इसलिए कर पाए क्योंकि उन्होंने अपनी वफादार दादी लोइस और अपनी माँ यूनीके से पवित्र शास्त्र की शिक्षा ली थी (2 तीमुथियुस 1:5)। तीमुथियुस, जिनका विश्वास का जीवन परमेश्वर पर केंद्रित था, एक आदर्श युवा बने। यह स्वाभाविक ही था कि तीमुथियुस—एक ऐसा युवा जो सच्चे परमेश्वर से प्रेम करता था और भलाई करके अपने पड़ोसियों की सेवा करता था—की उनके गृहनगर लुस्त्रा में हर कोई बहुत तारीफ़ करता। तीमुथियुस का जीवन, जो इतने शांत माहौल में मसीही शिक्षाओं से बना था, तब एक अहम मोड़ पर पहुँचा जब वे प्रेरित पौलुस से मिले। तीमुथियुस पौलुस से उनकी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान मिले, जब प्रेरित लुस्त्रा आए थे; इस मुलाकात के ज़रिए, तीमुथियुस ने यीशु मसीह को अपनाया, पौलुस को आध्यात्मिक पिता मानने लगे, और उनसे गहरा प्रेम और शिष्यत्व का प्रशिक्षण पाया। इसके अलावा, जैसा कि आज के वचन—फिलिप्पियों 2:22—में बताया गया है, तीमुथियुस ने सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ वैसे ही मेहनत की जैसे एक बच्चा

पिता की सेवा करता है। यहाँ "मेहनत" शब्द का अर्थ "एक समर्पित सेवक के रूप में सेवा करना" है। दूसरे शब्दों में, तीमुथियुस ने पौलुस की आज्ञा मानकर सुसमाचार के काम में सेवा की, ठीक वैसे ही जैसे कोई पिता के प्रति प्रेम और समर्पण दिखाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, तीमुथियुस ने यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने में अपने आध्यात्मिक पिता, पौलुस की आज्ञा मानकर सेवा की। इसी नज़रिए से पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 3:2 में तीमुथियुस का ज़िक्र करते हुए उसे "हमारा भाई और मसीह के सुसमाचार को फैलाने में परमेश्वर का सहकर्मी" बताया। और 2 कुरिन्थियों 1:19 में उन्होंने कहा, "परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह, जिसका प्रचार हमने—यानी मैंने, सिलवानुस और तीमुथियुस ने—तुम्हारे बीच किया था..." ...पौलुस ने कहा। इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि तीमुथियुस ने पौलुस और सिलवानुस के साथ मिलकर कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों के बीच यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र—का प्रचार किया? इसीलिए प्रेरित पौलुस ने रोमियों 16:21 में तीमुथियुस को "मेरा सहकर्मी" कहा। दूसरे शब्दों में, तीमुथियुस यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने में पौलुस का साथी था।

फिलिप्पी की कलीसिया के उन विश्वासियों के नज़रिए पर गौर करें जिन्हें पौलुस का यह पत्र मिला था। जब उन्होंने पत्र पढ़ा और पौलुस को तीमुथियुस का परिचय देते हुए सुना, तो उनके मन में क्या विचार आए होंगे? ज़ाहिर है, उन्होंने पौलुस की बात पर विश्वास किया होगा जब उन्होंने तीमुथियुस के बारे में कहा कि वह "मेरी जैसी सोच रखता है और सचमुच तुम्हारी भलाई की परवाह करेगा" (फिलिप्पियों 2:20) और वह "मसीह यीशु की भलाई चाहता है" (वचन 21)। आख़िरकार, उनके लिए प्रेरित पौलुस प्रभु का एक भरोसेमंद सेवक था। हालाँकि, जब वे फिलिप्पियों 2:22 पर पहुँचे—वह हिस्सा जिसे हम आज देख रहे हैं—और पौलुस को यह कहते सुना, "तुम तीमुथियुस के बेहतरीन चरित्र के बारे में जानते हो" और यह कि उसने "सुसमाचार के लिए मेरे साथ वैसे ही सेवा की जैसे एक बच्चा पिता की सेवा करता है," तो उन्हें शायद तीमुथियुस के साथ अपनापन महसूस हुआ होगा। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ क्योंकि फिलिप्पियों 1:5 में ये शब्द मिलते हैं: "क्योंकि तुम पहले दिन से लेकर अब तक सुसमाचार के काम में हिस्सा लेते रहे हो" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "क्योंकि जब से तुमने पहली बार मसीह पर विश्वास किया, तब से लेकर अब तक तुमने खुशखबरी फैलाने में सहयोग किया है"]। फिलिप्पी के विश्वासियों ने भी—पहले ही दिन से—सुसमाचार के लिए पौलुस के काम में हिस्सा लिया था... क्योंकि तीमुथियुस सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ मिलकर सक्रिय रूप से काम कर रहा था, इसलिए फिलिप्पी की कलीसिया

के सदस्य उसके साथ अपनापन क्यों महसूस न करते? पौलुस, तीमुथियुस और फिलिप्पी के विश्वासी—ये सभी ऐसे लोग थे जो मसीह यीशु की भलाई चाहते थे (वचन 21) और यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए काम करते थे।

हमें भी ऐसे ही लोग बनना चाहिए जो मसीह यीशु की भलाई चाहते हों। चाहे सीधे तौर पर हो या परोक्ष रूप से, हम सभी को यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए काम करने वाले लोग बनना चाहिए। हमें यीशु मसीह के सुसमाचार—जो "जीवन का वचन" है—को मजबूती से थामे रखना चाहिए और उस महान खुशखबरी का प्रचार करना चाहिए (2:16)। क्यों? क्योंकि प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार जीवन देने वाला सुसमाचार है। हमें उस सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए जो अनंत जीवन देता है। यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए काम करने का यही अर्थ है, और जो लोग मसीह यीशु की भलाई चाहते हैं, उनका यह उचित कर्तव्य है।

इस महीने की शुरुआत में (3 फरवरी को), पास्टर ट्यूक्सू—जो मंगोलिया के चमसारंग चर्च (और इटरनल लव चर्च) के सीनियर पास्टर हैं और जिनकी कलीसिया को हमारी कलीसिया थोड़ी-बहुत मदद करती है—ने मुझे कुछ तस्वीरों के साथ एक ईमेल भेजा। मुझे याद है कि मैं पहली बार पास्टर ट्यूक्सू से 2007 में मिला था, जब मैं अपने मेंटर पास्टर के साथ मंगोलिया गया था ताकि एक प्रेस्बिटेरियन सेमिनरी रिट्रीट में सेमिनार का संचालन कर सकूँ। मुझे याद है कि उस रिट्रीट में लगभग साठ स्थानीय मंगोलियाई सेमिनरी छात्र शामिल हुए थे, लेकिन पास्टर ट्यूक्सू मुझे खास तौर पर याद रहे क्योंकि मंगोलियाई होने के बावजूद वे बहुत अच्छी कोरियाई भाषा बोलते थे। इस तरह मैं पहली बार उनसे परिचित हुआ; फिर, लगभग चार साल बाद, जब मैं दूसरी बार मंगोलिया गया—फिर से एक प्रेस्बिटेरियन सेमिनरी रिट्रीट के लिए... सेमिनार के दौरान मुझे एक बात बहुत खास लगी, जब मैंने पास्टर ट्यूक्सू को यह कहते सुना कि उस साल सेमिनरी से ग्रेजुएट होने के बाद, वे उव्स क्षेत्र में "इटरनल लव चर्च" में तीन साल की सेवा देने का इरादा रखते थे—यह जगह मंगोलिया की राजधानी उलानबटार से दो दिन की ड्राइव (लगभग 930 मील) की दूरी पर है। मुझे रिट्रीट के बाद उनके ग्रेजुएशन समारोह में शामिल होना और उन्हें अपने परिवार के साथ तस्वीरें लेते हुए देखना अच्छी तरह याद है। उस दूसरी मीटिंग के बाद, मैं U.S. लौट आया, लेकिन पास्टर ट्यूक-सू और इतनी दूर-दराज़ जगह पर—जहाँ बहुत कम लोग जाते हैं—तीन साल तक सेवा करने के उनके संकल्प के बारे में सोचता रहा। किसी तरह मदद करने की इच्छा से, मैंने व्यक्तिगत

रूप से मिशनरी सहायता देना शुरू किया, ताकि 'इटर्नल लव चर्च' की सेवा में—भले ही थोड़ा-बहुत—योगदान दे सकूँ। फिर, पिछले साल के बीच में, पास्टर ट्यूक-सू ने 'इटर्नल लव चर्च' में अपना तीन साल का कार्यकाल पूरा किया; उन्होंने अपने एक शिष्य—एक इवेंजलिस्ट—को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और राजधानी में "टू लव चर्च" शुरू करने के लिए चले गए। तब से, हमारा चर्च उस नई मंडली को कुछ आर्थिक सहायता दे रहा है। मैंने डाइनिंग एरिया के पास बुलेटिन बोर्ड पर पास्टर ट्यूक-सू, 'इटर्नल लव चर्च' और 'टू लव चर्च' की तस्वीरें लगाई हैं; कृपया उन्हें देखें, उनके बारे में सोचें और उनके लिए प्रार्थना करने में मेरे साथ शामिल हों। मैं आपसे यह भी अनुरोध करता हूँ कि आप फिलीपींस के इवेंजलिस्ट हैरी और इवेंजलिस्ट लेयर के लिए भी प्रार्थना करें—जिनकी तस्वीरें भी उस बोर्ड पर हैं—क्योंकि वे अपना अनमोल काम कर रहे हैं।

हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' का विज़न लीडर्स तैयार करना है। हमारा ध्यान इस बात पर है कि प्रभु अपने चर्च को बनाने और परमेश्वर का राज्य स्थापित करने के लिए अपने सेवकों को तैयार करें। जब हम इस काम में हाथ मिलाते हैं, तो मेरे लिए एक बहुत ही दिलचस्प और प्रार्थनापूर्ण चिंता का विषय यह होता है कि क्या प्रभु के ये सेवक वास्तव में भरोसेमंद और ईमानदार व्यक्ति हैं। इसीलिए मैं पिछले महीने हमारे चर्च की मैक्सिको मिशन टीम में शामिल हुआ और हमारे एक एल्डर के साथ वहाँ गया; मैं पास्टर विक्टर से—एक मैक्सिकन पास्टर जिनके बारे में पास्टर गोमेज़ ने मुझसे बात की थी—व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता था। पास्टर गोमेज़ से उनके बारे में इतना कुछ सुनने के बाद, मैं यह देखने के लिए उत्सुक था कि वे किस तरह के व्यक्ति हैं। उस दिन, हमारी मिशन टीम, पास्टर विक्टर और उनकी पत्नी के साथ, तिजुआना से एन्सेनाडा गई ताकि गेब्रियल के घर जा सकें और बेघर लोगों के लिए की जा रही सेवा को देख सकें। मैं बहुत आभारी और खुश हूँ कि प्रभु ने हमारे चर्च को ऐसे अनमोल सेवकों से मिलने और उनकी सेवा में एक साथ काम करने का मौका दिया है। मुझे उम्मीद है कि हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' के सभी सदस्य धीरे-धीरे उनकी परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझेंगे, उनमें गहरी रुचि लेंगे और ईमानदारी से उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में याद रखेंगे। आइए हम सब—उनके साथ मिलकर—प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए मेहनत करें।

“मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डालना...”

[फिलिप्पियों 2:25-30]

टोनी कैम्पोलो ने एक बार बुजुर्गों पर की गई एक स्टडी के नतीजे पब्लिश किए। उन्होंने 95 साल और उससे ज़्यादा उम्र के पचास लोगों का सर्वे किया और पूछा, “अगर आपको अपनी ज़िंदगी दोबारा जीने का मौका मिले, तो आप उसे कैसे जिएंगे?” उन्होंने उनसे तीन-तीन जवाब देने को कहा। तीन आम जवाब इस तरह थे: (1) वे ज़्यादा सोच-विचार करते। उन्होंने इतनी भागदौड़ भरी ज़िंदगी जी थी कि वे कभी रुके ही नहीं और अपनी ज़िंदगी का मकसद नहीं सोचा; उन्हें अफ़सोस था कि उन्होंने और ज़्यादा समझदारी और होश के साथ ज़िंदगी नहीं जी। (2) वे ज़्यादा जोखिम उठाते। उन्हें लगा कि उन्होंने बहुत डरपोक होकर ज़िंदगी जी, अन्याय से समझौता किया और इस बात की बहुत ज़्यादा चिंता की कि दूसरे क्या सोचेंगे; वे आगे से ज़्यादा हिम्मत के साथ जीना चाहते थे। (3) वे ऐसे काम ज़्यादा करते जो उनके मरने के बाद भी याद रखे जाते। वे मौत की सच्चाई को ध्यान में रखकर जीना चाहते थे—यह सोचते हुए कि मरने के बाद क्या होता है और वे पीछे क्या विरासत छोड़ेंगे। उन सभी ने माना कि बिना ऐसे सोच-विचार के जीने का उन्हें अफ़सोस था।

हमने पहले तीमुथियुस के बारे में मनन किया है—फिलिप्पियों 2:19-24 पर ध्यान देते हुए—जो एक वफ़ादार आत्मिक बेटा था और जिसे पौलुस जल्द ही फिलिप्पी की कलीसिया में भेजना चाहता था। उसे भेजने से पहले, पौलुस ने वहाँ के विश्वासियों से तीमुथियुस का परिचय कराया। मैंने उस परिचय को पाँच बिंदुओं में बताया है:

(1) तीमुथियुस की सोच पौलुस जैसी ही थी (वचन 20)। दूसरे शब्दों में, तीमुथियुस, जो आत्मिक बेटा था, का दिल और सोच अपने आत्मिक पिता, प्रेरित पौलुस जैसी ही थी। (2) तीमुथियुस ऐसा व्यक्ति था जो सचमुच

फिलिप्पी की कलीसिया के संतों की भलाई की परवाह करता था (वचन 20)। दूसरे शब्दों में, वह ऐसा व्यक्ति था जो ईमानदारी से उनकी भलाई की चिंता करता था।

(3) तीमुथियुस ऐसा व्यक्ति था जो मसीह यीशु के हितों को देखता था (वचन 21)। दूसरे शब्दों में, उसे मसीह यीशु के काम में दिलचस्पी थी। पौलुस की तरह, वह भी प्रभु के काम के लिए समर्पित था (1 कुरिन्थियों 16:10)।

(4) तीमुथियुस बहुत अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति था (फिलिप्पियों 2:22)। उसका चरित्र मुश्किलों और परीक्षाओं से साबित हुआ था। उनके चरित्र की जिस खास खूबी को पहचाना गया—जिसमें फिलिप्पी के संतों की राय भी शामिल थी—वह थी उनकी "सच्चाई" या "ईमानदारी" (पद 20)।

(5) तीमुथियुस ने सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ मिलकर काम किया (पद 22)। उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता, प्रेरित पौलुस के साथ वैसे ही काम किया जैसे कोई बच्चा अपने पिता के साथ करता है।

पौलुस को प्रभु पर भरोसा था कि वे तीमुथियुस को फिलिप्पी की कलीसिया में "जल्द ही" भेज पाएंगे, क्योंकि वे वहाँ के संतों की हालत जानकर तसल्ली पाना चाहते थे (पद 19)। इसलिए, यह लिखते हुए कि वे तीमुथियुस को "तुरंत" भेजना चाहते थे—जैसे ही उन्हें पता चल जाए कि उनके अपने हालात कैसे रहते हैं (पद 23)—पौलुस ने प्रभु पर अपना भरोसा भी जताया कि वे खुद भी "जल्द ही" वहाँ आएंगे (पद 24)। यह कहने के बाद, पौलुस इस हिस्से—फिलिप्पियों 2:25–30—में फिलिप्पी के संतों से एक और व्यक्ति के बारे में बात करते हैं। वह व्यक्ति एपफ्रुदीतुस है। तो, एपफ्रुदीतुस कौन था? आइए इस व्यक्ति के जीवन के तीन पहलुओं पर गौर करें और उन सीखों पर विचार करें जो परमेश्वर हमें उसके ज़रिए देते हैं:

पहला, एपफ्रुदीतुस पौलुस का भाई, साथी काम करने वाला और साथी सैनिक था; उसने फिलिप्पी की कलीसिया की ओर से पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक संदेशवाहक के तौर पर भी सेवा की।

आज के हिस्से, फिलिप्पियों 2:25 को देखें: "लेकिन मुझे लगता है कि एपफ्रुदीतुस को आपके पास भेजना ज़रूरी है, जो मेरा भाई, साथी काम करने वाला और साथी सैनिक है, और साथ ही आपका संदेशवाहक और

वह व्यक्ति है जिसने मेरी ज़रूरतों को पूरा करने में मदद की।" एपफ्रुदीतुस न केवल पौलुस का "भाई, साथी काम करने वाला और साथी सैनिक" था, बल्कि फिलिप्पी की कलीसिया द्वारा पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भेजा गया संदेशवाहक भी था। यहाँ "संदेशवाहक" के तौर पर अनुवादित शब्द मूल ग्रीक भाषा में *apostolos* है—वही शब्द जिसका अनुवाद हम कोरियाई भाषा में "प्रेरित" (apostle) के तौर पर करते हैं। इस तरह, "संदेशवाहक" और "प्रेरित" दोनों का मतलब बस यही है—"वह जिसे भेजा गया हो।" यीशु के "प्रेरित" वे लोग हैं जिन्हें यीशु—जो प्रभु हैं—ने दुनिया में भेजा है, ताकि वे उस परमेश्वर की इच्छा पूरी कर सकें जिसने उन्हें भेजा था। दूसरे शब्दों में, यीशु के बारह प्रेरित वे लोग थे जिन्होंने पूरी दुनिया में जाकर यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया और सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाया (मत्ती 28:19–20), और इस तरह प्रभु की इच्छा को पूरा किया। इसलिए, आज के वचन—फिलिप्पियों 2:25—में पौलुस ने जिस "तुम्हारे दूत" का ज़िक्र किया है, वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों के पास भेजा था, बल्कि वह व्यक्ति है जिसे उन्होंने पौलुस के पास भेजा था। संक्षेप में, एपफ्रदीतुस वह व्यक्ति था जिसे फिलिप्पी की कलीसिया ने भेजा था। इसीलिए पौलुस ने उसे "मेरा दूत" कहने के बजाय "तुम्हारा दूत" कहा।

तो फिर, फिलिप्पी के विश्वासियों ने एपफ्रदीतुस को—जो उन्हीं में से एक था—पौलुस के पास क्यों भेजा? उनका मकसद क्या था? उनका मकसद पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करना था। दूसरे शब्दों में, फिलिप्पी की कलीसिया ने एपफ्रदीतुस को पौलुस की मदद करने के लिए भेजा था ताकि उसकी कमियों को पूरा किया जा सके (वचन 25b: "...तुम्हारा दूत और वह जो मेरी ज़रूरतों को पूरा करने में सेवा करता है")। "सेवा करने वाले" के लिए मूल यूनानी शब्द (*leitourgos*) का अर्थ है कोई ऐसा व्यक्ति जो व्यक्तिगत सेवा में लगा हो, एक सहायक या मददगार (आर्नड्ट)। इसका मतलब है कि एपफ्रदीतुस ने, फिलिप्पी की कलीसिया के दूत के तौर पर, एक सहायक या मददगार की हैसियत से पौलुस की सेवा की। इस बात पर विचार करते हुए कि एपफ्रदीतुस—जो फिलिप्पी की कलीसिया का सदस्य था—पौलुस का सेवक था, मुझे लगता है कि फिलिप्पी की कलीसिया ने किसी भी दूसरी कलीसिया की तुलना में पौलुस की बेहतर सेवा की। ऐसा सोचने का मेरा कारण फिलिप्पियों 2:17 में मिलता है: "लेकिन भले ही तुम्हारे विश्वास से मिली कुर्बानी और सेवा पर मुझे पेय-बलि की तरह उँडेल दिया जाए, फिर भी मैं खुश हूँ और तुम सबके साथ आनंद मनाता हूँ।" इस अंश में, पौलुस उस सेवा को स्वीकार करते हैं जो फिलिप्पी की कलीसिया ने विश्वास के कारण उनके लिए की थी। इसके अलावा, इस

त्यागमयी सेवा के बारे में, पौलुस ने कहा कि भले ही उन्हें पेय-बलि की तरह उँडेल दिया जाए—यानी, अगर उन्हें शहादत का सामना करना पड़े—तो भी वे आनंद मनाएँगे और उस आनंद को फिलिप्पी की कलीसिया के संतों के साथ साझा करेंगे। प्रभु में यह कितना अनमोल भाईचारा था! पौलुस और फिलिप्पी की कलीसिया के बीच का रिश्ता आपसी सेवा का एक सुंदर बंधन था।

तो फिर, फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करने में कैसे मदद की? फिलिप्पियों 4:15–16 पर गौर करें: “हे फिलिप्पियों, तुम जानते हो कि सुसमाचार के प्रचार की शुरुआत में, जब मैं मकिदुनिया से निकला, तो किसी भी कलीसिया ने लेन-देन के मामले में मेरा साथ नहीं दिया, सिवाय तुम्हारे। क्योंकि थिस्सलुनीके में भी, जब मुझे ज़रूरत थी, तो तुमने एक से ज़्यादा बार मेरी मदद के लिए चीज़ें भेजीं।” ये आयतें दिखाती हैं कि सुसमाचार की सेवा के शुरुआती दिनों में, जब पौलुस मकिदुनिया से निकला, तो फिलिप्पी की कलीसिया ही एकमात्र ऐसी कलीसिया थी जिसने सुसमाचार के काम में उसका साथ दिया (1:5) और उसकी ज़रूरतों को पूरा किया। इसके अलावा, जब पौलुस थिस्सलुनीके में था, तो कलीसिया ने उसे एक से ज़्यादा बार ज़रूरी चीज़ें भेजीं। उन्होंने ये चीज़ें एपफ्रुदीतुस के ज़रिए भेजीं। इसलिए, फिलिप्पियों 4:18 में, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से कहा: “सचमुच मेरे पास सब कुछ है और मैं भरपूर हूँ। एपफ्रुदीतुस के ज़रिए तुम्हारी भेजी हुई चीज़ें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ; ये चीज़ें एक सुहावनी सुगंध और परमेश्वर को भाने वाला बलिदान हैं।” फिलिप्पी कलीसिया ने अपने दूत, एपफ्रुदीतुस के ज़रिए पौलुस की ज़रूरतों को पूरा किया। इस तरह, पौलुस ने कहा कि उसकी "ज़रूरतें पूरी हो गई हैं" और फिलिप्पी कलीसिया द्वारा भेजे गए उपहारों को "सुगंधित भेंट, परमेश्वर को भाने वाला बलिदान" बताया। फिलिप्पी कलीसिया के दूत एपफ्रुदीतुस ने पौलुस के लिए ज़रूरी चीज़ें—जो कलीसिया ने तैयार की थीं—पहुँचाईं; ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने तब किया था जब पौलुस मकिदुनिया से निकला था और जब वह थिस्सलुनीके में था। इसके अलावा, उपहार पहुँचाने के बाद, एपफ्रुदीतुस पौलुस के साथ रहा और उसके साथ मिलकर काम किया (2:25)। दूसरे शब्दों में, उसने सिर्फ़ ज़रूरी चीज़ें नहीं पहुँचाईं और फिलिप्पी वापस नहीं चला गया; वह पौलुस के साथ रहा और सुसमाचार के लिए मिलकर मेहनत की (आयत 25)। एपफ्रुदीतुस ने सुसमाचार फैलाने के काम में पौलुस का साथ दिया (पार्क युन-सन)। साथ ही, चूँकि पौलुस ने उसे "साथी सैनिक" कहा है (आयत 25), इसलिए यह साफ़ है कि सुसमाचार के लिए मेहनत करते हुए, एपफ्रुदीतुस ने यीशु मसीह के सैनिक की तरह बहादुरी से लड़ाई लड़ी—उन लोगों के ख़िलाफ़ जो

सुसमाचार का विरोध करते थे—और पौलुस के साथ मिलकर निडर होकर इसका प्रचार किया। इसीलिए, इस हिस्से की 25वीं आयत में पौलुस ने फिलिप्पी के संतों से एपफ्रुदितुस का ज़िक्र इन शब्दों में किया: "मेरा भाई, साथी-कर्मी और साथी-सैनिक, और तुम्हारा संदेशवाहक, जिसे तुमने मेरी ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिए भेजा था।"

जब मैं एपफ्रदितुस के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—और जिन मिशनरियों को हम मदद देते हैं—उन्हें उसके जैसे और लोगों की बहुत ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो हमारे चर्च और फील्ड में काम कर रहे मिशनरियों के बीच संदेशवाहक का काम कर सकें। उदाहरण के लिए, प्रभु अभी हमें तिजुआना, मेक्सिको में मिशन का काम करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं; एक तरह से, हमारी मिशन टीम एक पुल का काम करती है, जो हमारे चर्च से उस मिशन फील्ड तक तोहफ़े पहुँचाती है। बेशक, सबसे ज़रूरी तोहफ़ा यीशु मसीह के सुसमाचार—और उनके प्यार—को मेक्सिको के लोगों तक पहुँचाना है। खाना, दूसरी चीज़ें और मेडिकल देखभाल देना भी ज़रूरी है। लेकिन, मेरा यह भी मानना है कि वहाँ सेवा करने वाले स्थानीय कार्यकर्ताओं—जैसे पादरी विक्टर और उनकी पत्नी—के साथ भाई-बहन की तरह मिलकर काम करना और हमारे चर्च द्वारा दिए गए तोहफ़ों से उनकी ज़रूरतों को पूरा करना बहुत ज़रूरी है। इस तरह की सेवा न सिर्फ़ तिजुआना और एन्सेनाडा, मेक्सिको के लिए है, बल्कि चीन, फिलीपींस और मंगोलिया जैसी जगहों के लिए भी है। जब हमारा चर्च मिशनरियों और प्रभु के स्थानीय सेवकों की ज़रूरतों को पूरा करके, साथ मिलकर प्रार्थना करके और उनके साथ काम करके उनके साथ जुड़ता है, तो यह परमेश्वर की नज़र में एक सुंदर साझेदारी और प्रभु में सहयोग की एक अनमोल सेवा बन जाती है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा चर्च इस अनमोल और सुंदर सहयोगी सेवा को ईमानदारी से जारी रखे जो प्रभु ने हमें सौंपी है।

दूसरी बात, एपफ्रदितुस फिलिप्पी चर्च के संतों से मिलने के लिए बहुत बेताब था और उनकी वजह से बहुत परेशान था। आज के वचन, फिलिप्पियों 2:26 को देखिए: "क्योंकि वह तुम सब से मिलने के लिए बेताब था और इसलिए परेशान था क्योंकि तुमने सुना था कि वह बीमार है।" बीमार होने के बावजूद, इस वचन में बताए गए व्यक्ति—एपफ्रदितुस—ने फिलिप्पी चर्च के संतों (अपने आध्यात्मिक परिवार) से मिलने की गहरी इच्छा रखी (वचन 26)। हालाँकि हमें ठीक-ठीक नहीं पता कि फिलिप्पी छोड़ने के बाद उसने प्रेरित की ज़रूरतों को पूरा

करने के लिए पौलुस के साथ कितने समय तक काम किया, लेकिन यह पक्का है कि प्रभु का काम करते हुए वह बीमार पड़ गया (वचन 30)। बाइबल बताती है कि उसकी हालत कितनी गंभीर थी; वचन 27 और 30 से पता चलता है कि वह मौत के कगार पर था। इसी स्थिति में पॉल ने फिलिप्पी के विश्वासियों को पत्र लिखा और उन्हें बताया कि एपफ्रदितुस उनसे मिलने के लिए बहुत बेचैन था।

मेरा मानना है कि जब पॉल यह पत्र लिख रहे थे, तो वे एपफ्रदितुस की भावनाओं को समझते थे और उनसे सहानुभूति रखते थे। दूसरे शब्दों में, पॉल एपफ्रदितुस के दिल की बात समझते थे, जो फिलिप्पी चर्च के संतों को बहुत शिद्दत से याद करता था। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि पॉल ने अपने पत्रों में अक्सर लिखा है कि जब वे उन संतों से दूर होते थे जिनसे वे प्यार करते थे, तो उनसे मिलने की उनकी कितनी गहरी इच्छा होती थी। उदाहरण के लिए, रोमियों 1:10–13 पर विचार करें: "...प्रार्थना करता हूँ कि किसी तरह परमेश्वर की इच्छा से मैं आखिरकार आपके पास आ सकूँ। क्योंकि मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, ताकि मैं आपको कोई आत्मिक वरदान दे सकूँ जिससे आप मज़बूत हो सकें—यानी, हम एक-दूसरे के विश्वास से, आपके और मेरे विश्वास से, एक-दूसरे का हौसला बढ़ा सकें। भाइयों, मैं नहीं चाहता कि आप अनजान रहें कि मैंने कई बार आपके पास आने की इच्छा की है..." रोम के विश्वासियों को लिखते हुए, पॉल ने कहा कि वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उनसे मिलने का रास्ता खोज रहे थे (वचन 10), कि वे उनसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थे (वचन 11), और उन्होंने कई बार उनसे मिलने की इच्छा की थी (वचन 13)। ऐसे शब्द दिखाते हैं कि वे उनसे मिलने के लिए कितने उत्सुक थे। एक और उदाहरण प्रेरित पॉल द्वारा थिस्सलुनीके के चर्च को लिखे गए पत्र में मिलता है। 1 थिस्सलुनीकियों 2:17–18 को देखें: "लेकिन भाइयों, चूँकि हम कुछ समय के लिए आपसे अलग हो गए थे—शरीर से, दिल से नहीं—इसलिए हमने और भी ज़्यादा उत्सुकता और गहरी इच्छा के साथ आपसे आमने-सामने मिलने की कोशिश की, क्योंकि हम आपके पास आना चाहते थे—मैं, पॉल, बार-बार—लेकिन शैतान ने हमें रोक दिया।" प्रेरित पॉल ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों के चेहरे देखने के लिए बहुत कोशिश की और गहरी इच्छा रखी। उस चर्च परिवार से न मिल पाने की निराशा का अनुभव करने के बाद, जिससे वे बहुत गहराई से जुड़ना चाहते थे, पॉल एपफ्रदितुस के दिल की बात—फिलिप्पी चर्च में अपनी मंडली के सदस्यों के लिए उसकी तड़प और गहरी इच्छा—को समझ सकते थे और उनसे सहानुभूति रख सकते थे। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा कि उन्हें एपफ्रुदीतुस को वापस भेजना ज़रूरी लगा—जो उनसे मिलने के लिए बहुत बेचैन

था और उन्हें बहुत याद कर रहा था—उन्होंने कहा, "मुझे एपफ्रुदीतुस को आपके पास भेजना ज़रूरी लगा" (फिलिप्पियों 2:25) और "इसलिए मैं उसे जल्दी वापस भेज रहा हूँ" (आयत 28)।

हालाँकि, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को यह भी बताया कि एपफ्रुदीतुस "बहुत परेशान" था क्योंकि उसे पता था कि उन्हें यह खबर मिलेगी कि वह बीमार पड़ गया था और लगभग मरने ही वाला था (आयत 26)। ज़रा इसके बारे में सोचिए। अगर आपको पता चले कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी आप बहुत परवाह करते हैं, बीमार पड़ गया है और मौत के कगार पर है, तो आप कैसा महसूस करेंगे? क्या आप चिंता नहीं करेंगे? क्या आपको दुख नहीं होगा? लेकिन एपफ्रुदीतुस के मामले में, वह खुद बहुत परेशान था—फिलिप्पी के विश्वासियों की चिंता कर रहा था—ठीक इसलिए क्योंकि उसे पता था कि उन्हें उसकी जानलेवा बीमारी के बारे में पता चलेगा। क्या यह थोड़ा अजीब नहीं है? क्या यह बात हैरान करने वाली नहीं है कि बीमार होने और मौत के करीब होने के बावजूद, एपफ्रुदीतुस को अपनी चिंता से ज़्यादा फिलिप्पी में अपने चर्च परिवार की चिंता थी? आखिर, जब कोई बीमारी के कारण मौत का सामना कर रहा हो, तो क्या यह आम बात है कि वह अपनी चिंता करने के बजाय परिवार या चर्च के उन सदस्यों की ज़्यादा चिंता करे जिन्हें स्थिति के बारे में पता है? यहाँ एक बात ध्यान देने लायक है कि एपफ्रुदीतुस के "बहुत परेशान" (आयत 26) होने के लिए इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द—*adēmoneō*—नए नियम में यीशु के गेथसेमनी के बगीचे में प्रार्थना करने के वृत्तांत में भी आता है (मत्ती 26:37; मरकुस 14:33): "वह पतरस और जब्दी के दो बेटों को अपने साथ ले गया, और वह दुखी और परेशान होने लगा" [(मॉडर्न कोरियन वर्शन) "वह केवल पतरस और जब्दी के दो बेटों को अपने साथ ले गया। यीशु बहुत व्यथित थे..."]। यहाँ यीशु के "परेशान और दुखी" (बहुत व्यथित) होने के लिए जो शब्द इस्तेमाल किया गया है, वही शब्द आज के अंश—फिलिप्पियों 2:26—में एपफ्रुदीतुस के "बहुत परेशान" होने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि जिस तरह यीशु हमारे चर्च के लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले प्रार्थना करने के लिए गेथसेमनी के बाग में गए थे और उन्होंने गहरा दुख और पीड़ा महसूस की थी, उसी तरह एपफ्रदितुस भी फिलिप्पी के चर्च से वैसा ही त्यागमय प्रेम करते थे और उनसे मिलने के लिए उत्सुक थे। रेवरेंड पार्क युन-सन ने इसे इस तरह कहा: "एपफ्रदितुस उनके लिए परेशान थे, उन्हें डर था कि उनकी अपनी हालत की वजह से उनके साथी विश्वासी चिंता न करने लगें। वे अपने साथी विश्वासियों की बहुत परवाह करते थे और उनमें ऐसी त्यागमय भावना थी।"

यही वह सिद्धांत है जो फिलिप्पियों 2:3-4 में बताया गया है। और एपफ्रदितुस पहले से ही इस बाइबिल के सिद्धांत के अनुसार जी रहे थे: "स्वार्थ या घमंड में आकर कुछ न करो। बल्कि, नम्रता से दूसरों को खुद से बेहतर समझो, सिर्फ़ अपने फ़ायदे के बारे में न सोचो बल्कि हर कोई दूसरों के फ़ायदे के बारे में भी सोचे... तब मेरी खुशी पूरी होगी।" एपफ्रदितुस ने अपनी ज़रूरतों से ज़्यादा फिलिप्पी चर्च परिवार की ज़रूरतों की परवाह की। उन्हें इस बात की गहरी चिंता थी—अपनी जानलेवा बीमारी से भी ज़्यादा—कि फिलिप्पी चर्च के सदस्य उनके बारे में चिंता और परेशानी महसूस करेंगे। क्या यह त्यागमय प्रेम नहीं है? एपफ्रदितुस उनके बारे में उनसे कहीं ज़्यादा गहराई से सोचते थे और उनसे मिलने के लिए उत्सुक थे, जितना वे उनके बारे में सोचते थे या उनसे मिलने के लिए उत्सुक थे। ज़रा सोचिए एक ऐसे पिता के बारे में जो बहुत बीमार है और मरने की हालत में है, और अपने बच्चों से दूर है; उसने अपनी हालत को छिपाकर रखा था ताकि उन्हें सच जानकर सदमा और दुख न पहुँचे। आपको क्या लगता है कि उसे कैसा महसूस होगा अगर उसे पता चले कि उसके बच्चों को यह खबर मिल गई है? क्या वह भी एपफ्रदितुस की तरह बहुत परेशान और चिंतित नहीं होगा? इसी हालत में—मरने जैसी बीमारी की हालत में—एपफ्रदितुस अपने चर्च के सदस्यों के लिए बहुत तड़प रहे थे।

हम सच में किसे याद करते हैं? क्या हम सच में अपने प्यारे चर्च परिवार के उन सदस्यों को याद करते हैं जो हमसे दूर हैं? मुझे वह बात आज भी अच्छी तरह याद है। 2002 में स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च छोड़कर कोरिया के सियोह्युन चर्च में सेवा करने जाने के बाद, मैं 'एसोसिएशन ऑफ़ पास्टर्स फ़ॉर चर्च रिन्यूअल' के एक रिट्रीट में शामिल हुआ। मैथ्यू 16:18 में दिए गए वादे को सुनते हुए और भजन 208, "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है" गाते हुए, मुझे स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की बहुत याद आई और मैं फूट-फूटकर रो पड़ा। "मुझे उस चर्च से प्रेम है जिसे उसने अपने लहू से खरीदा है" (पद 1) और "इस चर्च के लिए, मैं अपनी ज़िंदगी के आखिर तक आँसुओं और प्रार्थनाओं के साथ सेवा करूँगा" (पद 3) जैसी पंक्तियाँ गाते हुए, कोरिया में रहते हुए भी मुझे लॉस एंजिल्स में अपने चर्च की बहुत याद आई; वह पल आज भी मेरी यादों में ताज़ा है। दोस्तों, मैं इस कहावत से सहमत नहीं हूँ कि "जो आँखों से दूर, वह मन से भी दूर।" भले ही यह इंसानों की एक स्वाभाविक आदत हो, लेकिन प्रभु में जुड़े हम ईसाइयों के लिए, हमारे दिल अपने प्यारे चर्च परिवार के और करीब आ जाते हैं, भले ही हम उन्हें देख न पाएँ। खासकर, अगर हम—प्रेरित पौलुस की तरह—यीशु मसीह के दिल से दूर रहने वाले चर्च के सदस्यों के

लिए तड़पें (फिलिप्पियों 1:8) और उनके लिए प्रार्थना करें, तो हम अपनी परवाह करने से भी ज़्यादा उनकी परवाह करेंगे (फिलिप्पियों 2:26)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब एपफ्रदितुस जैसे बनें—ऐसे लोग जो खुद से ज़्यादा अपने पड़ोसियों की परवाह करते हैं और एक-दूसरे को दिल से याद करते हैं।

तीसरी बात, एपफ्रदितुस एक ऐसा व्यक्ति था जिसने मसीह के काम के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की, यहाँ तक कि मौत के खतरे की भी नहीं। आज के वचन, फिलिप्पियों 2:30 को देखिए: "उसने मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, ताकि वह मेरी उस सेवा को पूरा कर सके जो तुम नहीं कर पाए थे।" जब एपफ्रदितुस बीमार पड़ा और मौत के करीब पहुँच गया, तो वह बहुत परेशान था; वह फिलिप्पी चर्च के संतों—अपने प्यारे चर्च परिवार—के बारे में सोच रहा था जिनसे मिलने के लिए वह तरस रहा था। उस पल, एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने बीमार और बहुत परेशान एपफ्रदितुस को देखकर "दुख पर दुख" महसूस किया: वह व्यक्ति पौलुस था। फिलिप्पियों 2:27 को देखिए: “वह बीमार था और लगभग मर ही गया था, लेकिन परमेश्वर ने उस पर दया की, और न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी, ताकि मुझे दुख पर दुख न सहना पड़े।” पौलुस को “दुख पर दुख” क्यों सहना पड़ा? उसका दुख क्यों बढ़ गया था? ऐसा इसलिए था क्योंकि पौलुस न केवल एपफ्रदीतुस—जो उसका भाई, साथी-कर्मी और साथी-सैनिक था और गंभीर रूप से बीमार था—के बारे में चिंतित था; बल्कि वह फिलिप्पी की कलीसिया के संतों के लिए भी बहुत चिंतित था—जिनसे वह यीशु मसीह के हृदय से प्रेम करता था और उनसे मिलने के लिए तरसता था—क्योंकि वह जानता था कि एपफ्रदीतुस की हालत के बारे में सुनकर उन्हें बहुत दुख होगा। ऐसी स्थिति में, पौलुस ने दुख पर दुख का अनुभव किया। उदाहरण के लिए, एक युवा जोड़े के बारे में सोचिए जिनका एक बच्चा है; जब वह बच्चा गंभीर रूप से बीमार हो जाता है, तो कल्पना कीजिए कि अपने प्यारे बच्चे को देखकर माता-पिता के दिल पर क्या बीतती होगी। वे गहरे दुख से भर जाते होंगे। फिर भी, बच्चे के दादा-दादी उस दुख को दोगुना महसूस करते होंगे। इसका कारण यह है कि वे दुख से भरे होते हैं—न केवल इसलिए कि उनका प्यारा पोता मरने की हालत में है, बल्कि इसलिए भी कि वे अपने बच्चे के दुख को देखते हैं, जो उस लड़के की हालत देखकर गहरे संकट में है। पौलुस के दिल की हालत भी ठीक ऐसी ही थी। फिर भी, परमेश्वर पौलुस, एपफ्रदीतुस और फिलिप्पी के विश्वासियों की चिंता को जानते थे; उन्होंने दया दिखाई और एपफ्रदीतुस की जान बचाई। इसीलिए पौलुस आयत

27 में कहते हैं कि परमेश्वर ने न केवल एपफ्रदीतुस पर बल्कि उन पर भी दया की, और उन्हें "दुख पर दुख" से बचाया। इसके अलावा, आयत 28 से पता चलता है कि पौलुस एपफ्रदीतुस को जल्दी ही फिलिप्पी की कलीसिया में वापस भेज रहे थे; इसका मतलब है कि एपफ्रदीतुस की सेहत इतनी ठीक हो गई थी कि वह वापस यात्रा कर सके। पौलुस उसे इतनी जल्दी वापस क्यों भेजना चाहते थे? फिलिप्पियों 2:28 को देखिए: "इसलिए मैंने उसे और भी उत्सुकता से भेजा, ताकि जब आप उसे फिर से देखें तो आनंदित हों, और मुझे कम दुख हो" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "इसलिए मैं उसे जल्दी वापस भेज रहा हूँ। जब आप उसे फिर से देखेंगे, तो आप आनंदित होंगे, और मेरी अपनी चिंता दूर हो जाएगी"]। पौलुस के एपफ्रदीतुस को जल्दी वापस भेजने का कारण यह था कि विश्वासी उसे फिर से देखकर आनंदित हो सकें और उनकी अपनी चिंता दूर हो सके। इसलिए, जब पौलुस ने एपफ्रदीतुस को फिलिप्पी की कलीसिया में वापस भेजा, तो उन्होंने अपने पत्र में वहाँ के पवित्र लोगों से आग्रह किया: "इसलिए प्रभु में उसका बहुत आनंद के साथ स्वागत करो, और ऐसे लोगों का आदर करो" (पद 29)। पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा कि वे प्रभु में एपफ्रदीतुस का पूरे आनंद के साथ स्वागत करें और ऐसे लोगों का बहुत सम्मान करें। इसका कारण क्या था? आज के वचन, फिलिप्पियों 2:30 को देखें: "उसने मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली; उसने अपनी सुरक्षा की परवाह नहीं की ताकि वह उस सेवा को पूरा कर सके जो तुम मेरे लिए नहीं कर पाए थे।" फिलिप्पी के विश्वासियों को एपफ्रदीतुस का आनंद के साथ स्वागत करने और ऐसे लोगों का सम्मान करने के लिए इसलिए कहा गया क्योंकि उसने मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली—यहाँ तक कि मौत के खतरे तक की परवाह नहीं की। यहाँ एक दिलचस्प बात यह है कि "अपनी सुरक्षा की परवाह न करने" के लिए इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द (*पैराबोलेउसामेनोस*) का मूल वही है जो *पैराबोलानी* शब्द का है। यह शब्द शुरुआती कलीसिया के एक ईसाई भाईचारे के सदस्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जो अपनी जान जाने के खतरे को अच्छी तरह जानते हुए भी, स्वेच्छा से बीमारों की देखभाल करते थे और मृतकों को दफनाते थे। इससे पता चलता है कि शुरुआती कलीसिया में एपफ्रदीतुस जैसे कई लोग थे, जो यह जानते हुए भी कि उनकी जान जा सकती है, खुशी-खुशी प्रभु के काम में लगे रहते थे—वे न केवल बीमारों की, बल्कि पौलुस जैसे प्रभु के सेवकों की भी सेवा करते थे। इसीलिए पौलुस ने विश्वासियों को ऐसे लोगों का "आदर" करने का निर्देश दिया (पद 29)। हमें भी एपफ्रदीतुस की तरह खुशी-खुशी प्रभु का काम करना चाहिए। इसके अलावा, एपफ्रदीतुस की तरह, हमें भी अपनी जान की परवाह

किए बिना—यहाँ तक कि मौत के खतरे तक—प्रभु का काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। एक तरह से, इसका मतलब है कि प्रभु की सेवा में हमें खुद को आगे बढ़ाने, जोखिम उठाने और खतरों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। संक्षेप में, जिस तरह परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को नहीं बचाया, बल्कि हमारे उद्धार (अनंत जीवन) के लिए उन्हें क्रूस पर दे दिया, उसी तरह हमें भी अपना जीवन प्रभु की सेवा में समर्पित कर देना चाहिए। प्रेरित पौलुस ने ठीक यही किया। उनके शब्द सुनें। आइए बाइबल के दो अंशों पर नज़र डालें: (प्रेरितों के काम 20:24) “लेकिन, मैं अपनी ज़िंदगी को अपने लिए कुछ भी नहीं समझता, बस मैं अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ और प्रभु यीशु से मिला काम पूरा कर सकूँ—जो काम परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने का है,” और (21:13) “... तुम क्यों रो रहे हो और मेरा दिल क्यों तोड़ रहे हो? मैं न सिर्फ़ बंधने के लिए, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार हूँ...।” हमें पौलुस और एपफ्रुदीतुस जैसे लोगों का सम्मान करना चाहिए (फिलिप्पियों 2:29)।

जब मैंने एपफ्रदितुस के व्यक्तित्व पर मनन किया, तो मेरे मन में दो मुख्य विचार आए:

(1) पहला, उसके नाम के अर्थ को ध्यान में रखते हुए, मैं आपके साथ प्रार्थना का एक विषय साझा करना चाहता हूँ।

"एपफ्रदितुस" नाम का अर्थ है "प्यारा" या "सुंदर"। आइए प्रार्थना करें: "हे प्रभु, कृपया विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—जो आपका शरीर है—में ऐसे लोगों को तैयार करें जो एपफ्रदितुस की तरह आपकी दृष्टि में प्यारे और सुंदर हों।" आइए प्रार्थना करें कि आप ऐसे लोगों को तैयार करें जो आपके सेवकों के साथ मिलकर सुसमाचार के लिए मेहनत करें और उनकी ज़रूरतों को पूरा करें। साथ ही, आइए प्रार्थना करें कि आप हम सभी को ऐसे लोगों के रूप में ढालें जो यीशु मसीह के हृदय से अपने चर्च परिवार से प्रेम करें और उनकी दिल से कद्र करें। आइए यह भी प्रार्थना करें कि आप हमारे बीच परमेश्वर के ऐसे स्त्री-पुरुषों को तैयार करें—जैसे एपफ्रदितुस थे—जो आपकी नज़रों में प्यारे और सुंदर हों, और जो अपनी जान जोखिम में डालकर भी आपके चर्च और आपके सेवकों की सेवा करें।

(2) दूसरा और अंतिम विचार इस बात से जुड़ा है कि, जहाँ परमेश्वर ने बीमार और मरने की कगार पर खड़े एपफ्रदितुस पर दया की और उसकी जान बचाई, वहीं उन्होंने अपने ही पुत्र, यीशु, को नहीं बचाया, बल्कि हमारी खातिर उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया।

रोमियों 8:32 को देखें: "जिसने अपने ही पुत्र को भी नहीं बचाया, वरन् हम सब के लिये उसे दे दिया, वह उसके साथ हमें सब कुछ क्यों न देगा?" परमेश्वर ही वह है जिसने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु, को भी नहीं बचाया, बल्कि उन्हें क्रूस पर सौंप दिया। पिता परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए, यीशु ने अपने प्राणों की परवाह नहीं की और आपको और मुझे बचाने के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए। तो फिर, हमें—जिन्हें यह महान प्रेम और उद्धार का अनुग्रह मिला है—कैसा प्रतिसाद देना चाहिए? मैं प्रार्थना करता हूँ कि भजन संख्या 213, "मैं अपना जीवन तुझे देता हूँ" (I Give My Life to Thee), हमारे समर्पण की प्रार्थना और हमारी स्तुति का गीत बन जाए:

1. मैं अपना जीवन तुझे देता हूँ; हे प्रभु, इसे स्वीकार कर, और इस संसार में रहते हुए मुझे तेरी स्तुति करने दे।
2. मैं अपने हाथ और पैर तुझे देता हूँ; हे प्रभु, इन्हें स्वीकार कर, और मुझे तेरा काम करने के लिए तत्पर बना।
3. मैं अपनी आवाज़ तुझे देता हूँ; हे प्रभु, इसे स्वीकार कर, और मुझे केवल तेरे सत्य के वचनों की घोषणा करने दे।
4. मैं अपनी बहुमूल्य चीज़ें भेंट करता हूँ; हे प्रभु, इन्हें स्वीकार करें और अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्ग के राज्य के लिए इनका उपयोग करें।
5. मैं अपना समय भेंट करता हूँ; हे प्रभु, इसे स्वीकार करें और मुझे जीवन भर आपकी सेवा करने दें। आमीन।

सुरक्षा को प्राथमिकता देना

[फिलिप्पियों 3:1–3]

कोरियाई लोगों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता के स्तर को आप कैसे आंकेंगे? 20 अक्टूबर, 2014 को हुंडई रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा जारी "सुरक्षा जागरूकता और नीतिगत कार्यों की वर्तमान स्थिति" नामक रिपोर्ट के अनुसार, अगस्त की शुरुआत में 1,004 वयस्कों (20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के) के बीच किए गए टेलीफोन सर्वेक्षण से पता चला कि 95% लोगों का मानना था कि हमारे समाज में सुरक्षा जागरूकता की कमी है। विशेष रूप से, 50.9% लोगों ने इसे "बहुत ज़्यादा कमी" वाला बताया, जबकि 44.1% ने इसे "कुछ हद तक कमी" वाला बताया। जब "बहुत ज़्यादा कमी" को 0 और "कुछ हद तक कमी" को 0.3 का स्कोर दिया गया, तो कुल सुरक्षा जागरूकता स्कोर 100 में से केवल 17 निकला। यह एक फेल होने वाला ग्रेड है। विशिष्ट व्यवहारों के संदर्भ में, 67.5% लोगों ने स्वीकार किया कि कार की पिछली सीट पर बैठते समय वे सीटबेल्ट नहीं पहनते हैं। इसके अलावा, 81.9% लोगों ने कहा कि वे कराओके रूम का इस्तेमाल तब भी करेंगे, भले ही उसमें आपातकालीन निकास (इमरजेंसी एग्जिट) न हो या वह असुरक्षित दिखे। सर्वेक्षण में "सुरक्षित देश" बनाने में नागरिक मानसिकता को सबसे बड़ी बाधा के रूप में पहचाना गया, जिसमें 32.0% लोगों ने "अपरिपक्व सुरक्षा जागरूकता और संस्कृति" को मुख्य बाधा बताया। हुंडई नीति अनुसंधान विभाग के प्रमुख किम डोंग-र्योल ने टिप्पणी की, "जनता की सुरक्षा जागरूकता के संबंध में अभी भी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं," और कहा, "उन समूहों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जो सुरक्षा जागरूकता, शिक्षा और प्रशिक्षण के दायरे से बाहर रह जाते हैं—जैसे कि बीस-तीस साल की उम्र के लोग, छात्र और पूर्णकालिक गृहिणियां" (स्रोत: इंटरनेट)। कुछ समय पहले, मैंने रेडियो पर इंचियोन स्टील मिल में 40 के दशक के एक कर्मचारी के बारे में एक समाचार रिपोर्ट सुनी, जो ब्लास्ट फर्नेस में गिर गया और उसकी मौत हो गई। बताया जाता है कि वह पिघला हुआ लोहा—जिसे 1,500 से 2,000 डिग्री सेल्सियस के बीच गर्म किया गया था—

एक वितरण इकाई में डाल रहा था, तभी वह लगभग 2 से 2.5 मीटर नीचे भट्टी में गिर गया; कहा जाता है कि उसका शरीर ठीक से बरामद भी नहीं किया जा सका। मुझे वह न्यूज़ रिपोर्ट याद है जिसमें काम की जगहों पर सुरक्षा के इंतज़ामों की कमी और सुरक्षा के बारे में आम जागरूकता की कमी की बात की गई थी। इससे मुझे एहसास हुआ कि कोरियाई लोगों में सुरक्षा को लेकर कितनी कम जागरूकता है, और इसी वजह से सुरक्षा के इंतज़ाम भी अपर्याप्त हैं।

यहाँ कैलिफ़ोर्निया में, जहाँ हम अभी रहते हैं, भविष्य में आने वाले ज़बरदस्त भूकंप की तैयारी भी चल रही है। U.S. जियोलॉजिकल सर्वे (USGS) के अनुसार, 7.8 या उससे ज़्यादा तीव्रता वाला भूकंप 1994 के नॉर्थरिज भूकंप से 50 गुना ज़्यादा शक्तिशाली होगा; अनुमान है कि ऐसी घटना में 2,000 से ज़्यादा लोगों की मौत होगी, हज़ारों लोग घायल होंगे और 200 बिलियन डॉलर (लगभग 212.4 ट्रिलियन वॉन) की संपत्ति का नुकसान होगा। इसलिए, पिछले साल 16 अक्टूबर को कैलिफ़ोर्निया में ऐसे विनाशकारी भूकंप की तैयारी के लिए बड़े पैमाने पर एक ड्रिल की गई थी। राज्य भर के सरकारी दफ़्तरों, स्कूलों और अस्पतालों से लगभग 10.3 मिलियन लोगों ने इस ड्रिल में हिस्सा लिया; खास तौर पर, लॉस एंजिल्स काउंटी—जहाँ भूकंप का खतरा ज़्यादा है—से 3.3 मिलियन और ऑरेंज काउंटी से लगभग 983,000 लोग शामिल हुए। इस अभ्यास में असली भूकंप जैसी स्थिति बनाई गई और लोगों को "ड्रॉप, कवर, और होल्ड ऑन" (नीचे झुकें, आड़ लें, और पकड़े रहें) का तरीका अपनाने के लिए कहा गया—यानी ज़मीन पर झुकना, आड़ लेना और 60 सेकंड तक पकड़े रहना। कैलिफ़ोर्निया राज्य निवासियों को सलाह देता है कि भूकंप आने पर वे ज़मीन पर झुकें, सिर बचाने के लिए डेस्क या टेबल के नीचे आड़ लें, और झटके रुकने तक किसी मज़बूत सहारे—जैसे खंभे—को पकड़े रहें। इसके अलावा, राज्य इस बात पर ज़ोर देता है कि परिवारों को भूकंप या बड़ी आपदाओं के समय तीन दिनों तक खुद पर निर्भर रहने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसमें आपातकालीन दवाएँ, खाना और इतना पानी जमा करना शामिल है जिससे हर व्यक्ति को रोज़ाना एक गैलन (3.78 लीटर) पानी मिल सके।

तो, आपको क्या लगता है कि हम ईसाइयों में आध्यात्मिक सुरक्षा के बारे में कितनी जागरूकता है? हम सच में आध्यात्मिक सुरक्षा के प्रति कितने जागरूक हैं? बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि "शैतान दहाड़ते हुए शेर की तरह घूमता रहता है और किसी को निगलने की ताक में रहता है" (1 पतरस 5:8); फिर भी, हम इस

वचन के अनुसार सच में कितने संयमित और सतर्क रहते हैं? मेरी नज़र में, ऐसा लगता है कि हम ईसाई संयम और आत्म-नियंत्रण बनाए रखने में लगातार नाकाम हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि हम खुद पर काबू रखने की अपनी क्षमता खोते जा रहे हैं। ठीक वैसे ही जैसे मिस्र से निकलने के दौरान इस्राएलियों ने अपना आत्म-नियंत्रण खो दिया था—उन्होंने बेपरवाही से काम किया और सोने के बछड़े की पूजा की, जिससे वे दुश्मनों के बीच मज़ाक का पात्र बन गए (निर्गमन 32:25)—आज हम ईसाई भी अपना आत्म-नियंत्रण खोते हुए और अपने दिलों में तरह-तरह की मूर्तियों को बसाकर उनकी पूजा करते हुए दिख रहे हैं। प्रेरित पौलुस ने इसी बात की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने कहा था कि "अंतिम दिनों" में, जो बहुत मुश्किलों का समय होगा, लोग "आत्म-नियंत्रण से रहित" होंगे (2 तीमुथियुस 3:3)। उस भविष्यवाणी के सच साबित होने के नाते, इन अंतिम दिनों में हम ईसाई भी अपना आत्म-नियंत्रण खो रहे हैं; हम ऐसे विचार मन में लाते हैं और ऐसे काम करते हैं जो उचित सीमाओं से बाहर होते हैं, और इस तरह इस दुनिया में परमेश्वर के महिमामय नाम का अनादर करते हैं। इसके अलावा, हम ईसाई आध्यात्मिक रूप से सतर्क रहने में भी नाकाम हो रहे हैं। हमें जागते रहना चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए; फिर भी, हालाँकि आत्मा तैयार है, शरीर कमज़ोर है, और इसलिए हम अक्सर ऊँघने लगते हैं (मत्ती 26:41)। 1 कुरिन्थियों 7:5 में, पौलुस ने लिखा: "एक-दूसरे को खुद से दूर न रखें, सिवाय आपसी सहमति से और कुछ समय के लिए, ताकि आप खुद को प्रार्थना में लगा सकें। फिर दोबारा साथ आ जाएँ ताकि शैतान आत्म-नियंत्रण की कमी के कारण आपको प्रलोभन में न डाल सके।" चूँकि हम जागते रहने और परमेश्वर से प्रार्थना करने में नाकाम रहते हैं, इसलिए हम अपना आत्म-नियंत्रण खो देते हैं, शैतान के प्रलोभनों में फँस जाते हैं और बार-बार पाप कर बैठते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए?

आज के अंश, फिलिप्पियों 3:1 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को लिखते हैं: "आखिर में, मेरे भाइयों, प्रभु में आनंदित हो! तुम्हें वही बातें दोबारा लिखना मेरे लिए कोई परेशानी की बात नहीं है, और यह तुम्हारे लिए एक सुरक्षा है।" यहाँ, पौलुस उन दो बातों को फिर से दोहराते हैं जिनका ज़िक्र उन्होंने पहले अध्याय 1 में किया था। वे दो बातें क्या हैं?

(1) पहली बात आनंद के बारे में है।

पौलुस ने फिलिप्पियों के अध्याय 1 में पहले ही "आनंद" के बारे में बात की थी। उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 1:4 में, वे बताते हैं कि जब भी वे फिलिप्पी के विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो वे "आनंद के साथ" ऐसा करते हैं। इसके अलावा, फिलिप्पियों 1:18 में उन्होंने कहा, "इसी कारण मैं आनन्द करता हूँ, हाँ, और आनन्द करता रहूँगा," क्योंकि यीशु मसीह का प्रचार हो रहा था। ये शब्द बताते हैं कि भले ही प्रेरित पौलुस जेल में थे, फिर भी प्रभु में उनके आनन्दित होने—और आनन्दित बने रहने—के दो कारण थे: फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी सुसमाचार के काम में हिस्सा ले रहे थे (पद 5), और उनकी अपनी कैद ने असल में सुसमाचार के प्रचार को आगे बढ़ाने में मदद की थी (पद 12)। संक्षेप में, पौलुस प्रभु में इसलिए आनन्दित थे क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार हो रहा था।

(2) दूसरी बात उन लोगों के बारे में थी जो मसीह के सुसमाचार का विरोध करते थे।

आज के भाग, फिलिप्पियों 3:2 में, पौलुस उन लोगों की बात करते हैं जो मसीह के सुसमाचार का विरोध करते हैं—एक ऐसा समूह जिसका ज़िक्र उन्होंने पहले फिलिप्पियों 1:28 में किया था। वह पहले का ज़िक्र फिलिप्पी विश्वासियों को दी गई उस शिक्षा का हिस्सा था कि वे "मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन बिताएँ" (1:27), और खास तौर पर उनसे कहा गया था कि वे "विरोध करने वालों से किसी भी बात में न डरें" (1:28)। इसके अलावा, पद 29 में, पौलुस ने कहा कि मसीह के लिए दुख उठाना परमेश्वर की कृपा का वरदान है। इससे हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी उन लोगों के हाथों दुख उठा रहे थे जो सुसमाचार का विरोध करते थे। ऐसी स्थिति में विश्वासियों को संबोधित करते हुए, पौलुस अपना पत्र आगे बढ़ाते हैं; आज के भाग (3:1) में, वह एक बार फिर फिलिप्पी के भाइयों से "प्रभु में आनन्दित होने" का आग्रह करते हैं, और समझाते हैं कि वह उन्हें "वही बातें" उनकी अपनी सुरक्षा के लिए लिख रहे हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह था कि ऐसा करना असल में फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों की सुरक्षा के लिए था (पद 1 का बाद का हिस्सा)। यहाँ "सुरक्षा" (safeguard) शब्द का मूल ग्रीक भाषा में अर्थ है "(गंभीर) खतरे से सुरक्षित या महफूज़ रहना" (ग्रीक शब्दकोशों के अनुसार)। फिलिप्पी विश्वासी किस गंभीर खतरे का सामना कर रहे थे जिसके कारण प्रेरित पौलुस को उन्हें ये ही शब्द लिखने पड़े? वह खतरा क्या था? आज के वचन, फिलिप्पियों 3:2 को देखिए: "कुत्तों से सावधान रहो, बुरे काम करने वालों से सावधान रहो, खतना करने वालों के उस दल से सावधान रहो जो गलत शिक्षा देते हैं" (NASB)। यहाँ, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को

तीन बार "सावधान रहने"—यानी सतर्क रहने—की चेतावनी देता है, क्योंकि इसमें खतरा है। आखिर पौलुस उन्हें किससे या किस चीज़ से सावधान रहने के लिए कह रहा है? मैं इस बात पर तीन बिंदुओं के ज़रिए विचार करना चाहूँगा।

सबसे पहले, पौलुस ने उन्हें "कुत्तों" से सावधान रहने के लिए कहा।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:2 के पहले हिस्से को देखिए: "कुत्तों से सावधान रहो।" आपको शायद कुत्तों के काटने की खबरें याद होंगी। क्या आप जानते हैं कि अमेरिका में हर साल कितने लोग कुत्तों के जानलेवा हमलों का शिकार होते हैं? कुत्तों के काटने के मामलों के जानकार वकील केनेथ फिलिप्स के अनुसार, अकेले 2010 में अमेरिका में कुत्तों के 34 जानलेवा हमले हुए थे, और हर साल 3,50,000 लोग कुत्तों के काटने की वजह से अस्पताल के इमरजेंसी रूम में जाते हैं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? यह हैरानी की बात है कि हर साल 3,50,000 लोग कुत्तों के काटने की वजह से इमरजेंसी मेडिकल मदद लेते हैं। इससे पता चलता है कि कितने सारे लोगों को कुत्ते काटते हैं। इससे मुझे पार्किंग लॉट की तार वाली बाड़ पर लगे "कुत्तों से सावधान" (Beware of Dog) वाले साइन याद आ जाते हैं।

फिलिप्पियों 3:2 के पहले हिस्से में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को "कुत्तों" से सावधान रहने—यानी उनसे होशियार रहने—की चेतावनी देते हैं। पौलुस यहाँ किन "कुत्तों" की बात कर रहे हैं? उस ज़माने में (पहली सदी ईस्वी में), कुत्ते बहुत खूंखार माने जाते थे और सड़कों पर बेरोकटोक घूमते थे, खाने की तलाश में कूड़े के ढेरों में मुँह मारते थे। इसलिए, उस समय के लोग कुत्तों को गंदे जानवर मानते थे। इसी वजह से, उस ज़माने के यहूदी गैर-यहूदियों (जेंटाइल्स) को कुत्ते समझते थे; दूसरे शब्दों में, वे गैर-यहूदियों को अशुद्ध जानवर मानते थे जिनसे कोई लेना-देना नहीं रखना चाहिए। इसीलिए, यूहन्ना अध्याय 4 में कुएँ पर मिली सामरी औरत के किस्से में, प्रेरित यूहन्ना ने यह लिखा है: "सामरी औरत ने उससे कहा, 'तुम एक यहूदी होकर मुझसे, एक सामरी औरत से, पानी क्यों माँग रहे हो?' (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ कोई मेल-जोल नहीं रखते थे)" (यूहन्ना 4:9)। पहली सदी ईस्वी में, यहूदी खुद को परमेश्वर के चुने हुए लोग मानकर श्रेष्ठ समझते थे; वे गैर-यहूदियों के साथ इंसानों जैसा बर्ताव करने से इनकार करते थे और उन्हें कुत्ते समझते थे। इस सोच को समझने के लिए, तालमुद में बताया गया है कि यहूदी पुरुष हर सुबह जागने पर जो तीन धन्यवाद की

प्रार्थनाएँ करते थे, उनमें सबसे पहली यह थी: "हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं एक यहूदी पैदा हुआ, न कि गैर-यहूदी।" क्या यह आपको लूका 18:11 में लिखी फरीसी की प्रार्थना की याद नहीं दिलाता? "फरीसी खड़ा हुआ और मन ही मन इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं अन्य लोगों—जैसे कि जबरन वसूली करने वालों, अन्यायियों, व्यभिचारियों या यहाँ तक कि इस कर वसूलने वाले—के समान नहीं हूँ।'" हालाँकि, जब पौलुस ने लोगों को "कुत्तों से सावधान" रहने की चेतावनी दी, तो वह उन गैर-यहूदियों (जेंटाइल्स) का ज़िक्र नहीं कर रहा था जिनसे यहूदी नफ़रत करते थे। जब उसने फिलिप्पी के विश्वासियों से "कुत्तों से सावधान" रहने को कहा (फिलिप्पियों 3:2), तो उसके मन में यहूदी—खासकर यहूदी-परंपरावादी (जुडाइज़र्स)—थे। तो फिर, ये जुडाइज़र्स कौन थे? वे उन समूहों में से एक थे जिन्होंने शुरुआती दिनों में सुसमाचार का ज़ोरदार विरोध किया था। उनका ज़ोर इस बात पर था कि गैर-यहूदियों को धर्मी ठहराए जाने के लिए पुराने नियम (ओल्ड टेस्टामेंट) के कुछ रीति-रिवाजों, खासकर खतना का पालन करना ज़रूरी था। पौलुस ने इन जुडाइज़र्स और उनके झूठे सुसमाचार की निंदा करते हुए इसे धर्म-विरुद्ध शिक्षा (हेरेसी) बताया और यहाँ तक कि उन पर श्राप भी घोषित किया (जैसा कि गलातियों को लिखी पत्री में देखा जा सकता है)। हालाँकि, समस्या यह थी कि चर्च के ज़्यादातर लोग जुडाइज़र्स को सच्चे विश्वासी मानते थे—जैसा कि उदाहरण के लिए, गलातिया के चर्चों में हुआ था (गलातियों 2:12)। फिर भी, असल में, उन्होंने सुसमाचार की स्पष्टता को कमज़ोर किया, उसे बुरी तरह बिगाड़ दिया और गैर-यहूदी विश्वासियों को उलझन में डाल दिया। इस उलझन की वजह को संक्षेप में कहें तो: पौलुस का तर्क यह था कि कोई व्यक्ति (1) पहले मसीह पर विश्वास करता है, (2) फिर परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया जाता है, और (3) उसके बाद परमेश्वर के नियम का पालन करने की तैयारी करता है; जबकि जुडाइज़र्स का तर्क था कि कोई व्यक्ति (1) मसीह पर विश्वास करता है, (2) नियम का पालन करने की पूरी कोशिश करता है, और (3) तब धर्मी ठहराया जाता है (जे. ग्रेशम मैचेन)। क्या आप इस फ़र्क को समझ पा रहे हैं? यह भले ही मामूली फ़र्क लगे, लेकिन असल में यह बहुत गहरा फ़र्क है। फ़र्क इस बात में है कि पौलुस ने सिखाया कि उद्धार केवल यीशु मसीह में विश्वास और परमेश्वर की कृपा से मिलता है, जबकि जुडाइज़र्स का दावा था कि उद्धार नियम का पालन करने की इंसानी कोशिशों से मिलता है। पौलुस द्वारा प्रचारित सच्चा सुसमाचार उस काम पर केंद्रित है जो यीशु मसीह ने क्रूस पर पूरा किया (कृपा), जबकि जुडाइज़र्स द्वारा प्रचारित झूठा सुसमाचार पापी इंसानों के कामों (कर्म/योग्यता) पर केंद्रित है। संक्षेप में, पौलुस ने परमेश्वर की कृपा से उद्धार की शिक्षा

दी, जबकि यहूदी-वादी (Judaizers) इंसानी कामों से उद्धार की शिक्षा देते थे। पौलुस ने इन यहूदी-वादियों को—जो गलत शिक्षा देते थे कि उद्धार इंसानी कामों से मिलता है—"कुत्ते" कहा, क्योंकि वे शिक्षक होने का दिखावा करते हुए लालच में सांसारिक लाभ चाहते थे (3:19)। इसलिए, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को इन यहूदी-वादियों—यानी झूठे शिक्षकों, जो यह गलत सुसमाचार फैलाते थे—से सावधान रहने की चेतावनी दी, क्योंकि वे खतरा पैदा करते थे।

फिलिप्पियों 3:3 के पहले भाग में, जो आज का मुख्य अंश है, पौलुस ने फिलिप्पी विश्वासियों को "परमेश्वर की आत्मा में आराधना करने" का निर्देश दिया। इसका क्या अर्थ है? यहाँ "सेवा करने" के रूप में अनुवादित मूल ग्रीक शब्द का अर्थ असल में "आराधना करना" है। दूसरे शब्दों में, "परमेश्वर की आत्मा द्वारा सेवा करने" के आदेश का अर्थ है "परमेश्वर की आत्मा द्वारा आराधना करना।" पौलुस ने फिलिप्पियों को यहूदियों—खासकर यहूदी-वादियों—से सावधान रहने की चेतावनी देते हुए, उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के लिए क्यों प्रेरित किया? इसका कारण यह है कि परमेश्वर की आराधना करना उन लोगों के लिए सही प्रतिक्रिया है जिन्होंने परमेश्वर की कृपा से यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार पाया है। ठीक इसी उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया; परमेश्वर के उद्धार का अंतिम लक्ष्य आराधना है। हम इस सच्चाई को निर्गमन 3:12 में देख सकते हैं, जहाँ परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और कहा: "परमेश्वर ने कहा, 'मैं निश्चित रूप से तुम्हारे साथ रहूँगा। और तुम्हारे लिए यह निशानी होगी कि मैंने तुम्हें भेजा है: जब तुम लोगों को मिस्र से बाहर ले आओगे, तो तुम इस पहाड़ पर परमेश्वर की आराधना करोगे।'" इस अंश के अलावा, निर्गमन की पुस्तक में कई ऐसी घटनाएँ दर्ज हैं जहाँ परमेश्वर ने मूसा को मिस्र के राजा फिरौन के पास जाकर एक खास संदेश देने का आदेश दिया—एक ऐसा आदेश जिसका मूसा ने पालन किया: "मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी आराधना कर सकें" (4:23, 7:16, 8:1, 9:1, 10:7)। नतीजतन, टिड्डियों और अंधेरे की विपत्तियों के बाद, फिरौन ने मूसा और हारून से कहा: "जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना करो। लेकिन असल में कौन-कौन जा रहा है?" (10:8); "नहीं! तुममें से सिर्फ़ पुरुष ही जाकर प्रभु की आराधना कर सकते हैं—आखिरकार, शुरू से तुमने यही तो माँगा था" (वचन 11); और "जाओ, प्रभु की आराधना करो। लेकिन अपने झुंड और मवेशी यहीं छोड़ जाओ; तुम्हें सिर्फ़ अपने बच्चों को साथ ले जाना होगा" (वचन 24)। आखिरकार, दसवीं और आखिरी विपत्ति के बाद, फ़िरौन ने मूसा और

हारून से कहा: "उठो और मेरे लोगों को लेकर तुरंत चले जाओ—तुम और इस्राएली। जाओ और प्रभु की आराधना करो, जैसा तुमने माँगा था" (12:31)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के तीन मुख्य लक्ष्य हैं: (1) सच्चे आराधकों को तैयार करना, (2) वफ़ादार चेलों को तैयार करना, और (3) ऐसे प्रचारकों को तैयार करना जो लोगों की आत्माओं से प्यार करते हों और विनम्र सेवक हों। इन तीन लक्ष्यों के आधार पर, हमारे चर्च ने तीन मिशन स्टेटमेंट बनाए हैं। इनमें से पहला स्टेटमेंट है: "एक ऐसा चर्च जो प्रभु का सम्मान करता है: आराधना और गवाही।" इस पहले उद्देश्य-स्टेटमेंट का आधार 1 कुरिन्थियों 14:25 में मिलता है: "उसके दिल के राज़ खुल जाएँगे। इसलिए वह घुटने टेककर परमेश्वर की आराधना करेगा और कहेगा, 'सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच है!'" मैं प्रोफेसर जॉन फ्रेम की किताब *Worship in Spirit and Truth* से प्रेरित हुआ—जिनके अधीन मैंने वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढ़ाई की थी—और यह समझा कि हमारा विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च सबसे ज़्यादा आराधना चाहता है, और यह आराधना गवाही या सुसमाचार प्रचार के मिशन को पूरा करने वाली होनी चाहिए। परमेश्वर ने हमें उद्धार का अनुग्रह दिया और यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया, ताकि हम उनकी आराधना कर सकें। यूहन्ना 4:23 में, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर हमसे कहते हैं: "एक समय आ रहा है और अब आ चुका है जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही आराधकों की तलाश में रहता है।" चूँकि परमेश्वर "उनकी तलाश में है जो उसकी आराधना करते हैं," इसलिए हमारा चर्च आराधना को प्राथमिकता देता है और उन्हें सच्ची आराधना—आत्मा और सच्चाई से आराधना—अर्पित करने में अपना तन-मन लगा देता है। हमारी दिली प्रार्थना है कि हमारी आराधना के ज़रिए, हमारे बीच के वे लोग भी जो अभी यीशु पर विश्वास नहीं करते, घुटने टेकें, परमेश्वर की आराधना करें और कहें, "सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच है!"

दूसरी बात, पॉल ने हमें "बुरे काम करने वालों" से सावधान रहने की चेतावनी दी।

आपको क्या ज़्यादा डरावना लगता है: कुत्ता या इंसान? और साफ़ तौर पर कहें तो, क्या आपको लगता है कि आपको एक खतरनाक कुत्ते से ज़्यादा सावधान रहना चाहिए, या बुरे इरादे वाले किसी खतरनाक इंसान

से? मेरी राय में, खतरनाक कुत्ते की तुलना में बुरे इरादे वाले खतरनाक इंसान से ज़्यादा सावधान रहना चाहिए। कारण यह है कि बुरा इंसान जानवर से भी बदतर होता है। उदाहरण के लिए, कुत्ता चाहे कितना भी खूंखार या आक्रामक क्यों न हो, वह शायद ही कभी अपने मालिक को काटता है; इसके विपरीत, बुरा इंसान उस व्यक्ति पर भी हमला कर सकता है और उसे नुकसान पहुँचा सकता है जो उससे प्यार करता है, उसे खाना खिलाता है और उसकी रक्षा करता है। कुछ समय पहले, अमेरिका में थॉमस गिल्बर्ट नाम के 70 वर्षीय हेज फंड मैनेजर से जुड़ी एक घटना की खबर आई थी, जिनके पास 220 बिलियन वॉन की संपत्ति थी। उन्हें उनके ही बेटे—जो प्रिंसटन से इकोनॉमिक्स में ग्रेजुएट था—ने गोली मारकर मार डाला। हत्या के पीछे बेटे का गुस्सा बताया जाता है: उसके पिता, जो अपने बेरोजगार बेटे को हर महीने किराए के लिए 2.6 मिलियन वॉन और अलाउंस के तौर पर 600,000 वॉन देते थे, उन्होंने किराया देना बंद करने और अलाउंस घटाकर 300,000 वॉन करने की योजना की घोषणा की। इससे नाराज़ होकर बेटे ने ट्रिगर दबाया और अपने पिता की हत्या कर दी। क्या कोरियाई भाषा में ऐसे बच्चे को *पेरयुना* (अनैतिक या बिगड़ा हुआ व्यक्ति) नहीं कहा जाता? नेवर डिक्शनरी के अनुसार, *पेरयुना* की परिभाषा है "ऐसा व्यक्ति जो इंसान से अपेक्षित नैतिक कर्तव्यों और नैतिक मानकों के खिलाफ काम करता है।" हालाँकि, आम जनता में "माता-पिता के प्रति बुरा व्यवहार करने वाला" (*पेरयुना*) शब्द की तुलना में "बदमाश" (*हुरेजासिक*) शब्द ज़्यादा प्रचलित है; *हुरेजासिक* एक अपमानजनक शब्द है जिसका अर्थ है "ऐसा व्यक्ति जिसमें शिष्टाचार या तहज़ीब की कमी हो, जो बिना सही परवरिश के जंगली और अनुशासनहीन तरीके से बड़ा हुआ हो" (नेवर डिक्शनरी)। क्या ऐसा "बदमाश" (या माता-पिता के प्रति बुरा व्यवहार करने वाला व्यक्ति) "स्टिकलबैक" मछली से भी बदतर नहीं है? कहा जाता है कि स्टिकलबैक ही एकमात्र ऐसी मछली है जो घोंसला बनाती है। "नर स्टिकलबैक मछली घोंसला बनाने के लिए नदी की तलहटी से अपने मुँह से रेत हटाती है। वह रेत के इस ढाँचे को जलीय पौधों से ढँक देती है, जिससे अंडे देने के लिए एक सुरक्षित जगह बन जाती है। उस पल से, नर मछली अंडों की सुरक्षा में अपनी पूरी ताकत लगा देती है। वह बड़ी मछलियों से ज़बरदस्त लड़ाई करने से भी पीछे नहीं हटती। वह अंडों को लगातार अंदर-बाहर करती रहती है ताकि उन्हें ऑक्सीजन मिलती रहे। आम तौर पर, नर मछली बिना कुछ खाए-पिए पंद्रह दिनों तक अंडों की रखवाली करती है। फिर, जैसे ही अंडे फूटने वाले होते हैं, वह घोंसले के ठीक पास अपनी जान दे देती है। अंडों से निकले बच्चे, हालात से अनजान, बड़े होते हुए बेपरवाही से अपने पिता का मांस खाते हैं। स्टिकलबैक मछली अपनी संतान के लिए अपनी जान देती है और आखिर में अपना शरीर भी सौंप देती है। पिता के इस समर्पण की वजह से, स्टिकलबैक के अंडों के फूटने की दर 90% से ज़्यादा होती है" (इंटरनेट)।

आज के लेख में, खासकर फिलिप्पियों 3:2 के बीच वाले हिस्से में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के संतों को उनकी सुरक्षा के लिए "बुरे काम करने वालों" से सावधान रहने की चेतावनी देता है [(फिलिप्पियों 3:2b) "बुरे काम करने वालों से सावधान रहो"]। तो फिर, ये "बुरे काम करने वाले" कौन हैं जिनका ज़िक्र पौलुस करता है? अगर हम डिक्शनरी में "बुरे काम करने वालों" (या "बुराई करने वालों") के लिए इस्तेमाल हुए मूल ग्रीक शब्द का मतलब देखें, तो हमें इसके ये नैतिक अर्थ मिलते हैं: "दुष्ट, क्रूर, दिल, चाल-चलन और चरित्र से बुरा" (ज़ोधिआटेस)। यह ग्रीक शब्द नए नियम में आज के लेख के अलावा लगभग तीन और जगहों पर आता है। इनमें से दो उदाहरणों को देखने से हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि असल में वे "बुरे काम करने वाले" कौन थे—जिनके खिलाफ प्रेरित पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को चेतावनी देता है। पहला लेख मत्ती 21:41 है: "उन्होंने उससे कहा, 'वह उन दुष्टों का बुरा अंत करेगा और अंगूर के बाग को दूसरे किसानों को किराए पर देगा जो फसल के समय उसे उसकी उपज का हिस्सा देंगे।'" यह आयत यीशु के "किसानों के दृष्टांत" से ली गई है, और यहाँ जिन "दुष्टों" (या "बुरे लोगों") का ज़िक्र है, वे किराए पर खेती करने वाले किसान हैं। यीशु ने उन्हें "बुरे" (wicked) कहा क्योंकि जब अंगूर के बाग के मालिक (पद 33) ने अपनी उपज लेने के लिए अपने सेवकों को भेजा (पद 34), तो काश्तकारों ने सेवकों को पकड़ लिया—एक को पीटा, दूसरे को मार डाला और तीसरे पर पत्थर बरसाए (पद 35)। फिर मालिक ने सेवकों का एक बड़ा दल भेजा, लेकिन काश्तकारों ने उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया (पद 36)। आखिर में, मालिक ने अपने बेटे को भेजा, यह सोचकर कि काश्तकार उसका सम्मान करेंगे; इसके बजाय, उन्होंने बेटे को मारने और उसकी विरासत हड़पने की साजिश रची, और आखिरकार उसे बाग से बाहर खींचकर मार डाला (पद 37–39)। यीशु ने उन काश्तकारों को, जिन्होंने ऐसा व्यवहार किया था, "उन बुरे लोगों" (पद 41) के रूप में संबोधित किया। अंगूर के बाग की इस कहानी में "उन बुरे लोगों" (काश्तकारों) से यीशु का क्या मतलब था? वे वही यहूदी थे जिन्होंने यीशु—परमेश्वर के पुत्र—को क्रूस पर चढ़ाने की मांग की थी (लूका 23:21)। उन यहूदियों में, यीशु खास तौर पर फरीसियों और शास्त्रियों का ज़िक्र कर रहे थे जो कहानी सुन रहे थे (मत्ती 21:15) जब उन्होंने "बुरे लोगों" (पद 41) के बारे में बात की। दूसरा बाइबिल का अंश मत्ती 24:48–49 है: "लेकिन अगर वह बुरा सेवक अपने मन में कहे, 'मेरा मालिक आने में देर कर रहा है,' और अपने साथी सेवकों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाने-पीने लगे..." यीशु ने ये शब्द चेलों के उस सवाल का जवाब देते हुए कहे—जो उन्होंने जैतून के पहाड़ पर बैठने के बाद पूछा था (पद 3)—कि "ये बातें" (मंदिर की इमारतों का विनाश, एक पत्थर

पर दूसरा पत्थर न रहना) कब होंगी और उनके आने और युग के अंत के क्या संकेत होंगे (पद 3)। यीशु ने उनसे मनुष्य के पुत्र (प्रभु) के आने की तैयारी करने (पद 44) और "वफादार और बुद्धिमान सेवक" बनने (पद 45) के लिए कहा। फिर उन्होंने "उस बुरे सेवक" के बारे में बात करना शुरू किया, और इस विषय की शुरुआत "अगर" शब्द से की। यहाँ, यीशु ने "बुरे सेवक" की कई विशेषताओं पर प्रकाश डाला: (1) बुरा सेवक गलत सोच रखता है। मत्ती 24:48 देखिए: "लेकिन अगर वह बुरा नौकर अपने मन में कहे, 'मेरा मालिक आने में देर कर रहा है'..." (2) बुरा नौकर गलत काम करता है। आयत 49 देखिए: "...और अपने साथी नौकरों को पीटने लगता है, और शराबियों के साथ खाता-पीता है।" (3) बुरा नौकर एक "ढोंगी" है। आयत 51 देखिए: "...और उसे दो टुकड़ों में काट देगा और ढोंगियों के साथ उसका हिस्सा तय करेगा। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।" जब यीशु ने "ढोंगियों" की बात की, तो वे मुख्य रूप से किन लोगों का ज़िक्र कर रहे थे? वे फरीसी और कानून के शिक्षक थे (मत्ती 7:5, 15:7, 22:18, वगैरह)।

इन आयतों के आधार पर, जिन "बुरे लोगों" या "बुरे नौकर" के बारे में यीशु ने बात की थी, वे फरीसी और कानून के शिक्षक ही थे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, जब प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को—आज के पाठ, फिलिप्पियों 3:2 में—"बुरे काम करने वालों" से सावधान रहने की चेतावनी दी, तो उनके मन में फरीसी और कानून के शिक्षक ही थे।

फरीसी और कानून के शिक्षक कौन थे? बाइबल के जानकार आर्थर पिंक ने यह कहा है: (1) "लिपिक (scribes) सरकारी लिपिक या चर्च के लिपिक हो सकते थे; यहाँ, यह शब्द चर्च के लिपिकों के लिए इस्तेमाल हुआ है—वे जो धर्मग्रंथों की व्याख्या करने में लगे थे—जिन्हें कानून के विद्वान कहा जा सकता है। (2) फरीसी एक खास पंथ का प्रतिनिधित्व करते थे; उन्होंने बुजुर्गों की परंपराओं के आधार पर नैतिक और धार्मिक रीति-रिवाजों वाले नियम बनाए—ऐसे नियम जो खुद मूसा के कानून (Mosaic Law) से भी ज़्यादा सख्त थे। नतीजतन, यहूदी लोगों के बीच फरीसियों का बहुत सम्मान था। (3) हालाँकि, उनकी कमी यह थी कि कानून का पालन करना उनके लिए सिर्फ़ दिखावा और बाहरी बात थी; उन्हें बुरे विचारों, लालच, नफ़रत या ईश्वर के प्रति उदासीन दिल को लेकर ज़रा भी पछतावा नहीं होता था। इसके अलावा, उन्होंने कानून की नैतिक माँगों के बजाय धार्मिक रीति-रिवाजों पर ज़्यादा ज़ोर दिया, और उनके काम ईश्वर की महिमा के बजाय अपने स्वार्थ से प्रेरित थे। लिपिक और फरीसी अपनी आत्मा की पवित्रता की परवाह नहीं करते थे। उनका मानना

था कि बाहरी कामों पर आधारित विश्वास ही उस धन्य, अनंत लोक में जगह पाने के लिए काफ़ी है" (पिंक)। यह कितनी खतरनाक सोच है! क्या आपको फरीसियों और लिपिकों की सोच खतरनाक नहीं लगती? बाहरी कामों पर आधारित विश्वास भला उस धन्य, अनंत लोक को पाने के लिए कैसे काफ़ी हो सकता है? दूसरे शब्दों में, फरीसियों और लिपिकों का मानना था कि अगर वे—सिर्फ़ इंसानी कोशिशों से—कानून और बुजुर्गों की परंपराओं से निकले नैतिक और धार्मिक नियमों का पूरी तरह पालन करें, तो वे पूरी तरह से मुक्ति (अनंत जीवन) पा सकते हैं और स्वर्ग के अनंत राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। यह सोच खतरनाक क्यों है? मैंने कुछ बातों पर विचार किया है:

(1) कारण यह है कि विश्वास (या धर्म?) का जीवन जीते हुए ऐसी सोच रखने से इंसान "ढोंगी" बन जाता है—जैसा कि यीशु ने बताया था—जिससे यह सोच बहुत खतरनाक हो जाती है।

कोई व्यक्ति आस्था के बाहरी कामों पर जितना ज़्यादा ध्यान देता है, उतना ही यह तय हो जाता है कि उसका आस्था वाला जीवन बस दिखावटी और सतही बनकर रह जाएगा। मैं ऐसी जीवनशैली को आस्था का सच्चा जीवन नहीं, बल्कि "धार्मिक गतिविधि" कहूँगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह जीवन यीशु मसीह में सच्ची आस्था से जीने के बजाय बाहरी रस्मों-रिवाजों से तय होता है। ऐसे कामों के बारे में, परमेश्वर यशायाह 1 (कंटेम्परेरी इंग्लिश वर्शन) में इस तरह कहते हैं: "मेरे लिए तुम्हारी बहुत सारी बलियों का क्या फ़ायदा? तुम जो मेढ़ों की बलि और जानवरों की चर्बी लाते हो, उससे मैं थक गया हूँ... मुझे उनमें कोई खुशी नहीं मिलती। तुमसे ऐसी चीज़ें लाने के लिए किसने कहा? तुम बस मेरे आँगन को रौंदते हो। बेकार की बलियाँ मत लाओ... मुझे उनसे नफ़रत है। धार्मिक सभाएँ करते हुए तुम्हें बुराई करते देखना मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता... मुझे उनसे नफ़रत है; वे मेरे लिए बोझ बन गए हैं, और मैं उन्हें ढोते-ढोते थक गया हूँ" (पद 11–14)।

(2) यह सोच बहुत खतरनाक है क्योंकि जब कोई व्यक्ति आस्था (या धर्म?) के जीवन को ऐसे नज़रिए से देखता है, तो उसमें खुद की अच्छाई का घमंड पैदा हो जाता है; फरीसियों और शास्त्रियों की तरह, वह परमेश्वर की महिमा करने के बजाय खुद को ऊँचा दिखाने की कोशिश करता है।

इंसान का मुख्य मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना है (वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म के सवाल 1 का जवाब)। हालाँकि, अगर हम अपने धार्मिक जीवन में फरीसियों और शास्त्रियों जैसी सोच अपनाते हैं, तो हम अनुग्रह को भूल जाते हैं और खुद की अच्छाई के घमंड से भर जाते हैं, और अनजाने में ही परमेश्वर की महिमा करने के बजाय इंसानी महिमा पाने की कोशिश करने लगते हैं।

इसीलिए प्रेरित पौलुस ने आज के वचन (फिलिप्पियों 3:3) में फिलिप्पी के विश्वासियों को सलाह दी कि वे "मसीह यीशु पर घमंड करें।" हमारे पास अपने बारे में घमंड करने के लिए क्या है? बाइबल के नज़रिए से पूछें तो, "शरीर के अनुसार" (2 कुरिन्थियों 11:18) हमारे पास घमंड करने के लिए क्या है? यहूदियों के पास—जिनमें यहूदी-धर्म के समर्थक, फरीसी और शास्त्री शामिल थे—शरीर के अनुसार घमंड करने के लिए चीज़ें थीं। वे क्या थीं? तीन चीज़ें: परमेश्वर के चुने हुए लोग होना, व्यवस्था, और खतना। उनके गर्व का कारण—जिस बात पर वे डींगें मारते थे—यह था कि परमेश्वर ने केवल उन्हें ही चुना था, और उन्हें परमेश्वर से व्यवस्था और खतना मिला था। इन चीज़ों ने उन्हें अहंकारी बना दिया और उनमें आध्यात्मिक श्रेष्ठता की भावना भर दी, जिससे वे खुद को गैर-यहूदियों से अलग समझने लगे। खासकर, यहूदी इस बात पर बहुत गर्व करते थे कि उन्हें मूसा के ज़रिए व्यवस्था मिली थी, और इसी गर्व के कारण वे व्यवस्था पर भरोसा करते थे और उस पर डींगें मारते थे (रोमियों 2:17)। लेकिन समस्या यह थी कि ऐसा करते हुए, वे खुद ही व्यवस्था को तोड़ रहे थे और पाप कर रहे थे (2:12 और आगे)। यह मानते हुए कि वे परमेश्वर की इच्छा जानते हैं (2:18) और अपने अहंकार में खुद को "मूर्खों को सिखाने वाला" और "बच्चों को सिखाने वाला" (वचन 20) समझते हुए, उन्हें व्यवस्था सिखाना तो पसंद था, लेकिन जो वे सिखाते थे, उस पर वे खुद अमल नहीं करते थे (वचन 21)। वे व्यवस्था पर डींगें मारते थे, फिर भी उसे तोड़कर परमेश्वर का अनादर करते थे (वचन 23)। उनकी वजह से, गैर-यहूदियों के बीच परमेश्वर के नाम की निंदा होती थी (वचन 24)। शरीर के आधार पर ऐसी डींगें मारने के बारे में बाइबल क्या कहती है? 1 कुरिन्थियों 3:21 कहता है, "कोई भी मनुष्यों पर घमंड न करे।" इसके अलावा, बाइबल में याकूब 4:16 कहता है, "इसके बजाय, तुम अपने अहंकार में डींगें मारते हो, और ऐसी सारी डींगें बुरी हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। जब यहूदी—खासकर यहूदी-वादी, फरीसी और शास्त्री—परमेश्वर के चुने हुए लोग होने और व्यवस्था व खतना पाने पर डींगें मारते थे, तो असल में वे शरीर के आधार पर डींगें मार रहे थे; परमेश्वर की नज़र में, यह "अहंकार में डींगें मारना" (व्यर्थ का घमंड) था, और

ऐसी सारी डींगें बुरी थीं (वचन 16)। खासकर, उनका विश्वास और आचरण—यह सोचना कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों के तौर पर व्यवस्था का पालन करके उद्धार पा सकते हैं—परमेश्वर के खिलाफ डींगें मारने जैसा था (न्यायियों 7:2)। ऐसी डींगें मारना ऐसा ही है जैसे कहना, "मेरे अपने हाथ ने मुझे बचाया है" (वचन 2)—यह डींग मारना कि "मैंने खुद को अपनी ताकत, अपनी कोशिश और व्यवस्था के कड़े पालन से बचाया"; परमेश्वर की नज़र में, यह व्यर्थ का घमंड है और परमेश्वर का विरोध करते हुए की गई डींग है। फिर भी, बाइबल हमें क्या बताती है? इफिसियों 2:8–9 को देखिए: "क्योंकि अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और वह विश्वास के द्वारा हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है—और न कर्मों के कारण, ताकि कोई घमंड न करे।" 1 कुरिन्थियों 1:29 को देखिए: "ऐसा इसलिए है ताकि कोई भी परमेश्वर के सामने घमंड न करे" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि "उद्धार" कभी भी "हमारे अच्छे कामों" से नहीं मिलता, इसलिए कोई घमंड नहीं कर सकता (इफिसियों 2:8–9)। कारण यह है कि हमें उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से मसीह पर विश्वास करने के द्वारा मिला है, न कि हमारे अपने अच्छे कामों से। कारण यह है कि उद्धार हमारी अपनी ताकत से नहीं होता, बल्कि परमेश्वर का दिया हुआ एक उपहार है। ज़रा सोचिए। हम अयोग्य पापी हैं जिन्हें अनुग्रह से उद्धार का उपहार मिला है; तो हम खुद पर—यानी उपहार पाने वालों पर—कैसे घमंड कर सकते हैं, बजाय उस पर जिसने उपहार दिया? हम अपने कामों पर कैसे घमंड कर सकते हैं, बजाय उस काम के जो परमेश्वर ने हमें उद्धार का उपहार देने के लिए किया? हम निश्चित रूप से ऐसा नहीं कर सकते। हमारे पास घमंड करने के लिए अपना कुछ भी नहीं है। अगर कोई ऐसी चीज़ है जिस पर हम घमंड कर सकें, तो वह क्या होगी? 2 कुरिन्थियों 11:30 को देखिए: "अगर मुझे घमंड करना ही है, तो मैं उन बातों पर घमंड करूँगा जो मेरी कमज़ोरी दिखाती हैं" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इस प्रकार, 2 कुरिन्थियों 10:17 हमसे कहता है: "जो घमंड करे, वह प्रभु में घमंड करे" (देखिए 1 कुरिन्थियों 1:31)। यहाँ "प्रभु में घमंड करने" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर घमंड करना। गलातियों 6:14 का पहला भाग देखिए: "लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अलावा किसी भी चीज़ पर कभी घमंड नहीं करूँगा..." पौलुस के पास प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अलावा घमंड करने के लिए कुछ भी नहीं था। इसलिए, यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते समय भी—जिसे वह अपनी जान से भी ज़्यादा कीमती

मानता था और जिसके मिशन के लिए उसे बुलाया गया था—उसने कहा: "क्योंकि जब मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ, तो मैं घमंड नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे प्रचार करने के लिए मजबूर किया गया है। मुझ पर हाय, अगर मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ!" (1 कुरिन्थियों 9:16, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। हमें सिर्फ़ प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर ही गर्व करना चाहिए (गलातियों 6:14)। हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो सिर्फ़ मसीह यीशु पर गर्व करें (फिलिप्पियों 3:3)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे लोग बनें जो दिन भर प्रभु पर गर्व करें और हमेशा उनकी स्तुति और धन्यवाद करें (भजन संहिता 44:8, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। तीसरी बात, पौलुस ने "शरीर को काटने-छाँटने" (mutilating the flesh) के ख़िलाफ़ चेतावनी दी।

जैसा कि हमने पहले ही विचार किया है, यहूदी—खासकर यहूदी धर्म-नियमों पर ज़ोर देने वाले (Judaizers), फरीसी और शास्त्री—शरीर से जुड़ी तीन चीज़ों पर गर्व करते थे: परमेश्वर के चुने हुए लोगों के तौर पर अपना दर्जा, व्यवस्था (Law), और खतना। उनका गर्व—यानी वे चीज़ें जिन पर वे गर्व करते थे—इस बात में था कि परमेश्वर ने सिर्फ़ उन्हें ही चुना था, और साथ ही उस व्यवस्था और खतने में था जो उन्हें परमेश्वर से मिले थे।

खतना क्या है? अंग्रेज़ी शब्द "circumcision" (खतना) का शाब्दिक अर्थ है "चारों ओर से काटना"। हिब्रू में इसे *ब्रिट मिलाह* कहा जाता है; *ब्रिट* का अर्थ है "वाचा" (covenant) और *मिलाह* का अर्थ है "खतना"। इस तरह, इस शब्द का मूल अर्थ है "वाचा का खतना"। इस रस्म में पुरुष अंग के अगले हिस्से (glans) को ढंकने वाली चमड़ी (foreskin) को हटाना शामिल था। इसे जन्म के आठवें दिन करने का नियम था (उत्पत्ति 17:12, 24–25; लैव्यव्यवस्था 12:3)। हालाँकि, सबसे ज़रूरी बात खतने का प्रतीकात्मक अर्थ था। यह किस बात का प्रतीक था? यह उस वाचा का प्रतीक था जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी थी। उत्पत्ति 17:11 देखें: "तुममें से हर पुरुष का खतना किया जाएगा। यह मेरी वाचा है, जिसे तुम मानोगे—मेरे और तुम्हारे और तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों के बीच।" इस तरह, जब परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी, तो उन्होंने हुक्म दिया कि अब्राहम और उसके घर के सभी पुरुषों का—जिसमें उसके गुलाम भी शामिल थे—खतना किया जाए। इसका कारण क्या था? इसका कारण यह था कि खतना इस्राएलियों के शरीर पर एक निशान के तौर पर काम करता था, जो उस वाचा को दर्शाता था कि वे परमेश्वर के लोग बन गए थे। इस तरह, उस समय खतना एक निशानी, एक प्रतीक और एक चिह्न था जो यह घोषित करता था: "मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा,

और तुम मेरे लोग होगे।" दूसरे शब्दों में, पुराने नियम के समय में खतना परमेश्वर के लोगों के तौर पर पहचान का एक सबूत था। यह एक ऐसी रस्म और गवाही थी जो "पुराने स्वभाव" के मरने और परमेश्वर के साथ किए गए करार (वादे) में शामिल लोगों का हिस्सा बनने की प्रक्रिया को दिखाती थी—यह इस बात का पक्का सबूत था कि वे परमेश्वर के हैं। इसलिए, अब्राहम के समय से ही, इस करार वाली रस्म के ज़रिए इस्राएली पुरुषों के शरीर पर यह खास निशान होता था। यह एक बाहरी रस्म थी जिसे मानना बहुत ज़रूरी था (उत्पत्ति 17:12; निर्गमन 4:24; यहोशू 5:2)।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:2 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को अपनी सुरक्षा के लिए तीन चीज़ों से सावधान रहने की चेतावनी देते हैं; तीसरी और आखिरी चेतावनी "शरीर को क्षत-विक्षत करने" (mutilation of the body) से सावधान रहने की है। इस वाक्यांश का क्या अर्थ है? संशोधित कोरियाई संस्करण इसका अनुवाद "क्षत-विक्षत करने वाले समूह" (या "वे जो शरीर को क्षत-विक्षत करते हैं") के रूप में करता है। "क्षत-विक्षत करने" (या "क्षत-विक्षत करने वाले") शब्द का अर्थ उस समूह से है जो खतना पर गर्व करता है—खासकर, शरीर (अग्रचर्म) को क्षत-विक्षत करने पर (पार्क युन-सन)। आज के वचन (फिलिप्पियों 3:2) में पौलुस ने "क्षत-विक्षत करने" (या "शरीर को क्षत-विक्षत करने") के लिए जो यूनानी शब्द इस्तेमाल किया है, वह *पेरिटोमे* (peritome) शब्द से अलग है; *पेरिटोमे* का अर्थ पुराने नियम में बताए गए "खतना" से है, जिस पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं। अब्राहम के साथ अपना वाचा (covenant) स्थापित करते समय परमेश्वर ने सभी पुरुषों के लिए जिस "खतना" का आदेश दिया था, वह *पेरिटोमे* है, जिसका अर्थ है "चारों ओर से काटना"। हालाँकि, फिलिप्पियों 3:2 में पौलुस ने "क्षत-विक्षत करने" के लिए जो यूनानी शब्द इस्तेमाल किया है, उसका अर्थ है "नीचे तक काटना" या "काटकर अलग करना" (मांस को अलग करना)। पादरी जॉन मैकआर्थर के अनुसार, "क्षत-विक्षत करने" (मांस को काटकर अलग करने) का यह काम बाल (Baal) के उन नबियों के कामों जैसा है जिन्होंने माउंट कार्मेल पर एलिय्याह का सामना किया था (1 राजा 18:28); सुबह से दोपहर तक, वे अपने देवता, बाल (पद 26) का नाम पुकारते रहे, और—अपनी रस्मों के अनुसार—तलवारों और भालों से अपने शरीर को तब तक क्षत-विक्षत करते रहे जब तक कि खून बहने न लगा। पुराने नियम में ऐसी रस्मों की मनाही थी। पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को "क्षत-विक्षत करने वाले" समूह से सावधान रहने की चेतावनी दे रहे थे—ऐसे लोग जो परमेश्वर में विश्वास करने का दावा तो करते

थे, लेकिन परमेश्वर द्वारा निर्धारित सच्चे खतना का पालन करने के बजाय, पुराने नियम में मना किए गए तरीके से खुद को क्षत-विक्षत करते थे (फिलिप्पियों 3:2)। इससे यह सवाल उठता है: इस "क्षत-विक्षत करने वाले" समूह—या "शरीर को क्षत-विक्षत करने"—के बारे में, पौलुस के मन में कौन था जब उन्होंने "क्षत-विक्षत करने" वालों के खिलाफ चेतावनी दी? वे यहूदीकरण करने वालों (Judaizers) का ज़िक्र कर रहे थे। हालांकि वे दावा करते थे कि वे अपने शरीर को नुकसान पहुँचाकर भी परमेश्वर की सेवा करते हैं, लेकिन वे जो खतना करते थे—जिससे केवल शरीर का मांस ही बिगड़ता था—उसका कोई आध्यात्मिक महत्व नहीं था (पार्क युन-सन)। यहूदी-करण (Judaizers) को बढ़ावा देने वाले लोग ऐसा खतना क्यों करते थे, जिससे शरीर को नुकसान तो पहुँचता था लेकिन उसका कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं था? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे हृदय का खतना करवाने में असफल रहे थे (यिर्मयाह 9:26)। नतीजतन, वे हठी बने रहे (व्यवस्थाविवरण 10:16) और लगातार पवित्र आत्मा का विरोध या उसके खिलाफ विद्रोह करते रहे (प्रेरितों के काम 7:51)। वे अक्सर परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करते थे। फिर भी, क्योंकि वे केवल दिखावे और पाखंड के साथ व्यवस्था और अपने पूर्वजों की परंपराओं का सख्ती से पालन करते थे, इसलिए आखिरकार वे वही पाखंडी बन गए जिनका वर्णन यीशु ने किया था। इस प्रकार, रोम की कलीसिया को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने विश्वासियों—खासकर यहूदी ईसाइयों को ध्यान में रखते हुए—इस प्रकार आग्रह किया: "नहीं, सच्चा यहूदी वह है जो भीतर से यहूदी है; और खतना हृदय का खतना है, जो आत्मा द्वारा होता है, न कि लिखित नियम द्वारा। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा दूसरे लोगों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से होती है" (रोमियों 2:29)।

पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से—जिनके लिए वह यीशु मसीह के हृदय से तड़पता है (फिलिप्पियों 1:8) और जिन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा हृदय का खतना (सच्चा खतना) प्राप्त कर लिया है—आग्रह करता है कि वे शरीर को विकृत करने की प्रथा से सावधान रहें और साथ ही, "शरीर पर कोई भरोसा न रखें" (फिलिप्पियों 2:2–3)। वह इसकी तुलना उन लोगों से करता है जिनके पास हृदय का सच्चा खतना नहीं था और जो मूसा की व्यवस्था के बाहरी रीति-रिवाजों और दायित्वों के अनुसार केवल शारीरिक खतना करते थे... पौलुस फिलिप्पी विश्वासियों को उन यहूदियों (साथ ही यहूदी-करण को बढ़ावा देने वालों, फरीसियों और शास्त्रियों) के खिलाफ चेतावनी देता है—जो शरीर पर भरोसा रखते थे और अपने शारीरिक खतना पर गर्व करते थे—और उनसे आग्रह करता है: "तुमने परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह का सुसमाचार सुना है, उस

पर विश्वास किया है, और पवित्र आत्मा द्वारा हृदय का सच्चा खतना प्राप्त किया है; उन यहूदियों की तरह शरीर पर अपना भरोसा न रखो।" पॉल क्यों चाहते थे कि फिलिप्पी के विश्वासी शरीर या शारीरिक खतना के बजाय पवित्र आत्मा द्वारा किए जाने वाले 'हृदय के खतने' पर भरोसा करें? ऐसा इसलिए है क्योंकि शरीर पर भरोसा करने से—जैसा कि यहूदी करते थे—अपने अच्छे कामों का घमंड, अहंकार, आध्यात्मिक श्रेष्ठता की भावना और व्यर्थ की महिमा पाने की इच्छा पैदा हो सकती है। इसके अलावा, अगर वे यहूदियों की तरह शरीर पर भरोसा करते, तो दिखावे और बाहरी रस्मों पर ध्यान देने के कारण उनके पाखंडी बनने का बड़ा खतरा होता।

ठीक इसी वजह से कभी-कभी ईसाइयों को पाखंडी कहा जाता है। हमें पाखंडी इसलिए कहा जाता है क्योंकि सच्चे खतने (या सच्चे बपतिस्मा) का अनुभव किए बिना, हम बस चर्च जाते हैं और रस्म के तौर पर बपतिस्मा ले लेते हैं, जबकि हम पूरे दिल और आत्मा से परमेश्वर से प्रेम नहीं करते (व्यवस्थाविवरण 30:6); इसके बजाय, हम ऐसी बातें करते हैं और ऐसे काम करते हैं मानो हम प्रभु से प्रेम करते हों, जबकि असल में हम केवल बाहरी धार्मिक रस्मों का सख्ती से पालन कर रहे होते हैं। खासकर, हमें पाखंडी इसलिए कहा जाता है क्योंकि हम प्रभु और उनके चर्च के लिए किए गए—और अभी भी किए जा रहे—कामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, अपने अच्छे कामों का घमंड पालते हैं और अपने लिए महिमा चाहते हैं। हमें ऐसे ईसाई नहीं बने रहना चाहिए जिन्हें पाखंडी कहा जाए; हमें सच्चे ईसाई बनना चाहिए। सच्चे ईसाई वे हैं जो यीशु द्वारा क्रूस पर उनके लिए किए गए कामों पर विश्वास करते हुए... उनकी ओर देखते हैं। इसके अलावा, हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि यीशु ने क्रूस पर क्या हासिल किया और परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हुए जीते हैं—उनकी कृपा को याद रखते हुए—और इस तरह परमेश्वर की महिमा करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम ऐसे ही लोग बनें।

हमें शरीर पर भरोसा नहीं करना चाहिए

[फिलिप्पियों 3:4–6]

अपने विश्वास के अनुसार जीते समय हमारी सोच बहुत महत्वपूर्ण होती है। यहाँ मैं जिन सोच या नज़रिए की बात कर रहा हूँ—खासकर हम ईसाइयों के लिए—वे हैं "अनुग्रह की सोच" और "योग्यता या कर्मों की सोच।" सबसे पहले, हमें अनुग्रह की सोच से भरा होना चाहिए। प्रभु ने हमारे लिए जो किया है, उसे हमें अपने दिलों में गहराई से बसाना होगा। प्रेरित पौलुस की तरह, जिन्होंने कहा था, "परमेश्वर के अनुग्रह से ही मैं वह हूँ जो हूँ" (1 कुरिन्थियों 15:10), हमें उस अनुग्रह की शक्ति से और भी अधिक मेहनत करनी चाहिए। इसके साथ ही, हमें योग्यता या कर्मों की सोच से बचना चाहिए। प्रभु, कलीसिया या अपने पड़ोसियों के लिए किए गए अच्छे कामों का हिसाब-किताब रखने से हमें सावधान रहना चाहिए। योग्यता की इस सोच के अलावा, एक और सोच है जिससे हमें बचना चाहिए: "हक जताने की भावना" (sense of entitlement)। सैमुएलसन के अनुसार, हम "हक जताने के युग" में जी रहे हैं। इसका मतलब है कि पहले की तुलना में, लोग ज़्यादा से ज़्यादा यह मानने लगे हैं कि उन्हें ठीक वही मिलना चाहिए जो वे चाहते हैं—और वह भी तुरंत। कभी-कभी, यह समाज, संगठनों या दूसरे लोगों से बहुत ज़्यादा उम्मीद करने के रूप में सामने आता है—यह सोच कि कोई व्यक्ति खास व्यवहार का हकदार है, सिर्फ़ इसलिए कि वह खुद को विशेषाधिकार प्राप्त समझता है, बिना दूसरों की भलाई या कल्याण की परवाह किए। कभी-कभी हम खुद को यह कहते हुए पा सकते हैं—चाहे ज़ोर से या अपने मन में—"क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?" हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि हमारे अंदर हक जताने की भावना होती है। वे न केवल खुद को दूसरों से अलग और खास समझते हैं, बल्कि अक्सर उस हक जताने की भावना पर गर्व भी करते हैं और अपने ओहदे या रुतबे का दिखावा करते हैं। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा था, उन्होंने उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फिलिप्पियों 3:1–3 में तीन बार "सावधान रहो" (या "इनसे बचकर रहो") वाक्यांश का इस्तेमाल किया। वे असल में किन लोगों से सावधान रहने के लिए कह रहे थे? वे यहूदीवादी

(Judaizers) थे—जिन्हें उन्होंने "कुत्ते," "बुरे काम करने वाले" और "शरीर को काटने-छाँटने वाले" कहा था। पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को इन यहूदीवादियों से सावधान रहने की चेतावनी तीन बार क्यों दी? इसका कारण यह था कि उनका मानना और सिखाना था कि उद्धार यीशु मसीह में विश्वास के बजाय इंसानी कोशिशों—खासकर अच्छे कामों—से मिल सकता है। वे जिस इंसानी कोशिश पर ज़ोर देते थे, वह थी व्यवस्था (Law) का पालन करना; उनका मानना था कि व्यवस्था का पालन करके वे अनंत जीवन पा सकते हैं। व्यवस्था की जिन खास ज़रूरतों का वे सख्ती से पालन करते थे, उनमें से एक थी खतना (circumcision)। इसलिए, वे खुद को "असली खतना वाले" (या "खतना-समर्थक दल") मानते थे। हालाँकि, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा कि यहूदी-मत के समर्थक (Judaizers) असली खतना वाले नहीं थे; बल्कि, वह और उसका पत्र पाने वाले विश्वासी ही असली खतना वाले थे। आयत 3 देखिए: "क्योंकि असली खतना वाले हम ही हैं, जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा उसकी सेवा करते हैं, जो मसीह यीशु पर गर्व करते हैं, और जो शरीर पर भरोसा नहीं रखते" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "हम जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आराधना करते हैं, मसीह यीशु पर गर्व करते हैं, और शरीर पर निर्भर नहीं रहते, वही हैं जिन्होंने असली खतना पाया है"]। "हम ही खतना वाले हैं" यह कहते हुए, पौलुस ने असली खतना वालों की विशेषताओं को तीन तरह से बताया: (1) वे जो आत्मा के द्वारा परमेश्वर की आराधना करते हैं, (2) वे जो मसीह यीशु पर गर्व करते हैं, और (3) वे जो शरीर पर भरोसा नहीं रखते। ...जिन्हें खतना-समर्थक दल कहा जाता था। यहाँ, "शरीर" (या शारीरिक) शब्द का अर्थ है "इंसानी विशेषाधिकार या सम्मान" (पार्क युन-सन)। जब पौलुस ने कहा कि जो लोग शरीर पर भरोसा नहीं रखते, वे ही असली खतना-समर्थक दल हैं, तो निस्संदेह उनके मन में वे यहूदी, यहूदी-मत के समर्थक, फरीसी और शास्त्री थे जो शरीर पर ही भरोसा रखते थे। इसके अलावा, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से कहा कि ये लोग असली खतना-समर्थक दल नहीं थे, खासकर उन तीन चीज़ों को ध्यान में रखते हुए जिन पर वे शरीर के आधार पर गर्व करते थे: परमेश्वर के चुने हुए लोग होना, व्यवस्था, और खतना। खास तौर पर, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को यहूदी-मत के समर्थकों से सावधान किया—जो दिल के खतने के बिना केवल ऊपरी या शारीरिक खतना करते थे—और उनसे आग्रह किया कि वे शरीर पर भरोसा न करें, जैसा कि वे यहूदी करते थे जो ऐसे बाहरी रीति-रिवाजों पर गर्व और घमंड करते थे। फिर, आज के हिस्से (फिलिप्पियों 3:4) में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से कहते हैं कि अगर किसी और के पास शरीर पर भरोसा करने का कारण है, तो उनके पास ऐसा करने का और भी बड़ा कारण है। वे छह कारण बताते हैं कि क्यों उनके पास यहूदी बनाने

वालों (जुडाइज़र्स) की तुलना में शरीर पर भरोसा करने का ज़्यादा आधार है। मैंने इन छह बिंदुओं को दो मुख्य समूहों में बांटा है। यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि पहले समूह की पहली तीन बातें—खतना होना, इस्राएल के लोगों और बिन्यामीन के गोत्र का होना, और इब्रानियों में इब्रानी होना—ऐसी विशेषाधिकार वाली बातें हैं जो पौलुस को अपनी कोशिश से नहीं मिलीं; बल्कि, वे उन्हें दी गई थीं। इसके विपरीत, दूसरे समूह की तीन बातें—व्यवस्था के मामले में फरीसी होना, जोश में आकर कलीसिया पर ज़ुल्म करना, और व्यवस्था की धार्मिकता के मामले में निर्दोष होना—... ये ऐसी चीज़ें हैं जो उन्होंने कोशिश करके हासिल कीं, न कि उन्हें बस ऐसे ही मिल गईं।

पहले समूह में ये दावे शामिल हैं: "आठवें दिन खतना हुआ, इस्राएल के लोगों में से, बिन्यामीन के गोत्र का, इब्रानियों में इब्रानी" (पद 5)।

यहाँ, पौलुस तीन कारण बताते हैं कि क्यों उनके पास यहूदी बनाने वालों की तुलना में शरीर पर भरोसा करने का और भी बड़ा आधार था:

(1) पौलुस (शाऊल) एक इस्राएली थे जिनका आठवें दिन खतना हुआ था।

यहूदी बनाने वालों की तरह, शाऊल (पौलुस) का भी आठवें दिन खतना हुआ था। जैसा कि हमने पहले देखा है, खतना यहूदियों को मिला एक विशेषाधिकार था; उन्हें इस पर बहुत गर्व था और वे इसकी डींगें मारते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि खतना उस वाचा की निशानी थी जो उन्हें परमेश्वर के लोगों के तौर पर पहचान देती थी—दूसरे शब्दों में, यह परमेश्वर के लोगों के तौर पर उनकी स्थिति साबित करने वाले प्रमाण-पत्र जैसा था। हालाँकि, खतने के बारे में एक ज़रूरी बात है जिस पर हमें यहाँ ध्यान देना चाहिए: असल में खतने के तीन अलग-अलग प्रकार थे। वे थे: (1) वयस्क होने पर गैर-यहूदी धर्म-परिवर्तन करने वालों का खतना; (2) तेरह साल की उम्र में इश्माएल के वंशजों का खतना; और (3) जन्म के "आठवें दिन" अब्राहम की वैध वंशावली वालों का खतना (पार्क युन-सन)। चूंकि बाइबिल का एक हिस्सा (फिलिप्पियों 3:5) शाऊल (पौलुस) को एक ऐसे इस्राएली के तौर पर बताता है जिसका आठवें दिन खतना हुआ था, इसलिए अब्राहम के असली वंश का सदस्य होने के नाते मिले

विशेषाधिकार और सम्मान पर भरोसा करने का उसके पास पक्का कारण था। असल में, पौलुस ने रोमियों 11:1 के दूसरे हिस्से में कहा था: "..." "मैं खुद एक इस्राएली हूँ, अब्राहम का वंशज, बिन्यामीन के कबीले से।" पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया के पवित्र लोगों से कहा कि उसके पास भी शरीर के आधार पर घमंड करने की वजह थी (2 कुरिन्थियों 11:18), और उसने खुद को इब्रानी, इस्राएली और अब्राहम का वंशज बताया (आयत 22)। कुछ यहूदी धर्म मानने वालों के उलट, पौलुस के माता-पिता दोनों ही यहूदी थे। उसके परिवार के वंश का पता लगाने पर वह अब्राहम का सच्चा वंशज साबित होता है; वह हर तरह से परमेश्वर के साथ वाचा (करार) से बंधे लोगों में से एक था (वाल्वोर्ड)। वह इस्राएल राष्ट्र में शामिल नहीं हुआ था; बल्कि, वह जन्म से ही इस्राएली था। नतीजतन, उसके पास परमेश्वर के चुने हुए लोगों वाले सभी अधिकार और विशेषाधिकार थे (मार्टिन)।

(2) पौलुस बिन्यामीन गोत्र का सदस्य था।

जैसा कि हम जानते हैं, बिन्यामीन याकूब और उसकी पत्नी राहेल का दूसरा बेटा था (उत्पत्ति 35:18)। बिन्यामीन गोत्र को इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक खास गोत्र माना जाता था; यहूदा गोत्र के साथ-साथ, यह दाऊद के राज्य के प्रति वफादार रहा और दक्षिणी यहूदा राज्य का हिस्सा बन गया (1 राजा 12:21) (मैकआर्थर)। इसके अलावा, बिन्यामीन गोत्र का नेतृत्व कुलीन वर्ग के हाथों में माना जाता था (न्यायियों 5:14), और इसी गोत्र से इस्राएल का पहला राजा, शाऊल आया था (मैकडोनाल्ड)। खास बात यह है कि व्यवस्थाविवरण 33:12 में बिन्यामीन गोत्र को "प्रभु का प्रिय" कहा गया है (या, जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* में कहा गया है, "हे प्रभु, वे ही हैं जिन्हें तेरा प्रेम मिलता है")।

(3) पौलुस ने खुद को "इब्रानियों में इब्रानी" बताया।

जब पौलुस ने खुद को "इब्रानियों में इब्रानी" कहा, तो उसका मतलब था कि उसके पूर्वजों में कोई भी गैर-यहूदी (अन्यजाति का) नहीं था; वे सभी शुद्ध इब्रानी थे (पार्क युन-सन)। इब्रानी माता-पिता के घर जन्मे पौलुस ने इब्रानी परंपराओं और इब्रानी भाषा को बनाए रखा। गैर-यहूदी शहरों में रहने के बावजूद, उसने इन इब्रानी रीति-रिवाजों और अपनी मातृभाषा को संजोकर रखा (देखिए प्रेरितों के काम 21:40; 26:4–5) (मैकआर्थर)।

विवरणों का दूसरा समूह इस प्रकार है: "व्यवस्था के मामले में, एक फरीसी; जोश के मामले में, कलीसिया का सताने वाला; व्यवस्था के अनुसार धार्मिकता के मामले में, निर्दोष" (फिलिप्पियों 3:5b–6)।

यहाँ भी, पौलुस तीन कारण बताता है कि क्यों उसके पास यहूदी-वादी (Judaizers) लोगों की तुलना में शरीर पर भरोसा करने का कहीं अधिक आधार था। प्रेरित पौलुस ने ग्रीक शब्द *kata* (जिसका अर्थ है "के अनुसार" या "के मामले में") का उपयोग करके इन तीन पहलुओं को अलग-अलग बताया है:

(1) "व्यवस्था के मामले में, एक फरीसी" (*kata nomon*) (फिलिप्पियों 3:5b)।

पौलुस का जन्म सिलिसिया के तारसुस में एक यहूदी के रूप में हुआ था और वह यरूशलेम में पला-बढ़ा था (प्रेरितों के काम 22:3)। एक फरीसी के बेटे (प्रेरितों के काम 23:6) के तौर पर, उन्होंने गमालियेल के अधीन अपने पूर्वजों के कानून की सख्त शिक्षाओं को सीखा—गमालियेल एक फरीसी और कानून के शिक्षक थे जिनका सभी लोग सम्मान करते थे (प्रेरितों के काम 5:34; 22:3)। वे एक ऐसे फरीसी थे जो मूसा के कानून का सख्ती से पालन करते थे (पार्क युन-सन)। इसलिए, पौलुस ने प्रेरितों के काम 26:5 में कहा: "वे मुझे लंबे समय से जानते हैं और गवाही दे सकते हैं, अगर वे चाहें, कि मैं एक फरीसी के तौर पर रहा हूँ, और हमारे धर्म के सबसे सख्त पंथ का पालन किया है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "चूंकि वे मुझे शुरू से जानते हैं, वे आसानी से गवाही दे सकते हैं कि मैं हमारे धर्म के सबसे सख्त पंथ—फरीसियों—के भीतर रहा हूँ"]। इसके अलावा, प्रेरितों के काम 23:6 में, पौलुस ने सभा में इकट्ठे हुए सदूकियों और फरीसियों के सामने घोषणा की: "भाइयों, मैं एक फरीसी हूँ, एक फरीसी का बेटा हूँ। मैं मरे हुओं के जी उठने की उम्मीद के कारण मुकदमे का सामना कर रहा हूँ।" पौलुस के लिए, "फरीसी" सम्मान का खिताब था। इस खिताब का मतलब है ईश्वर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में ईमानदारी और निष्ठा का उच्चतम स्तर, जैसा कि दिव्य तोराह में बताया गया है (मार्टिन)। उस समय, "फरीसी" का मतलब यहूदी धर्म के भीतर कुलीन वर्ग से था। फरीसी कानून के अध्ययन में बहुत उत्साही थे (धर्मग्रंथों को ध्यान से पढ़ना और उन पर मनन करना), इसके नियमों के अनुसार बेदाग जीवन जीते थे, और अपनी बातों और कामों में एकरूपता के कारण लोगों द्वारा सम्मानित किए जाते थे। उन्होंने यहूदी धर्म की पवित्रता को बनाए रखा, विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों के कारण यहूदी लोगों में आए नैतिक पतन की निंदा की, और वे देशभक्त थे जिन्होंने रोमन शासन का विरोध किया। हालाँकि उस समय केवल लगभग 6,000 फरीसी

थे, लेकिन उनका प्रभाव बहुत बड़ा था। यहाँ तक कि यह भी कहा जाता था, "अगर केवल दो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते, तो उनमें से एक फरीसी होता।" हालाँकि, क्योंकि धार्मिक हस्तियों के रूप में उनमें एक गंभीर कमी थी, प्रभु यीशु ने उन्हें सख्ती से फटकारा, उन्हें "सफेद पुती हुई कब्रें" (मत्ती 23:27) और "साँप, विषैले साँपों की संतान" (पद 33) कहा। "फरीसी" (*pharisai*) शब्द हिब्रू शब्द *parash* से आया है, जिसका अर्थ है "अलग होना।" शुद्धतावादी होने के नाते, उन्होंने खुद को हेलेनिस्टिक संस्कृति और उससे प्रभावित लोगों से अलग कर लिया था। हालाँकि उनका मकसद मूल रूप से गलत नहीं था, लेकिन इस रवैये ने खुद को सही मानने और दूसरों से अलग-थलग रहने की भावना को जन्म दिया। प्रभु यीशु ने जिस बात की सबसे कड़ी निंदा की, वह थी फरीसियों की यह सोच कि "वे अपनी धार्मिकता पर भरोसा करते थे और बाकी सभी को नीची नज़र से देखते थे" (लूका 18:9) (किम ही-बो)।

(2) "जोश के मामले में, कलीसिया का सताया जाना" (*kata zēlos*) (फिलिप्पियों 3:6a)।

पौलुस केवल व्यवस्था का पालन करने से संतुष्ट नहीं था; एक फरीसी के रूप में, उसने बड़े जोश के साथ कलीसिया को सताया। यहाँ पौलुस में परमेश्वर के लिए जो "जोश" था, वह परमेश्वर के वाचा वाले समुदाय की शुद्धता के लिए था; केवल उन्हीं लोगों को सचमुच परमेश्वर का सेवक माना जाता था जिनमें ऐसा जोश होता था (देखें गिनती 25:1–18; भजन संहिता 106:30–31) (मार्टिन)। इसके अलावा, पौलुस के इस बयान के बारे में कि उसने जोश के साथ कलीसिया को सताया, "सताने" के लिए इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द उस स्थिति को बताता है जब कोई सेना दुश्मन का पीछा करती है और उससे लड़ती है, या कोई शिकारी अपने शिकार का पता लगाकर उसका पीछा करता है। सचमुच, शाऊल (पौलुस)—जो यीशु के चेलों के खिलाफ "जान से मारने की धमकियाँ दे रहा था" (प्रेरितों के काम 9:1)—ने विश्वासियों (मसीह की कलीसिया, जो यीशु, यानी 'मार्ग' का अनुसरण करते थे) का पीछा किया और, "पागल की तरह घर-घर जाकर, विश्वास करने वाले पुरुषों और महिलाओं को घसीटकर जेल में डाल दिया" (प्रेरितों के काम 8:3; 9:1; 22:4–5; 26:9–11) (मार्टिन)। बाइबल दो तरह के जोश की बात करती है। ये हैं—पौलुस का यीशु पर विश्वास करने से पहले परमेश्वर के लिए जोश (जैसा कि आज के अंश में बताया गया है) और फीनहास का जोश, जो परमेश्वर के अपने जोश से प्रेरित होकर पवित्र जलन के कारण काम करने के लिए आगे बढ़ा था। सबसे पहले, पुराने नियम में गिनती 25:11 एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताती है जिसने धार्मिक जोश के साथ परमेश्वर के क्रोध को शांत किया: फ़ीनहास, जो

एलीआज़र का बेटा और याजक हारून का पोता था। परमेश्वर के ही जोश के साथ काम करते हुए, फ़ीनहास ने एक घटना देखी जब इस्राएलियों की पूरी सभा 'मुलाकात के तंबू' के प्रवेश द्वार पर रो रही थी: ज़िमरी—जो शिमोन गोत्र का एक नेता और सालू का बेटा था—कोज़बी नाम की एक मिद्यानी महिला (ज़ूर नाम के कबीले के सरदार की बेटी) को मूसा और पूरी सभा के सामने अपने साथी इस्राएलियों के बीच ले आया। फ़ीनहास ने अपने हाथ में एक भाला लिया, ज़िमरी के पीछे उसके तंबू में गया, और ज़िमरी और कोज़बी दोनों के पेट में भाला घोंपकर उन्हें मार डाला। तभी परमेश्वर का क्रोध शांत हुआ, और इस्राएलियों पर आई महामारी रुक गई। फ़ीनहास का यह जोश परमेश्वर की नज़र में सही था; यह जोश परमेश्वर के वचन पर आधारित था। दूसरे शब्दों में, फ़ीनहास का धार्मिक जोश असल में "परमेश्वर का जोश" था। यही सच्चा और सही जोश है। तो फिर, गलत जोश क्या है? यह परमेश्वर के लिए वह जोश है जो पौलुस (शाऊल) में यीशु पर विश्वास करने से पहले था। वह जोश सही ज्ञान पर आधारित नहीं था (रोमियों 10:2); दूसरे शब्दों में, शाऊल का जोश सही समझ पर आधारित नहीं था। प्रेरितों के काम 22:3 पर विचार करें: "मैं एक यहूदी हूँ, जिसका जन्म सिलिसिया के तारसुस में हुआ था, लेकिन मैं इसी शहर में पला-बढ़ा हूँ। मैंने गमालियेल के अधीन अध्ययन किया और हमारे पूर्वजों के नियम में पूरी तरह से प्रशिक्षित हुआ। मैं परमेश्वर के लिए उतना ही जोशीला था जितना आज आप में से कोई भी है।" गलातियों 1:14 को देखें: "मैं अपने लोगों के बीच अपने कई समकालीनों से आगे निकल गया था, क्योंकि मैं अपने पूर्वजों की परंपराओं के लिए बहुत ज़्यादा जोशीला था।" शाऊल का गलत जोश धर्मग्रंथ की गलत समझ पर आधारित था। हालाँकि उसने पुराने नियम के परमेश्वर की जोशीली सेवा की, लेकिन वह यीशु को—जिसके बारे में पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी—मसीहा या क्राइस्ट के रूप में पहचानने में विफल रहा। संक्षेप में, अपनी अज्ञानता के कारण, शाऊल ने एक गलत धारणा बना ली थी और गलत जोश के साथ कलीसिया पर अत्याचार किया।

शाऊल में यीशु मसीह का ज्ञान नहीं था। इसलिए, उसे यकीन नहीं था कि यीशु ही मसीह हैं। असल में, शाऊल के प्रभु की कलीसिया पर ज़ुल्म करने की वजह उसका अविश्वास था। क्योंकि उसे यकीन नहीं था कि यीशु ही मसीह हैं, इसलिए उसने उन ईसाइयों पर ज़ुल्म किया जो यह कहते थे कि "यीशु ही मसीह हैं।" उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यहूदी धर्म के लिए उसके प्यार ने उसे उन सभी चीज़ों से नफ़रत करने पर मजबूर कर दिया जो उसे खतरे में डालती थीं (देखें प्रेरितों के काम 8:3; 9:1; मैकआर्थर)। इंसानी जोश के आधार पर परमेश्वर का काम करने का यही मतलब है। ऐसा जोश सच्ची जानकारी पर आधारित नहीं होता; खासकर, इसमें

यीशु मसीह की सही समझ की नींव नहीं होती। न ही यह सच्चे विश्वास पर टिका होता है। यीशु के बारे में सही जानकारी न होने पर, कोई व्यक्ति सच्चे विश्वास के बिना भी परमेश्वर के लिए जोश के साथ काम कर सकता है। शाऊल, जिसने इस गलत जानकारी और विश्वास के आधार पर जोश के साथ परमेश्वर की सेवा की, ईसाइयों पर ज़ुल्म करता रहा, जबकि उसे लगता था कि वह असल में परमेश्वर की सेवा कर रहा है (यूहन्ना 16:2)।

(3) “कानून में जो नेकी है, उसमें बेदाग रहो” (फिलिप्पियों 3:6b)।

यह तीसरी कामयाबी थी जो शाऊल (पॉल) ने मेहनत से हासिल की—कुछ ऐसा जिस पर वह पूरी तरह भरोसा कर सकता था और दुनियावी नज़रिए से घमंड कर सकता था। यह सच था कि, कानून की नेकी के मामले में, वह बेदाग था। यहाँ जिस “कानून की नेकी” का ज़िक्र है, उसका मतलब है वह नेकी जो कोई इंसान कानून को मानने और उस पर अमल करने से हासिल करता है—यानी, इंसानी काबिलियत के आधार पर भगवान के सामने नेक ठहराया जाना। ल्यूक 18:21 में अमीर युवा शासक की तरह, शाऊल ने सभी हुक्मों को माना और उन पर अमल किया। उसने अपनी इंसानी कोशिशों से कानून के सभी ज़रूरी स्टैंडर्ड के हिसाब से ज़िंदगी जी, और कानून के आधार पर सही ठहराया जाना चाहा (मार्टिन)। इस तरह, अपनी नज़र में, वह कानून की नेकी के मामले में बेदाग था। हालांकि, रोमियों 3:20 स्पष्ट रूप से कहता है: "इसलिये व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "अतः व्यवस्था का पालन करने से कोई भी परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहर सकता। व्यवस्था हमें केवल इस तथ्य का एहसास कराती है कि हम पापी हैं"]। यीशु पर विश्वास करने से पहले, पौलुस ने व्यवस्था की धार्मिकता के अनुसार निर्दोष जीवन व्यतीत किया; फिर भी, यीशु पर विश्वास करने के बाद, उसने महसूस किया कि व्यवस्था के कार्यों के माध्यम से कोई भी मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहराया जा सकता। इसका कारण यह है कि व्यवस्था पाप का ज्ञान लाती है। परिणामस्वरूप, जितना अधिक हम विश्वास का जीवन जीते हैं, उतना ही अधिक पाप के प्रति हमारी जागरूकता अनिवार्य रूप से बढ़ती और गहरी होती जाती है। यह धार्मिकता यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से भगवान की कृपा से मुफ्त में प्राप्त होती है (श्लोक 22, 24)। परिणामस्वरूप, जितना अधिक हम अपने विश्वास के जीवन में प्रगति करते हैं, उतना ही अधिक अनुग्रह के बारे में हमारी जागरूकता बढ़ती है और उतना ही अधिक व्यक्तिगत योग्यता की हमारी भावना अनिवार्य रूप से फीकी पड़ जाती है। यह केवल स्वाभाविक है (1 कुरिन्थियों 15:10; लूका 17:10)। इस प्रकार, हमारा विश्वास

जीवन जितना गहरा होता जाता है, उतने ही अधिक हम अनिवार्य रूप से विनम्र होते जाते हैं। पॉल को देखें: (1) "मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूं..." (1 कुरिन्थियों 15:9); (2) "मुझ पर, जो सभी संतों में से छोटे से भी छोटा है, यह अनुग्रह हुआ..." (इफिसियों 3:8); (3) "...जिनमें मैं प्रमुख हूं" (1 तीमुथियुस 1:15)।

हम तीन संकेतकों की जांच करके यह पता लगा सकते हैं कि क्या हमारा विश्वास का जीवन पटरी से उतर गया है: मैं पाप को पाप नहीं मानता (रोमियों 5:13)। (2) मैं अपनी काबिलियत की भावना से ज़्यादा बंधा हुआ होता जा रहा हूँ (लूका 18:11–12); मैं इस बात पर ज़्यादा ध्यान देता हूँ कि मैं प्रभु और चर्च के लिए क्या करता हूँ, बजाय इसके कि प्रभु मेरे लिए क्या करते हैं (मैथ्यू 25:44)। (3) मैं ज़्यादा घमंडी होता जा रहा हूँ (नीतिवचन 21:4; यहेजकेल 28:5); मैं परमेश्वर की महिमा के बजाय अपनी महिमा चाहता हूँ (यूहन्ना 12:43)। हमें अपने विश्वास को ऐसे जीना चाहिए जो परमेश्वर की नज़र में सही हो। जैसे-जैसे हम अपने विश्वास के जीवन में बढ़ते हैं, हमें पाप के प्रति ज़्यादा सेंसिटिव होना चाहिए। हमें परमेश्वर के खिलाफ किए गए पापों को और ज़्यादा अच्छी तरह से पहचानने और मानने में सक्षम होना चाहिए। साथ ही, जैसे-जैसे हम अपने विश्वास को गहरा करते हैं, हमें कृपा की गहरी भावना से भरना चाहिए। हमारी अपनी कोई काबिलियत नहीं है; सिर्फ़ यीशु के क्रॉस की काबिलियत है। जैसे हमें यीशु के खून बहाने और क्रूस पर उनकी मौत से पापों की माफ़ी मिली, वैसे ही उनके फिर से जी उठने से हम नेक ठहराए गए हैं (रोमियों 4:25)। इसलिए, जैसे-जैसे हम अपने विश्वास के रास्ते पर चलते हैं, हमें हमेशा विनम्र रहना चाहिए—सच में विनम्र—भगवान और दूसरों दोनों के सामने। चाहे हम खाएं या पिएं या कुछ भी करें, हमें यह सब भगवान की महिमा के लिए करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:31)। हमें भगवान से यह कहते हुए प्रार्थना करनी चाहिए, "हे प्रभु, हमें महिमा न दी जाए" (भजन संहिता 115:1)। भगवान की सच्ची महिमा करने के लिए, हमें पहले पवित्र आत्मा के ज़रिए उनकी पूजा करनी चाहिए। यीशु मसीह की मौत और फिर से जी उठने के ज़रिए भगवान ने हमें जो बचाने वाली कृपा दी है, उसे याद करते हुए, हमें धन्यवाद के साथ उनकी तारीफ़ और पूजा करनी चाहिए। इसके अलावा, हमें सिर्फ़ यीशु मसीह पर घमंड करना चाहिए। हमें यीशु मसीह के क्रूस पर घमंड करना चाहिए। हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। हमें कभी भी शरीर पर भरोसा नहीं करना चाहिए!

सबसे उत्तम ज्ञान

[फिलिप्पियों 3:7–9]

क्या आप जानते हैं कि आपके विश्वास के जीवन के लिए क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक? अगर हम सच में जानते—और फर्क कर पाते—कि हमारे विश्वास के जीवन के लिए क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक, तो हम क्या करते? ज़ाहिर है, हम नुकसानदायक चीज़ों को छोड़ देते और फायदेमंद चीज़ों को अपनाते।

तो, समस्या क्या है? मेरी नज़र में, मुख्य समस्या यह है कि हम अक्सर यह नहीं समझ पाते कि हमारे विश्वास के जीवन के लिए क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में सोचिए: अगर हम अपनी सेहत का ध्यान रखते समय यह न समझ पाएँ कि क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक, तो हमारा क्या होगा? हम अपनी सेहत का ठीक से ध्यान नहीं रख पाएँगे। हालाँकि, ज़्यादातर बुज़ुर्ग—जिन्होंने कई तरह के दर्द और तकलीफ़ें झेली हैं (या अभी भी झेल रहे हैं) और अस्पतालों व डॉक्टरों के पास गए हैं—शायद अच्छी तरह जानते हैं कि अपनी सेहत के लिए क्या करना चाहिए। इसलिए, वे शायद अपनी सेहत का ध्यान रखने की पूरी कोशिश करते हैं। लेकिन क्या होता है अगर, यह जानने के बावजूद कि अपनी सेहत के लिए क्या करना है, वे उस ज्ञान के अनुसार काम नहीं करते और ऐसी आदतें अपनाए रखते हैं जो नुकसानदायक हैं? मेरा मानना है कि यह ज़्यादा बड़ी समस्या है: यह जानना कि क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक, फिर भी फायदेमंद काम न करना और इसके बजाय नुकसानदायक व्यवहार करते रहना। यह सच में एक गंभीर समस्या है। इसी तरह, हमारे विश्वास के जीवन में, अगर हम जानते हैं कि क्या फायदेमंद है और क्या नुकसानदायक, लेकिन वह काम नहीं करते जिससे हमारे विश्वास को फ़ायदा हो—और इसके बजाय नुकसानदायक काम करते रहते हैं—तो हम आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ कैसे रह सकते हैं? ज़ाहिर है, इंसान

आध्यात्मिक रूप से बीमार पड़ जाएगा। एक छोटा सा उदाहरण दूँ, तो आपको क्या लगता है कि आपके विश्वास के जीवन के लिए क्या फायदेमंद है? क्या यह फायदेमंद नहीं होगा कि आप खुद लगन से बाइबल पढ़ें, उपदेश ध्यान से सुनें, रविवार दोपहर की बाइबल स्टडी में पूरे मन से हिस्सा लें, और—अकेले में परमेश्वर के वचन पर मनन करते हुए—परमेश्वर की आवाज़ (जो सच्चाई आपको बताई गई है) के अनुसार जीवन जिएँ? इसके अलावा, क्या हमारे विश्वास के लिए यह फायदेमंद नहीं होगा कि हम सुबह की प्रार्थना सभाओं, बुधवार की प्रार्थना सभाओं, रात भर चलने वाले प्रार्थना शिविरों, रविवार की मध्यस्थता प्रार्थना सभाओं और व्यक्तिगत प्रार्थना जैसी चीज़ों के ज़रिए लगन से परमेश्वर को खोजें? लेकिन, अगर हम यह जानते हुए भी ऐसा नहीं करते—यानी परमेश्वर के वचन और नियमित प्रार्थना को नज़रअंदाज़ करते हैं, और आज्ञा न मानते हुए पाप में जीते हैं—तो इससे हमारे विश्वास को क्या फ़ायदा हो सकता है? इसके उलट, यह हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए नुकसानदेह ही हो सकता है।

आज के हिस्से में, फिलिप्पियों 3:7–8 में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहता है: "लेकिन जो बातें मेरे लिए फ़ायदेमंद थीं, उन्हें अब मैं मसीह की खातिर नुकसान मानता हूँ। बल्कि, मैं सब कुछ नुकसान मानता हूँ क्योंकि अपने प्रभु मसीह यीशु को जानना सबसे ज़्यादा कीमती है; उसी के लिए मैंने सब कुछ खो दिया है। मैं उन्हें कूड़ा-करकट समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को पा सकूँ।" इस हिस्से पर ध्यान देते हुए, मुझे उम्मीद है कि "बेहतरीन ज्ञान" (The Surpassing Knowledge) शीर्षक के तहत फिलिप्पियों 3:7–9 पर मनन करने से हम सभी प्रभु की दी हुई कीमती सीखें पा सकेंगे और उन्हें अपने जीवन में अपना सकेंगे। सबसे पहले, आइए आज के वचन, फिलिप्पियों 3:7 पर फिर से नज़र डालें: "लेकिन जो बातें मेरे लिए फ़ायदेमंद थीं, उन्हें अब मैं मसीह की खातिर नुकसान मानता हूँ" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "लेकिन मैंने मसीह की खातिर उन सभी चीज़ों को छोड़ दिया है जो कभी मेरे लिए फ़ायदेमंद थीं"]। यहाँ पौलुस का "जो बातें मेरे लिए फ़ायदेमंद थीं" कहने का क्या मतलब है? वह उन विशेषाधिकारों और उपलब्धियों की बात कर रहा है जो यीशु पर विश्वास करने से पहले उसके पास थीं और जो उसने अपनी कोशिशों से हासिल की थीं। ये वही तीन विशेषाधिकार हैं जो शाऊल को मिले थे (वचन 5a) और वे तीन चीज़ें हैं जो उसने अपनी कोशिशों से हासिल की थीं (वचन 5b–6)—इन विवरणों पर हम पहले ही फिलिप्पियों 3:5–6 से विचार कर चुके हैं। वे तीन विशेषाधिकार ये थे कि आठवें दिन उसका

खतना हुआ था, वह इस्राएल के लोगों और बिन्यामीन के गोत्र का था, और इब्रानियों में इब्रानी था। अपनी कोशिशों से हासिल की गई तीन चीज़ें ये थीं कि व्यवस्था के मामले में वह फरीसी था, जोश के मामले में कलीसिया का सताने वाला था, और व्यवस्था के नियमों के अनुसार धार्मिकता के मामले में बेदाग था। संक्षेप में, यीशु पर विश्वास करने से पहले पौलुस जिसे अपने लिए फ़ायदेमंद मानता था, वह असल में "शरीर पर भरोसा" था (वचन 4)। उसके पास यहूदियों को मानने वालों (Judaizers) की तुलना में शरीर पर भरोसा करने का ज़्यादा कारण था। इसका कारण उन छह बातों में है जो आयत 5 और 6 में बताई गई हैं। दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु से मिलने से पहले, वे छह बातें शाऊल के लिए बहुत फ़ायदेमंद थीं। एक फरीसी के तौर पर शाऊल का मकसद मसीहा पर विश्वास करके (हालांकि उस समय वह यीशु को मसीहा नहीं मानता था) और व्यवस्था का पूरी तरह पालन करके धर्मी ठहरना था। शाऊल के लिए, जो व्यवस्था से मिलने वाली धार्मिकता—जिसे आयत 6 के बाद वाले हिस्से में "व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता" कहा गया है—को पाने की कोशिश कर रहा था, आयत 5 और 6 में बताई गई छह बातें बहुत फ़ायदेमंद थीं। उदाहरण के लिए, आयत 6 के बाद वाले हिस्से में बताई गई आखिरी बात पर गौर करें: शाऊल खुद को "व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता" के मामले में "निर्दोष" बताता है। यह उसके लिए कितना बड़ा फ़ायदा था! शाऊल के नज़रिए से—जो पक्का मानता था कि व्यवस्था का पालन करके कोई व्यक्ति परमेश्वर की नज़र में धर्मी ठहराया जा सकता है—कानूनी धार्मिकता के मामले में "निर्दोष" होना एक बहुत बड़ी खूबी थी। फिर भी, जैसा कि हम जानते हैं, यह शाऊल की उस समय की स्थिति है जब वह यीशु को मसीहा के तौर पर नहीं जानता था (और उस पर विश्वास नहीं करता था)। दूसरे शब्दों में, ये वे बातें थीं जिन्हें शाऊल यीशु मसीह पर विश्वास करने से पहले फ़ायदेमंद मानता था; ये वे छह बातें थीं जिन्हें वह उस समय अपने लिए फ़ायदेमंद समझता था जब उसे यीशु मसीह के बारे में जानकारी नहीं थी। हालाँकि, आज के हिस्से—फिलिप्पियों 3:7—में पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखता है, "लेकिन जो बातें मेरे लिए फ़ायदेमंद थीं, उन्हें अब मैं मसीह के लिए नुकसान मानता हूँ।" वह कहता है कि आयत 5 और 6 में बताई गई सभी छह बातों को वह "नुकसान" मानता है। पौलुस कहता है कि अब जब वह मानता है कि यीशु ही मसीहा है, तो ये छह बातें उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँचातीं; बल्कि, वे असल में "नुकसान" हैं। यहाँ पौलुस जिन यूनानी शब्दों का इस्तेमाल करता है—"gain" (फ़ायदा) और "count as loss" (नुकसान मानना)—वे हिसाब-किताब से जुड़े शब्द हैं; "gain" का मतलब है मुनाफ़ा कमाना, जबकि "count as loss" का मतलब है किसी चीज़ को आर्थिक नुकसान मानना (मैकआर्थर)। इस तरह, वह फिलिप्पी के विश्वासियों को बताता है कि उसने उन छह चीज़ों को "छोड़

दिया है" (आयत 7b, *Contemporary Korean Bible*) जो कभी उसके लिए फ़ायदेमंद थीं—ऐसी चीज़ें जिन पर उसने भरोसा किया था और जिन पर उसे गर्व था। पॉल उन चीज़ों को, जो कभी उसके लिए फ़ायदेमंद थीं, नुकसान कैसे मान पाया? उसने उन छह फ़ायदों की लिस्ट को—जिन पर उसने कभी बहुत भरोसा किया था और जिन पर उसे गर्व था—सिर्फ़ बेकार ही नहीं, बल्कि अपने लिए नुकसानदेह क्यों माना? उसका मकसद क्या था? आयत 7 के बीच में इसका मकसद बताया गया है: "...मसीह के लिए..." जब पॉल की मुलाक़ात दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु से हुई, तो उसे एहसास हुआ और विश्वास हो गया कि यीशु, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था और जिसकी मौत हो गई थी, वही असल में मसीह है। नतीजतन, पॉल को यह सच समझ आ गया कि उद्धार कानून के पालन से मिलने वाली धार्मिकता से नहीं, बल्कि सिर्फ़ "परमेश्वर की धार्मिकता" से मिल सकता है—जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिलती है। आज की आयत, फिलिप्पियों 3:9 को देखें: "...और उसमें पाया जाऊँ, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ जो कानून से आती है, बल्कि उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने से मिलती है—वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर परमेश्वर से आती है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "इसका मतलब है उसके साथ पूरी तरह एक हो जाना। अब, मैं कानून का पालन करके खुद से धर्मी नहीं बना हूँ, बल्कि मसीह पर विश्वास करने से बना हूँ। यह धार्मिकता पूरी तरह विश्वास पर आधारित है और परमेश्वर द्वारा दी जाती है"]। दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु से मिलने से पहले, पॉल का मानना था कि वह कानून का पालन करके—इंसानी कोशिशों से—खुद धर्मी बन सकता है। हालाँकि, उस रास्ते पर जी उठे यीशु से मिलने के बाद, उसे विश्वास के ज़रिए उद्धार मिला—जो परमेश्वर की कृपा से मिला था—कि यीशु ही मसीह है। यह सच समझने के बाद कि उद्धार कानून की धार्मिकता (आयत 9) से नहीं, बल्कि सिर्फ़ "विश्वास के आधार पर परमेश्वर से मिलने वाली धार्मिकता" (परमेश्वर की धार्मिकता) से मिलता है, पॉल ने उन "शरीर" की चीज़ों को—जिन पर उसने कभी भरोसा किया था (आयत 4), खासकर वे छह चीज़ें जिनकी लिस्ट दी गई है (आयत 5-6) और जिन्होंने उसे यहूदियों को मानने वालों से भी ज़्यादा शरीर पर भरोसा करने का आधार दिया था—सिर्फ़ बिना फ़ायदे वाली चीज़ें ही नहीं, बल्कि असल में नुकसानदेह चीज़ें माना (आयत 7)। इस तरह, पॉल ने उन सबको "मसीह के लिए" नुकसान माना (आयत 7)। उन छह चीज़ों के अलावा, आयत 8 का पहला भाग बताता है कि पौलुस बाकी "सभी चीज़ों" को—यानी "इस दुनिया की हर दूसरी चीज़" को—भी नुकसान ही मानते थे

(पार्क युन-सन)। इसके अलावा, पौलुस ने "सब कुछ खो दिया और उन्हें कूड़े-कचरे के बराबर समझा" (आयत 8)। यहाँ, कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर हमें ध्यान देने की ज़रूरत है।

(1) पहला शब्द है "excrement" (या "refuse")।

बाइबल के कुछ आधुनिक अनुवादों में, इस शब्द का अनुवाद "garbage" (कचरा) या "waste" (बेकार चीज़) के तौर पर किया गया है। हालाँकि, इसका मतलब खाने की मेज़ से फेंके गए "scraps" (टुकड़े) या "leftovers" (बचा हुआ खाना) भी हो सकता है। एक धर्मशास्त्री ने एक बार कहा था: "फरीसियों के जिस कानूनी नियम-पालन को पॉल कभी बहुत मानते थे, वह मेज़ से फेंके गए टुकड़ों जैसा है। भले ही ये टुकड़े कुत्तों को—यहाँ 'जुडाइज़र्स' (फरीसी यहूदी विश्वासी) की ओर इशारा है—पसंद आ सकते हैं, लेकिन पॉल के लिए ये सिर्फ़ एक रुकावट थे" (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, इस शब्द का मतलब शरीर का मल भी हो सकता है और इसका अनुवाद "dung" (गोबर) या "manure" (खाद) के तौर पर किया जा सकता है (पार्क युन-सन)।

(2) दूसरा शब्द है "count" (या "consider"), जो इस हिस्से की आयत 7 और 8 में तीन बार आता है।

हालाँकि कोरियाई या अंग्रेज़ी अनुवादों में इन बार-बार आने वाले शब्दों के बीच का फ़र्क साफ़ नहीं दिखता, लेकिन मूल ग्रीक भाषा में काल (tense) का अंतर पता चलता है। आयत 7 में "count" क्रिया भूतकाल (past tense) में है, जबकि आयत 8 में "count" क्रिया वर्तमान काल (present tense) में है। इसका मतलब है कि शरीर से जुड़ी जिन छह चीज़ों (शारीरिक गुणों) पर वह कभी भरोसा करते थे, दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु से मिलने, यीशु के मसीह होने का एहसास होने और विश्वास के ज़रिए उद्धार पाने के पल से ही पॉल ने उन सभी को नुकसान (loss) मानना शुरू कर दिया था। इसके उलट, जब पॉल आयत 8 में "सभी चीज़ों को नुकसान मानने" और "सभी चीज़ों को कूड़ा-करकट (rubbish) समझने" की बात करते हैं, तो "count" क्रिया वर्तमान काल में होती है, जो "हमेशा जारी रहने वाली क्रिया" को दर्शाती है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, पॉल ने फिलिप्पी कलीसिया के संतों से कहा कि उन्होंने न केवल शरीर से जुड़ी उन छह चीज़ों को नुकसान माना, जिन पर उन्होंने कभी जुडाइज़र्स से ज़्यादा भरोसा किया था (आयत 7), बल्कि दुनिया की बाकी सभी चीज़ों (आयत 8) को भी नुकसान—बल्कि कूड़ा-करकट—माना और उन्हें हमेशा उसी नज़रिए से देखने का फ़ैसला किया।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? पॉल ने उन सभी चीज़ों को नुकसान क्यों माना और उन्हें उसी नज़रिए से क्यों देखते रहे? आज के हिस्से, फिलिप्पियों 3:8 और आयत 9 के पहले भाग में, पौलुस इसका कारण और मकसद बताते हैं: “सच तो यह है कि मैं सब कुछ नुकसान मानता हूँ क्योंकि मेरे प्रभु मसीह यीशु को जानना सबसे ज़्यादा कीमती है। उनके लिए मैंने सब कुछ खो दिया है और उन्हें कूड़ा-करकट समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को पा सकूँ और उनमें पाया जाऊँ...” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “इसके अलावा, मैं सब कुछ नुकसान इसलिए मानता हूँ क्योंकि मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान कहीं ज़्यादा कीमती है। मैंने मसीह के लिए सब कुछ खो दिया है। मैं उन सभी चीज़ों को कूड़ा-करकट मानता हूँ ताकि मैं मसीह को पा सकूँ और पूरी तरह से उनके साथ एक हो जाऊँ।”] पौलुस ने उन छह शारीरिक चीज़ों को—जिन पर वह कभी भरोसा करते थे—और दुनिया की बाकी सभी बातों को नुकसान क्यों माना और उन्हें कूड़ा-करकट क्यों समझा? इसका ठीक यही कारण था कि “मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे श्रेष्ठ है” (आयत 8)। हालाँकि पौलुस कानून के मामले में एक फरीसी थे (आयत 5) और उन्हें इसका बहुत ज्ञान था, फिर भी उन्हें यह एहसास नहीं हुआ था कि “कानून हमें मसीह तक पहुँचाने के लिए रखा गया था ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जा सकें” (गलातियों 3:24)। खास तौर पर, हालाँकि पौलुस को शायद मसीहा की अवधारणा के बारे में बहुत ज्ञान था, लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं था कि यीशु ही असल में मसीह हैं। उन्हें यह पता नहीं था कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं (देखें प्रेरितों के काम 9:20)। नतीजतन, उन्होंने ईसाइयों—यानी उन लोगों को जो यीशु को मसीह और परमेश्वर का पुत्र मानते थे और उनके रास्ते पर चलते और उसका प्रचार करते थे—पर ज़ोरदार ज़ुल्म ढाए। हालाँकि, जब शाऊल ने दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु की आवाज़ सुनी, जो पूछ रहे थे, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों के काम 9:4), और बाद में उन्हें यह विश्वास हो गया कि यीशु—जिन ईसाइयों पर उन्होंने इतनी शिद्दत से ज़ुल्म ढाए थे, उन्हीं के प्रभु—ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं (आयत 20), तो उन्हें एहसास हुआ कि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान" सबसे ज़्यादा कीमती है (फिलिप्पियों 3:8)। यहाँ पौलुस जिस "ज्ञान" की बात कर रहे हैं, उसका मतलब मसीह यीशु की सिर्फ़ दिमागी समझ से कहीं ज़्यादा है। पॉल ने जिस ग्रीक शब्द (*gnōseōs*) का इस्तेमाल किया, उसके आधार पर वे यीशु के बारे में "अनुभव-आधारित" या "व्यक्तिगत" ज्ञान का वर्णन कर रहे हैं (देखें यूहन्ना 10:27, 17:3; 2 कुरिन्थियों 4:6; 1 यूहन्ना 5:20)। इसके अलावा, यह ज्ञान मसीह के साथ साझा किए गए जीवन के समान है (गलातियों 2:20)। यह परमेश्वर के अपने लोगों के ज्ञान (आमोस 3:2) और उनके परमेश्वर के ज्ञान

से भी मेल खाता है, जो उनके प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता के रूप में प्रकट होता है (यिर्मयाह 31:34; होशे 6:3, 8:2) (मैकआर्थर)। मैंने इस बात पर विचार किया कि पॉल ने उन शारीरिक चीज़ों को—जिन पर वे कभी भरोसा करते थे और जिन पर गर्व करते थे, और वास्तव में इस दुनिया की हर चीज़ को—नुकसान क्यों माना (उन्हें कूड़ा-करकट या बेकार चीज़ समझा): ऐसा इसलिए था क्योंकि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे बढ़कर है।" इससे मुझे यह लिखने की प्रेरणा मिली: "जो चीज़ सबसे ज़्यादा कीमती है उसे पाने के लिए, इंसान को उन सभी चीज़ों को छोड़ देना चाहिए जिनकी कोई कीमत नहीं है (फिलिप्पियों 3:7-8)।"

आप क्या सोचते हैं? अगर आपको गहराई से यह एहसास हो गया है—चाहे व्यक्तिगत रूप से, अनुभव से, या रिश्ते के ज़रिए—कि मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे ज़्यादा कीमती है, तो क्या आप बाकी सब कुछ नहीं छोड़ देंगे जो इसकी तुलना में कुछ भी नहीं है? पॉल ने ठीक यही किया। क्योंकि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे बढ़कर है," उन्होंने उन छह शारीरिक चीज़ों को, जिन पर वे कभी भरोसा करते थे, और दुनिया की बाकी सभी बातों को नुकसान माना; उन्होंने उन्हें छोड़ दिया और हमेशा के लिए कूड़ा-करकट समझा। उनका मकसद क्या था? इसके दो कारण थे:

पहला, मसीह को पाना।

आज के पाठ में फिलिप्पियों 3:8 के बाद वाले हिस्से को देखें: "... ताकि मैं मसीह को पा सकूँ।" इसका अनुवाद "मसीह को पाने की कोशिश" के रूप में भी किया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि पॉल उस मसीह को पाने के लिए बाकी सब कुछ कूड़े की तरह छोड़ने को तैयार थे जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे (पार्क युन-सन)। मैं उदाहरण के तौर पर योना 1:4–5 का ज़िक्र करना चाहूँगा: “तब प्रभु ने समुद्र पर एक ज़ोरदार हवा भेजी, और इतना भयानक तूफ़ान उठा कि जहाज़ के टूटने का ख़तरा पैदा हो गया। सभी नाविक डर गए और हर कोई अपने-अपने देवता को पुकारने लगा। और जहाज़ का बोझ हल्का करने के लिए उन्होंने सारा सामान समुद्र में फेंक दिया।” ठीक वैसे ही जैसे ग़ैर-यहूदी नाविकों ने अपनी जान बचाने के लिए जहाज़ का सामान समुद्र में फेंक दिया था जब जहाज़ टूटने ही वाला था, हमें भी यीशु मसीह को पाने के लिए इस दुनिया की हर चीज़ को छोड़ देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, सबसे कीमती चीज़ पाने के लिए, हमें उन सभी चीज़ों को छोड़ना होगा जिनकी कोई

कीमत नहीं है। हालाँकि, अगर हम यीशु मसीह को पाने का दावा तो करते हैं लेकिन पैसे का मोह नहीं छोड़ पाते, तो हम दो मालिकों की सेवा करने लगेंगे, जैसा कि यीशु ने चेतावनी दी थी (मत्ती 6:24)।

दूसरी बात, वह था "उसमें पाया जाना।"

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:9 को देखिए: "...और उसमें पाया जाऊँ, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ जो व्यवस्था से आती है, बल्कि उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने से मिलती है—वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर परमेश्वर से आती है।" यहाँ, "उसमें पाया जाना" वाक्यांश का अनुवाद *ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (एक आधुनिक कोरियाई संस्करण) में "यीशु के साथ पूरी तरह एक हो जाना" के रूप में किया गया है। इस वाक्यांश का अर्थ है "मसीह के साथ आध्यात्मिक मिलन—यानी, सचमुच धार्मिकता प्राप्त करने की स्थिति" (पार्क युन-सन)। दमिश्क के रास्ते पर यीशु पर विश्वास करके पौलुस को पहले ही धर्मी घोषित कर दिया गया था। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ अपने आध्यात्मिक मिलन के कारण वह पहले से ही धार्मिकता की स्थिति में था। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, पौलुस यीशु के क्रूस पर चढ़ने और पुनरुत्थान के साथ आध्यात्मिक मिलन के ज़रिए पहले ही यीशु के साथ एक हो चुका था। इस प्रकार, जबकि पौलुस "पहले ही" यीशु के साथ एक हो चुका था और परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त कर चुका था, वह अभी तक पूर्णता की स्थिति तक नहीं पहुँचा था। भविष्य में एक स्थिति उसका इंतज़ार कर रही थी—सच्ची धार्मिकता और यीशु के साथ पूर्ण मिलन की स्थिति। दूसरे शब्दों में, जब पौलुस ने यह विश्वास करके उद्धार पाया कि यीशु ही मसीह है और उसे प्रभु के रूप में स्वीकार किया, तो "परमेश्वर की धार्मिकता" उसे प्रदान की गई, और उसे धर्मी घोषित किया गया। फिर भी, अपने असली स्वभाव के हिसाब से, वह पूरी तरह से धार्मिक जीवन जीने में सक्षम, एक पूरी तरह से धार्मिक व्यक्ति की स्थिति तक नहीं पहुँच पाए थे। इसीलिए उन्होंने रोमियों 7 में कहा: "क्योंकि मैं अपने अंदरूनी इंसान के हिसाब से परमेश्वर के नियम में खुशी महसूस करता हूँ। लेकिन मैं अपने शरीर के अंगों में एक और नियम देखता हूँ, जो मेरे मन के नियम के खिलाफ लड़ता है, और मुझे पाप के उस नियम का गुलाम बना लेता है जो मेरे अंगों में है" (पद 23)। हालाँकि, यीशु के दोबारा आने पर—जब वह अचानक बदल जाएँगे और एक शानदार आध्यात्मिक शरीर धारण कर लेंगे—तब वह सचमुच पूरी धार्मिकता की स्थिति को प्राप्त कर

लेंगे। उस समय, वह यीशु की दोहरी आज्ञा (परमेश्वर का नियम) का पूरी तरह से पालन करेंगे और ऐसा जीवन जिएँगे जो पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता हो। इसलिए, जब तक वह इस दुनिया में रहे, पौलुस ने उन छह चीज़ों को—जिन्हें वह कभी बहुत महत्व देते थे—और इस दुनिया की बाकी सभी चीज़ों को हमेशा के लिए नुकसान माना—उन्हें बस कूड़ा-करकट समझा।

आपके लिए सबसे कीमती क्या है? क्या सच में प्रभु यीशु से ज़्यादा कीमती आपके लिए कुछ भी नहीं है? क्या आप मसीह के ज्ञान को सबसे ज़्यादा महत्व देते हैं? क्या आप मसीह के साथ मिलकर जीवन जी रहे हैं? क्या आप मसीह को वैसे ही जान रहे हैं जैसे परमेश्वर आपको जानता है? क्या आप मसीह के प्रति प्रेम के कारण प्रभु की आज्ञा मानते हैं? अगर हाँ, तो हमें शरीर की बातों और इस दुनिया की उन सभी चीज़ों को—जिन पर हमने कभी भरोसा किया था—कूड़े-कचरे (बेकार चीज़ या गंदगी) के समान समझना चाहिए और उन्हें हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। हम ऐसा मसीह को पाने और उनमें बने रहने के लिए करते हैं—ताकि हम यीशु मसीह के साथ पूरी तरह एक हो सकें, उनके साथ पूर्ण आत्मिक मिलन पा सकें और पूरी धार्मिकता प्राप्त कर सकें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उस दिन और घड़ी के आने तक, हम सब यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ते रहें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब यह स्वीकार कर सकें कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का ज्ञान ही सबसे ज़्यादा मूल्यवान है।

मैं बस एक बात साफ़ करना चाहता हूँ।

[फिलिप्पियों 3:10–14]

अगर आप अपने विश्वास के जीवन में कोई एक बात साफ़ करना चाहें, तो वह क्या होगी? आज के वचन पर मनन करते हुए, मैंने खुद से यही सवाल पूछा। ऐसा करते समय, मैंने उस एक बात पर तीन नज़रियों से विचार किया: विश्वास, प्रेम और आशा।

पहला, "विश्वास" के बारे में, मैं यूहन्ना 6:29 को देखता हूँ: "यीशु ने जवाब दिया, 'परमेश्वर का काम यह है: उस पर विश्वास करना जिसे उसने भेजा है।'"

मेरे लिए सबसे ज़रूरी बात यीशु मसीह को जानना है, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है। मेरी इच्छा है कि मैं यीशु को और ज़्यादा जानूँ। प्रेरित पौलुस की तरह, मैं यह स्वीकार करना चाहता हूँ कि "अपने प्रभु मसीह यीशु को जानना ही सबसे अनमोल बात है" (फिलिप्पियों 3:8)। मैं प्रेरित पतरस की तरह यह भी स्वीकार करना चाहता हूँ, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र" (मत्ती 16:16)। यीशु को जानकर, मैं ऐसा विश्वासी बनना चाहता हूँ जो विश्वास की सही गवाही दे। इसके लिए, मैं लगातार यीशु मसीह के वचन सुनना चाहता हूँ (रोमियों 10:17)। मेरी इच्छा है कि परमेश्वर के वचन को ध्यान से सुनकर मेरे विश्वास में तरक्की हो (फिलिप्पियों 1:25)। इसलिए, मैं आँखों से दिखाई देने वाली चीज़ों के आधार पर नहीं, बल्कि विश्वास के आधार पर जीना चाहता हूँ (2 कुरिन्थियों 5:7)।

दूसरा, "प्रेम" के बारे में, मैं मत्ती 22:37–40 को देखता हूँ: "यीशु ने जवाब दिया: 'अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो।' यह पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी आज्ञा भी इसी जैसी है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम खुद से करते हो।'" जब मैं परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने का जीवन जीता हूँ—यीशु की इन दोहरी आज्ञाओं का पालन करते हुए—तो मेरा दिल स्वर्ग

जैसी जगह बन जाता है, और मैं अपने परिवार, अपनी कलीसिया और पड़ोसियों के साथ अपने रिश्तों में स्वर्गीय जीवन का अनुभव करता हूँ। एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर जो इस स्वर्गीय जीवन को पाना चाहता है, मेरी गहरी इच्छा है कि मैं यीशु की इन दोहरी आज्ञाओं का पालन करूँ (मत्ती 22:37–40)। फिर भी, मुझे यह एहसास हो रहा है कि अपनी शारीरिक कमज़ोरी के कारण, मैं सिर्फ़ अपनी ताकत से प्यार नहीं कर सकता। इसलिए, मैं परमेश्वर से प्यार—जो पवित्र आत्मा का फल है—मांगता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर मेरे जीवन में आत्मा के फल को बढ़ाएँ, ताकि मैं ऐसा जीवन जी सकूँ जिसमें मैं उनसे और अपने पड़ोसी से और भी गहराई से प्यार कर सकूँ।

तीसरी बात, "आशा" के बारे में, मैं भजन संहिता 27:4 की ओर देखता हूँ: "मैं प्रभु से एक ही बात माँगता हूँ, बस यही चाहता हूँ: कि मैं अपने जीवन के सभी दिन प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को देखूँ और उनके मंदिर में उन्हें खोजूँ।"

एक अमेरिकी गॉस्पेल गीत है जिसे मैं लंबे समय से पसंद करता हूँ, उसका नाम है "वन थिंग आई आस्क" (एक बात जो मैं माँगता हूँ)। मैं आपके साथ उसकी पहली पंक्ति का कोरियाई अनुवाद साझा करना चाहता हूँ: "एक बात जो मैं माँगता हूँ, एक बात जो मैं चाहता हूँ: हे प्रभु, मैं हमेशा, सदा-सर्वदा आपके घर में रहना चाहता हूँ। और हे प्रभु, मैं आपको देखना चाहता हूँ। मैं एक बात माँगता हूँ; मैं एक बात चाहता हूँ; मैं आपको देखना चाहता हूँ।" भजनकार की तरह, मैं भी परमेश्वर से "एक बात" माँगता हूँ। वह एक बात है—अपने जीवन के सभी दिन परमेश्वर के घर में रहना, उनकी सुंदरता को देखना और उनके मंदिर में उन्हें खोजना—यानी परमेश्वर का ध्यान करना। आज के वचन—फिलिप्पियों 3:13–14—में पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कहते हैं, "भाइयों, मैं यह नहीं मानता कि मैंने इसे पहले ही पा लिया है। लेकिन एक बात मुझे साफ़ है: जो पीछे छूट गया है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर बढ़कर, मैं उस लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ ताकि वह इनाम पा सकूँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में स्वर्ग की ओर बुलाया है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस सवाल पर विचार करना चाहता हूँ, "वह एक बात क्या है जो हमें करनी चाहिए?" और "मैं बस एक बात के बारे में साफ़ रहना चाहता हूँ" शीर्षक के तहत परमेश्वर द्वारा दिए गए सबक सीखें।

फिलिप्पियों 3:13–14 में, जब पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को अपना पत्र लिखना जारी रखता है, तो वह कहता है, "लेकिन मैं एक बात के बारे में साफ़ हूँ" (समकालीन कोरियाई संस्करण) (पद 13)। पौलुस किस "एक बात" की बात कर रहा है? वह किस खास काम को साफ़ कर रहा था? वह ठीक यही था: "जो पीछे छूट गया है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर बढ़ते हुए, मैं उस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता हूँ ताकि वह इनाम पा सकूँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में स्वर्ग की ओर बुलाया है" (पद 13b–14)। पौलुस जिस एक बात को साफ़ कर रहा था, वह किसी निशान या लक्ष्य की ओर दौड़ने का काम था। जैसे दौड़ में कोई धावक फ़िनिश लाइन पर ध्यान केंद्रित करता है और पूरी ताकत से दौड़ता है, वैसे ही पौलुस उस निशान—उस लक्ष्य—की ओर आगे बढ़ रहा था। तो, वह लक्ष्य क्या था जिसकी ओर पौलुस दौड़ रहा था? वह था "वह जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा" (पद 12) और "मसीह यीशु में परमेश्वर का ऊपर की ओर बुलाया जाना" (पद 14)। ये दोनों वाक्यांश एक ही लक्ष्य का वर्णन करते हैं: पौलुस का मिशन—मसीह यीशु में परमेश्वर का ऊपर की ओर बुलाया जाना। पौलुस इस मिशन से पूरी तरह जुड़ गया था। इसलिए, जब उसने फिलिप्पी चर्च के संतों को लिखा, तो उसने कहा कि वह उस स्वर्गीय मिशन को पूरा करने के लिए "दौड़" रहा था जो परमेश्वर ने उसे मसीह यीशु में दिया था—एक ऐसा मिशन जिसने उसे पूरी तरह से पकड़ लिया था (पद 12, 14)।

इससे हम यह सवाल पूछते हैं: पौलुस का मिशन असल में क्या था? मेरा मानना है कि पौलुस का मिशन दो तरह का था। दूसरे शब्दों में, हालाँकि यह एक ही मिशन था, लेकिन इसके दो पहलू थे—ठीक वैसे ही जैसे सिक्के के दो पहलू होते हैं। पौलुस के मिशन का एक पहलू प्रेरितों के काम 20:24 में समझाया गया है: "हालाँकि, मैं अपने जीवन को अपने लिए कुछ भी नहीं मानता, अगर मैं बस उस दौड़ को पूरा कर सकूँ और उस काम को पूरा कर सकूँ जो प्रभु यीशु ने मुझे दिया है—परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी (गॉस्पेल) की गवाही देने का काम।" पौलुस का मिशन परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी की गवाही देना था; दूसरे शब्दों में, उसका मिशन यीशु मसीह की खुशखबरी (अच्छी खबर) की गवाही देना था। इस काम—यानी इस मिशन—को पूरा करने के लिए उन्हें अपनी जान की ज़रा भी परवाह नहीं थी। पॉल प्रभु यीशु से मिले मिशन को पूरा करने के गहरे जुनून से भरे हुए थे। यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही देने के मिशन में लगे पॉल के लिए, उस मिशन का एक और ज़रूरी पहलू था सुसमाचार के लायक ज़िंदगी जीना। दूसरे शब्दों में, जहाँ पॉल के मिशन में बाहर से यीशु मसीह के

सुसमाचार का प्रचार करना शामिल था, वहीं अंदर से इसका मतलब था यीशु मसीह जैसा बनकर सुसमाचार के मुताबिक ज़िंदगी जीना (फिलिप्पियों 1:27)।

इसीलिए, जब उन्होंने फिलिप्पियों 3:10 लिखना शुरू किया—जो आज हमारे सामने है—तो उन्होंने कहा, "मैं मसीह को जानना चाहता हूँ" (NIV)। यह बात उस बात से जुड़ी है जो पॉल पहले ही आयत 8 में कह चुके थे: कि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे बढ़कर है।" हालाँकि पॉल कभी फरीसी थे (आयत 5) और उन्हें कानून का बहुत ज्ञान था, फिर भी वे यह नहीं समझ पाए थे कि "कानून हमें मसीह तक पहुँचाने के लिए रखा गया था ताकि हम विश्वास से धर्मी ठहराए जा सकें" (गलातियों 3:24)। खासकर, मसीहा के बारे में बहुत ज्ञान होने के बावजूद, पॉल यह नहीं जानते थे कि यीशु ही मसीह हैं। उन्हें यह एहसास नहीं था कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं (देखिए प्रेरितों के काम 9:20)। नतीजतन, उन्होंने उन ईसाइयों पर बहुत ज़ोर-शोर से ज़ुल्म किया जो मानते थे कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं, और जो उनके बताए रास्ते पर चलते थे और उसका प्रचार करते थे। जब शाऊल ने दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु की आवाज़ सुनी—"शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों के काम 9:4)—और उन्हें यह विश्वास हो गया कि यीशु, यानी उन ईसाइयों के प्रभु जिन्हें वे इतनी शिद्दत से सताते थे, सचमुच मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं (आयत 20), तो उन्हें एहसास हुआ कि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान" सबसे ज़्यादा कीमती है (फिलिप्पियों 3:8)। यहाँ पॉल जिस "ज्ञान" की बात कर रहे हैं, वह सिर्फ़ मसीह यीशु के बारे में बौद्धिक ज्ञान नहीं है। वे जिस यूनानी शब्द (*gnōseōs*) का इस्तेमाल करते हैं, उसका मतलब है यीशु को "अनुभव से" या "व्यक्तिगत रूप से" जानना (देखिए यूहन्ना 10:27; 17:3; 2 कुरिन्थियों 4:6; 1 यूहन्ना 5:20)। इसके अलावा, यह ज्ञान मसीह के साथ साझा किए गए जीवन के समान है (गलातियों 2:20)। यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को जानने (आमोस 3:2) और उन्हें जानने के परिणामस्वरूप परमेश्वर से प्रेम करने और उनकी आज्ञा मानने से भी मेल खाता है (यिर्मयाह 31:34; होशे 6:3; 8:2)।

जब पॉल को एहसास हुआ कि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान" सबसे ज़्यादा कीमती है, तो उनके दो लक्ष्य थे—ऐसे लक्ष्य जो मेरे हिसाब से एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ये लक्ष्य थे "मसीह को पाना" (आयत 8) और "उनके साथ पूरी तरह एक हो जाना" (या, जैसा कि 'रिवाइज़्ड वर्शन' में कहा गया है, "उनमें पाया जाना") (आयत 9)। पॉल उस मसीह को पाना चाहते थे जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे, और वे मसीह के साथ आध्यात्मिक एकता की उस अवस्था को भी पाना चाहते थे—जो सच्ची धार्मिकता की अवस्था है। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान

के साथ आध्यात्मिक एकता के ज़रिए वे पहले ही धार्मिकता पा चुके थे; दूसरे शब्दों में, इस आध्यात्मिक एकता के ज़रिए वे पहले ही यीशु के साथ एक हो चुके थे। फिर भी, भले ही पॉल "पहले से ही" यीशु के साथ एक थे और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता मिली हुई थी, वे अभी तक पूर्णता की अवस्था तक नहीं पहुँचे थे। उनके सामने यीशु के साथ पूरी तरह एक होने की भविष्य की अवस्था थी—सच्ची धार्मिकता की अवस्था। चूँकि वे सच्चे दिल से यही चाहते थे, इसलिए उन्होंने न केवल उन शारीरिक चीज़ों को—जिन पर उन्होंने कभी भरोसा किया था—नुकसान माना, बल्कि उन्हें कूड़ा-करकट भी समझा (आयत 8)।

हममें से जो लोग यह मानते हैं कि "मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान" सबसे ज़्यादा कीमती है, हमारे लिए एक ही चीज़ है जिसे स्पष्ट करने और पूरा करने की कोशिश हमें करनी चाहिए, और वह है प्रभु द्वारा हमें दिया गया मिशन। वह मिशन है प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना और उस सुसमाचार के योग्य जीवन जीना।
“मैं उस रास्ते पर चलता हूँ जिस पर प्रभु अकेले चले थे;
मैं उस रास्ते पर चलता हूँ जहाँ उन्होंने अपना सारा लहू और पानी बहाया था।
ऊँचे-नीचे पहाड़ हों या धरती का कोई दूर-दराज़ कोना—मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता;
मैं मरती हुई आत्माओं के लिए अपनी जान देने की इच्छा रखता हूँ।
पिता, मुझे भेजिए; मैं यह दौड़ पूरी करूँगा।
मैं अपनी जान की परवाह नहीं करूँगा; कृपया, मुझे भेजिए।

ऊँचे-नीचे पहाड़ हों या धरती का कोई दूर-दराज़ कोना—मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता;
मैं मरती हुई आत्माओं के लिए अपनी जान देने की इच्छा रखता हूँ।
पिता, मुझे भेजिए; मैं यह दौड़ पूरी करूँगा।
मैं अपनी जान की परवाह नहीं करूँगा; कृपया, मुझे भेजिए।
भले ही दुनिया मुझसे नफ़रत करे, फिर भी मैं उससे प्यार करूँगा।
मैं उस क्रूस के पीछे चलता हूँ जो दुनिया को बचाता है।
आप, जिन्होंने मुझसे इतना प्यार किया कि अपनी जान दे दी—
इस दीन आत्मा को स्वीकार कीजिए; मैं भी आपसे प्यार करता हूँ।”

[गॉस्पेल गीत: “द कॉलिंग” (Samyeong)]

जो व्यक्ति परमेश्वर की कृपा से यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है—और जिसने यह महसूस किया है कि “अपने प्रभु मसीह यीशु को जानना सबसे अनमोल है”—उस धर्मी व्यक्ति का जीवन लगातार खुद को परमेश्वर को सौंपने का जीवन होता है (फिलिप्पियों 3:7–8)। साथ ही, धर्मी व्यक्ति का जीवन वह जीवन है जो यीशु मसीह को और गहराई से जानने की चाहत रखता है (पद 10)। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास करने वाला व्यक्ति यीशु मसीह जैसा बनकर सुसमाचार के योग्य जीवन जीना चाहता है (1:27)। पौलुस ने यीशु मसीह को जानने की कोशिश की (3:10) ताकि वह उस समानता के ज़रिए सुसमाचार के योग्य जीवन जी सके; तो फिर, यीशु मसीह का वह “अति उत्तम ज्ञान” क्या था जिसे पाने की वह इतनी इच्छा रखता था? आज का वचन, फिलिप्पियों 3:10, हमें तीन तरह से यह बताता है:

पहला, पौलुस मसीह के जी उठने की शक्ति का अनुभव करना चाहता था। कृपया आज का वचन, फिलिप्पियों 3:10 देखें: “मेरी इच्छा मसीह को सचमुच जानने और उसके जी उठने की शक्ति का अनुभव करने की है...” (समकालीन कोरियाई संस्करण)। तो फिर, यीशु मसीह के जी उठने की वह शक्ति क्या है जिसका अनुभव करने के लिए पौलुस तरसता था?

मुझे उस संदेश की याद आती है जो हमारे सीनियर पास्टर ने लगभग दो हफ़्ते पहले बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान दिया था; रोमियों 8:10–11 के आधार पर, उन्होंने परमेश्वर का वचन इस शीर्षक के तहत सुनाया: "वह तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा।" उस संदेश को सुनने के बाद, मैंने पास्टर के ऑफिस में सीनियर पास्टर के उपदेश का सारांश इस प्रकार दिया: "एक दिन, हम सब मर जाएंगे (सभोपदेशक 7:2)। हम शरीर और आत्मा से बने हैं (रोमियों 8:10); दूसरे शब्दों में, हमारे शरीर 'नश्वर शरीर' हैं (वचन 11)। हमारे शरीर और आत्मा दोनों की मृत्यु का कारण एक मनुष्य, आदम का पाप है—मूल पाप (5:12)। हालाँकि, यदि मसीह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर वास करते हैं, तो भले ही पाप के कारण शरीर मर चुका हो, आत्मा जीवित रहती है (8:11)। जब हम मरते हैं, तो हमारे शरीर धूल में मिल जाते हैं, लेकिन हमारी आत्माएँ स्वर्ग में चली जाती हैं। मसीह यीशु

मरे हुओं में से जी उठे, और वे उन लोगों के लिए 'पहला फल' बने जो सो गए हैं—यानी, जो मर चुके हैं (1 कुरिन्थियों 15:20)। यीशु जी उठे हैं। चूँकि यीशु जी उठे, इसलिए हम जो उनमें विश्वास करते हैं—जो मसीह के हैं (वचन 23)—हम भी शारीरिक मृत्यु के बाद फिर से जी उठेंगे। यीशु का पुनरुत्थान ही हमारा पुनरुत्थान है। परमेश्वर, जिन्होंने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वे पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देंगे (रोमियों 8:11)। चूँकि पुनरुत्थान त्रिएक परमेश्वर का कार्य है (वचन 11), इसलिए हम निश्चित रूप से फिर से जी उठेंगे। जब आखिरी तुरही फूँकी जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:52) और यीशु वापस आएंगे (वचन 23), तो हम मसीह के पुनर्जीवित शरीर के समान महिमामय शरीरों के साथ जी उठेंगे (फिलिप्पियों 3:21; तुलना करें 1 यूहन्ना 3:2)। इसलिए, हमें हमेशा प्रभु के काम में पूरी तरह से खुद को समर्पित करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।" आज के अंश, फिलिप्पियों 3:10 में, पौलुस—जिन्हें दमिश्क के रास्ते पर पुनर्जीवित यीशु से मिलने के बाद उद्धार और एक मिशन मिला था—फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हैं और यीशु के पुनरुत्थान की शक्ति का अनुभव करने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं। यीशु मसीह के जी उठने की जिस शक्ति का अनुभव करने की वे इच्छा रखते थे, वही शक्ति थी जिसके द्वारा परमेश्वर पिता ने पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था; चूँकि वही पवित्र आत्मा पौलुस के भीतर वास करता था—जो यीशु मसीह में विश्वास करता था—इसलिए पौलुस उसी आत्मा द्वारा अपने नश्वर शरीर को जीवित किए जाने का अनुभव करना चाहता था (रोमियों 8:11)। वह ऐसा इसलिए चाहता था क्योंकि, यद्यपि वह "पहले ही" यीशु के साथ एक हो चुका था और परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त कर चुका था, फिर भी वह सच्ची धार्मिकता की अवस्था—यीशु के साथ पूर्ण मिलन की अवस्था—तक पहुँचना चाहता था, जो अभी आनी बाकी थी और जिसका उसने "अभी तक" पूरी तरह से अनुभव नहीं किया था।

जब "अंतिम तुरही" फूँकी जाएगी, तो हम पलक झपकते ही बदल दिए जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। हम अब ऐसे शरीर धारण नहीं करेंगे जो कमजोर, नाशवान या पाप की ओर प्रवृत्त हों। इसके बजाय, हम तुरंत बदल दिए जाएँगे और ऐसे शरीर धारण करेंगे जो मजबूत, अविनाशी और महिमामय होंगे (पद 42–44, 52–54)। प्रभु "हमारे दीन शरीरों को बदल देगा ताकि वे उसके महिमामय शरीर के समान हो जाएँ" (फिलिप्पियों 3:21)। अंतिम दिन, जो प्रभु में सो गए हैं, वे भी महिमामय आत्मिक शरीरों में जी उठेंगे; हम सब मिलकर स्वर्ग के अनंत राज्य में जाएँगे और सदा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। मसीहियों के रूप में, जो जी उठने की

इस अनंत आशा को रखते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी, पौलुस की तरह, पृथ्वी पर रहते हुए यीशु के जी उठने की शक्ति का अनुभव करने की सच्ची इच्छा रखें।

दूसरी बात, पौलुस मसीह के दुखों में सहभागी होना चाहता था। आज के वचन, फिलिप्पियों 3:10 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के संतों को लिखता है: "...उसके दुखों में सहभागी होना..." पौलुस, जो मसीह को वास्तव में जानना चाहता था, मसीह के दुखों में भाग लेना चाहता था। यह यीशु मसीह के उस सर्वोच्च ज्ञान का दूसरा पहलू था जिसे प्रेरित पौलुस प्राप्त करना चाहता था।

हमें दुख क्यों सहना पड़ता है? शनिवार, 11 अक्टूबर, 2014 को, एलॉइस—सिस्टर केली (गायन) की प्यारी दूसरी बेटी, जो हमारी कलीसिया की इंग्लिश मिनिस्ट्री में आती थी—एक स्विमिंग पूल में गिरने के बाद लगभग डूब ही गई थी। सिस्टर केली सदमे में थीं; उन्होंने अपनी बेटी को पानी में तैरते और उसका शरीर नीला पड़ते देखा था, तभी एक अजनबी ने बच्ची को बाहर निकाला और CPR दिया। इस मुश्किल घड़ी में, सिस्टर केली भगवान से ज़ोरदार प्रार्थना कर रही थीं। शुक्र है कि बाद में उन्होंने रोते हुए मुझे फ़ोन करके बताया कि उनकी प्यारी बच्ची उस जानलेवा हादसे से बच गई है। जब एलोइस इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में थी, तो सिस्टर केली ने मुझे अस्पताल के बिस्तर पर बैठी बच्ची की एक फ़ोटो और अपनी गवाही भेजी। उस गवाही का निचोड़ यह था, "आखिरकार, हर चीज़ का जवाब यीशु मसीह ही हैं..." मुझे हैरानी इस बात से हुई कि ठीक दो दिन पहले—गुरुवार, 9 तारीख की सुबह की प्रार्थना सभा में—हमने उस कहानी पर मनन किया था जिसमें यीशु ने पानी में डूबते हुए पतरस को तुरंत बचाया था (मत्ती 14:24 के आधार पर)। उस मनन का निष्कर्ष यह था कि भगवान हमें जो दुख सहने देते हैं, उसका मकसद हमें यह जानने में मदद करना है कि भगवान कौन हैं और हमें विश्वास का सही इकरार करने की ओर ले जाना है। क्या आपको समझ आने लगा है कि भगवान हमें दुख का सामना क्यों करने देते हैं? अगर आप अभी मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं, तो मैं आपको हिम्मत बढ़ाने वाली तीन बातें बताना चाहूँगा:

(1) दुख हमारे लिए फ़ायदेमंद हो सकता है।

भजन संहिता 119:71 देखिए: “मेरे लिए अच्छा हुआ कि मैं दुखी हुआ, ताकि मैं तेरे नियम सीख सकूँ।” ऐसे दुख का फ़ायदा यह है कि (a) इससे हमें पता चलता है कि हम कब भटक गए हैं। भजन संहिता 119:67 का पहला हिस्सा देखिए: “दुखी होने से पहले मैं भटक गया था...” अक्सर, हमें पता ही नहीं चलता कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं, जब तक कि हम पर कोई दुख न आए। प्रभु की इजाज़त से आए दुख के ज़रिए ही हमें होश आता है। जैसे एक चरवाहा लड़का अपनी लाठी का इस्तेमाल करके रास्ते से भटक गई भेड़ को सही रास्ते पर वापस लाता है, वैसे ही प्रभु—जो हमारे चरवाहे हैं—भटक जाने पर हमें सही रास्ते पर लाने के लिए दुख की लाठी का इस्तेमाल करते हैं। (b) दुख हमें प्रभु के वचन को मानने के लिए प्रेरित करता है। भजन संहिता 119:67 देखिए: “दुखी होने से पहले मैं भटक गया था, लेकिन अब मैं तेरे वचन को मानता हूँ।”

(2) दुख एक ऐसी परीक्षा हो सकती है जो हमें परमेश्वर के वचन से दूर ले जाए, लेकिन साथ ही, यह उसके और करीब आने का एक शानदार मौका भी हो सकता है।

जब आप दुख का सामना करते हैं, तो आपको परमेश्वर के वादों को मज़बूती से थामे रखने, उसे पुकारने और उसके वचन को मानने का मौका नहीं गँवाना चाहिए, और इस तरह उस वचन को सचमुच अपना बना लेना चाहिए (भजन संहिता 119:49–56)।

(3) दुख एक ऐसा ज़रिया भी हो सकता है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर हमारे दिलों को शुद्ध करने के लिए करते हैं। जैसे एक लोहार चाँदी को भट्टी में डालकर तेज़ आँच से उसकी अशुद्धियाँ दूर करता है (नीतिवचन 25:4), वैसे ही परमेश्वर हमें हमारे दिलों को शुद्ध करने (नीतिवचन 17:3) और हमारी परीक्षा लेने (अय्यूब 23:10) के लिए “दुख की भट्टी” (यशायाह 48:10) में डालते हैं। उनका मकसद हमें ऐसे बर्तन बनाना है जो इस्तेमाल के लायक हों (नीतिवचन 25:4)। उनका मकसद हमें साफ़ करना और हमें मालिक के इस्तेमाल के लायक बर्तन बनाना है—पवित्र बर्तन जो “सम्मानजनक कामों” के लिए हों (2 तीमुथियुस 2:21)।

पौलुस मसीह के दुखों में शामिल होना चाहते थे (फिलिप्पियों 3:10)। क्या यह दिलचस्प बात नहीं है? ज़रा सोचिए: जो व्यक्ति कभी ईसाइयों पर ज़ोर-शोर से ज़ुल्म करता था—उन्हें तकलीफ़ और दर्द देता था—वह यीशु से मिला,

जिन्होंने खुद दुख सहा, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और जो तीसरे दिन फिर जी उठे। यीशु पर विश्वास करने के बाद, जो व्यक्ति पहले ज़ुल्म करता था, अब वह मसीह के दुखों में भी शामिल होना चाहता था, ठीक वैसे ही जैसे वे ईसाई शामिल होते थे जिन पर उसने कभी ज़ुल्म किया था। दिल में किस बदलाव की वजह से पौलुस मसीह के दुखों में शामिल होना चाहता था? मुझे इसका जवाब फिलिप्पियों 1:29 में मिला: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है।" दूसरे शब्दों में, पौलुस मसीह के दुखों में शामिल होना चाहता था क्योंकि उसे एहसास हुआ था कि यीशु मसीह में विश्वास रखने वाले के तौर पर, उनके लिए दुख सहना परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है। इसलिए, पौलुस ने कुलुस्सियों 1:24 में कहा: "अब मैं उन दुखों में आनंदित होता हूँ जो मैं तुम्हारे लिए सहता हूँ, और अपने शरीर में मैं मसीह के दुखों की उस कमी को पूरा कर रहा हूँ जो उनकी देह, यानी कलीसिया के लिए है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। जब हम, यीशु की तरह, कलीसिया के लिए अपने शरीर में दुख सहते हैं, तो प्रभु हमें जो दिलासा देते हैं, वह इस बात में है कि मसीह हमारे साथ दुख सहते हैं (रोमियों 8:17) और कोई भी चीज़ हमें मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (पद 35, 39)।

फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने सुसमाचार के काम में उनकी भागीदारी के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो "पहले दिन से लेकर अब तक" जारी थी (1:3-5)। उसने उन्हें यह भी समझाया कि यीशु मसीह के लिए दुख सहने को—उन लोगों के तौर पर जो उस पर विश्वास करते हैं—परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह माना जाए (पद 29)। बाइबल हमें यहाँ यह सिखाती है कि मसीह के सुसमाचार में शामिल होने का मतलब है मसीह के दुखों में शामिल होना। इसके बाद, फिलिप्पियों 3:10 में—जो आज हमारे सामने है—पौलुस मसीह के दुखों में शामिल होने की अपनी इच्छा ज़ाहिर करता है क्योंकि वह यीशु मसीह को सचमुच जानना चाहता है। पौलुस यीशु मसीह के दुखों में शामिल होने से क्यों नहीं कतराया? मेरा मानना है कि इसके कम से कम दो कारण थे। (1) पहला, पौलुस यीशु मसीह के दुखों में शामिल होकर आज्ञाकारिता सीखना चाहता था। इब्रानियों 5:8 पर गौर करें: “भले ही वह पुत्र थे, फिर भी उन्होंने जो दुख सहे, उनसे आज्ञा मानना सीखा।” (2) दूसरी बात, पौलुस का मानना था कि “हम अभी जो दुख सहते हैं, उनकी तुलना उस महिमा से बिल्कुल नहीं की जा सकती जो भविष्य में हमें दिखाई जाएगी” (रोमियों 8:18, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

हमें भी दुख सहकर आज्ञा मानना सीखना चाहिए। इसके अलावा, आज्ञा मानकर हमें परमेश्वर पिता के दिल को समझना चाहिए (होशे 1)। हमें उस महिमा पर भी विचार करना चाहिए जो हमें दिखाई जाएगी—ऐसी महिमा जिसकी तुलना हमारे वर्तमान दुखों से नहीं की जा सकती। ऐसा करते हुए, पौलुस की तरह हमें भी यीशु मसीह के दुखों में भागीदार बनना चाहिए।

तीसरी बात, पौलुस मसीह की मृत्यु का अनुकरण करना चाहते थे।

बाइबल के बाद शुरुआती धार्मिक ग्रंथों में तीन किताबें प्रमुख स्थान रखती हैं: ऑगस्टीन की *कन्फेशन्स* (Confessions), जॉन बनियन की *द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* (The Pilgrim's Progress), और थॉमस ए केम्पिस की *द इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट* (The Imitation of Christ)। थॉमस ए केम्पिस की *द इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट* के अध्याय 23 में, जिसका शीर्षक है "मृत्यु पर मनन करना" (On Meditating on Death), लेखक लिखते हैं:

"आज मृत्यु से बचने की तुलना में दिन-प्रतिदिन पाप से बचना आसान है। इसके अलावा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम जितना अधिक समय तक जीवित रहते हैं, हमारे पाप उतने ही बढ़ते जाते हैं। यदि आप मृत्यु से डरते हैं, तो आपको यह समझना चाहिए कि लंबी आयु जीना और भी अधिक डरने वाली बात है। इसलिए, हमेशा मृत्यु के लिए तैयार रहें (लूका 21:36)। बुद्धिमान और धन्य है वह व्यक्ति जो ऐसा जीवन जीने का प्रयास करता है जिस पर उसे मृत्यु के दिन पछतावा न हो। अपनी आत्मा के उद्धार को बाद के लिए न टालें, और दोस्तों या पड़ोसियों पर निर्भर न रहें। जब अनंत जीवन पहुँच के भीतर हो, तब अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन न जीना वास्तव में खेदजनक है। आत्मविश्वास के साथ मृत्यु का सामना करने के लिए, पश्चाताप के माध्यम से अपने शरीर को वश में करें। जब आप मरेंगे, तो आपको कौन याद रखेगा, और आपके लिए कौन प्रार्थना करेगा? इसलिए, मेरे दोस्त, अभी वह सब कुछ करें जो आप कर सकते हैं। जब तक समय है, अपने लिए अनंत धन इकट्ठा करें (लूका 12:33)। केवल उद्धार के बारे में सोचें और अपना ध्यान पूरी तरह से परमेश्वर की बातों पर केंद्रित करें। ऐसा जीवन जिएं कि मृत्यु के बाद आपकी आत्मा खुशी-खुशी परमेश्वर से मिल सके" (इंटरनेट)। आज के वचन, फिलिप्पियों 3:10 को देखें: "मेरी इच्छा है कि मैं मसीह को सचमुच जानूँ, उनके जी उठने की शक्ति का अनुभव करूँ, उनके दुखों में शामिल होऊँ और उनकी मृत्यु के अनुरूप बनूँ" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यहाँ पौलुस का क्या मतलब है

जब वह मसीह की मृत्यु के अनुरूप बनने की बात करते हैं? हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं (वाल्वोर्ड): (1) जैसे मसीह पाप *के लिए* मरे, वैसे ही पौलुस—जो पाप *के प्रति* मर चुके हैं (रोमियों 6:2, 6–7; कुलुस्सियों 3:3)—"पुराने स्वभाव" (जो यीशु पर विश्वास करने पर खत्म हो गया था) के पापपूर्ण जीवन से अलग जीवन जीना चाहते हैं और अपने रोज़मर्रा के जीवन में उस अलगाव को बनाए रखना चाहते हैं (रोमियों 6:1–4, 11–14)। (2) जैसे मसीह सुसमाचार का प्रचार करते हुए मरे, वैसे ही पौलुस मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हुए मरना चाहते हैं; दूसरे शब्दों में, वह ऐसी मृत्यु का अनुभव करना चाहते हैं जो फायदेमंद हो। फिलिप्पियों 1:20–21 पर विचार करें: "मेरी गहरी उम्मीद और आशा है कि मुझे किसी भी तरह से शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा, बल्कि हमेशा की तरह पूरी हिम्मत होगी, ताकि मेरे शरीर के द्वारा मसीह की महिमा हो, चाहे जीवन से या मृत्यु से। क्योंकि मेरे लिए, जीना मसीह है और मरना लाभ है।" यह "फायदेमंद मृत्यु" मृत्यु तक प्रभु की इच्छा का पालन करने की पौलुस की इच्छा को दर्शाती है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने पिता की इच्छा का पालन "मृत्यु तक" किया (2:8)। संक्षेप में, जब पौलुस मसीह की मृत्यु का अनुकरण करने की बात करते हैं, तो उनका मतलब है कि वह मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहते हैं, उस सुसमाचार के योग्य जीवन जीना चाहते हैं, और यहाँ तक कि शहादत का सामना भी करना चाहते हैं। इस प्रकार, उन्होंने पहले ही फिलिप्पियों 2:17 में कहा था: "भले ही मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा पर पेय-बलिदान (drink offering) की तरह उँडेल दिया जाऊँ, फिर भी मैं आनंदित होता हूँ और तुम सबके साथ अपना आनंद साझा करता हूँ।" यहाँ, "पेय-बलिदान" शब्द का अर्थ बलिदान पर डाली जाने वाली वाइन (मदिरा) से है; पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के संतों से कह रहे हैं कि अगर उनका अपना खून भी ऐसे ही बलिदान के रूप में बहाया जाए, तो भी वे आनंदित होंगे (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, पॉल कह रहे हैं कि अगर उन्हें शहादत भी देनी पड़े, तो भी वे खुश होंगे।

मेरा मानना है कि एपफ्रॉडिटस ने पॉल के इस नज़रिए को अपनाया (1:25)। ऐसा इसलिए है क्योंकि एपफ्रॉडिटस ने "मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली" (v. 30)। दूसरे शब्दों में, मसीह की मौत जैसा बनने की पॉल की इच्छा का मतलब था कि वे यीशु मसीह जैसा बनना चाहते थे (3:10)। दमिश्क के रास्ते पर जी उठे परमेश्वर से मिलने पर उन्हें विश्वास के ज़रिए पहले ही उद्धार और धार्मिकता मिल चुकी थी। फिर भी, वे पूरी तरह से धार्मिक होने की स्थिति तक नहीं पहुँचे थे। "पहले ही मिल चुकी" और "अभी नहीं मिली" स्थिति के बीच के तनाव में जीते हुए, पॉल का लक्ष्य यीशु मसीह जैसा बनना था (मैकआर्थर)। दूसरे शब्दों में, वे पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले काम के लिए बहुत उत्सुक थे। इसीलिए, फिलिप्पियों 3:9 में, पॉल ने उस चीज़ के

बारे में बात की जो "मसीह में विश्वास के ज़रिए" मिलती है—खासकर, "वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर परमेश्वर से मिलती है।" संक्षेप में, आयत 9 में "धार्मिकता" (जिसके तहत कोई व्यक्ति यीशु में विश्वास के ज़रिए धर्मी घोषित किया जाता है) के बारे में बात करने के बाद, वे आयत 10 में "पवित्रता" के बारे में बात करते हैं।

"पवित्रीकरण" (sanctification) क्या है? वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म का सवाल 35 कहता है: "पवित्रीकरण परमेश्वर की मुफ्त कृपा का काम है, जिसके द्वारा हम पूरे इंसान के तौर पर परमेश्वर के स्वरूप में नए हो जाते हैं, और पाप के प्रति मरने और धार्मिकता के प्रति जीने के लिए और अधिक सक्षम हो जाते हैं" (इंटरनेट)। हमारे पवित्रीकरण में परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार ज्ञान, धार्मिकता और पवित्रता में नया होना शामिल है (कुलुस्सियों 3:10; इफिसियों 4:24)। हमारा पवित्रीकरण महिमा-प्राप्ति (glorification) के चरण में पूरा होता है—जब हम पाप से पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं और पूरी तरह से परमेश्वर का स्वरूप पा लेते हैं। इस पवित्रीकरण के दो पहलू हैं: (1) मॉर्टिफिकेशन (mortification): धीरे-धीरे पाप को खत्म करना (रोमियों 6:11), और (2) विविफिकेशन (vivification): धार्मिकता के प्रति जीना (पद 13) (इंटरनेट)। तो फिर, पौलुस—जो पहले ही यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जा चुका था—पवित्रीकरण, यानी यीशु जैसा बनने की प्रक्रिया के लिए क्यों तरसता था? कारण यह है कि वह मरे हुओं में से जी उठने (resurrection) को प्राप्त करना चाहता था (फिलिप्पियों 3:11)। दूसरे शब्दों में, पौलुस, जो पहले ही यीशु मसीह में विश्वास से धर्मी ठहराया जा चुका था, पवित्रीकरण के लिए तरसता था क्योंकि वह मरे हुओं में से जी उठने को प्राप्त करने की गहरी इच्छा रखता था। यहाँ पौलुस का "मरे हुओं में से जी उठने को प्राप्त करने" से क्या मतलब है? इसे दो तरह से समझा जा सकता है: (1) सचमुच शारीरिक मृत्यु से फिर से जी उठना, और (2) आध्यात्मिक मृत्यु की स्थिति से फिर से जी उठना। हालाँकि, चूँकि पौलुस दमिश्क के रास्ते पर यीशु मसीह से मिलने और विश्वास करने के माध्यम से आध्यात्मिक मृत्यु से पहले ही जी उठ चुका था, इसलिए फिलिप्पियों 3:11 में "मरे हुओं में से जी उठने को प्राप्त करने" के बारे में उसका बयान शारीरिक मृत्यु से फिर से जी उठने की ओर इशारा करता है। इसके अलावा, जिस शरीर के जी उठने की वह बात करता है, वह यीशु के दूसरे आगमन (Second Coming) के उस पल को दर्शाता है, जब उसका मृत शरीर जी उठता है, महिमा से ढका जाता है, और पूर्ण धार्मिकता की स्थिति में प्रवेश करता है। इसीलिए पौलुस यीशु मसीह जैसा बनने के लिए इतनी गहरी इच्छा रखता था।

क्या आप यीशु जैसा नहीं बनना चाहते? मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब, पौलुस की तरह, यीशु जैसा बनने को अपना स्पष्ट और एकमात्र मकसद बनाएँ। आइए हम उस मिशन को पूरा करने के लिए आगे बढ़ें जिसके लिए परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में ऊपर से बुलाया है। प्रभु ने हमें जो मिशन सौंपा है, वह है यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही देना और उनके जैसा बनकर सुसमाचार के योग्य जीवन जीना। यह हमारी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि परमेश्वर की कृपा से यीशु में विश्वास के द्वारा हमें धर्मी ठहराया गया है। अगर हमने सच में यह महसूस किया है कि "अपने प्रभु यीशु मसीह को जानना सबसे ज़्यादा कीमती है," तो हमें लगातार सब कुछ छोड़ते हुए—बाकी सब चीज़ों को एक तरफ़ करते हुए—जीवन जीना चाहिए। साथ ही, हमें यीशु मसीह को और ज़्यादा जानने की इच्छा रखनी चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब यीशु मसीह के जैसा बनकर सुसमाचार के योग्य जीवन जिएँ।

लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें!

"भाइयो, मैं यह नहीं मानता कि मैंने इसे अभी पा लिया है। लेकिन मैं एक काम करता हूँ: जो पीछे छूट गया है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर पूरी ताकत से बढ़ते हुए, मैं उस इनाम के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ जो मसीह यीशु में परमेश्वर के बुलावे से मिलता है" (फिलिप्पियों 3:13-14)।

जब हम साल 2004 को अलविदा कह रहे हैं—इसे हमेशा के लिए बीते हुए कल में जाने दे रहे हैं—और उम्मीदों भरे नए साल 2005 का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं, तो मैंने ऊपर दिए गए वचन पर मनन करने के लिए यह कीमती समय निकाला है।

पौलुस दो तरीके बताता है जिनसे हमें लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है। पहला, हमें पीछे की बातों को भूल जाना चाहिए; दूसरा, हमें आगे की बातों को पाने की कोशिश करनी चाहिए।

यहाँ पौलुस का "पीछे की बातों" से क्या मतलब है? हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं। पहला, मेरा मानना है कि इसका मतलब "शरीर पर भरोसा" है जिसका ज़िक्र पहले फिलिप्पियों 3:4 में किया गया है। जब पौलुस को शाऊल के नाम से जाना जाता था, तो उसके पास शरीर से जुड़ी ऐसी खूबियाँ थीं जो किसी और से कहीं ज़्यादा प्रभावशाली थीं (वचन 5-6)। फिर भी, पौलुस ने उन चीज़ों को, जो कभी उसके लिए "फायदा" थीं, "नुकसान" मानना शुरू कर दिया (वचन 7-8)। दूसरा, मेरा मानना है कि "पीछे की बातों" का मतलब उन कामों से है जो प्रभु ने यह पत्र लिखने से पहले उसके ज़रिए पूरे किए थे। बेशक, पौलुस एक प्रेरित था जिसने प्रभु के लिए कई अद्भुत काम किए थे। फिर भी, खुद को हमेशा एक "अयोग्य सेवक" (लूका 17:10) मानते हुए, उसने प्रभु के लिए हासिल की गई चीज़ों को अपने दिमाग से निकालने की कोशिश की। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसका मानना था कि प्रभु भविष्य में और भी बड़े काम करेंगे।

मैंने इस वचन को अपने जीवन में लागू किया है। मैं "पीछे की बातों" को भूलना चाहता हूँ—यानी शरीर से जुड़ी वे बातें जिन पर मैंने कभी भरोसा किया था, और साथ ही वे काम जो प्रभु ने इस अयोग्य सेवक के ज़रिए 2004 में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में पूरे किए थे। पहली वजह यह है कि, जैसे-जैसे प्रभु मुझे नए सिरे से स्थापित कर रहे हैं, मैं अपने शरीर की उन चीज़ों को छोड़ना चाहता हूँ जिन पर मैं शायद अभी भी भरोसा करता हूँ; मैं भरोसे के इन शारीरिक आधारों को भूलना चाहता हूँ क्योंकि मुझे यीशु को जानने की बेमिसाल अहमियत का एहसास हो रहा है। दूसरी बात, मैं 2004 को विश्वास के साथ पीछे छोड़ना चाहता हूँ क्योंकि प्रभु नए साल 2005 में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के अंदर—और हमारे ज़रिए—और भी बड़े काम करने वाले हैं।

पौलुस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा, जो पीछे था उसे भूलकर और जो आगे था उसे पाने की कोशिश में लगा रहा। तो फिर, "जो आगे है" से उसका क्या मतलब था? इसे कुछ तरीकों से समझा जा सकता है। पहला, पौलुस के लिए "आगे की चीज़" वही काम था जिसका ज़िक्र प्रेरितों के काम 9:15 में है—गैर-यहूदियों, राजाओं और इस्राएल के लोगों के सामने यीशु का नाम बताना (सुसमाचार का प्रचार करना)। पौलुस प्रभु का एक ऐसा सेवक था जिसे अपने मिशन का साफ़ पता था, एक ऐसा प्रेरित जिसने उस बुलाहट को पूरा करने में अपनी जान की भी परवाह नहीं की। दूसरा, पौलुस के लिए "आगे की चीज़" एक शब्द में कहें तो, मौत थी। फिलिप्पियों 3:10 में, पौलुस अपनी इच्छा के बारे में बताता है कि वह "मसीह को और उसके जी उठने की शक्ति को और उसके दुखों में उसकी संगति को जानना" चाहता है। कोई जी उठने की शक्ति को कैसे जान सकता है? क्या दुखों में शामिल होकर और आखिर में मौत का सामना करके ही कोई जी उठने की शक्ति को नहीं जान पाता? तो फिर, कोई मसीह को पूरी तरह कैसे जान सकता है? क्या यह सच नहीं है कि हम प्रभु को पूरी तरह तभी जान सकते हैं जब हम मरें, फिर से जी उठें, स्वर्ग जाएँ और उन्हें आमने-सामने देखें? पौलुस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा—यहाँ तक कि मौत तक—सिर्फ़ इसलिए क्योंकि वह यीशु को जानना चाहता था। और अब, प्रभु को आमने-सामने देखकर, वह निश्चित रूप से प्रभु को पूरी तरह जानता है, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु उसे पूरी तरह जानते हैं।

पूरे 2004 के दौरान, हमने उस वादे को थामे रखा जो प्रभु ने हमारी विक्ट्री कम्युनिटी को दिया था: "मैं अपना कलीसिया बनाऊँगा" (मत्ती 16:18)। हमने अपने बीच परमेश्वर के दयालु हाथ को काम करते देखा है। हम लगातार प्रभु को अपना वादा पूरा करते हुए देख रहे हैं। फिर भी, मैं 2004 को हमेशा के लिए बीते हुए समय में

जाने देना चाहता हूँ; मैं इसे पीछे छोड़ना चुनता हूँ। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मेरा मानना है और मुझे पक्का यकीन है कि नए साल 2005 में, प्रभु इस साल किए गए कामों से भी बड़े काम करेंगे। मैं 2004 को पीछे छोड़ने का फ़ैसला करता हूँ क्योंकि महान परमेश्वर हमारे बीच और हमारे ज़रिए और भी बड़े काम करेंगे। मैं 2005 के नए साल की शुरुआत प्रभु के साथ करना चाहता हूँ—प्रार्थना करते हुए, उम्मीद रखते हुए और इंतज़ार करते हुए। मेरा मकसद सिर्फ़ उनके वादे को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ना है। प्रभु हमें मज़बूत बनाएँगे। हमारे ज़रिए, प्रभु परमेश्वर का राज्य स्थापित करेंगे। जब हम इस लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे, तो प्रेरित पौलुस की तरह हमें भी अपनी जान तक देने के लिए तैयार रहना होगा।

आइए हम परिपक्व विश्वास वाले मसीही बनें

[फिलिप्पियों 3:15-16]

क्या आपने कभी "ग्रोइंग पेन्स" (बढ़ने के दौरान होने वाला दर्द) शब्द सुना है? "ग्रोइंग पेन्स" का मतलब है वह शारीरिक तकलीफ जो बच्चों या किशोरों को तेज़ी से बढ़ते समय होती है, या इसे लाक्षणिक रूप से भी इसी तरह बताया जाता है। यह दर्द आमतौर पर घुटनों, टखनों, जांघों, पिंडलियों या बाहों जैसी जगहों पर होता है। कहा जाता है कि 4 से 12 साल की उम्र के लगभग 10-20% बच्चों को यह दर्द होता है। "ग्रोइंग पेन्स" बच्चे के विकास का एक स्वाभाविक हिस्सा हैं; दूसरे शब्दों में, यह एक तरह की तकलीफ है जिसे बच्चे के बढ़ने के लिए सहना ही पड़ता है।

डैनियल गॉटलिब, जो *द रोड लेस ट्रैवल्ड* (या इस विषय पर इसी तरह की अन्य रचनाओं) जैसी किताबों के लेखक हैं, ने एक बार कहा था: "किसी व्यक्ति की महानता को उसके दुख सहने की क्षमता से मापा जा सकता है। महान लोग खुशी-खुशी दुख को अपनाते हैं। इस तरह, यह विरोधाभास सच साबित होता है कि दुख असल में खुशी है।" आप क्या सोचते हैं? क्या आप इस बात से सहमत हैं कि "किसी व्यक्ति की महानता उसके दुख सहने की क्षमता से मापी जाती है"?

जिस तरह शारीरिक रूप से परिपक्व होने के लिए बच्चे को "ग्रोइंग पेन्स" सहने पड़ते हैं, उसी तरह हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए हममें से हर एक को दुख से गुज़रना पड़ता है। दुख चाहे किसी भी रूप में आए, अगर हम सचमुच अपने विश्वास को बढ़ाना चाहते हैं, तो हमें उसे सहने के लिए तैयार रहना होगा। इसके अलावा, हमें यह पक्का करना होगा कि यह दुख हमारे आध्यात्मिक विकास में योगदान दे। अगर ऐसे दुख से हमारा विश्वास मज़बूत हो सकता है, तो हमें खुशी-खुशी उस रास्ते पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। इसलिए, हमारे विश्वास

को बढ़ना चाहिए। साथ ही, हमारे विश्वास को परिपक्व भी होना चाहिए। परमेश्वर याकूब 1:4 में हमसे यही कहते हैं: "इसलिए, अंत तक डटे रहो और पूर्ण व परिपक्व बनो, ताकि तुममें किसी चीज़ की कमी न रहे।"

आज, फिलिप्पियों 3:15-16 के अंश और "आइए हम परिपक्व विश्वास वाले मसीही बनें" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि ऐसे मसीही अपने विश्वास को कैसे जीते हैं और उससे क्या सीख सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि हम सभी विनम्रता से इन शिक्षाओं को स्वीकार करेंगे और उनका पालन करेंगे, और परिपक्व विश्वास वाले मसीही के रूप में और अधिक विकसित होंगे। फिलिप्पियों 3:15 के पहले हिस्से को देखिए: “इसलिए, हममें से जो परिपक्व हैं, वे ऐसा ही सोचें” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “इसलिए, जिनका विश्वास परिपक्व है, उन्हें इसी सोच के साथ जीना चाहिए”]। हम कैसे जान सकते हैं कि हमारा विश्वास बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है? मुझे इसका जवाब यीशु के 'बीज बोने वाले के दृष्टांत' में मिला। मरकुस 4:20 को देखिए: “और जो अच्छी मिट्टी में बोए गए, वे वे हैं जो वचन को सुनते हैं और उसे स्वीकार करते हैं और फल लाते हैं—तीस गुना, साठ गुना और सौ गुना।” जिस मसीही का विश्वास बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है, उसका हृदय यीशु के दृष्टांत की “अच्छी मिट्टी” जैसा होता है। ऐसे मसीही के हृदय में—जो अच्छी मिट्टी जैसा हृदय है—परमेश्वर का वचन बोया जाता है, इस बात को तीन बिंदुओं में संक्षेप में बताया जा सकता है: (1) जिस मसीही का विश्वास बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है, वह परमेश्वर का वचन सुनता है (पद 20) और तुरंत उसे खुशी के साथ ग्रहण करता है (पद 16)। (2) जिन मसीहियों का विश्वास बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है, वे धैर्यपूर्वक सहते हैं और परमेश्वर के वचन के कारण आने वाली मुसीबतों या सताहट का सामना करते समय डगमगाते नहीं हैं (पद 17)। (3) जिन मसीहियों का विश्वास बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है, वे दुनिया की चिंताओं, धन के लालच और अन्य इच्छाओं का सामना करते हैं और उन पर विजय पाते हैं—जो अन्यथा वचन में बाधा डाल सकती थीं—और इस प्रकार फल लाते हैं (पद 19)।

क्या आप जानते हैं कि फिलिप्पी की कलीसिया के लिए पौलुस की चिंता क्या थी? वह ठीक कलीसिया के सदस्यों के “विश्वास में प्रगति और आनंद” के बारे में थी (1:25)। उन्हें उनके विश्वास में प्रगति और आनंद की इतनी गहरी परवाह थी कि उन्होंने कहा कि उनकी भलाई के लिए इस दुनिया में बने रहना उनके लिए अधिक आवश्यक था (पद 24, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। फिलिप्पियों को लिखते समय, पौलुस ने माना कि “मसीह के साथ

रहने के लिए इस दुनिया से चले जाना" कहीं बेहतर था—और यह कुछ ऐसा था जिसकी वे व्यक्तिगत रूप से इच्छा करते थे (पद 23)—फिर भी उन्होंने उनके विश्वास में प्रगति और आनंद के लिए इस दुनिया में बने रहने की आवश्यकता पर जोर दिया (पद 24–25)। पॉल फिलिप्पी के विश्वासियों के विश्वास में तरक्की और खुशी के लिए बहुत ज़्यादा चिंतित थे; वे यीशु मसीह के दिल से उनके लिए तड़पते थे (1:8)। इसी गहरी चिंता के कारण, पॉल फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हैं, और आज के हिस्से—फिलिप्पियों 3:15—में वे उनसे कहते हैं: "इसलिए, जो लोग विश्वास में परिपक्व (mature) हैं, उन्हें इसी सोच के साथ जीना चाहिए" (*Contemporary Korean Version*)। इसका क्या मतलब है? पॉल फिलिप्पी के विश्वासियों से कह रहे हैं कि "जो लोग विश्वास में परिपक्व हैं, उन्हें इसी सोच के साथ जीना चाहिए।" यहाँ, हमें दो बातों पर ध्यान देना होगा:

(1) हमें "विश्वास में परिपक्व" [या "सिद्ध" (NASB)] वाक्यांश में "परिपक्व" शब्द के अर्थ पर विचार करना चाहिए।

इस संदर्भ में, "परिपक्व" शब्द का अर्थ दौड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार होना है (जेमिसन)। 2 तीमुथियुस 2:5 पर विचार करें: "एक खिलाड़ी को तब तक इनाम नहीं मिलता जब तक वह नियमों के अनुसार मुकाबला न करे।" इसके आधार पर, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि "विश्वास में परिपक्व" व्यक्ति वह है जो विश्वास की दौड़ के लिए पूरी तरह से तैयार है—जो परमेश्वर के नियम को जानता है और उसके अनुसार दौड़ता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि विश्वास में परिपक्व होने का मतलब यह नहीं है कि किसी ने दौड़ पूरी कर ली है। जैसा कि प्रेरित पॉल ने फिलिप्पियों 3:12 में कहा था—"ऐसा नहीं है कि मैंने यह सब पहले ही पा लिया है, या मैं अपने लक्ष्य तक पहुँच गया हूँ, बल्कि मैं उसे पाने के लिए आगे बढ़ता हूँ जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा है"—विश्वास में परिपक्व मसीही वह है जो अभी परमेश्वर के नियम के अनुसार विश्वास की दौड़ दौड़ रहा है।

(2) पॉल ने कहा, "जो लोग विश्वास में परिपक्व हैं, उन्हें इसी सोच के साथ जीना चाहिए"; हमें इस बात पर विचार करना होगा कि यह "एक जैसी सोच" असल में क्या है।

इस सोच को समझने के लिए, हमें "इसलिए" शब्द को देखना होगा जिससे पॉल फिलिप्पियों 3:15 में इस हिस्से की शुरुआत करते हैं। कारण यह है कि "इसलिए" शब्द उस बात के आधार पर एक निष्कर्ष या व्यावहारिक बात बताता है जो पॉल ने पहले फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कही थी। दूसरे शब्दों में, फिलिप्पियों 3:1–

14 में अपनी बातों के निष्कर्ष के तौर पर, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कह रहे हैं, "जो लोग विश्वास में परिपक्व हैं, उन्हें इसी सोच-विचार के साथ जीना चाहिए।"

तो, यह "सोच-विचार" क्या है जिसके बारे में पौलुस यहाँ बात कर रहे हैं? मैंने इसे तीन बिंदुओं में संक्षेप में बताया है:

पहला, जो ईसाई विश्वास में परिपक्व है, उसे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आराधना करनी चाहिए, मसीह यीशु पर गर्व करना चाहिए, और शरीर पर कोई भरोसा नहीं करना चाहिए।

फिलिप्पियों 3:3 को देखें: "हम जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आराधना करते हैं, मसीह यीशु पर गर्व करते हैं, और शरीर पर कोई भरोसा नहीं करते, वही हैं जिन्होंने सच्चा खतना प्राप्त किया है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इससे हम तीन बातें सीख सकते हैं:

(1) विश्वास में परिपक्व व्यक्ति यह जानता है कि उसे परमेश्वर की असीम कृपा से यीशु पर विश्वास करने के द्वारा बचाया गया है।

इसलिए, वे समझते हैं कि परमेश्वर की आराधना करना सही है। भाइयों और बहनों, ठीक इसी उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया: उद्धार का उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर की आराधना करें।

(2) विश्वास में परिपक्व व्यक्ति केवल यीशु मसीह पर गर्व करता है।

इसका कारण यह है कि वे जानते हैं कि उन्हें केवल यीशु मसीह के क्रूस के गुण के कारण बचाया गया था। वे खुद पर गर्व नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि उनके उद्धार में उनकी अपनी योग्यता का कोई योगदान नहीं था। यदि कोई ऐसी चीज़ है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं, तो वह हमारी "कमज़ोरियाँ" हैं (2 कुरिन्थियों 11:30)। जो लोग विश्वास में परिपक्व हैं, वे वैसा ही स्वीकार करते हैं जैसा प्रेरित पौलुस ने किया था, "मैं कभी भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अलावा किसी और चीज़ पर गर्व न करूँ" (गलातियों 6:14)।

(3) जो लोग विश्वास में परिपक्व हैं, वे शरीर पर निर्भर नहीं रहते; वे केवल प्रभु पर भरोसा करते हैं।

दूसरा, जो ईसाई विश्वास में परिपक्व है, उसे यह पहचानना चाहिए कि प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे अधिक मूल्यवान है। फिलिप्पियों 3:8 का पहला हिस्सा देखिए: “सच तो यह है कि मैं सब कुछ नुकसान मानता हूँ क्योंकि मेरे प्रभु मसीह यीशु को जानना सबसे ज़्यादा कीमती है...” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "इसके अलावा, मैं सब कुछ इसलिए नुकसान मानता हूँ क्योंकि मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान कहीं ज़्यादा कीमती है"]। पौलुस की तरह, एक परिपक्व मसीही यह सच्चाई समझता है कि “मेरे प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे ज़्यादा कीमती है।” इसलिए, पौलुस की तरह वह दो चीज़ों के पीछे भागता है। ये दो चीज़ें इस प्रकार हैं:

(1) यीशु पर विश्वास करने से पहले, वह उन चीज़ों को—जिन पर वह भरोसा करता था, जैसे कि शारीरिक चीज़ें और दुनिया की हर चीज़—नुकसान मानता था; वह उन सबको कूड़ा-करकट (बेकार चीज़) समझता है (वचन 8)।

(2) यीशु पर विश्वास करने के बाद, वह—पौलुस की तरह—मसीह को सच में जानना चाहता है, उनके जी उठने की शक्ति का अनुभव करना चाहता है, उनके दुखों में शामिल होना चाहता है, और उनकी मृत्यु के अनुरूप बनना चाहता है (वचन 10)।

तीसरी बात, एक परिपक्व मसीही को लक्ष्य की ओर बढ़ने पर ध्यान देना चाहिए—मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर बुलाए जाने के इनाम को पाने के लिए दौड़ना।

फिलिप्पियों 3:14 को देखिए: "मैं मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर बुलाए जाने के इनाम को पाने के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "मैं उस बुलाहट के इनाम को पाने के लिए लक्ष्य की ओर दौड़ रहा हूँ जिसके द्वारा परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर से बुलाया है"]। यहाँ, हम तीन बातें सीख सकते हैं:

(1) एक परिपक्व मसीही को अपनी बुलाहट का स्पष्ट एहसास होता है।

पौलुस की तरह, उसे मसीह यीशु में परमेश्वर की ऊपर की बुलाहट का पक्का भरोसा होता है। उस बुलाहट का पालन करते हुए, वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर देता है।

(2) एक परिपक्व मसीही में अपने मिशन या उद्देश्य के प्रति गहरी समझ होती है।

प्रभु ने उसे जो काम सौंपा है, उसे पूरा करने के लिए वह अपनी जान जोखिम में डालता है। इसलिए, वह अपने हालात से भटकने या विचलित होने के बजाय अपने मिशन से प्रेरित होकर आगे बढ़ता है।

(3) एक परिपक्व मसीही लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है। वह पीछे की बातों को भूलकर लक्ष्य की ओर बढ़ता है (वचन 13) ताकि आगे की चीज़ों को पा सके (वचन 14)। वह एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीता है।

एक आत्मिक रूप से परिपक्व मसीही का बुलाहट के इतने स्पष्ट एहसास और मिशन के पक्के इरादे के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ने का कारण लोगों से तारीफ़ या इनाम पाना नहीं है। वह जिस इनाम को पाने की सच्ची इच्छा रखता है, वह है "मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर बुलाए जाने का इनाम" (वचन 14)। तो फिर, प्रेरित पौलुस के लिए वह "बुलाहट का इनाम" क्या था? 2 तीमुथियुस 4:7–8 को देखिए: "मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, दौड़ पूरी की है, और विश्वास बनाए रखा है। अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा है, जिसे प्रभु, जो धर्मी न्यायकर्ता है, उस दिन मुझे देगा—और न केवल मुझे, बल्कि उन सभी को भी जिन्होंने उसके आने की लालसा की है।" पौलुस जिस इनाम को पाने की शिद्दत से इच्छा रखता था, वह असल में "धार्मिकता का मुकुट" ही था। यहाँ, "धार्मिकता का मुकुट" इस बात का प्रतीक है कि "धार्मिकता के अंतिम पूरा होने के ज़रिए प्रभु के साथ राज करना, जिसे विश्वास करने वाला व्यक्ति विश्वास के द्वारा पाता है" (पार्क युन-सन)।

हमें आत्मिक रूप से परिपक्व मसीही बनना चाहिए। पौलुस की तरह, हमें बुलाहट की स्पष्ट समझ और मिशन के पक्के इरादे के साथ लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए। प्रभु से मिलने वाले धार्मिकता के मुकुट की लालसा रखते हुए, हमें—पौलुस की तरह—आखिर तक अच्छी लड़ाई लड़नी चाहिए, उस मिशन को पूरा करना चाहिए जो प्रभु ने हममें से हर एक को दिया है, और विश्वास बनाए रखना चाहिए। तब, जब हम स्वर्ग जाएँगे, महिमामय शरीर पाएँगे, और प्रभु के सामने खड़े होंगे, तो हम हमेशा उसके साथ राज करेंगे।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि फिलिप्पी की कलीसिया में कुछ लोग ऐसे थे जिनकी सोच पौलुस से अलग थी। हम आज के पाठ में फिलिप्पियों 3:15 के दूसरे हिस्से से यह अंदाज़ा लगा सकते हैं: "...और यदि किसी बात पर आप अलग तरह से सोचते हैं, तो परमेश्वर उसे भी आपके लिए स्पष्ट कर देगा" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "...यदि आपकी सोच मुझसे अलग है, तो परमेश्वर आपको सही रास्ता स्पष्ट रूप से सिखाएगा"]। यह अंश बताता है कि फिलिप्पी की कलीसिया में ऐसे लोग थे जिनकी सोच पौलुस और वहाँ के आत्मिक रूप से परिपक्व विश्वासियों से अलग थी। तो फिर, अलग सोच वाले ये लोग कौन थे? हम दो संभावनाओं पर विचार कर सकते हैं:

पहली, जो लोग पौलुस और फिलिप्पी की कलीसिया के परिपक्व विश्वासियों से अलग सोचते थे, वे आत्मिक रूप से अपरिपक्व लोग थे (ऐश)।

ऐसा लगता है कि ये अपरिपक्व विश्वासी उन तीन बातों को नहीं मानते थे जिन्हें पौलुस और कलीसिया के परिपक्व सदस्य मानते थे। जैसा कि हमने पहले मनन किया है, वे तीन बातें ये हैं: (1) परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आराधना करना, मसीह यीशु पर घमंड करना, और शरीर पर कोई भरोसा न करना; (2) मसीह यीशु को जानने के बेमिसाल महत्व को पहचानना; और (3) उस लक्ष्य की ओर बढ़ना ताकि वह इनाम पाया जा सके जिसके लिए परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में स्वर्ग की ओर बुलाया है। पौलुस के उलट, ये अपरिपक्व विश्वासी "जो पीछे है उसे भूलकर आगे की ओर नहीं बढ़ रहे थे" (पद 13)। लक्ष्य की ओर दौड़ने के बजाय, वे अतीत में ही अटके रहे और लगातार उन बातों के बारे में सोचते रहे जो पीछे छूट चुकी थीं (मैकआर्थर)।

दूसरी बात, पौलुस और फिलिप्पी कलीसिया के आध्यात्मिक रूप से परिपक्व विश्वासियों के उलट, इन लोगों की सोच पौलुस जैसी नहीं थी—"ऐसा नहीं है कि मैंने इसे पहले ही पा लिया है या मैं पहले से ही सिद्ध हो गया हूँ" (पद 12)—बल्कि उनका मानना था कि उन्होंने इसे *पहले ही* पा लिया है और सिद्धता तक पहुँच गए हैं (जेमिसन)।

उन्होंने खुद को बहुत ज़्यादा आँक लिया था। जॉन क्रिसोस्टोम ने मशहूर बात कही थी, "जो सोचता है कि उसने सब कुछ पा लिया है, उसके पास असल में कुछ नहीं होता।" ऐसा लगता है कि वे अभी भी मानते थे कि व्यवस्था का पालन करके—यानी यीशु पर विश्वास करने से पहले के "पुराने स्वभाव" के तरीकों से जीकर—सिद्धता पाई

जा सकती है। शायद इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखते समय, ऐसे लोगों को ध्यान में रखते हुए इन शब्दों में चेतावनी दी: "उन कुत्तों से सावधान रहो, उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो, उन लोगों से सावधान रहो जो शरीर को काटते-छाँटते हैं" (3:2) (जेमिसन)। इन्हीं लोगों को ध्यान में रखते हुए, पौलुस ने फिलिप्पियों 3:15 का बाद का हिस्सा लिखा: "...यदि तुम किसी बात में अलग तरह से सोचते हो, तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकट कर देगा।" इसका क्या मतलब है? पौलुस उन अपरिपक्व विश्वासियों से कह रहा था—जो उससे और कलीसिया के परिपक्व सदस्यों से अलग सोचते थे, और जो अभी भी मानते थे कि व्यवस्था का पालन करके सिद्धता पाई जा सकती है—कि परमेश्वर उन्हें सच्चाई प्रकट करेगा। इसका मतलब है कि परमेश्वर के प्रकाशन के बिना, कोई भी सच्चाई को समझ नहीं सकता, और न ही विश्वास में परिपक्व लोगों जैसी सही और सच्चाई पर आधारित सोच बना सकता है। इस बात को जानते हुए, प्रेरित पौलुस ने—फिलिप्पियों को लिखते समय—भरोसा रखा कि परमेश्वर उन विश्वासियों को भी प्रकाशन देगा जो उससे और कलीसिया के ज़्यादा परिपक्व सदस्यों से अलग सोचते थे। उसे यह भरोसा इसलिए था क्योंकि, जब वह उनके लिए प्रार्थना करता था (1:4), तो उसे पक्का यकीन हो जाता था कि जिसने उनमें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूरा करेगा (पद 6)। फिलिप्पी की कलीसिया में कम परिपक्व भाई-बहनों को संबोधित करने के बाद, पौलुस आज के वचन, फिलिप्पियों 3:16 में कहते हैं: "बस हम उसी स्तर के अनुसार चलें जहाँ तक हम पहुँचे हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "चाहे हम किसी भी स्तर पर पहुँचे हों, आइए हम उन सिद्धांतों के अनुसार जीना जारी रखें जिनका हमने अब तक पालन किया है"]। इसका क्या अर्थ है? पौलुस फिलिप्पी में परिपक्व विश्वासियों को उन सिद्धांतों के अनुसार जीना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे जिनका उन्होंने अब तक पालन किया था, चाहे वे परिपक्वता के किसी भी स्तर पर पहुँचे हों। दूसरे शब्दों में, वह परिपक्व सदस्यों से आग्रह कर रहे थे कि वे यीशु की पूर्णता की ओर बढ़ने में उनके साथ शामिल हों—परमेश्वर के वचन और सच्चाई के सिद्धांतों का पालन करना जारी रखें, ठीक वैसे ही जैसे वे करते आ रहे थे। ऐसा लगता है कि पौलुस ने यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वह चाहते थे कि परिपक्व विश्वासी कम परिपक्व लोगों के साथ कलीसिया की एकता बनाए रखें (ऐश)।

हमें ऐसे ईसाई बनना चाहिए जो विश्वास में परिपक्व हों। ऐसा करने के लिए, हमें सही सोच-विचार के साथ जीना होगा। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमें परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आराधना करनी है, मसीह यीशु पर

गर्व करना है, और शरीर पर कोई भरोसा नहीं करना है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि प्रभु मसीह यीशु का ज्ञान सबसे अधिक मूल्यवान है। इसके अलावा, हमें लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए—मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर बुलाए जाने का पुरस्कार। मेरी प्रार्थना है कि इन सच्चाइयों को मजबूती से थामे हुए, हम अपना जीवन उसी के अनुसार जीना जारी रखें।

“मेरे उदाहरण का अनुसरण करें”

[फिलिप्पियों 3:17–21]

आज, दिसंबर के पहले रविवार को—जो 2015 का आखिरी महीना है—हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए उनके घर आए हैं। इस साल की शुरुआत में, हमने 2 कुरिन्थियों 5:7 के आधार पर अपना लक्ष्य तय किया था: "हम विश्वास से चलते हैं, न कि दृष्टि से।" हमारी पूरी कलीसियाई मंडली दृष्टि के बजाय विश्वास से चले, इस इच्छा के साथ हमने "केवल वचन से, केवल विश्वास से" का आदर्श वाक्य अपनाया और आज इस मुकाम तक पहुँचे हैं। जब हम 2015 के आखिरी महीने का स्वागत कर रहे हैं और साल पर पीछे मुड़कर देख रहे हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम इस बात पर विचार करें: क्या हम सचमुच इस साल के आदर्श वाक्य—केवल वचन से और केवल विश्वास से—के अनुसार जी पाए हैं? क्या हम वाकई दृष्टि के बजाय विश्वास से जी पाए हैं, जैसा कि हमने करने का लक्ष्य रखा था? मेरी आशा है कि हम परमेश्वर के सामने इस साल का समापन अच्छे ढंग से कर सकें। बेशक, मैं मानता हूँ कि यह कोई आसान काम नहीं है। अगर एक दिन को भी अच्छे से बिताना मुश्किल है, तो पूरे साल को अच्छे से बिताना निस्संदेह एक बड़ी चुनौती है। फिर भी, हम परमेश्वर की दी हुई कृपा से यह प्रयास करते हैं।

व्यक्तिगत रूप से, जब मैं इस साल पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो अक्सर मुझे लगता है कि मैं केवल विश्वास से जीने में नाकाम रहा। इसके बजाय, मुझे एक ऐसा साल दिखाई देता है जब मैं अक्सर उन चीज़ों से प्रभावित होता रहा जो मुझे दिखाई देती थीं—हालात और अपने आस-पास के माहौल से—जिसके कारण मुझमें शक और अविश्वास पैदा हुआ। जहाँ एक नज़रिए से देखने पर मुझे शर्मिंदगी महसूस होती है, वहीं दूसरी ओर, मैं इसे परमेश्वर की कृपा मानता हूँ कि उन्होंने मेरे कमज़ोर विश्वास और विश्वास की कमी को उजागर किया। मैं आपके सामने शर्मिंदा महसूस करता हूँ, यह जानते हुए कि इतनी कमियों वाला एक पास्टर ही इस साल आपको

परमेश्वर का वचन सुना रहा था। मैं स्वीकार करता हूँ कि उस संदेश को सुनाने से पहले मुझे खुद 'केवल वचन से और केवल विश्वास से' जीने का उदाहरण पेश करना चाहिए था, लेकिन मैं ऐसा करने में नाकाम रहा। यह बात मेरे दिल पर भारी बोझ की तरह है, खासकर यह सोचते हुए कि पिछले कुछ हफ़्तों में, मैंने बार-बार फिलिप्पियों 3:15–16 के संदेश को "आइए हम परिपक्व विश्वास वाले लोग बनें" विषय के तहत सुनाया था। दूसरे शब्दों में, मुझे इसे सबसे पहले खुद पर लागू करना था... मैंने अपने उपदेश का शीर्षक "आइए हम परिपक्व विश्वास वाले लोग बनें" चुना क्योंकि मैं खुद परिपक्व विश्वास वाला व्यक्ति बनना चाहता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि आप सभी भी ऐसे लोग बनें—ताकि हम सब मिलकर परिपक्व विश्वास वाले समुदाय के रूप में विकसित हो सकें। आइए हम सब अपनी नज़रें यीशु पर टिकाएँ, जो हमारे विश्वास के रचयिता और उसे सिद्ध करने वाले हैं (इब्रानियों 12:2)। उन्होंने अपने सामने आने वाले आनंद के लिए शर्म और क्रूस की पीड़ा को सहा (वचन 2)। उनके उदाहरण का पालन करते हुए, आइए हम भी उस आनंद के लिए, जो हमारा इंतज़ार कर रहा है, वर्तमान शर्म और उन क्रूसों की पीड़ा को सहें जिन्हें हममें से हर कोई उठाता है। आइए हम विश्वास में दृढ़ रहते हुए और सहन करते हुए हमें सौंपे गए मिशन को पूरा करें। इस प्रक्रिया में, हमारा लक्ष्य यीशु का अनुकरण करना होना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे लोग बनें जो लगातार उनका अनुकरण करें।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:17 में, पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को लिखते हैं: "भाइयों, मेरे अनुकरण में शामिल हो जाओ, और उन लोगों पर नज़र रखो जो उस उदाहरण के अनुसार चलते हैं जो तुम्हारे पास हमारे द्वारा है।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "मेरा अनुकरण करो" शीर्षक के तहत पौलुस के तीन विशिष्ट गुणों पर विचार करना चाहता हूँ जिनका हमें अनुकरण करना चाहिए, और उनसे मिलने वाली सीख को अपनाना चाहिए।

पहला, पौलुस ने उनसे अपना अनुकरण करने के लिए कहा।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:17 को देखें: "भाइयों, मेरे अनुकरण में शामिल हो जाओ, और उन लोगों पर नज़र रखो जो उस उदाहरण के अनुसार चलते हैं जो तुम्हारे पास हमारे द्वारा है" (आधुनिक कोरियाई संस्करण: "भाइयों, मेरा अनुकरण करो।") "...और उन लोगों को देखो जो उस तरीके से जीते हैं जो हमने तुम्हारे लिए तय किया है।" क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसका आप अनुकरण करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो आप उनके उदाहरण का पालन क्यों करना चाहते हैं? हम शायद किसी का अनुकरण इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि हम उनका

सम्मान करते हैं, हालाँकि उस सम्मान के कारण अलग-अलग हो सकते हैं। मुझे एक ऐसी वेबसाइट मिली जिसमें उन लोगों की सूची थी जिन्हें लोग पसंद करते हैं और वे कारण भी बताए गए थे कि क्यों; मैं उन्हें आपके साथ साझा करना चाहता हूँ:

<बीथोवेन> अपने गहरे जुनून से "म्यूज़िकल जीनियस" (संगीत की प्रतिभा) का खिताब हासिल किया
<एंड्रयू कार्नेगी> एक व्यवसायी जो दूसरों के साथ बांटने की अहमियत को समझते थे
<रॉकफेलर> उदारता अतीत के लिए माफ़ी और भविष्य में किया गया निवेश, दोनों है
<विंस्टन चर्चिल> संयम और हाज़िरजवाबी, जो पल भर में दुश्मनों को दोस्त बना सकती थी
<बेंजामिन फ्रैंकलिन> अगर आप ज़िंदगी से प्यार करते हैं, तो समय बर्बाद न करें।

व्यक्तिगत रूप से, बाइबिल के पात्रों में से मैं प्रेरित पौलुस जैसा बनना चाहता हूँ। उनमें मेरी दिलचस्पी तब शुरू हुई जब मैंने सेमिनरी में प्रवेश किया और नए नियम (New Testament) में उनके द्वारा लिखे गए पत्रों का अध्ययन किया। हालाँकि मुझे सटीक विवरण याद नहीं हैं, लेकिन उनमें मेरी दिलचस्पी इसलिए जगी क्योंकि उनके पत्रों से पता चलता था कि कैसे यीशु में विश्वास के कारण वे बदल गए थे और प्रभु द्वारा सौंपे गए मिशन के लिए उनमें कितना जोश था। तभी मुझमें भी मिशन के लिए उसी जुनून के साथ एक सेवक बनने की इच्छा पैदा हुई।

आज के अंश, फिलिप्पियों 3:17 में, पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों से कहते हैं, "भाइयों, मेरी नकल करने में शामिल हो जाओ।" यह ध्यान देने वाली बात है कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:5–11 में फिलिप्पियों से "मसीह की नकल करने" का ज़ोरदार आग्रह किया था; फिर भी यहाँ, आज के अंश में... फिलिप्पियों 3:17 में, पौलुस विश्वासियों से अपनी नकल करने का ज़ोरदार आग्रह करते हैं (मेलिक)। पौलुस ने, जिन्होंने पहले फिलिप्पी के विश्वासियों से मसीह की नकल करने के लिए कहा था, अब इस अंश में उनसे अपनी नकल करने के लिए क्यों कहा? कारण यह है कि पौलुस स्वयं मसीह की नकल कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने 1 कुरिन्थियों 11:1 में कहा: "मेरे उदाहरण का अनुसरण करो, जैसे मैं मसीह के उदाहरण का अनुसरण करता हूँ।" फिलिप्पियों 3:17 में फिलिप्पी के विश्वासियों से "मेरी नकल करो" का ज़ोरदार आग्रह करते समय पौलुस का क्या अर्थ था, और उन्होंने इतनी ज़ोरदार अपील क्यों की? मुझे इसका उत्तर फिलिप्पियों 3:15–16 में मिला, जिस अंश पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं। सबसे पहले, पौलुस के अपनी नकल करने के निर्देश का अर्थ था

कि उन्हें परिपक्व विश्वास वाले लोग बनना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे वे स्वयं थे (पद 15, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि फिलिप्पी की कलीसिया में न केवल पक्के विश्वास वाले लोग थे, बल्कि ऐसे लोग भी थे जिनका विश्वास अभी पूरी तरह परिपक्व नहीं हुआ था। दूसरे शब्दों में, चूँकि कलीसिया के कुछ विश्वासियों की सोच वैसी नहीं थी जैसी पौलुस और दूसरे परिपक्व सदस्यों की थी, इसलिए जब पौलुस ने कलीसिया के लोगों से "मेरी नकल करने" को कहा (क्योंकि परिपक्व विश्वासी पहले से ही उनकी नकल कर रहे थे और उनकी जैसी सोच रखते थे), तो उन्होंने उन लोगों को भी ध्यान में रखा। इसके बाद, पौलुस ने फिलिप्पियों 3:17 के बाद वाले हिस्से में फिलिप्पी के विश्वासियों को सलाह दी: "...और उन लोगों पर नज़र रखो जो उस तरीके से जीते हैं जैसा हमने तुम्हें सिखाया है।" इसका क्या मतलब है? आयत 17 के पहले हिस्से में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को *अपनी* नकल करने के लिए कहते हैं; फिर, उसी आयत के दूसरे हिस्से में, वे "हम" की बात करते हैं—और कहते हैं, "जैसे तुमने *हमारी* नकल की है।"

तो, जब पौलुस "हम" कहते हैं, तो वे किनकी बात कर रहे होते हैं? वे अपनी बात कर रहे हैं और साथ ही तीमुथियुस (2:19–22) और एपफ्रुदीतुस (2:25–30) की भी—ये वे लोग हैं जिनका ज़िक्र पहले ही फिलिप्पियों अध्याय 2 में परमेश्वर-भक्ति के उदाहरण के तौर पर किया गया है। तो फिर, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से न केवल अपनी, बल्कि खास तौर पर तीमुथियुस और एपफ्रुदीतुस की भी नकल करने के लिए क्यों कहा? तीमुथियुस के मामले में, कारण यह था कि वे ऐसे व्यक्ति थे जो "मसीह यीशु की बातों की चिंता करते थे" (2:21)। इसका मतलब दो बातें हैं:

(1) तीमुथियुस ऐसे व्यक्ति थे जो सचमुच फिलिप्पी के विश्वासियों की भलाई की परवाह करते थे।

फिलिप्पियों 2:20 को देखिए: "क्योंकि मेरे पास कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी सोच मेरे जैसी हो और जो सचमुच तुम्हारी भलाई की परवाह करे।" तीमुथियुस, जिनकी नकल करने के लिए पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा था, कलीसिया के बारे में पौलुस जैसी ही सोच और मकसद रखते थे। उन दोनों की सोच मसीह यीशु जैसी थी (आयत 5)—यानी खुद को नम्र बनाना और प्रभु की आज्ञा मानना, यहाँ तक कि मौत सहने तक (आयत 8)। प्रभु द्वारा भेजे गए होने के नाते, प्रेरित पौलुस और तीमुथियुस दोनों का दिल नम्र था और वे उन्हें भेजने वाले की इच्छा को मानने के लिए तैयार थे, चाहे इसके लिए मौत ही क्यों न सहनी पड़े। इसी वजह से वे

एक जैसी सोच और मकसद रख पाते थे। पॉल तिमुथियुस को फिलिप्पी के विश्वासियों के पास भेजना चाहते थे क्योंकि उनका मानना था कि तिमुथियुस ही वह व्यक्ति था जो सचमुच उनकी भलाई की परवाह करेगा (वचन 20)। यहाँ "सचमुच" (genuinely) शब्द का अर्थ है "एक पिता की अपने बेटे के प्रति सच्ची भावना" (पार्क युन-सन)। जिस तरह एक पिता अपने बेटे की भलाई की सच्ची परवाह करता है, उसी तरह तिमुथियुस भी फिलिप्पी के विश्वासियों की स्थिति की सच्ची परवाह करने वाला व्यक्ति था। इसीलिए पॉल ने विश्वासियों को तिमुथियुस के उदाहरण का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

(2) तिमुथियुस सुसमाचार के लिए मेहनत करने वाला व्यक्ति था।

फिलिप्पियों 2:22 को देखिए: "लेकिन आप उसका परखा हुआ चरित्र जानते हैं, कि जैसे एक बेटा अपने पिता के साथ काम करता है, वैसे ही उसने सुसमाचार के काम में मेरे साथ सेवा की।" यहाँ, 'रिवाइज़्ड कोरियन वर्शन' में इस वाक्यांश का अनुवाद "तिमुथियुस का परखा हुआ चरित्र" (*येओंदन*) किया गया है, जबकि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* में इसका अनुवाद "तिमुथियुस का बेहतरीन चरित्र" किया गया है। इसके मूल ग्रीक शब्द का अर्थ है "परखने के बाद मंज़ूर किया जाना" (फ़िफ़र)। इसका मतलब है कि तिमुथियुस का चरित्र मुश्किलों या तपाए जाने की प्रक्रिया से गुज़रकर बेहतरीन साबित हुआ था। उसे फिलिप्पी के विश्वासियों से यह पहचान शायद इसलिए मिली क्योंकि उसका चरित्र निखरकर तैयार हुआ था—उसने "कठिन परीक्षाओं" (2 कुरिन्थियों 8:2) का सामना किया था और उन मुश्किलों से सफलतापूर्वक निकलने के लिए विश्वास में डटा रहा था (रोमियों 5:4)। इसके अलावा, तिमुथियुस का बेहतरीन चरित्र—जिसे फिलिप्पी के विश्वासियों ने पहचाना और माना था—वही "सच्चाई" थी जिसके बारे में पौलुस ने फिलिप्पियों 2:20 में बात की थी। ऐसे सच्चे और बेहतरीन चरित्र के साथ, तिमुथियुस ने सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ मिलकर काम किया (पद 22)। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह किया कि वे भी तिमुथियुस का अनुकरण करें। तो फिर, एपफ्रुदीतुस के मामले में क्या बात थी? पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को न केवल खुद का, बल्कि एपफ्रुदीतुस का भी अनुकरण करने के लिए क्यों प्रोत्साहित किया? इसके तीन कारण हैं: (a) एपफ्रुदीतुस पौलुस का भाई, साथी-कर्मी और साथी-सैनिक था, साथ ही फिलिप्पी की कलीसिया का वह संदेशवाहक भी था जिसने पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करने में सेवा की थी (पद 25)। (b) एपफ्रुदीतुस फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था और बहुत परेशान भी था (पद 26)। (c) एपफ्रुदीतुस वह व्यक्ति था जिसने मसीह के काम के लिए अपनी जान

की परवाह नहीं की—यहाँ तक कि मौत के जोखिम तक को नहीं देखा (पद 30)। इसलिए, पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों से आग्रह किया कि वे उन लोगों पर ध्यान दें—उन्हें देखें—जो न केवल पौलुस का, बल्कि उसके साथी-कर्मियों, तिमुथियुस और एपफ्रुदीतुस का भी अनुकरण करते हुए जीते थे। यहाँ, "मार्क" (या "ध्यान देना") शब्द का अर्थ है किसी चीज़ या व्यक्ति पर इच्छा या रुचि के साथ अपना ध्यान केंद्रित करना (वेस्ट)। यह शब्द फिलिप्पियों 2:4 में भी आता है: "तुममें से हर कोई न केवल अपने हितों का ध्यान रखे, बल्कि दूसरों के हितों का भी ध्यान रखे, ताकि मेरी खुशी पूरी हो सके।" यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द "ध्यान रखना" (या "ख्याल रखना") वही शब्द है। दूसरे शब्दों में, दूसरों का ध्यान रखने के निर्देश का मतलब है कि उनमें दिलचस्पी और परवाह के साथ ध्यान दिया जाए (सेविंसेंट)। पौलुस चाहते थे कि फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी उस जीवन-शैली पर ध्यान दें और उसका अनुकरण करें—मसीह की सेवा करना—जो उन्होंने खुद, तीमुथियुस और एपफ्रुदीतुस ने दिखाई थी (मैकआर्थर)। संक्षेप में, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के सभी विश्वासियों से आग्रह किया कि वे खुद पौलुस और उनके साथियों के मसीह-केंद्रित जीवन-तरीकों पर ध्यान दें, उन्हें एक आदर्श मानें और उसी के अनुसार जीवन जिएं (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 10:6)।

विश्वास का वह आदर्श कौन है जिसे हम अपने उदाहरण के रूप में देखते हैं? वह कौन है जिसका हमें अनुकरण करना चाहिए? वह कोई और नहीं बल्कि यीशु हैं। हम सभी ईसाइयों को यीशु मसीह का अनुकरण करना चाहिए। भजन 463, "मैं एक विश्वासी बनना चाहता हूँ," के चौथे पद के बोल हमारी प्रार्थना और इच्छा बन जाने चाहिए: "मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच, सचमुच, मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच, सचमुच, सचमुच, मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच।" हालाँकि, यीशु के शिष्यों के विपरीत, हम आज यीशु को अपनी शारीरिक आँखों से नहीं देख सकते। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु मरे हुओं में से जी उठे, स्वर्ग चले गए और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हैं। इसलिए, हम जो कर सकते हैं वह यह है कि पौलुस जैसे ईसाइयों को—जिन्होंने यीशु का अनुकरण किया—अपने विश्वास के लिए आदर्श मानें और उनका अनुसरण करें। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसे आध्यात्मिक पूर्वज की जीवन-शैली पर ध्यान देना चाहिए जिन्होंने, पौलुस की तरह, मसीह-केंद्रित जीवन जिया; हमें उनके जीवन को एक आईने की तरह मानना चाहिए और ठीक वैसा ही जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए जैसा उन्होंने जिया था। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं भी, एक दिन उन युवा विश्वासियों से, जिनसे हम प्यार करते हैं, ठीक वैसा ही कह सकें जैसा पौलुस ने कहा था: "मेरे उदाहरण का अनुसरण करो, जैसे मैं

मसीह के उदाहरण का अनुसरण करता हूँ" (1 कुरिन्थियों 11:1, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। दूसरी बात, पॉल से हमें जो गुण सीखना चाहिए, वह है उनका रोना; यानी, हमें पॉल की तरह रोना चाहिए। हमें भी वैसे ही रोने की ज़रूरत है जैसे वे रोए थे।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:18 को देखिए: "क्योंकि मैंने आपको पहले भी कई बार बताया है, और अब मैं फिर से रोते हुए कह रहा हूँ कि बहुत से लोग मसीह के क्रूस के दुश्मन बनकर जीते हैं" (*कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। मैंने हाल ही में *चोसुन इल्बो अटलांटा* के ऑनलाइन संस्करण में "जब एक महिला रोती है" (When a Woman Sheds Tears) शीर्षक से एक संपादकीय लेख पढ़ा। लेखों में अक्सर कहा जाता है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज़्यादा रोती हैं; इसका कारण यह बताया जाता है कि दुखद स्थितियों में, महिलाओं में उदासी की भावनाओं से जुड़े न्यूरॉन्स की गतिविधि आठ गुना ज़्यादा होती है, और उनमें प्रोलैक्टिन का स्तर अधिक होता है, जो एक ऐसा हार्मोन है जो आँसू बनने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। इससे पता चलता है कि हम अक्सर माताओं और पत्नियों को रोते हुए क्यों देखते हैं। महिलाएं बिना किसी स्पष्ट कारण के, छोटी-छोटी बातों पर, सुरक्षा की भावना से, या बस शारीरिक आँसुओं के माध्यम से चिड़चिड़ाहट और तनाव को दूर करने के लिए रो सकती हैं; इससे यह सवाल उठता है कि क्या आँसू आखिरकार फायदेमंद होते हैं या बेकार। असल में, आँसुओं के उपचारात्मक प्रभाव माने जाते हैं; रोने से मूड अच्छा हो सकता है और काफी हद तक तनाव कम हो सकता है। व्यक्तिगत रूप से, फायदेमंद और बेकार आँसुओं के बीच अंतर करते समय, मैं जम्हाई लेते समय निकलने वाले आँसुओं को बेकार मानता हूँ। हालाँकि ऐसे आँसू अपरिहार्य हैं, लेकिन कुछ खास तरह के फायदेमंद आँसू भी होते हैं जिन्हें मैं बहाना *चाहता* हूँ। ऐसे तीन प्रकार हैं: पश्चाताप के आँसू, कृतज्ञता के आँसू और भक्ति के आँसू। फिर भी, मुझे एहसास है कि फायदेमंद आँसुओं के इन तीन प्रकारों को भी केवल इसलिए नहीं बहाया जा सकता क्योंकि मैं ऐसा चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि हम ये फायदेमंद आँसू तभी बहा सकते हैं जब पवित्र आत्मा हमारे भीतर काम करे, हमें प्रेरित करे और कार्य करे।

हालाँकि, इन तीन प्रकारों के अलावा, बाइबल में अन्य प्रकार के आँसू भी मिलते हैं। एक उदाहरण है "प्रार्थना के आँसू"। यशायाह 38 में, यहूदा के राजा हिजकिय्याह को भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से परमेश्वर से एक संदेश मिला: "अपने घर-बार का प्रबंध कर ले, क्योंकि तू मरने वाला है; तू ठीक नहीं होगा" (वचन 1)। यह सुनकर, उसने अपना मुँह दीवार की ओर किया और फूट-फूटकर रोते हुए परमेश्वर से प्रार्थना की (वचन 2–3)। इसके जवाब में परमेश्वर ने कहा, "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और तुम्हारे आँसू देखे हैं," और उन्होंने हिजकिय्याह की

ज़िंदगी—जिसने प्रार्थना करते हुए आँसू बहाए थे—पंद्रह साल और बढ़ा दी (वचन 5)। एक और उदाहरण हन्ना की प्रार्थना का है, जो शमूएल की माँ थी; इसका ज़िक्र 1 शमूएल अध्याय 1 में मिलता है। मन में बहुत दुखी होकर, उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और फूट-फूटकर रोई (वचन 10)। नतीजतन, परमेश्वर को हन्ना की आँसुओं भरी गुहार याद आई (वचन 19), उन्होंने उसकी विनती पूरी की (वचन 17), और उसे शमूएल नाम का बेटा दिया (वचन 20)। परमेश्वर ने हन्ना को शमूएल के अलावा छह और बच्चों का तोहफ़ा दिया (2:5)। इन "प्रार्थना के आँसुओं" के अलावा, बाइबल "प्यार के आँसुओं" के बारे में भी बताती है। इसका सबसे बेहतरीन उदाहरण बाइबल के सबसे छोटे वचन, यूहन्ना 11:35 में मिलता है: "यीशु रो पड़े।" यीशु क्यों रोए? इसलिए क्योंकि लाज़र की मौत के बाद, उन्होंने उसकी बहन मरियम को रोते हुए देखा, साथ ही उन यहूदियों को भी जो उसके साथ आए थे; उनका मन बहुत भर आया और वे दया से भर गए (वचन 33)। इस घटना पर सोचने से रोमियों 12:15 का बाद वाला हिस्सा याद आता है: "...जो रोते हैं, उनके साथ रोओ।" यीशु मरियम और उन यहूदियों के साथ रोए जो रो रहे थे। ये कितने अनमोल आँसू हैं। क्या हमें भी ऐसे आँसू नहीं बहाने चाहिए?

आज के अंश, फिलिप्पियों 3:18 में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हैं, "मैंने तुम्हें कई बार बताया है—और अब तो रोते हुए भी कहता हूँ—कि बहुत से लोग मसीह के क्रूस के दुश्मन बनकर जी रहे हैं।" पौलुस ने इस बात का ज़िक्र सिर्फ़ एक बार नहीं किया; उन्होंने कहा कि उन्होंने इसके बारे में "कई बार" बात की थी। यह बात कि उन्होंने बार-बार फिलिप्पी के विश्वासियों—जिन्हें वे यीशु मसीह के दिल से बहुत प्यार करते थे—के सामने "मसीह के क्रूस के दुश्मनों" का मुद्दा उठाया, यह दिखाता है कि वे इसे बहुत ज़रूरी और गंभीर मामला मानते थे। ऐसा लगता है कि पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को पूरे दिल से समझाया और आग्रह किया; वे यह सोचकर रो पड़े कि कितने सारे लोग क्रूस के दुश्मन बनकर जी रहे थे। पौलुस के चरित्र का यही पहलू हमें प्रेरितों के काम 20:31 में भी दिखता है। प्रेरितों के काम 20:31 को देखिए: "इसलिए, सावधान रहो और याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन-रात हर किसी को रो-रोकर समझाया।" पौलुस ने ये शब्द इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को मिलेटुस में मिलने के लिए बुलाने के बाद कहे थे (वचन 17)। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों से यह याद रखने का आग्रह इसलिए किया कि कैसे उन्होंने तीन साल तक दिन-रात उनमें से हर एक को रो-रोकर समझाया था, क्योंकि उन्हें पता था कि उनके जाने के बाद क्या होगा: "खूंखार भेड़िये"—गलत शिक्षा फैलाने वाले झूठे शिक्षक—झुंड में घुस आएंगे, बिना किसी दया के, और चेलों को अपने पीछे खींच ले जाएंगे

(वचन 29–30)। ये झूठे शिक्षक, जो गलत बातें फैलाते थे, मसीह के क्रूस के असली दुश्मन थे (फिलिप्पियों 3:18)। उनकी गलत शिक्षाएँ उस सच्चाई के खिलाफ़ थीं जिसका पौलुस ने प्रचार किया था—कि उद्धार सिर्फ़ यीशु पर विश्वास करने से मिलता है—इसके बजाय वे यहूदी बनाने वालों (जुडाइज़र्स) के उस झूठ को बढ़ावा देते थे कि उद्धार मूसा के नियम का पालन करने और इंसानी कोशिशों और कामों पर निर्भर रहने से मिल सकता है। पौलुस जानते थे कि फिलिप्पी की कलीसिया में भी "बहुत से" ऐसे लोग थे जो ऐसी झूठी बातों से गुमराह हो गए थे और मसीह के क्रूस के दुश्मन बनकर जी रहे थे (वचन 18)। इसीलिए पौलुस रो पड़े, और फिलिप्पी में सुसमाचार के इन दुश्मनों के बारे में सोचकर गहरे दुख से भर गए (पार्क युन-सन)। ज़रा सोचिए: अगर परमेश्वर ने आपको यीशु मसीह की खुशखबरी सुनाने के लिए इस्तेमाल किया हो—ताकि लोग उस पर विश्वास करके उद्धार पा सकें—और बाद में आप देखें कि वे इस झूठ पर विश्वास करने लगे हैं कि उद्धार सिर्फ़ यीशु पर विश्वास करने से नहीं, बल्कि अच्छे कामों और इंसानी कोशिशों से मिलता है, तो क्या आप भी गहरे दुख से रो नहीं पड़ेंगे, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस रोया था? सोचिए कि इफिसुस के विश्वासियों के बारे में पौलुस को कैसा महसूस हुआ होगा। उसने तीन साल तक खुद को उनके लिए समर्पित किया था, दिन-रात आँसू बहाते हुए उन्हें लगातार समझाया और चेतावनी दी थी। फिर भी, उसने पहले ही देख लिया था कि उसके जाने के बाद, झूठे शिक्षक मंडली में घुस आएँगे—ऐसे लोग जो कोई दया नहीं दिखाएँगे, बल्कि विश्वासियों को गुमराह करेंगे, जिससे वे खुशखबरी को छोड़कर झूठ के पीछे चलने लगेंगे। इसे एक माता-पिता के दिल से समझा जा सकता है, जिन्होंने अपने प्यारे बच्चों को परमेश्वर के वचन के अनुसार पालने-पोसने और सिखाने में अपनी पूरी कोशिश की हो, लेकिन बाद में देखा हो कि घर छोड़ने और आज़ाद होने पर वे उस वचन, अपने विश्वास और कलीसिया से दूर हो गए हैं। ऐसे माता-पिता को कैसा लगेगा? क्या वे गहरे दुख में परमेश्वर से विनती नहीं करेंगे और रोते हुए अपने बच्चों को समझाएँगे और चेतावनी नहीं देंगे? इसी भावना के साथ पौलुस, आज के वचन (फिलिप्पियों 3:18) में फिलिप्पी के प्यारे विश्वासियों से बात करता है। उन्हें "कई बार" चेतावनी देने के बाद, वह फिर से आँसू बहाते हुए कहता है कि "बहुत से लोग मसीह के क्रूस के दुश्मन बनकर जी रहे हैं।" फिर वह आयत 19 में, "मसीह के क्रूस के दुश्मनों" का वर्णन चार तरह से करता है:

(1) मसीह के क्रूस के दुश्मनों का अंत विनाश है।

फिलिप्पियों 3:19 को देखिए: "उनका अंत विनाश है..." इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जो लोग मसीह के क्रूस के दुश्मन हैं, उनका आखिरी अंजाम—उनकी अंतिम नियति—हमेशा का विनाश है; वे यह गलत शिक्षा देते हैं कि उद्धार इंसानी कोशिशों और कामों से—खासकर मूसा की व्यवस्था का पालन करने से—मिल सकता है, और इस तरह वे उस सच्चाई का विरोध करते हैं कि उद्धार यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिलता है। इस पर विचार कीजिए: यूहन्ना 3:16, एक ऐसी आयत जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं, कहती है, "क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि हमेशा का जीवन पाए।" क्या वे लोग जो यीशु पर विश्वास नहीं करते और दावा करते हैं कि इंसानी कोशिशों और मूसा के नियम का पालन करके मुक्ति मिल सकती है, उन्हें अनंत जीवन मिलेगा या वे नष्ट हो जाएँगे? बाइबल कहती है कि मुक्ति केवल यीशु पर विश्वास करने से ही मिलती है। जो लोग मानते हैं कि मुक्ति इंसानी कोशिशों और अच्छे कामों से मिलती है, वे मसीह के क्रूस के दुश्मन हैं, और बाइबल कहती है कि उनका अंत विनाश है (फिलिप्पियों 3:19)।

(2) मसीह के क्रूस के दुश्मन शरीर की इच्छाओं को ही अपना देवता बना लेते हैं।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:19 को देखें: "...उनका देवता उनका पेट है..." [समकालीन कोरियाई संस्करण: "...वे शरीर की इच्छाओं को अपना देवता बनाते हैं..."]। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि मसीह के क्रूस के दुश्मन केवल अपनी शारीरिक इच्छाओं और बेकाबू पेटूपन (ज़रूरत से ज़्यादा खाने) में डूबे रहते हैं (वाल्वोर्ड)। पौलुस रोम की कलीसिया को लिखे अपने पत्र में भी ऐसे लोगों का ज़िक्र करते हैं, और उन्हें ऐसे लोगों के रूप में बताते हैं जो "हमारे प्रभु मसीह की सेवा नहीं करते, बल्कि अपने पेट की सेवा करते हैं" (रोमियों 16:18)। जो लोग केवल अपने पेट की सेवा करते हैं, वे "शरीर की इच्छाओं के अनुसार जीते हैं" (2 पतरस 2:10)। "बेसमझ जानवरों" (वचन 12) की तरह, वे "बुरे काम" करते हैं (वचन 13); वे दिन-दहाड़े मौज-मस्ती करने में मज़ा लेते हैं, दूसरों को धोखा देते हैं और "गंदे लोग जो शारीरिक सुखों में डूबे रहते हैं" (वचन 13) जैसा व्यवहार करते हैं। इसके अलावा, उनकी "आँखें वासना से भरी होती हैं और वे कभी पाप करना बंद नहीं करते," और वे "शापित बच्चे हैं, जो लालच में पले-बढ़े हैं और कमज़ोर विश्वास वालों को बहकाने में माहिर हैं" (वचन 14)। "उन्होंने सही रास्ता छोड़ दिया है और भटक गए हैं," और "बुरे तरीकों से कमाए गए धन से प्यार करते हैं" (वचन 15)। "वे खोखली बातें करके डींगें मारते हैं और—शारीरिक इच्छाओं के ज़रिए—उन लोगों को बहकाते

हैं जो गलत रास्ते से मुश्किल से बचे थे, और उन्हें वापस पाप में धकेल देते हैं" (वचन 18)। इसके अलावा, वे "आज़ादी का वादा करते हैं जबकि वे खुद विनाश के गुलाम हैं" (वचन 19)।

(3) मसीह के क्रूस के दुश्मन शर्म को ही महिमा मानते हैं। आज के वचन, फिलिप्पियों 3:19 को देखें: "...उनकी महिमा उनकी शर्म में है..." [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "...शर्म को महिमा मानना..."]। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि झूठे शिक्षक—जो यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए उद्धार मिलने का सुसमाचार सिखाने के बजाय, यह सिखाते हैं कि मूसा की व्यवस्था का पालन करने से उद्धार मिलता है—और जो लोग उनकी शिक्षाओं को मानते हैं, वे इन चीज़ों को अपनी महिमा और गर्व का विषय मानते थे। फिर भी, ऐसी शिक्षाओं पर विश्वास करना और उनका पालन करना असल में उनके लिए शर्म की बात थी, और शरीर की इच्छाओं को अपना भगवान बनाना और शारीरिक वासनाओं के अनुसार जीना भी उनके लिए शर्म की बात थी। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "वे पाप के लिए पछतावा नहीं करते; बल्कि, वे पाप में आनंद लेते हैं और अहंकारी होते हैं, और जिस पाप के लिए उन्हें शर्म आनी चाहिए, उसे ही महिमा मानते हैं।" क्या आप समझते हैं? कोई पाप में आनंद कैसे ले सकता है? कोई पाप पर शर्म महसूस करने के बजाय उसे महिमा कैसे मान सकता है? मसीह के क्रूस के दुश्मन पाप की शर्म को पाप की महिमा मानते हैं। बाइबल में दानिय्येल 12:2 कहता है: "जो लोग धरती की धूल में सो रहे हैं, उनमें से बहुत से लोग जागेंगे: कुछ हमेशा के जीवन के लिए, और दूसरे शर्म और हमेशा की बदनामी के लिए।" बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि जहाँ बहुत से लोग हमेशा का जीवन पाने के लिए जागेंगे, वहीं दूसरे लोग बदनामी और हमेशा की शर्म का सामना करेंगे। इसका क्या मतलब है? अगर हम इसे "मसीह के क्रूस के दुश्मनों" पर लागू करें—जिनके बारे में पौलुस आज के वचन (फिलिप्पियों 3:19) में बताता है कि वे "शर्म को महिमा" मानते हैं—तो इसका मतलब है कि उन्हें बदनामी और हमेशा की शर्म का सामना करना पड़ेगा।

(4) मसीह के क्रूस के दुश्मन सिर्फ़ दुनियावी चीज़ों के बारे में सोचते हैं।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:19 को देखें: "...जिनका मन दुनियावी चीज़ों पर लगा है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "वे सिर्फ़ दुनियावी चीज़ों के बारे में सोचते हैं"]। हालाँकि पौलुस ने कुलुस्सियों 3:2 में निर्देश दिया था कि "अपना मन ऊपर की चीज़ों पर लगाओ, दुनियावी चीज़ों पर नहीं," मसीह के क्रूस के दुश्मन दुनियावी

मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। क्योंकि वे शरीर की इच्छाओं को अपना भगवान मानकर उनकी सेवा करते हैं, इसलिए वे न तो ऊपर की चीज़ों के बारे में सोचते हैं और न ही ऐसा करने में सक्षम हैं। इसके बजाय, वे सिर्फ़ दुनियादारी की बातों के बारे में सोचते हैं (फिलिप्पियों 3:19) और दुनिया की चीज़ों से जुड़े रहते हैं (पार्क युन-सन)। प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:16–17 में कहा: "दुनिया में जो कुछ भी है—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड—वह पिता की ओर से नहीं, बल्कि दुनिया की ओर से है। दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। मसीह के क्रूस के दुश्मन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बजाय, अपनी इच्छाओं के अनुसार दुनियादारी की चीज़ों के पीछे भागते हैं—खासकर शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड। चूँकि ये सभी चीज़ें दुनिया से ही पैदा होती हैं, इसलिए मसीह के जो दुश्मन ऐसी दुनियादारी की बातों में लगे रहते हैं और उनके पीछे भागते हैं, उन्हें आखिर में हमेशा के लिए विनाश का सामना करना पड़ेगा।

तीसरी बात, पौलुस का एक गुण जिसे हमें अपनाना चाहिए, वह यह है कि स्वर्ग के नागरिक के तौर पर, वह प्रभु यीशु मसीह की वापसी का इंतज़ार कर रहे थे, जो स्वर्ग से इस दुनिया में दोबारा आएँगे।

आज के वचन, फिलिप्पियों 3:20 को देखिए: "पर हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, और हम वहाँ से एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार करते हैं।" फिलिप्पी के पवित्र लोगों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने आयत 17 में उनसे आग्रह किया कि वे उनकी, और साथ ही तीमुथियुस और एपफ्रुदीतुस की नकल करें, और कलीसिया में उन परिपक्व विश्वासियों को देखें जो उनके उदाहरण का पालन करते थे; फिर, आयत 18 में, उन्होंने मसीह के क्रूस के दुश्मनों के बारे में बात की। इसके बाद, आयत 20 में, प्रेरित पौलुस ने एक बार फिर "हम" शब्द का इस्तेमाल यह बताने के लिए किया कि उनकी, तीमुथियुस, एपफ्रुदीतुस और फिलिप्पी के सभी पवित्र लोगों की नागरिकता स्वर्ग की है। यहाँ, पौलुस मसीह के क्रूस के दुश्मनों—जो "अपना मन सांसारिक चीज़ों पर लगाते हैं" (आयत 19)—की तुलना खुद से, अपने सहयोगियों से और फिलिप्पी के पवित्र लोगों से करते हैं; इन सभी को यीशु मसीह और क्रूस पर विश्वास के ज़रिए उद्धार मिला था। मेरा मानना है कि पौलुस फिलिप्पी के पवित्र लोगों के लिए यह तुलना इसलिए करते हैं ताकि वे उनमें से उन लोगों को—जिनका विश्वास अभी परिपक्व नहीं है और जो प्रलोभन में पड़ने के जोखिम में हैं—यह समझा सकें कि वे उन "बहुत से लोगों" (आयत 18) की नकल न करें

जो मसीह के क्रूस के दुश्मनों की तरह जीते हैं। इसके बजाय, वह चाहते हैं कि वे उन लोगों के साथ जुड़ें जिन्होंने पहले ही अनंत जीवन पा लिया है और, स्वर्ग के नागरिकों के तौर पर, सांसारिक चीज़ों के बजाय ऊपर की चीज़ों पर अपना मन लगाएँ, और साथ ही उस उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार करें, जो स्वर्ग से आएँगे। फिलिप्पी के विश्वासियों को यह बताने के बाद कि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है और हम वहाँ से आने वाले उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार कर रहे हैं, पौलुस आयत 21 में इस इंतज़ार का कारण बताते हैं: "वह अपनी उस शक्ति के ज़रिए हमारे साधारण शरीरों को अपने महिमामयी शरीर जैसा बना देंगे, जो उन्हें सभी चीज़ों को अपने नियंत्रण में लाने में सक्षम बनाती है।" दूसरे शब्दों में, हम प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतज़ार करते हैं क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु—जिनके पास सभी चीज़ों को अपने अधीन करने की शक्ति है—उस महान शक्ति का इस्तेमाल करके हमारे साधारण शरीरों को अपने महिमामयी शरीर जैसा बना देंगे। क्या प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:52–53 में इसी बारे में बात नहीं की थी? "आखिरी तुरही की आवाज़ पर, पलक झपकते ही, मरे हुए लोग अविनाशी बनकर जी उठेंगे, और हम सब बदल जाएँगे। इस नाशवान शरीर को अविनाशी रूप धारण करना होगा, और इस नश्वर शरीर को अमर रूप धारण करना होगा" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। क्या यह वही "हमारे शरीरों का छुटकारा" नहीं है जिसके बारे में प्रेरित पौलुस रोमियों 8:23 में बात करते हैं—वही चीज़ जिसका हम इंतज़ार कर रहे हैं? इसलिए, 2 पतरस 3:11–13 में, पतरस ने कहा: “चूँकि सब कुछ इस तरह पिघल जाएगा, तो आपको किस तरह के लोग होना चाहिए? परमेश्वर के दिन का बेसब्री से इंतज़ार करते हुए आपको परमेश्वर-भक्तिपूर्ण और पवित्र जीवन जीना चाहिए। उस दिन, आकाश आग से भस्म हो जाएगा, और आकाशीय पिंड गर्मी में पिघल जाएँगे। हालाँकि, परमेश्वर के वादे के अनुसार, हम एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी की प्रतीक्षा करते हैं जहाँ केवल धार्मिकता का वास होता है” (समकालीन कोरियाई संस्करण)।

हमें यीशु का अनुकरण करना चाहिए। हमें यीशु के आँसुओं का भी अनुकरण करना चाहिए। इसलिए, हमें भी वैसे ही आँसू बहाने चाहिए जैसे यीशु ने बहाए थे। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। इस प्रकार, हम जिसके लिए प्रार्थना करते हैं, जिसकी आशा करते हैं और जिसकी प्रतीक्षा करते हैं, वह प्रभु यीशु मसीह हैं, जो स्वर्ग से इस दुनिया में फिर से आएँगे। जब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह इस पृथ्वी पर लौटेंगे, तो हम तुरंत बदलकर उनके महिमामय शरीर जैसे हो जाएँगे।

“प्रभु में दृढ़ बने रहो”

[फिलिप्पियों 4:1-5]

क्या आप अपने विश्वास में दृढ़ हैं? बाइबल में यशायाह 7:9 कहता है: “...यदि तुम अपने विश्वास में दृढ़ नहीं रहते, तो तुम बिल्कुल भी टिक नहीं पाओगे।” यीशु पर हमारा विश्वास पक्का होना चाहिए। इसलिए, हमें विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 16:13)। ऐसा करने के लिए, हमें प्रभु के वचन पर दृढ़ता से खड़े रहना होगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे कदमों को अपने वचन में दृढ़ता से स्थापित करे (भजन संहिता 119:133)। याकूब 5:8 कहता है: “तुम भी धीरज रखो और अपने दिलों को मज़बूत करके दृढ़ बने रहो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है।”

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:1 को *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में इस तरह पढ़ा जाता है: “मेरे भाइयों, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ और जिनसे मिलने की लालसा रखता हूँ—तुम ही मेरी खुशी और मेरा मुकुट हो। इसलिए, प्रभु में दृढ़ बने रहो।” यहाँ, जब पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को अपना पत्र लिखता है, तो वह उन्हें संबोधित करते हुए कहता है, “मेरे भाइयों, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ और जिनसे मिलने की लालसा रखता हूँ—तुम ही मेरी खुशी और मेरा मुकुट हो।” इसका क्या अर्थ है? ऐसी ही भावना 1 थिस्सलुनीकियों 2:19–20 में भी दिखाई देती है: “क्योंकि जब हमारे प्रभु यीशु आएँगे, तो उनकी उपस्थिति में हमारी आशा, हमारी खुशी या वह मुकुट क्या होगा जिस पर हम गर्व करेंगे? क्या वह तुम नहीं हो? सचमुच, तुम ही हमारी महिमा और खुशी हो।” पौलुस के लिए, फिलिप्पी और थिस्सलुनीकी कलीसियाओं के विश्वासी उसकी खुशी और गर्व का मुकुट थे, जब प्रभु यीशु इस दुनिया में वापस आएँगे। पौलुस की खुशी का

स्रोत क्या था? फिलिप्पियों 1:18 के अनुसार, पौलुस की खुशी मसीह के प्रचार में थी। इसके अलावा, आयत 25 बताती है कि उसकी खुशी फिलिप्पी विश्वासियों के विश्वास को बढ़ते हुए देखने और उसके साथ मिलने वाली खुशी का अनुभव करने से आती थी। फिलिप्पियों 2:1–2 से पता चलता है कि पौलुस की खुशी पवित्र आत्मा में विश्वासियों की संगति में थी—जिसकी विशेषता आपसी प्रोत्साहन, सांत्वना, दया और करुणा थी (आयत 1)—और उनकी एकता में, जिसमें वे एक जैसा प्रेम रखते थे और एक मन और उद्देश्य के थे (आयत 2)। इसके अलावा, आयत 17 दिखाती है कि पौलुस को फिलिप्पी के विश्वासियों के विश्वास की "बलिदान और सेवा" के साथ-साथ खुद को भी बलिदान के रूप में पेश करने का मौका मिलने पर खुशी हुई। संक्षेप में, पौलुस की खुशी फिलिप्पी के विश्वासी ही थे—वे आध्यात्मिक बच्चे जिन्हें उसने अपने प्रचार के ज़रिए उद्धार तक पहुँचाया था (4:1)। वे उसका "मुकुट" भी थे (आयत 1)। इसका क्या मतलब है? प्रेरित पौलुस के समय में, "मुकुट" का मतलब उस इनाम से था जो खेल के मैदान में दौड़ जीतने वाले अकेले विजेता को दिया जाता था। 1 कुरिन्थियों 9:24–25 को देखें: "क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में बहुत से धावक हिस्सा लेते हैं, लेकिन इनाम सिर्फ़ एक ही जीतता है? इस तरह दौड़ो कि तुम जीत सको। जो कोई भी हिस्सा लेता है, वह हर चीज़ में संयम बरतता है। वे ऐसा नाश होने वाले मुकुट को पाने के लिए करते हैं, लेकिन हम ऐसा कभी न नाश होने वाले मुकुट के लिए करते हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। "मुकुट" के बारे में, पादरी जॉन मैकआर्थर बताते हैं कि इसका मतलब उस सम्मान से है जो किसी व्यक्ति को दावत में अपने साथियों से उसकी सफलता या फलदायी जीवन के प्रतीक के तौर पर मिलता है (मैकआर्थर)। असल में, क्योंकि फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी इस बात का सबूत थे कि पौलुस की कोशिशें रंग लाई थीं, इसलिए उसने उन्हें "मेरा मुकुट" कहा (फिलिप्पियों 4:1)। हमारा मुकुट क्या है? क्या हमारे अपने मुकुट वे भाई-बहन नहीं हैं—जिनकी हमने परमेश्वर के वचन से देखभाल की है और जिन्हें हमने परमेश्वर की सही इच्छा का पालन करते हुए यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया है—और ऐसा हमने पहले खुद उसके राज्य और धार्मिकता की खोज करने के बाद किया है? जिस दिन प्रभु इस धरती पर लौटेंगे, उनके सामने हमारा गर्व और हमारा मुकुट ठीक यही भाई-बहन होंगे—हमारे बचाए गए आध्यात्मिक बच्चे।

पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को—जिनसे वह प्यार करता था और जिनसे मिलने के लिए तरसता था, और जो उसकी खुशी और मुकुट थे—ज़ोर देकर कहा, "इसलिए, प्रभु में मज़बूती से खड़े रहो" (आयत 1)। इसका क्या कारण था? मेरा मानना है कि इसके दो कारण थे। पहला कारण फिलिप्पी कलीसिया के अंदर का

कोई मामला लगता है, जबकि दूसरा बाहरी मामला था। सबसे पहले, उन बाहरी कारणों के बारे में बात करते हैं जिनकी वजह से फिलिप्पी की कलीसिया को प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने में मुश्किल हो रही थी: ये कारण उन "कुत्तों," "बुरे काम करने वालों," और "शरीर को काटने-छांटने वालों" से जुड़े हैं—यानी वे यहूदी-वादी लोग जो शरीर पर भरोसा करते थे—जिनके बारे में पौलुस ने फिलिप्पियों 3:2 में विश्वासियों को चेतावनी दी थी। इनमें उसी अध्याय की आयतों 18-19 में बताए गए "मसीह के क्रूस के दुश्मन" भी शामिल हैं—ऐसे लोग जो "दुनिया की चीज़ों पर ध्यान लगाते थे," "अपनी शारीरिक इच्छाओं को ही अपना भगवान मानते थे," और "ऐसी चीज़ों पर गर्व करते थे जिन पर उन्हें शर्म आनी चाहिए थी।" फिर, कलीसिया के अस्थिर होने के अंदरूनी कारण क्या थे? जैसा कि फिलिप्पियों 1:15, 17 और 2:3 में देखा जा सकता है, समुदाय में कुछ ऐसे लोग थे जिनके मन में "ईर्ष्या और होड़" (1:15) थी, जो "गलत इरादों और झगड़े की वजह से मसीह का प्रचार करते थे" (1:17), और "बेकार के घमंड" (2:3) में काम करते थे। खास तौर पर, यह बात कि पौलुस ने आज के हिस्से (फिलिप्पियों 4:2) में दो महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे—का साफ़-साफ़ नाम लिया और उनसे "प्रभु में एक मन होने" (या "प्रभु में एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने") की गुज़ारिश की, यह बताती है कि अंदरूनी झगड़े कलीसिया को मज़बूती से खड़े होने से रोक रहे थे। इसी माहौल में प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों को लिखते हुए फिलिप्पियों 4:1 में उन्हें "प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने" के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह सलाह इसलिए दी क्योंकि फिलिप्पी के विश्वासी उनके प्यारे भाई-बहन थे—जिनके लिए वे यीशु मसीह के दिल से तड़पते थे—और क्योंकि वे उनकी खुशी और उनका ताज थे। आज, इस हिस्से और "प्रभु में मज़बूती से खड़े रहो" शीर्षक पर ध्यान देते हुए, मैं चार मुख्य बातों पर विचार करना चाहता हूँ कि प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए हमें क्या करना चाहिए—और कैसे—और इस तरह उनसे मिलने वाली सीख को अपनाना चाहिए।

पहला, प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें उसमें एक मन होना चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:2 को देखिए: "मैं यूओदिया से विनती करता हूँ और सुन्तुखे से भी विनती करता हूँ कि वे प्रभु में एक मन हों।" प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए कलीसियाई समुदाय को क्या करना चाहिए? इसे एक पेड़ के उदाहरण से समझते हैं: जैसे कोई पेड़ तब मज़बूती से खड़ा रहता है जब उसकी जड़ें किसी नदी के किनारे गहरी जमी होती हैं, वैसे ही चर्च को अपनी जड़ें प्रभु में जमानी चाहिए, जो हमारी चट्टान हैं।

कुलुस्सियों 2:6–7 को देखें: "इसलिए, जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु के रूप में अपनाया है, वैसे ही उसमें अपना जीवन जीते रहो, उसमें अपनी जड़ें जमाओ और आगे बढ़ो, जैसा तुम्हें सिखाया गया था वैसे ही विश्वास में मज़बूत बनो और धन्यवाद से भरे रहो।" प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें अपनी जड़ें उनमें गहरी जमानी होंगी और अपने जीवन की नींव उन पर रखनी होगी। इसके अलावा, हमें उनकी शिक्षाओं के अनुसार विश्वास में मज़बूती से खड़े रहना होगा और कृतज्ञता से भरा जीवन जीना होगा। इससे मत्ती 7 (पद 24) में बताए गए उस "समझदार व्यक्ति" की याद आती है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया था। क्योंकि उस समझदार व्यक्ति ने अपना घर चट्टान पर बनाया था, इसलिए वह तब भी नहीं गिरा जब "बारिश हुई, बाढ़ आई, और हवाएँ चलीं और घर से टकराईं" (पद 25)। हम उस समझदार व्यक्ति की तरह चट्टान पर अपना घर कैसे बना सकते हैं? यह प्रभु की बातें सुनकर और उन्हें अमल में लाकर संभव है (पद 24)। अगर हम प्रभु की बातें सुनते हैं लेकिन उन पर अमल नहीं करते, तो हम अपना घर रेत पर बना रहे होते हैं (पद 26)। अगर हम प्रभु की बातें सुनते हैं लेकिन उन्हें अमल में नहीं लाते, तो हम मूर्ख लोग हैं जो अपना चर्च रेत पर बना रहे हैं। नतीजतन, जब "बारिश होती है, बाढ़ आती है, और हवाएँ चलती हैं और घर से टकराती हैं, तो वह पूरी तरह गिर जाता है" (पद 27)। इसलिए, चर्च के प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें प्रभु में—जो चट्टान हैं—खड़े रहना होगा, उनकी बातें सुननी होंगी और विश्वास के साथ काम करना होगा।

इसके अलावा, चर्च के प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, इसके सदस्यों का प्रभु में एक ही मन होना ज़रूरी है, जैसा कि फिलिप्पियों 4:2 के आखिरी हिस्से में बताया गया है—जो आज हमारा मुख्य वचन है। फिलिप्पियों 4:2 को देखिए: “मैं यूदिया और सुन्तुखे से विनती करता हूँ कि वे प्रभु में एक मन की हों” [(कंटेम्पररी कोरियन वर्शन) “मैं यूदिया और सुन्तुखे से आग्रह करता हूँ: प्रभु में एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहें।” जहाँ 'रिवाइज्ड न्यू कोरियन वर्शन' इसका अनुवाद “प्रभु में एक मन की हों” करता है, वहीं 'कंटेम्पररी कोरियन वर्शन' इसका अनुवाद “प्रभु में एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहें” करता है।] इस वचन से हम देख सकते हैं कि फिलिप्पी चर्च की दो महिलाएँ—यूदिया और सुन्तुखे—प्रभु में एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप से नहीं रह रही थीं। इस अनबन का कारण यह था कि उनकी सोच अलग-अलग थी। इसीलिए प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते समय खास तौर पर इन दो महिलाओं का नाम लिया और उनसे आग्रह किया कि वे “प्रभु में एक मन

की हों।" क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? दो महिलाएँ जो चर्च की सेवा तो लगन से करती हैं, लेकिन प्रभु में एक मन होने के बजाय अलग-अलग सोच के साथ काम करती हैं? अगर हम इसे परिवार के संदर्भ में देखें, तो एक घर का क्या हाल होगा अगर दो बेटियों की सोच एक जैसी न हो और इसके बजाय उनका रवैया एक-दूसरे के उलट हो? मुझे यीशु के शब्द याद आते हैं। मत्ती 12:26 में, यीशु ने कहा: "यदि शैतान शैतान को ही निकालता है, तो वह अपने ही विरुद्ध बँट गया है। फिर उसका राज्य कैसे टिक सकता है?" [(कंटेम्पररी कोरियन वर्शन) "यदि शैतान शैतान को ही निकालता है, तो वह पहले ही बँट गया है और अपने ही विरुद्ध लड़ रहा है; फिर उसका राज्य कैसे टिक सकता है?"] मरकुस 3:25 कहता है, "यदि कोई घर अपने ही विरुद्ध बँट जाए, तो वह घर टिक नहीं सकता।" यही बात चर्च पर भी लागू होती है। अगर चर्च के भाई-बहन प्रभु में एक मन नहीं रखते और इसके बजाय एक-दूसरे से झगड़ते हैं, और हर कोई अपनी मर्ज़ी चलाता है, तो वह चर्च मज़बूती से खड़ा नहीं रह सकता। पास्टर जॉन मैकआर्थर ने कहा, "आत्मिक स्थिरता विश्वासियों के बीच आपसी प्रेम, मेल-मिलाप और शांति पर निर्भर करती है।" इससे यह सवाल उठता है: फिलिप्पी कलीसिया की महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे—की सोच कैसी थी कि पौलुस को खास तौर पर उनके नाम लेने पड़े और उन्हें प्रभु में एक मन होने के लिए कहना पड़ा? मुझे लगता है कि इसका जवाब फिलिप्पियों 2:3-4 में मिलता है: "स्वार्थ या घमंड में आकर कुछ न करो। बल्कि, नम्रता से दूसरों को अपने से बेहतर समझो, सिर्फ़ अपने फ़ायदे के बारे में न सोचो, बल्कि हर कोई दूसरों के फ़ायदे के बारे में भी सोचे।" इस आयत को ध्यान में रखते हुए, ऐसा लगता है कि यूओदिया और सुन्तुखे के बीच प्रभु में एक मन न होने की वजह यह थी कि उनमें "नम्र दिल" की कमी थी और इसके बजाय उनमें "घमंड" था। गर्व और घमंड के कारण, वे शायद खुद को दूसरों से बेहतर समझती थीं और दूसरों की ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ करके सिर्फ़ अपने कामों पर ध्यान देती थीं। संक्षेप में, ऐसा लगता है कि उन्होंने दूसरों के फ़ायदे के बजाय अपने फ़ायदे को ज़्यादा अहमियत दी, और इसी सोच की वजह से शायद उनके बीच झगड़ा हुआ। उन दोनों महिलाओं के बीच का झगड़ा इतना गंभीर था कि प्रेरित पौलुस को—जेल से फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते समय—खास तौर पर उनके नाम लेने पड़े और उन्हें प्रभु में एक मन होने के लिए कहना पड़ा।

हमें प्रभु में एक मन होना चाहिए। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:2 में पहले ही कहा था: "एक जैसी सोच रखो, एक जैसा प्यार रखो, एक मन और एक सोच के हो जाओ।" तो फिर, यह "एक मन" या "एक जैसी सोच" क्या है जिसके बारे में पौलुस बात करते हैं? फिलिप्पियों 2:5 देखिए। पौलुस ने कहा: "तुममें भी वही सोच होनी चाहिए जो मसीह यीशु में थी।" कलीसिया के सभी सदस्यों को जो सोच अपनानी चाहिए, वह असल में मसीह यीशु की सोच है। तो फिर, मसीह यीशु की वह सोच क्या है जिसके बारे में पौलुस बताते हैं? मसीह यीशु की वह सोच क्या है जिसे हमें अपनाना चाहिए? फिलिप्पियों 2:6-8 हमें तीन मुख्य बातों के ज़रिए इसके बारे में सिखाता है: (1) मसीह यीशु की जो सोच हमें अपनानी चाहिए, वह ऐसी है जो दूसरों के बराबर होने को कोई ऐसी चीज़ नहीं मानती जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए या अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल किया जाए (आयत 6)। (2) मसीह यीशु की जो सोच हमें अपनानी चाहिए, वह ऐसी है जो खुद को खाली कर देती है और एक सेवक की तरह दूसरों की सेवा करती है (आयत 7)। (3) हमें मसीह यीशु जैसी सोच अपनानी चाहिए, जो खुद को विनम्र बनाती है और मौत तक प्रभु की आज्ञा मानती है (वचन 8)। हमें घमंडी नहीं होना चाहिए। घमंडी व्यक्ति की ऊँचा उठने की इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकती। दूसरों से महिमा पाने का घमंड कभी पूरा नहीं हो सकता। हमें कभी भी महिमा का लालच नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, हमें विनम्र होना चाहिए। हमें खुद को विनम्र बनाना चाहिए। हमें खुद को नीचे रखना चाहिए, और भी नीचे। ऐसा करने के लिए, हमें मसीह यीशु की विनम्र सोच को अपनाना होगा। हालाँकि यीशु असल में परमेश्वर के रूप में थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर के बराबर होने को पकड़कर रखने की चीज़ नहीं समझा; इसके बजाय, उन्होंने खुद को खाली कर दिया, एक सेवक का रूप लिया, और इंसानों जैसे बन गए। इंसान के रूप में आकर, उन्होंने खुद को विनम्र किया और मौत तक आज्ञाकारी रहे—यहाँ तक कि क्रूस की मौत तक, जो श्राप का पेड़ है। इसी वजह से, परमेश्वर ने उन्हें बहुत ऊँचा उठाया और हर घुटने को उनके सामने झुकने पर मजबूर किया (वचन 9–11)। आइए हम यह याद रखें: लोगों के बजाय परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाया जाना कहीं बेहतर है। परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाए जाने के लिए, हमें परमेश्वर और दूसरों, दोनों के सामने विनम्र होना चाहिए। जब हम परमेश्वर और लोगों के सामने विनम्र रहते हैं, तो वह हमें अपने समय पर ऊँचा उठाएँगे।

दूसरी बात, प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

एक बार, इंग्लिश मिनिस्ट्री के लिए शुक्रवार की बाइबल स्टडी के दौरान, ब्रदर जिन ने ग्रुप को उन मटीरियल्स का इस्तेमाल करके गाइड किया जो सभी को उनके आध्यात्मिक वरदानों (spiritual gifts) को खोजने में मदद करने के लिए बनाए गए थे। उस रात स्टडी खत्म होने के बाद, मैं अपनी बेटियों, येरी और यीउन के साथ घर जा रहा था, और मैंने उनसे सेशन के बारे में पूछा। जब उन्होंने बताया कि उन्होंने आध्यात्मिक वरदानों की खोज के बारे में स्टडी की थी, तो मैंने पूछा कि नतीजों में उनके अपने वरदानों के बारे में क्या पता चला। मुझे याद है कि सिर्फ़ येरी ने जवाब दिया, और बताया कि नतीजों से पता चला कि उसके पास लगभग तीन अलग-अलग वरदान थे। आप अपने वरदान क्या मानते हैं? बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि हर विश्वास करने वाले को, जो यीशु पर भरोसा करता है, एक वरदान दिया गया है। यह हमें यह भी बताती है कि कलीसिया में अलग-अलग वरदान होते हैं (1 कुरिन्थियों 12:4), साथ ही सेवा के अलग-अलग रूप (वचन 5) और मिनिस्ट्री के अलग-अलग प्रकार (वचन 6) भी होते हैं। इसलिए, मेरा मानना है कि हममें से हर किसी के लिए यह सही और उचित है कि हम चर्च—जो मसीह का शरीर है—की सेवा उन आध्यात्मिक वरदानों से करें जो हमें प्रभु से मिले हैं। मेरा यह भी मानना है कि हमें मिले वरदानों का पूरा इस्तेमाल करना चाहिए और उन्हें पूरी तरह से काम में लाना चाहिए। मुझे यह बात वेटलिफ्टिंग करते समय समझ आई; मैंने देखा कि मैं बस एक निश्चित वज़न उठाने से ही संतुष्ट था। मैंने खुद को और भारी वज़न उठाने की चुनौती दी, ताकि अपनी क्षमता का पूरा इस्तेमाल कर सकूँ। इसी तरह, मुझे प्रभु से मिले वरदानों और हुनर का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल करने की चुनौती महसूस हुई। लेकिन एक समस्या भी है: जो वरदान हमें मिलते हैं, कभी-कभी उन्हीं की वजह से चर्च में झगड़े हो सकते हैं। ऐसे झगड़े तब होते हैं जब लोग मंडली में भाई-बहनों के अलग-अलग वरदानों को पहचानते या उनका सम्मान नहीं करते। लगता है कि रोम के चर्च को भी इसी समस्या का सामना करना पड़ा था। रोमियों 12:6 और 16 पर गौर करें: "हमें अलग-अलग वरदान मिले हैं, जो हममें से हर एक को मिली कृपा के अनुसार हैं। अगर आपका वरदान भविष्यवाणी करना है, तो अपने विश्वास के अनुसार भविष्यवाणी करें... एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहें। घमंड न करें, बल्कि छोटे दर्जे के लोगों के साथ घुलने-मिलने को तैयार रहें। अहंकारी न बनें।" इन आयतों से हम चार ऐसी वजहें पहचान सकते हैं जिनकी वजह से चर्च में आध्यात्मिक वरदानों को लेकर झगड़े हो सकते हैं। वे चार बातें ये हैं: (1) यह भूल जाना कि हमें मिले वरदान प्रभु ने "कृपा के अनुसार" दिए हैं; (2) यह न पहचान पाना कि हमें मिले वरदान एक-दूसरे से अलग हैं; (3) अपने वरदानों का सही तरीके से इस्तेमाल न करना; और (4) कृपा से मिले वरदानों का इस्तेमाल घमंडी दिल से करना और ऐसा व्यवहार करना मानो हम दूसरों से बेहतर हैं।

क्या आप जानते हैं कि बाइबल में "मदद करने के वरदान" (gift of helping) की बात कही गई है? 1 कुरिन्थियों 12:28 देखिए: "और परमेश्वर ने कलीसिया में सबसे पहले प्रेरितों को, दूसरे नबियों को, तीसरे शिक्षकों को, फिर चमत्कार करने वालों को, फिर चंगा करने, मदद करने, प्रबंध करने और अलग-अलग तरह की भाषाएँ बोलने वालों को नियुक्त किया है।" मेरा मानना है कि कलीसिया को बहुत लाभ होता है जब मदद करने का वरदान रखने वाले सदस्य—जो परमेश्वर से मिली अपनी प्रतिभा और अपनी-अपनी भूमिकाओं के अनुसार काम करते हैं—ईमानदारी, विनम्रता और शांति से अपनी जिम्मेदारियाँ और भूमिकाएँ निभाते हैं। इसका एक बेहतरीन उदाहरण फीबे है, जिसका ज़िक्र रोमियों 16:2 में मिलता है। प्रेरित पौलुस ने रोम की कलीसिया से उसकी सिफ़ारिश की और उसे अपने और कई अन्य लोगों के लिए एक "संरक्षक" (या "भलाई करने वाली") बताया; वह एक ऐसी सेविका थी जो पौलुस और अपने आस-पास के लोगों की मदद के लिए अपने संसाधनों का इस्तेमाल करने के लिए समर्पित थी (फ्रिबर्ग)। पास्टर जॉन मैकआर्थर के अनुसार, शुरुआती कलीसिया में महिला सेविकाएँ बीमार विश्वासियों, गरीबों, अजनबियों और जेल में बंद लोगों की देखभाल करती थीं (मैकआर्थर)। कलीसिया में फीबे जैसे जितने ज़्यादा लोग होंगे जिनके पास मदद करने का यह वरदान है, कलीसिया प्यार के एक समुदाय के रूप में उतनी ही मज़बूत होगी और इस अंधेरी दुनिया में—जहाँ प्यार कम होता जा रहा है—अपनी रोशनी फैलाएगी। जब मैं फीबे के बारे में सोचता हूँ—वह महिला जिसे प्रेरित पौलुस ने पहचाना, जिसकी तारीफ़ की और रोम की कलीसिया से जिसकी सिफ़ारिश की—तो मुझे मत्ती 5:16 याद आता है: "इसी तरह, अपनी रोशनी दूसरों के सामने चमकाओ, ताकि वे तुम्हारे अच्छे काम देख सकें और स्वर्ग में तुम्हारे पिता की महिमा कर सकें।" यह आयत इसलिए याद आती है क्योंकि "फीबे" नाम का अर्थ ही है "चमकदार और तेजस्वी।" उस नाम के अर्थ की तरह ही, आप और मैं परमेश्वर की रोशनी की संतान हैं, जिन्हें इस अंधेरी दुनिया में तेज़ी से चमकने के लिए बुलाया गया है। इसलिए, फीबे की तरह, हम सभी को कलीसिया के ऐसे सेवक बनना चाहिए जो मसीह के प्यार से एक-दूसरे की मदद करें और कलीसिया की सेवा करें, जो प्रभु का शरीर है। आज के वचन, फिलिप्पियों 4:3 को देखिए: “और मैं तुमसे, मेरे सच्चे साथी, विनती करता हूँ कि उन महिलाओं की मदद करो जिन्होंने सुसमाचार के काम में मेरे साथ, क्लेमेंट और मेरे बाकी साथियों के साथ मिलकर संघर्ष किया है, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “और मैं तुमसे, मेरे वफादार साथी, इन महिलाओं की भी मदद करने के लिए कहता हूँ। इन्होंने ही मेरे साथ—और

क्लेमेंट व मेरे अन्य साथियों के साथ—सुसमाचार फैलाने में मेहनत की है। उनके नाम पहले से ही जीवन की पुस्तक में दर्ज हैं"]। जैसे-जैसे पौलुस फिलिप्पी के संतों को अपना पत्र आगे बढ़ाते हैं, वह उस व्यक्ति से, जिसने सचमुच उनके साथ मिलकर काम किया था, उन महिलाओं की "मदद" करने का आग्रह करते हैं। हमें ठीक-ठीक नहीं पता कि यह "साथी" कौन था। पौलुस इस व्यक्ति से "उन महिलाओं" की मदद करने के लिए कहते हैं; कुछ टीकाकारों का सुझाव है कि यह व्यक्ति तीमुथियुस या सीलास (प्रेरितों के काम 15:40, 16:19) हो सकता है, या शायद फिलिप्पी का मुख्य बिशप। अन्य लोगों का मानना है कि "सिन्ज़िगस" (Synzygus) असल में उस व्यक्ति का नाम था—जो "साथी" के लिए ग्रीक शब्द (*synzygos*) से निकला है—हालाँकि यह पक्का नहीं है। हालाँकि फिलिप्पियों 4:3 में बताए गए "सच्चे साथी" की पहचान अज्ञात है, लेकिन मुख्य बात यह है कि पौलुस ने पूरी फिलिप्पी कलीसिया को संबोधित नहीं किया; बल्कि, उन्होंने खास तौर पर इस एक व्यक्ति से "उन महिलाओं" की मदद करने का आग्रह किया। ये महिलाएँ कौन हैं? वे यूओदिया और सुन्तुखे हैं, जिनका ज़िक्र पौलुस पहले ही आयत 2 में कर चुके थे। उन्होंने बताया कि ये वे महिलाएँ हैं जिन्होंने "सुसमाचार फैलाने" में उनके साथ—क्लेमेंट और उनके अन्य साथियों के साथ—मिलकर "कड़ी मेहनत" की थी (आयत 3, *समकालीन कोरियाई संस्करण*), और उन्होंने कहा कि उनकी मदद की जाए। पौलुस का आग्रह पूरी कलीसिया के लिए नहीं, बल्कि उस एक, अज्ञात "सच्चे साथी" के लिए था, ताकि वह यूओदिया और सुन्तुखे की मदद करे कि वे प्रभु में एक मन हो सकें। एक दिलचस्प बात यह है कि जब पौलुस इस व्यक्ति को अपना "सच्चा साथी" कहते हैं, तो इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द (*synzygos*) एक संयुक्त शब्द है। यह शब्द "साथ" और "काम करना" शब्दों का मेल है, जिसका मतलब है "साथी काम करने वाला" या "मददगार" (ज़ोधिआटेस)। पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल—खासकर "मददगार" के अर्थ में—फिलिप्पियों 2:25 में किया था, जब वे फिलिप्पी के विश्वासियों से एपफ्रुदितुस के बारे में बात कर रहे थे। हो सकता है कि एपफ्रुदितुस को फिलिप्पी की कलीसिया में "बहुत जल्दी" (आयत 28) भेजने के बाद, पौलुस ने उसे यूओदिया और सुन्तुखे की मदद करने के लिए कहा हो ताकि वे प्रभु में एक मन हो सकें। यह सिर्फ़ मेरा अपना अंदाज़ा है।

यहाँ हम यह सवाल पूछ सकते हैं: इन दो महिलाओं की किस तरह और किस मामले में मदद की जानी चाहिए? आज के हिस्से की दूसरी आयत से एक साफ़ बात पता चलती है कि यूओदिया और सुन्तुखे प्रभु में एक मन नहीं थीं—यानी प्रभु में उनकी आपस में नहीं बन रही थी। तो, अगर हमारी अपनी कलीसिया की दो महिला सदस्य—जो मसीह की देह की लगन से सेवा कर रही हैं और सुसमाचार फैलाने के लिए मेहनत कर रही हैं—एक मन नहीं हो पातीं और उनके बीच अच्छे संबंध नहीं हैं, तो हमें उनकी मदद कैसे करनी चाहिए? मेरा पहला विचार यह है कि हमें उनके बीच मेल-मिलाप कराने और उन्हें मिल-जुलकर रहने में मदद करनी चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें सबसे पहले प्रार्थना करनी चाहिए कि वे मेल-मिलाप करें और प्रभु में एक-दूसरे के साथ शांति पाएँ। इसके अलावा, हमें शांति लाने वालों की तरह काम करना चाहिए। हमें उनके साथ सुसमाचार बाँटने की ज़रूरत है—खासकर यीशु मसीह का सुसमाचार, जो शांति लाने वाले हैं—ताकि उनके दिलों के बीच की दीवारें टूट सकें। इफिसियों 2:14–17 को देखिए: "यीशु हमारी शांति हैं। उन्होंने उस दीवार को तोड़ दिया जो यहूदियों और गैर-यहूदियों को अलग करती थी, और उन्हें एक बना दिया। अपनी शारीरिक मृत्यु के द्वारा, यीशु ने आज्ञाओं के उस नियम को खत्म कर दिया जिसने उन्हें दुश्मन बना दिया था; उनका मकसद यहूदियों और गैर-यहूदियों से एक नया समाज बनाना था—उनका मेल-मिलाप कराना, क्रूस के ज़रिए उनकी दुश्मनी खत्म करना और उन्हें एक देह में जोड़कर परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कराना। इस तरह, यीशु आए और उन्होंने शांति का सुसमाचार उन दोनों को सुनाया जो परमेश्वर से दूर थे—जैसे तुम गैर-यहूदी—और जो परमेश्वर के करीब थे—यहूदी" (कंटेम्पररी कोरियन बाइबल)। हमें उन दो बहनों को फिलिप्पियों 4:3 के दूसरे हिस्से में बताई गई बात याद दिलानी चाहिए—कि उनके नाम पहले से ही जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं। क्या उन लोगों के लिए—जिन्होंने अनंत जीवन पाया है और स्वर्ग की नागरिकता रखते हैं, और जिनके नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज हैं—प्रभु में रहते हुए आपस में मतभेद रखना सही है? क्या उन्हें प्रभु में एक ही सोच—यीशु जैसी सोच—नहीं रखनी चाहिए? हमें उन्हें यह सच्चाई याद दिलानी चाहिए और उन्हें मेल-मिलाप और एकता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो पवित्र आत्मा उनके दिलों में काम करेगा और उन्हें उन बातों—जैसे घमंड या झगड़ा—से तौबा करने और उन्हें छोड़ने के लिए प्रेरित करेगा जो उन्हें एक सोच रखने से रोकती हैं; वह उन्हें प्रेम (आत्मा का फल) से भर देगा, उनमें यीशु जैसा विनम्र हृदय पैदा करेगा, और उन्हें प्रभु में एक सोच और एकता में जोड़ देगा। उनके मेल-मिलाप से, वे न केवल कलीसिया में दूसरे विश्वासियों को मज़बूत करेंगी, बल्कि

कलीसिया खुद एक ऐसे समुदाय के रूप में उभरेगी जो एक मन का है और जो स्थानीय समुदाय में आशीष लाता है और प्रशंसा पाता है। जिस व्यक्ति ने पौलुस के साथ मिलकर काम किया था, उसके लिए यूओदिया और सुन्तुखे की मदद करने का तरीका यह है कि वह सुसमाचार के काम के लिए उनके साथ मिलकर प्रयास करे। आज के वचन, फिलिप्पियों 4:3 को फिर से देखें: "और मैं तुझसे, मेरे सच्चे साथी, विनती करता हूँ कि तू उन महिलाओं की मदद कर जिन्होंने सुसमाचार के काम में मेरे साथ संघर्ष किया है..." [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "और तुम, मेरे वफादार सहकर्मियों, कृपया इन महिलाओं की मदद करो। ये वे महिलाएँ हैं जिन्होंने मेरे साथ—और क्लेमेंट और मेरे अन्य सहकर्मियों के साथ—सुसमाचार फैलाने में मेहनत की है..."]। चूँकि प्रेरित पौलुस यूओदिया और सुन्तुखे का वर्णन ऐसी महिलाओं के रूप में करता है जिन्होंने सुसमाचार के लिए उसके साथ मेहनत की थी, ऐसा लगता है कि उसने यह पहचान लिया था कि प्रभु में एक सोच न रख पाना (वचन 2) सुसमाचार की सेवा के लिए नुकसानदेह था। शायद इसीलिए उसने पहले वचन 2 में उन दो महिलाओं से ज़ोर देकर कहा कि वे "प्रभु में एक सोच रखें," और फिर, वचन 3 में दूसरों से उनकी मदद करने के लिए कहा। हमारे लिए सबक यह है कि जब हम यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए मिलकर काम करते हैं, तो यह बहुत ज़रूरी है कि हम पहले प्रभु में एक सोच और एक मकसद रखें, और मेल-मिलाप और एकता में रहें। अगर हम आपस में झगड़ते और बंटे हुए रहकर सुसमाचार का काम करते हैं, तो हम सुसमाचार के प्रचार में बाधा डालते हैं।

प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। ऐसा करते समय, हमें एक ही सोच रखनी चाहिए—प्रभु की सोच। अगर हम प्रभु में इस एकता को बनाए रखने में नाकाम रहते हैं, तो हम न केवल कलीसिया को मज़बूत करने में असफल होते हैं, बल्कि स्थानीय समुदाय में सुसमाचार फैलाने के काम में भी रुकावट डालते हैं। इससे निश्चित रूप से परमेश्वर की महिमा नहीं होती; बल्कि, यह एक पाप है जो उनकी महिमा को धुंधला कर देता है। हमें एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए। हमें प्रभु में एक मन होकर कलीसिया—मसीह की देह—की सेवा करनी चाहिए। खासकर, हमें यीशु मसीह के मन के साथ उन लोगों का समर्थन करना चाहिए जो सुसमाचार के काम में मेहनत करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारी कलीसिया प्रभु में मज़बूती से खड़ी रह सकती है।

तीसरी बात, प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें हमेशा उसमें आनंदित रहना चाहिए।

क्या आप हमेशा आनंदित रहते हैं? 1 थिस्सलुनीकियों 5:16 हमें "हमेशा आनंदित रहने" का आदेश देता है, लेकिन यह कैसे संभव है? बेशक, अपनी ताकत से यह असंभव है, लेकिन परमेश्वर की शक्ति से यह संभव है। इस बात पर विश्वास करते हुए, हमें सबसे पहले परमेश्वर से "आनंद" मांगना चाहिए—जो पवित्र आत्मा के फलों में से एक है (गलातियों 5:22)। ऐसा करते समय, हमें यीशु का अनुकरण करना चाहिए। यूहन्ना 8:29 को देखें: "जिसने मुझे भेजा है, वह मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे भाता है।" यीशु की तरह, हमें भी हमेशा वही करना चाहिए जो परमेश्वर को भाता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम हमेशा आनंदित रह सकते हैं।

व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं "आनंदित रहने" के बाइबिल के आदेश के बारे में सोचता हूँ, तो एक खास वचन मेरे मन में आता है। वह वचन नहेमायाह 8:10 का बाद वाला हिस्सा है: "...प्रभु का आनंद ही तुम्हारी ताकत है।" हालाँकि आनंद के विचार पर मनन करते समय मैं व्यक्तिगत रूप से इस वचन को बहुत महत्व देता हूँ, लेकिन असल में, यह अभी तक मेरे अपने जीवन का एक जाना-पहचाना हिस्सा नहीं बना है; मैं अभी भी यह सीखने की प्रक्रिया में हूँ कि इसका क्या अर्थ है। जब मैं इस वचन पर विचार करता हूँ, तो मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या मैं सचमुच ऐसा जीवन जी रहा हूँ जिसमें प्रभु में आनंद मिलता है। ऐसा करते समय, मैं यह भी सवाल करता हूँ कि क्या प्रभु में आनंद पाना ही वास्तव में मेरी ताकत का स्रोत है। तो, हम प्रभु में आनंद कैसे पा सकते हैं? नहेमायाह 8:10 के संदर्भ के आधार पर, मैंने तीन बातों पर मनन किया है:

(1) प्रभु में आनंद पाने के लिए, हमें शोक नहीं करना चाहिए और न ही रोना चाहिए।

नहेमायाह 8:9 को देखें: “क्योंकि जब लोग व्यवस्था की बातें सुन रहे थे, तो वे सब रो रहे थे। तब राज्यपाल नहेमायाह, याजक और व्यवस्था के शिक्षक एज्रा, और लोगों को सिखाने वाले लेवीवंशियों ने उन सब से कहा, ‘यह दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र है। शोक न करो और न ही रोओ।’” जब इस्राएल के लोगों ने एज्रा के माध्यम से मूसा की व्यवस्था सुनी और लेवीवंशियों के माध्यम से उसे समझा, तो उनके पाप उजागर हो गए, और वे पछतावे के आँसू बहाए बिना नहीं रह सके। दूसरे शब्दों में, वे इसलिए रोए क्योंकि व्यवस्था ने उन्हें उनके पापों का एहसास कराया। एज्रा के ऐसे आँसू बहाने का विवरण एज्रा 10:1 में भी मिलता है: “जब एज्रा प्रार्थना

कर रहा था और पाप स्वीकार कर रहा था, रो रहा था और परमेश्वर के भवन के सामने ज़मीन पर गिर पड़ा था, तो इस्राएलियों की एक बड़ी भीड़—पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे—उसके चारों ओर जमा हो गई। वे भी फूट-फूटकर रोए...।" जब इस्राएल के लोग अपने पापों का एहसास होने पर रो रहे थे, तो नहेमायाह, एज्रा और लोगों को सिखाने वाले लेवीवंशियों ने उनसे शोक न करने या न रोने का आग्रह किया, क्योंकि यह परमेश्वर को समर्पित एक पवित्र दिन था। इसे आधुनिक शब्दों में कहें तो, यह उस स्थिति के समान है जहाँ किसी पास्टर या बाइबल अध्ययन शिक्षक के माध्यम से परमेश्वर का वचन सुनने और अपने पापों का एहसास होने के बाद, मंडली पछतावे के आँसू बहाती है—और फिर उनके पास्टर, एल्डर और शिक्षक उन्हें शोक न करने या न रोने के लिए प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि यह प्रभु का दिन है।

(2) प्रभु में आनंद मनाने के लिए, हमें चिंता नहीं करनी चाहिए।

नहेमायाह 8:10–11 को देखें: "...क्योंकि यह दिन हमारे प्रभु के लिए पवित्र है; शोक न करो... क्योंकि यह दिन पवित्र है; शोक न करो।" जल-फाटक पर जमा इस्राएली चिंता से क्यों भरे हुए थे? उनकी परेशानी का कारण यह था कि वे लंबे समय से प्रभु की सही ढंग से सेवा करने में विफल रहे थे, और उन्हें इस बात की स्पष्ट समझ नहीं थी कि परमेश्वर को क्या प्रसन्न करता है और क्या अप्रसन्न (पैकर)। "चिंता से उबरने की समझदारी" (The Wisdom to Overcome Worry) नाम के लेख में, जो मैन-जे (Jo Man-je) नाम के लेखक कहते हैं: "जैसा कि शेक्सपियर ने ज़ोर देकर कहा था, 'चिंता जीवन की दुश्मन है'; जब तक चिंता बनी रहती है, कोई भी खुश नहीं रह सकता या आनंद नहीं पा सकता। चिंता सेहत को नुकसान पहुँचाती है, जीवन को छोटा करती है, और लोगों को नए, रचनात्मक कामों में खुद को लगाने से रोकती है... यहाँ तक कि मशहूर ईसप (Aesop) ने भी कहा था, 'शांति से खाया गया रोटी का एक टुकड़ा चिंता में खाए गए दावत से बेहतर है'" (इंटरनेट)। सच तो यह है कि चिंता हमें ताकत नहीं देती; बल्कि, यह हमें और कमज़ोर बनाती है। इसलिए, नहेमायाह, एज्रा और लेवीवंशियों ने, जिन्होंने लोगों को सिखाया था, रोते हुए इस्राएलियों से दो बार कहा, "दुखी मत हो" (पद 9 और 10)। मशहूर गॉस्पेल गीत "दिस इज़ द डे" (This Is the Day) के बोल कुछ इस तरह हैं: "यह वह दिन है, यह वह दिन है जिसे प्रभु ने बनाया है, जिसे प्रभु ने बनाया है; हम आनंद मनाएँगे, हम आनंद मनाएँगे और इसमें खुश होंगे, और इसमें खुश होंगे; यह वह दिन है जिसे प्रभु ने बनाया है; हम आनंद मनाएँगे और इसमें खुश होंगे; यह वह दिन है, यह

वह दिन है जिसे प्रभु ने बनाया है।" जब हम प्रभु के दिन प्रभु के घर में आराधना करने आते हैं, तो हमें दुख महसूस हो सकता है—और वास्तव में होना भी चाहिए—क्योंकि परमेश्वर की पवित्रता की उपस्थिति में हमारे पाप उजागर होते हैं। हालाँकि, केवल यह दुख हमारी ताकत का स्रोत नहीं हो सकता। हमें क्रूस पर बहाए गए यीशु के बहुमूल्य लहू पर भरोसा करते हुए अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करनी चाहिए। तभी हम पापों की क्षमा पाकर और उनसे आज़ादी का आनंद लेकर खुश हो सकते हैं।

(3) प्रभु में आनंद मनाने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन को समझना होगा।

नहेमायाह 8:12 को देखें: "तब सब लोग खाने-पीने, भोजन का हिस्सा भेजने और बड़ी खुशी के साथ जश्न मनाने के लिए चले गए, क्योंकि वे अब उन बातों को समझ गए थे जो उन्हें बताई गई थीं।" नहेमायाह, एज्रा और लेवीवंशियों—जिन्होंने उन्हें मूसा की व्यवस्था को समझने में मदद की थी—की बातों को सुनकर, इस्राएलियों ने रोना और दुख मनाना बंद कर दिया और "बड़ी खुशी के साथ जश्न मनाया।" इसका कारण यह था कि वे "उन शब्दों को समझ गए थे जो उन्हें बताए गए थे" (पद 12)। दूसरे शब्दों में, इस्राएलियों के दुख, आँसू और शोक को दूर करने वाली चीज़ मूसा की व्यवस्था की स्पष्ट समझ ही थी। हालाँकि मूसा की व्यवस्था हमें पाप के बारे में बताती है—हमें हमारे पापी होने का एहसास कराती है—लेकिन यह हमें बचा नहीं सकती। फिर भी, मूसा की व्यवस्था यीशु मसीह की ओर इशारा करती है (गलातियों 3:24)। दूसरे शब्दों में, मूसा की व्यवस्था के ज़रिए हमें अपने पाप का एहसास होता है, और हम यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं, जिनकी ओर वह व्यवस्था इशारा करती है। इस्राएल के लोगों ने जब इस सच्चाई को स्पष्ट रूप से समझ लिया, तो उन्होंने शोक मनाना, रोना और चिंता करना छोड़ दिया और बहुत आनंदित हुए। फिर भी, आज बहुत से ईसाइयों के लिए सच्चाई यह लगती है कि बहुत कम लोग ही सच्चे पश्चाताप के साथ आने वाले आँसू, दुख और चिंता का अनुभव करते हैं—ऐसा अनुभव जो तब होता है जब परमेश्वर का वचन सुनकर किसी का दिल गहराई से प्रभावित होता है। हमें इस चरण से आगे बढ़ना चाहिए। पश्चाताप का चरण—वचन सुनना और अपने पाप का एहसास करना—केवल शुरुआत है, अंतिम मंज़िल नहीं। परमेश्वर का वचन जिस अंतिम लक्ष्य की ओर इशारा करता है, वह यीशु मसीह हैं—खासकर, उनमें मिलने वाली पापों की क्षमा और उद्धार। जो विश्वासी परमेश्वर के वचन को स्पष्ट रूप से समझते हैं, वे विश्वास के साथ यीशु मसीह की ओर देखते हैं, जिनकी ओर वचन इशारा करता है। नतीजतन,

जब वे यीशु मसीह के बहाए गए लहू की शक्ति पर भरोसा करते हुए पश्चाताप के आँसू बहाते हैं, तो वे शांति का आनंद लेते हैं, यह जानते हुए कि प्रभु ने उनके दिलों से सारा दुख और चिंता दूर कर दी है।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:4 को देखें: "प्रभु में सदा आनंदित रहो। मैं फिर कहता हूँ: आनंदित रहो!" पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कह रहा है कि "प्रभु में सदा आनंदित रहो" और दोहराता है, "आनंदित रहो!" उसने पहले भी फिलिप्पियों 2:17 ("...मैं आनंदित होता हूँ और तुम सबके साथ अपना आनंद साझा करता हूँ") और 3:1 के पहले भाग ("अंत में, मेरे भाइयों, प्रभु में आनंदित रहो") में आनंदित होने के बारे में कहा था। आज के वचन—फिलिप्पियों 4:4—में वे फिर से कहते हैं, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो..." वे फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से "आनन्दित रहने" के लिए कहते हैं। जब पौलुस प्रभु में "सदा" आनन्दित रहने की बात करते हैं, तो उनका मतलब है कि फिलिप्पी के विश्वासियों को उनमें तब भी आनन्दित रहना चाहिए जब वे उनके साथ सुसमाचार के काम में हिस्सा ले रहे हों (1:5) और सुसमाचार का विरोध करने वालों द्वारा दिए गए कष्टों को सह रहे हों (पद 28–30)। यह कैसे संभव है? मेरा मानना है कि इसका जवाब फिलिप्पियों 1:29 में है: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है।" दूसरे शब्दों में, सुसमाचार का प्रचार करते समय विरोधियों के हाथों दुख सहने पर भी हम प्रभु में इसलिए आनन्दित हो सकते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि यीशु मसीह के लिए ऐसा दुख सहना असल में परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है। सचमुच, प्रेरितों के काम 5:41 में लिखा है कि प्रेरित आनन्दित हुए क्योंकि उन्हें यीशु के नाम के लिए अपमान सहने के योग्य समझा गया था।

आज, मैं पौलुस के आनन्द के पाँच पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ और उनसे मिलने वाली सीख को समझना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि पौलुस का आनन्द हमारा भी आनन्द बन जाए।

(1) पौलुस का आनन्द इस बात से आता है कि फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोग सुसमाचार की सेवा में उनके साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए जेल की तकलीफ़ें सहते हुए भी, पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों को लिखा; जब भी वह उनके लिए प्रार्थना करते थे, तो हमेशा खुशी के साथ करते थे (1:4)। इसका कारण क्या था? इसका कारण यह था कि फिलिप्पी के विश्वासियों ने सुसमाचार का बचाव करने (वचन 7) और उसे फैलाने

(वचन 5) में पौलुस का साथ दिया था—यानी "पहले दिन से लेकर अब तक" सहयोग किया था। पौलुस प्रभु में इसलिए खुश थे क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि जो विश्वासी सुसमाचार फैलाने के काम में उनके साथ जुड़े थे, वे विरोधियों के हाथों अपनी तकलीफ़ों को—ठीक पौलुस की तकलीफ़ों की तरह—परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह मानते थे (वचन 28–30)।

(2) पौलुस की खुशी इस बात में थी कि मसीह का प्रचार हो रहा था।

जेल की तकलीफ़ों के बावजूद, जब उन्हें पता चला कि मसीह का प्रचार हो रहा है, तो पौलुस ने कहा, "...मैं खुश हूँ, हाँ, और खुश रहूँगा" (वचन 18)। पौलुस के जेल में होने के कारण, कई भाइयों का प्रभु में भरोसा बढ़ा और वे परमेश्वर के वचन को और अधिक हिम्मत और निडरता से सुनाने लगे (वचन 14); वहीं दूसरी ओर, कुछ लोगों ने स्वार्थ और झगड़े की भावना से मसीह का प्रचार किया—यह सोचकर कि वे पौलुस की जेल की तकलीफ़ों को और बढ़ा सकते हैं (वचन 17)। फिर भी, क्योंकि "मसीह का प्रचार हो रहा है, चाहे गलत इरादों से हो या सही इरादों से" (वचन 18, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*), पौलुस खुश थे और खुश होते रहे। इस प्रकार, पौलुस मसीह में खुश थे और इस बात से भी खुश थे कि मसीह के सुसमाचार का प्रचार हो रहा था।

(3) पौलुस की खुशी फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों के विश्वास और खुशी के बढ़ने में थी।

हालाँकि पौलुस की गहरी इच्छा थी कि वे "इस दुनिया से जाकर मसीह के साथ रहें," क्योंकि वे इसे कहीं बेहतर मानते थे (वचन 23), फिर भी उन्हें एहसास हुआ कि इस दुनिया में बने रहना "[उनके] विश्वास की उन्नति और [उनकी] खुशी" के लिए ज़्यादा ज़रूरी था (वचन 25; *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)। इसीलिए उन्होंने फिलिप्पियों 2:17–18 में लिखा: "भले ही मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा पर एक पेय-बलिदान की तरह अर्पित कर दिया जाए, फिर भी मैं आनंदित होऊँगा और तुम सबके साथ अपना आनंद बाँटूंगा; उसी तरह, तुम्हें भी आनंदित होना चाहिए और मेरे साथ अपना आनंद बाँटना चाहिए" [*कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*]। “इसलिए तुम्हें भी आनंदित होना चाहिए और मेरे साथ आनंद मनाना चाहिए।”]

(4) पौलुस का आनंद फिलिप्पी कलीसिया को प्रेम में बसी हुई एक समुदाय के रूप में बनते हुए देखने में है।

पौलुस इस बात से खुश थे कि फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासी एक-दूसरे का हौसला बढ़ा रहे थे और उन्हें सांत्वना दे रहे थे, दया और करुणा दिखा रहे थे, और पवित्र आत्मा में संगति कर रहे थे (2:1)—कि वे एक हो रहे थे, दिल और दिमाग से एकजुट थे और एक जैसा प्रेम रखते थे (पद 2) (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। फिलिप्पियों 2:1–2 को देखें: “क्या तुम मसीह में एक-दूसरे का हौसला बढ़ा रहे हो? क्या तुम मसीह के प्रेम से एक-दूसरे को सांत्वना दे रहे हो और पवित्र आत्मा में संगति कर रहे हो? और क्या तुम एक-दूसरे के प्रति दया और करुणा दिखा रहे हो?” "तब एक जैसी सोच रखकर, एक जैसा प्रेम रखकर और आत्मा और उद्देश्य में एक होकर मेरे आनंद को पूरा करो" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। दोस्तों, क्या यह हमारा आनंद नहीं है? सोचिए कि माता-पिता कितने खुश होते हैं जब उनके बच्चे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, एक जैसा दिल और उद्देश्य रखते हैं, और एकजुट होते हैं। प्रभु—जो कलीसिया के मुखिया हैं—कितने खुश होते होंगे जब उनके शरीर—कलीसिया—के सदस्य एक दिल और दिमाग से एकजुट होते हैं और एक जैसा प्रेम रखते हैं! जब हम इस तरह का आनंद महसूस करते हैं, तो क्या हम सब प्रभु में दृढ़ता से खड़े नहीं रहेंगे?

(5) पौलुस का आनंद फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों की खातिर बलिदान देने में है।

पौलुस फिलिप्पी विश्वासियों के विश्वास के "बलिदान और सेवा" पर एक बलिदान के रूप में अर्पित किए जाने की संभावना से खुश थे (2:17)। यह हमारा भी आनंद होना चाहिए। हमें उन भाई-बहनों के विश्वास की उन्नति और आनंद के लिए खुद को बलिदान करने में आनंद लेना चाहिए जिनसे हम मसीह के दिल से प्रेम करते हैं और जिनकी हमें बहुत याद आती है (1:8; 2:17, 25)।

प्रभु में दृढ़ता से खड़े रहने के लिए, हमें हमेशा उसमें आनंदित होना चाहिए। और प्रभु में हमेशा आनंदित रहने के लिए, उनकी खुशी हमारी खुशी बननी चाहिए। हमारे प्रभु की खुशी उनके शरीर—यानी कलीसिया—के सभी सदस्यों में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने में है। उनकी खुशी इस बात में है कि हम सब सुसमाचार के काम में हिस्सा लें। ऐसा होने के लिए, हमारा विश्वास बढ़ना चाहिए; जब हमारा विश्वास परिपक्व होता है तो प्रभु खुश होते हैं। प्रभु की वह खुशी हमारी खुशी बननी चाहिए। इसके अलावा, प्रभु तब खुश होते हैं

जब पूरी कलीसिया का परिवार एक मन और एक सोच के साथ एक-दूसरे से प्रेम करता है, नम्रता से सेवा करता है और उनमें एकता के साथ रहता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम इस तरह की खुशी का अनुभव कर सकें।

आखिर में, चौथा बिंदु: जब हम प्रभु में रहते हैं... तो मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें सबके साथ नरमी से पेश आना चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:5 को देखें: "तुम्हारी नरमी सब पर प्रकट हो। प्रभु निकट है।" "प्रभु के आने का दिन निकट है।" आपके हिसाब से "सहनशीलता" का क्या मतलब है? नेवर डिक्शनरी (Naver Dictionary) के अनुसार, सहनशीलता का अर्थ है "दूसरों की गलतियों को उदारता से स्वीकार करना या माफ करना।" जब मैं "सहनशीलता" शब्द पर विचार करता हूँ, तो मुझे लगता है कि कम से कम दो तरह की खतरनाक सहनशीलता होती है:

(1) सहनशीलता का पहला खतरनाक रूप है "यौन सहनशीलता" (sexual tolerance)।

खास तौर पर, मैं जिस यौन सहनशीलता की बात कर रहा हूँ, वह समलैंगिकता के प्रति सहनशीलता है। कम से कम हमारी पहली पीढ़ी के बुजुर्ग यह मानते हैं कि समलैंगिकता एक पाप है और वे इसे इसी रूप में देखते हैं। हालाँकि, हमारी दूसरी पीढ़ी के युवा तर्क देते हैं कि हमें समलैंगिकों का सम्मान करना चाहिए और उन्हें सहन करना चाहिए क्योंकि उनकी जीवनशैली हमसे अलग है। आप क्या सोचते हैं? आज की दुनिया में, जो कोई भी समलैंगिकता को एक सही जीवनशैली के रूप में स्वीकार नहीं करता, उसे अक्सर संकीर्ण सोच वाला और पूर्वाग्रह से भरा हुआ माना जाता है या "होमोफोबिक" (समलैंगिकता से नफरत करने वाला) करार दिया जाता है। इसके अलावा, अगर कोई यह कहता है कि एक पुरुष और एक महिला के बीच विवाह ही एकमात्र सामान्य और वैध रूप है, तो उन्हें कड़े हमलों का सामना करना पड़ता है—उन्हें पुराना ख्यालात वाला, दमनकारी और आधुनिक संस्कृति से पूरी तरह कटे हुए व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। कुछ समय पहले, फिलीपींस के एक मशहूर बॉक्सर को समलैंगिकता के बारे में टिप्पणी करने के बाद भारी आलोचना का सामना करना पड़ा था। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई अपनी माफी को हटा दिया और इसके बजाय बाइबिल के वे वचन साझा किए जो उनके इस विचार का समर्थन करते थे कि समलैंगिकता गलत है; इसके बाद उन्हें फिर से

आलोचना और मीडिया के तीखे हमलों का सामना करना पड़ा। (2) सहनशीलता का दूसरा खतरनाक रूप "धार्मिक सहनशीलता" है।

कुछ लोगों ने कहा है, "इस दौर में ईसाई धर्म के सामने सबसे बड़ा खतरा और संकट, सबसे बढ़कर, धार्मिक सहनशीलता ही है।" मेल-मिलाप, एकता, शांति, एक होने और मिल-जुलकर रहने के नाम पर... जब मैं ईसाई नेताओं को दूसरे धर्मों के नेताओं से मिलते और एकता के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों में शामिल होते देखता हूँ, तो मुझे ऐसी धार्मिक सहनशीलता बेहद खतरनाक लगती है। बाइबिल साफ तौर पर कहती है कि मुक्ति केवल यीशु मसीह में विश्वास करने से ही मिलती है; अगर दूसरे धर्म यह सिखाते हैं कि मुक्ति इंसानी कोशिशों से मिलती है, तो ईसाई धर्म और वे दूसरे धर्म भला एक कैसे हो सकते हैं?

खतरनाक सहनशीलता के इन दो प्रकारों पर विचार करते हुए, मेरा मानना है कि सहनशीलता का पालन सच्चाई की सीमाओं के भीतर ही किया जाना चाहिए; सच्चाई से हटकर की गई सहनशीलता बहुत खतरनाक होती है। सच्ची सहनशीलता को सच्चाई के दायरे में ही काम करना चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:5 में, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हुए आग्रह करते हैं: "अपनी नम्रता सबको दिखाओ। प्रभु पास ही है।" यहाँ "नम्रता" (या सहनशीलता) के रूप में अनुवादित शब्द का मूल यूनानी अर्थ है "कानून या रीति-रिवाज से मिले हर अधिकार पर ज़िद न करना" (BDAG) या "नम्र और विचारशील" होना (स्वानसन)। यह शब्द नए नियम में कुछ अन्य स्थानों पर भी आता है। उदाहरण के लिए, 1 तीमुथियुस 3:3 में, एक अध्यक्ष (overseer) की योग्यताओं को बताते हुए, पौलुस कहते हैं कि अध्यक्ष को "शराबी नहीं, हिंसक नहीं बल्कि नम्र, झगड़ालू नहीं और पैसे का लोभी नहीं" होना चाहिए। इस पर विचार करते हुए, मेरा मानना है कि जो चर्च लीडर नम्रता का पालन करता है, वह झगड़ा भी नहीं करता; दूसरे शब्दों में, नम्रता दिखाने और झगड़े से बचने के बीच एक संबंध है। तीतुस 3:2 में भी ऐसी ही शिक्षा मिलती है: "लोगों को याद दिलाओ... कि वे किसी की बुराई न करें, शांतिप्रिय और विचारशील बनें, और हमेशा सबके प्रति नम्र रहें।" यहाँ भी, पौलुस झगड़े से बचने के आदेश को नम्रता दिखाने के आदेश से जोड़ते हैं। इसके अलावा, वह उन्हें हर परिस्थिति में सबके प्रति नम्रता दिखाने का निर्देश देते हैं। इसका मतलब है कि जो व्यक्ति नम्रता का पालन करता है, वह न केवल झगड़े से बचता है, बल्कि सभी लोगों के प्रति नम्र स्वभाव भी दिखाता है—यानी सबके साथ दया और नरमी से पेश आता है। प्रेरित पतरस ने भी 1 पतरस 2:18 में इस शब्द, "नम्रता" (या

"सहनशीलता") का इस्तेमाल किया है: "हे सेवकों, अपने मालिकों के प्रति पूरे सम्मान के साथ अधीन रहो, न केवल उनके प्रति जो अच्छे और नम्र हैं, बल्कि उनके प्रति भी जो कठोर हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "हे सेवकों, डर के साथ अपने मालिकों की आज्ञा मानो। ऐसा न केवल अच्छे और उदार मालिकों के प्रति करो, बल्कि मुश्किल स्वभाव वाले मालिकों के प्रति भी करो"]। इसे आज के कार्यस्थल पर लागू करने का अर्थ है कि एक कर्मचारी को न केवल दयालु और नम्र (उदार) नियोक्ता के प्रति, बल्कि मुश्किल स्वभाव वाले नियोक्ता के प्रति भी सम्मानपूर्वक आज्ञाकारिता दिखानी चाहिए। यहाँ, हम एक नरम स्वभाव वाले मालिक और एक कठोर मालिक के बीच अंतर देखते हैं। इससे पता चलता है कि "नरम" होने का मतलब कठोर या मुश्किल स्वभाव का न होना है। इसीलिए 'कंटेम्पररी कोरियन वर्शन' (Contemporary Korean Version) ने "नरम" का अनुवाद "उदार" के तौर पर किया है। असल में, वही वर्शन फिलिप्पियों 4:5—जिस हिस्से पर हम आज बात कर रहे हैं—का अनुवाद इस तरह करता है: "सबके साथ उदारता से पेश आओ। प्रभु के लौटने का दिन पास है।"

कलीसिया में भाई-बहनों के लिए प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए ज़रूरी है कि वे एक-दूसरे के साथ नरमी से पेश आएँ। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने 1 तीमुथियुस 3:3 और तीतुस 3:2 में ज़ोर दिया है, खासकर कलीसिया के अगुवों को झगड़ा नहीं करना चाहिए, बल्कि नरमी दिखानी चाहिए और दूसरों के साथ नम्र स्वभाव से पेश आना चाहिए। हालाँकि, ऐसा लगता है कि फिलिप्पी कलीसिया की दो महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे (फिलिप्पियों 4:2)—ने ऐसा नहीं किया। नतीजतन, फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने इन दोनों महिलाओं का नाम लेकर ज़िक्र किया और उनसे पुरज़ोर आग्रह किया कि वे प्रभु में एक मन की हों—यानी, प्रभु में एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहें (आयत 2)। इसके लिए "मसीह की नरमी" (2 कुरिन्थियों 10:1) की ज़रूरत है। मसीह की यह नरमी एक ऐसी समझदारी है जो ऊपर से आती है। याकूब 3:17 को देखिए: "लेकिन जो समझदारी स्वर्ग से आती है, वह सबसे पहले पवित्र होती है; फिर शांति चाहने वाली, दूसरों का खयाल रखने वाली, मानने वाली, दया और अच्छे फलों से भरी, निष्पक्ष और सच्ची होती है।" फिर, आज के हिस्से—फिलिप्पियों 4:5—में पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहते हैं कि "अपनी नरमी सबको दिखाओ" [या, "सबके साथ उदारता और दया से पेश आओ"]। क्यों? क्योंकि प्रभु के लौटने का दिन पास है (आयत 5b)। हमारे पूरे कलीसिया परिवार के लिए प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें एक-दूसरे के प्रति नरमी दिखानी चाहिए। हमें एक-दूसरे के साथ दया और उदारता से पेश आना चाहिए। ऐसा करते समय, हमें प्रभु के वचन के अनुसार

एक-दूसरे के साथ व्यवहार करना चाहिए और उनके जल्द लौटने की बात को ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, हमें यह नरमी न केवल कलीसिया के अपने साथियों के साथ, बल्कि हर किसी के साथ दिखानी चाहिए। आइए हम सब प्रभु में मज़बूती से खड़े रहें। ऐसे समय में, जब प्रभु के लौटने का दिन नज़दीक आ रहा है, हमें उनमें अडिग रहना चाहिए। हमारे चर्च परिवार के हर सदस्य को विश्वास की चट्टान पर मज़बूती से खड़ा होना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें प्रभु में एक मन होना चाहिए। हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। हमें हमेशा प्रभु में आनंदित रहना चाहिए। और हमें सबके साथ नरमी से पेश आना चाहिए।

“परमेश्वर की अद्भुत शांति जो हमारी सोच से कहीं बढ़कर है”

[फिलिप्पियों 4:6–7]

क्या अभी आपके दिल में शांति है? या शायद बेचैनी है? हम मन की शांति तो चाहते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि असल में अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हम शांति के बजाय अक्सर बेचैनी ही महसूस करते हैं। मुझे वह गॉस्पेल गीत याद आता है, “दुनिया शांति चाहती है।” उसके पहले पद के बोल कुछ ऐसे हैं: “दुनिया शांति चाहती है, फिर भी युद्ध की अफवाहें बढ़ती जा रही हैं; चारों ओर इंसानी दुख और डर है, एक कभी न खत्म होने वाली थकान है—फिर भी प्रभु यहीं हैं।” दोस्तों, क्या यह ऐसी दुनिया नहीं है जहाँ सचमुच युद्ध की अफवाहें फैल रही हैं? क्या हम अक्सर समाचारों और अखबारों में नहीं सुनते कि कहाँ बम धमाके हुए और कितने लोग मारे गए या घायल हुए? क्या यह सच नहीं है, जैसा कि गीत में कहा गया है, कि “चारों ओर इंसानी दुख और डर है, एक कभी न खत्म होने वाली थकान है”? इसीलिए, प्रार्थना सभाओं के दौरान, मैं अक्सर परमेश्वर के लिए भजन नंबर 486 गाता हूँ, “बहुत दुखों वाली इस दुनिया में”: (पद 1) “बहुत दुखों वाली इस दुनिया में, मैं सच्ची शांति को नहीं जानता था...”; (पद 2) “बहुत मुश्किलों वाली इस दुनिया में, मुझे सच्ची शांति का कोई दिन नहीं मिला...”; (पद 3) “बहुत पापों वाली इस दुनिया में, मौत का बोझ बढ़ता गया...” सचमुच, जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह चिंताओं, मुश्किलों और पापों से भरी है—और मौत का खतरा भी मंडराता रहता है—इसलिए कई बार हम यह जाने बिना ही जीते हैं कि सच्ची शांति असल में क्या है। बाइबल हमें साफ-साफ बताती है कि हम अपनी सारी चिंताएँ प्रभु पर डाल दें क्योंकि वह हमारी परवाह करता है (1 पतरस 5:7); फिर भी, हम इस दुनिया में इस बात

की चिंता करते हुए जीते हैं कि “हम क्या खाएँगे, क्या पिएँगे, या क्या पहनेंगे” (मत्ती 6:31)। दूसरे शब्दों में, हम “जीवन की चिंताओं” के बोझ तले दबे रहते हैं (लूका 21:34)। शादीशुदा जोड़े इस बात की चिंता करते हैं कि वे अपने जीवनसाथी को कैसे खुश रखें (1 कुरिन्थियों 7:33, 34)। माता-पिता अपने बच्चों के बारे में चिंता करते हैं, उन्हें डर रहता है कि कहीं वे परमेश्वर से दूर होकर मूर्तियों की सेवा न करने लगें (व्यवस्थाविवरण 29:18)। जो लोग कलीसिया से प्यार करते हैं, वे कलीसिया की चिंता करते हैं (2 कुरिन्थियों 11:28)। और अक्सर, हम "आने वाले कल" की चिंता करते हैं। हालाँकि बाइबल साफ़ तौर पर कहती है, "आने वाले कल की चिंता मत करो, क्योंकि आने वाला कल अपनी चिंता खुद करेगा; हर दिन की अपनी परेशानियाँ होती हैं" (मत्ती 6:34), फिर भी हम आने वाले कल की चिंता करते हैं। हम अपने भविष्य की चिंता करते हैं। हम मरने की भी चिंता करते हैं (उत्पत्ति 38:11)। हम "इस दुनिया की बहुत सी चिंताओं" से घिरे रहते हैं (मत्ती 13:22)। हम "बहुत सी चीज़ों" को लेकर बेचैन और परेशान रहते हैं (लूका 10:41)। भले ही हम जानते हैं—जैसा कि बाइबल कहती है—कि हमारी सारी चिंताएँ हमारी लंबाई में एक हाथ भी नहीं जोड़ सकतीं (मत्ती 6:27), फिर भी हम चिंता करते ही रहते हैं।

क्या आप जानते हैं कि जब हम इस तरह चिंता करते हैं तो क्या नतीजे निकलते हैं? मैंने दो मुख्य नतीजे पहचाने हैं: (1) हमारे दिल सुस्त हो जाते हैं। बाइबल में लूका 21:34 देखें: "सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दिल अय्याशी, नशे और ज़िंदगी की चिंताओं से बोझिल हो जाएँ, और वह दिन तुम पर अचानक किसी जाल की तरह आ पड़े" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "सावधान रहो। नहीं तो, तुम अय्याशी, नशे और ज़िंदगी की चिंताओं के कारण सुस्त-दिल हो जाओगे, और वह दिन अचानक तुम पर किसी जाल की तरह झपटेगा"]। (2) हम परमेश्वर के वचन के अनुसार चलने में रुकावट महसूस करते हैं और फल नहीं ला पाते। इसका मतलब है कि हम फल पैदा नहीं करते; हम परमेश्वर के वचन के अनुसार जीने में नाकाम रहते हैं। मत्ती 13:22 देखें: "काँटों के बीच गिरा बीज उस व्यक्ति को दर्शाता है जो वचन तो सुनता है, लेकिन इस ज़िंदगी की चिंताएँ और धन का धोखा उस वचन को दबा देते हैं, जिससे वह फलहीन हो जाता है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "साथ ही, काँटों के बीच गिरा बीज उस व्यक्ति को दर्शाता है जो वचन तो सुनता है लेकिन इस दुनिया की चिंताओं और धन के लालच के कारण उसके अनुसार जीने में नाकाम रहता है"]। आखिरकार, हमारे दिलों में चिंता होने का मतलब है कि हमारे पास शांति नहीं है। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? आज का वचन, फिलिप्पियों 4:6–7, हमें बताता है: “किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हर स्थिति में प्रार्थना और विनती के साथ, धन्यवाद देते

हुए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखो। और परमेश्वर की शांति, जो समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे दिलों और मन की रक्षा करेगी।" कंटेम्पररी कोरियन वर्शन इसका अनुवाद इस तरह करता है: "किसी भी बात की चिंता न करो; इसके बजाय, हर स्थिति में प्रार्थना और विनती के ज़रिए धन्यवाद भरे दिल से अपनी ज़रूरतें परमेश्वर के सामने रखो। तब, परमेश्वर की अद्भुत शांति—ऐसी शांति जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती—मसीह यीशु में तुम्हारे दिलों और मन की रक्षा करेगी।" इस वचन और "परमेश्वर की अद्भुत शांति जो कल्पना से परे है" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन दो तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे हम इस शांति का अनुभव कर सकते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम परमेश्वर की दी हुई सीख पर ध्यान दें, उसका पालन करें, और सचमुच उस असाधारण शांति का अनुभव करें जो कल्पना से परे है।

पहला, परमेश्वर की उस अद्भुत शांति का अनुभव करने के लिए जो कल्पना से परे है, हमें किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए।

आज के पाठ में फिलिप्पियों 4:6 के पहले हिस्से को देखें: "किसी भी बात की चिंता न करो..." जब पौलुस यह पत्र लिख रहा था, तो फिलिप्पी के विश्वासियों से किसी भी बात की चिंता न करने के लिए कहने के बारे में आप क्या सोचते हैं? आखिरकार, क्या पौलुस ही वह व्यक्ति नहीं है जो इस समय जेल में है? फिर भी, पौलुस ही फिलिप्पी के विश्वासियों से कहता है कि वे किसी भी बात की चिंता न करें। व्यावहारिक दृष्टिकोण से, कोई सोच सकता है कि फिलिप्पी के विश्वासियों को पौलुस से कहना चाहिए कि वह चिंता न करे। फिर भी, प्रेरित पौलुस इस स्थिति को उलट देता है और *उनसे* कहता है कि वे चिंता न करें। पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से किसी भी बात की चिंता न करने के लिए क्यों कहा? कारण यह है कि वास्तव में उनके पास चिंता करने के लिए बातें थीं। इसलिए, मैंने सोचा कि वे चिंताएँ क्या रही होंगी। मेरा मानना है कि चिंता की मुख्य रूप से एक या दो श्रेणियाँ थीं: पहली, आंतरिक चिंताएँ, और दूसरी, बाहरी चिंताएँ।

(1) मेरा मानना है कि फिलिप्पी के विश्वासियों के लिए आंतरिक चिंता का कारण बनने वाले लगभग पाँच कारक थे:

(a) फिलिप्पी के विश्वासियों को शायद चिंता होती थी जब वे प्रभु के सेवक पौलुस के बारे में सोचते थे। फिलिप्पियों 1:12 देखें: "अब मैं चाहता हूँ कि तुम जानो, भाइयों और बहनों, कि मेरे साथ जो हुआ है, उसने वास्तव में सुसमाचार को आगे बढ़ाने में मदद की है।" पॉल के साथ क्या हुआ था? क्या उन्हें यीशु मसीह की खुशखबरी सुनाने की वजह से जेल में नहीं डाला गया था? फिलिप्पी के जो विश्वासी उनसे प्यार करते थे, क्या उन्हें यह देखकर चिंता नहीं हुई होगी कि प्रभु का सेवक पॉल खुशखबरी सुनाने के कारण जेल में है? अगर हमें यह खबर मिले कि हमारे ही चर्च के मिशनरी मिशन के काम के दौरान जेल में डाल दिए गए हैं, तो क्या हमारा चर्च परिवार परेशान नहीं होगा?

(b) फिलिप्पी चर्च के विश्वासी शायद उन लोगों के बारे में चिंतित थे जो शुद्ध इरादों के बजाय स्वार्थ और झगड़े की भावना से मसीह का प्रचार कर रहे थे।

फिलिप्पियों 1:15 और 17 को देखिए: "यह सच है कि कुछ लोग जलन और होड़ की वजह से मसीह का प्रचार करते हैं, लेकिन दूसरे अच्छी नीयत से... पहले वाले लोग स्वार्थ और होड़ की वजह से मसीह का प्रचार करते हैं, न कि ईमानदारी से; वे सोचते हैं कि जब मैं कैद में हूँ, तो वे मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर सकते हैं।" यह जानकर कि पौलुस "मसीह की खातिर" (वचन 13) जेल में थे, ज़्यादातर विश्वासियों का हौसला बढ़ा और वे बिना डरे और हिम्मत के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार करने लगे (वचन 14)। लेकिन समस्या यह थी कि जो लोग हिम्मत के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे थे, उनमें से कुछ लोग "जलन और होड़" (वचन 15) की वजह से—यानी गलत नीयत से (वचन 17)—मसीह का प्रचार कर रहे थे। उनकी गलत नीयत स्वार्थ ("होड़") थी—वे पौलुस को और ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचाने के इरादे से मसीह का प्रचार कर रहे थे (वचन 17)। ज़रा सोचिए कि अगर आप फिलिप्पी की कलीसिया के सदस्य होते और आपको यह पता चलता, तो क्या आप परेशान नहीं होते? इस स्थिति पर विचार कीजिए: अगर हमारे चर्च का कोई मिशनरी किसी दूर देश में सुसमाचार का प्रचार करते हुए जेल में डाल दिया जाता, और कलीसिया में ही कुछ ऐसे लोग होते जो उस मिशनरी को पसंद नहीं करते और सिर्फ़ उन्हें और ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचाने के लिए स्वार्थ की वजह से मसीह का प्रचार करते, तो क्या यह जानकर आपको चिंता नहीं होती? जब पूरी कलीसिया शुद्ध नीयत से यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करती है, तब

भी एक व्यक्ति को मसीह के पास लाना मुश्किल होता है; ऐसे में यह जानना कितनी गहरी चिंता की बात है कि कलीसिया के ही कुछ लोग गलत नीयत से सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं।

(c) फिलिप्पी की कलीसिया के सदस्यों को शायद उन लोगों की वजह से चिंता हुई जो सुसमाचार के लायक जीवन नहीं जी रहे थे। फिलिप्पियों 1:27 को देखिए: "बस, तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के लायक हो, ताकि चाहे मैं आकर तुमसे मिलूँ या दूर रहूँ, मैं तुम्हारे बारे में यह सुन सकूँ कि तुम एक आत्मा और एक मन से सुसमाचार के विश्वास के लिए मिलकर संघर्ष कर रहे हो।" प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों से "मसीह के सुसमाचार के लायक जीवन जीने" के लिए क्यों कहा? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे ऐसा करने में नाकाम हो रहे थे। इस संदर्भ में, सुसमाचार के योग्य जीवन जीने में असफल होने का मतलब था कि वे एक आत्मा और एक मन से दृढ़ता से खड़े नहीं थे, और न ही वे सुसमाचार के विश्वास के लिए पूरी तरह से सहयोग कर रहे थे (पद 27b)। जैसे-जैसे पौलुस ने अपना पत्र आगे बढ़ाया, उन्होंने फिलिप्पियों 2:3–4 में लिखा: "स्वार्थ या घमंड के कारण कुछ भी न करें, बल्कि नम्र मन से हर कोई दूसरों को खुद से बेहतर समझे। आप में से हर कोई न केवल अपने हितों का ध्यान रखे, बल्कि दूसरों के हितों का भी ध्यान रखे... मेरी खुशी पूरी करें" [(आधुनिक कोरियाई संस्करण) "झगड़े या घमंड के कारण कुछ भी न करें; विनम्र हृदय के साथ, दूसरों को खुद से बेहतर समझें; केवल अपने हितों के बारे में न सोचें, बल्कि दूसरों के हितों के बारे में भी सोचें"]। फिलिप्पियों 4:2 में, पौलुस ने कलीसिया की दो खास महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे—का भी ज़िक्र किया, जो एक मन की नहीं थीं, और उनसे आग्रह किया कि वे "प्रभु में एक मन की हों।" कलीसिया के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि वह एक प्यार करने वाला, एकजुट समुदाय हो जो सुसमाचार का प्रचार करने के काम में एक मन हो। इसका कारण यह है कि चाहे हम सुसमाचार प्रचार और मिशन के कामों में कितना भी शामिल हों, अगर कलीसिया प्रभु में एकजुट होने में विफल रहती है और उसके सदस्यों के बीच झगड़े और फूट होती है, तो ऐसे काम सुसमाचार के प्रसार में बाधा डालते हैं। झगड़ों और टकराव से भरी कलीसिया द्वारा प्रचारित यीशु मसीह के सुसमाचार को कौन सुनेगा, और फिर उस संदेश को स्वीकार करने और उस कलीसिया में जाने का फैसला करेगा? जो कलीसिया यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करती है, उसे सबसे पहले उस सुसमाचार के योग्य जीवन जीना चाहिए।

(d) फिलिप्पी कलीसिया के सदस्यों ने शायद सुना था कि उनका साथी सदस्य, एपफ्रुदीतुस, बीमार पड़ गया था और वे बहुत चिंतित थे।

फिलिप्पियों 2:26–28 पर विचार करें: "क्योंकि वह [एपफ्रुदीतुस] आप सभी से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था और परेशान था क्योंकि आपने सुना था कि वह बीमार था। सचमुच वह बीमार था, और लगभग मर ही गया था। लेकिन परमेश्वर ने उस पर दया की, और न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी, ताकि मुझे दुख पर दुख न सहना पड़े।" एपफ्रुदीतुस वह व्यक्ति था जिसे फिलिप्पी कलीसिया ने प्रेरित पौलुस की ज़रूरतों में मदद करने के लिए भेजा था (पद 25)। फिलिप्पी कलीसिया द्वारा तैयार की गई मदद की सामग्री लेकर, वह पौलुस के पास गया—उससे तब मिला जब वह मकिदुनिया से निकलकर थिस्सलुनीके में था—ताकि उन्हें वे तोहफ़े पहुँचा सके (4:15–16)। इसके अलावा, तोहफ़े पहुँचाने के बाद, वह पौलुस के साथ ही रहा और उसके साथ मिलकर काम किया (2:25)। उसने पौलुस के साथ मिलकर सुसमाचार के लिए मेहनत की और सुसमाचार फैलाने के काम में सहयोग किया। साथ ही, जब वे सुसमाचार के लिए मिलकर काम कर रहे थे, तो उसने यीशु मसीह के एक सैनिक की तरह बहादुरी से लड़ाई लड़ी—उन लोगों के खिलाफ़ जो सुसमाचार का विरोध करते थे—और पौलुस के साथ मिलकर निडरता से इसका प्रचार किया। फिर, एपफ्रुदीतुस गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। उसने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी (वचन 30)। जब फिलिप्पी कलीसिया के सदस्यों को इस बारे में पता चला होगा, तो उन्हें कैसा लगा होगा? वे निश्चित रूप से बहुत चिंतित हुए होंगे। ज़रा सोचिए, अगर हमारी अपनी कलीसिया का कोई सदस्य किसी ऐसे मिशनरी की मदद करने के लिए मिशन क्षेत्र में जाए जिसका हम समर्थन करते हैं—और जो सुसमाचार फैलाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हो—और फिर हमें यह खबर मिले कि उसे कोई जानलेवा बीमारी हो गई है। क्या हम गहरी चिंता और घबराहट से भर नहीं जाएँगे? आज कम्युनिस्ट या मुस्लिम देशों में सेवा करने वाले मिशनरियों को भारी खतरों का सामना करना पड़ता है। अगर हमारे बीच से कोई व्यक्ति ऐसे मिशनरी की मदद करने जाए, वहाँ मुश्किलों का सामना करे, और फिर किसी अचानक आई बीमारी का शिकार हो जाए, तो हमें कैसा लगेगा? क्या पूरी कलीसिया परिवार ऐसी बड़ी चिंता के बीच उस सदस्य के लिए परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रार्थना नहीं करेगा? हम निश्चित रूप से परमेश्वर की दया के लिए विनती करेंगे।

(e) फिलिप्पी कलीसिया के सदस्य 'यहूदीवादी' (Judaizers) लोगों—यानी क्रूस के दुश्मनों—के बारे में चिंतित रहे होंगे।

फिलिप्पियों 3:2 को देखिए: "उन कुत्तों से सावधान रहो, उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो, उन लोगों से सावधान रहो जो शरीर को काटते-छाँटते हैं। क्योंकि खतना तो हमारा हुआ है, हम ही उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर की सेवा करते हैं, मसीह यीशु पर गर्व करते हैं, और शरीर पर कोई भरोसा नहीं रखते।" यहाँ, पौलुस फिलिप्पियों को बार-बार—तीन बार—"सावधान" रहने की चेतावनी देता है—यानी चौकन्ना रहने को कहता है—क्योंकि कुछ खास लोगों से खतरा था: ये 'यहूदीवादी' लोग थे, जो क्रूस के दुश्मन थे। 'यहूदीवादी' उन समूहों में से थे जिन्होंने शुरुआत में ही सुसमाचार पर ज़ोरदार हमले किए थे; उनका ज़ोर इस बात पर था कि गैर-यहूदियों को सही ठहराए जाने के लिए पुराने नियम (Old Testament) के कुछ रीति-रिवाजों—खासकर खतना—को मानना ज़रूरी है। पौलुस ने इन यहूदी-परंपरा-समर्थकों और उनके झूठे सुसमाचार को धर्म-विरोधी बताया और उन्हें श्राप भी दिया (गलातियों 1:8)। फिर भी, समस्या यह थी कि चर्च के ज़्यादातर लोग उन्हें सच्चे विश्वासी मानते थे (जैसे, गलातियों 2:12)—जैसा कि गलातिया के चर्च में हुआ था। असल में, वे सुसमाचार की स्पष्टता को कमज़ोर करते थे, उसे बुरी तरह बिगाड़ते थे और गैर-यहूदी विश्वासियों को उलझन में डाल देते थे।

इन पाँच चिंताजनक अंदरूनी मुद्दों के अलावा, फिलिप्पी के विश्वासियों को बाहरी वजहों से भी चिंता का सामना करना पड़ रहा था। संक्षेप में, यह चिंता उस उत्पीड़न और तकलीफ़ से पैदा हुई थी जो यीशु मसीह के सुसमाचार की सेवा में शामिल होने के कारण उन्हें झेलनी पड़ रही थी।

फिलिप्पियों 1:28–30 पर गौर करें: "...अपने विरोधियों से किसी भी बात में न डरें। यह उनके विनाश का, लेकिन आपकी मुक्ति का स्पष्ट संकेत है, और यह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि आपको यह सौभाग्य मिला है कि मसीह के लिए न केवल आप उस पर विश्वास करें, बल्कि उसके लिए दुख भी सहें; आप उसी संघर्ष में लगे हैं जो आपने मुझे करते देखा था और अब सुनते हैं कि मैं अभी भी कर रहा हूँ।" पौलुस ने फिलिप्पियों से इस तरह क्यों बात की? साफ़ है, ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें विरोधियों का सामना करना पड़ रहा था—ऐसे विरोधी जिन्होंने

उन्हें डरने की काफ़ी वजहें दी थीं (पद 28)। चूँकि वे भी उसी संघर्ष में लगे थे जिसमें पौलुस लगा था (पद 30), इसलिए उनके पास अपने विरोधियों से डरने की काफ़ी वजहें थीं—और सच तो यह है कि वे उनके हाथों तकलीफ़ उठा रहे थे (पद 29)। इसीलिए पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में उनसे कहा कि वे अपने विरोधियों से न डरें और उन्हें याद दिलाया कि दुख सहना भी परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है।

इन अंदरूनी और बाहरी कारणों से, फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा जहाँ चिंता होना स्वाभाविक था; इसीलिए पौलुस ने उन्हें सलाह दी, "किसी भी बात की चिंता न करो" (4:6)। लेकिन जब फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को यह सलाह भरा पत्र मिला, तो उन्हें कैसा लगा होगा? अगर आप या मैं उनकी जगह होते, तो हम पौलुस की सलाह को कैसे लेते? व्यक्तिगत रूप से, मैं खुद से पूछता, "यह कैसे संभव है?" या "ऐसी स्थिति में चिंता से कैसे बचा जा सकता है जहाँ चिंता होना स्वाभाविक लगता है?" जब मैंने इन सवालों पर विचार किया, तो मैंने पौलुस के बारे में सोचा, जिन्होंने फिलिप्पियों को यह सलाह लिखी थी। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पौलुस की अपनी स्थिति—यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के कारण जेल में होना—ऐसी थी जिससे स्वाभाविक रूप से बहुत चिंता होती; फिर भी, उन्होंने खुद बिल्कुल भी चिंता नहीं की, बल्कि आनंदित हुए और आनंदित होते रहे। क्या यह अद्‌भुत नहीं है? पौलुस डर और चिंता से कैसे मुक्त रह सके, जबकि स्थिति ऐसी थी जिसमें दोनों के लिए हर कारण मौजूद था? जेल में बंद होने के बावजूद वे चिंता से कैसे मुक्त रह सके? यह कैसे संभव हुआ? मुझे इसका उत्तर फिलिप्पियों 1:6 में मिला: "मुझे पूरा भरोसा है कि जिसने तुममें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा।" यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि पौलुस को पक्का भरोसा था। दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस का चिंता से मुक्त रह पाना—ऐसी स्थिति में भी जो स्वाभाविक रूप से चिंता पैदा करती—परमेश्वर पर उनके अटूट भरोसे के कारण था। पौलुस चिंता से मुक्त रह सके—ऐसी स्थितियों में भी जो स्वाभाविक रूप से चिंता का कारण बनतीं—क्योंकि उन्हें यह पक्का भरोसा और अटूट विश्वास था कि जो विश्वासयोग्य परमेश्वर है, जिसने उद्धार का काम शुरू किया था, वह निश्चित रूप से उसे पूरा करेगा। हमें भी ऐसा ही पक्का भरोसा और अटूट विश्वास रखना चाहिए। चाहे हमारी परिस्थितियाँ कितनी भी मुश्किल क्यों न हों, हमें उद्धारकर्ता परमेश्वर पर अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे पौलुस रहे। ऐसे अटूट विश्वास के साथ, हमें अपनी सारी चिंताएँ प्रभु को सौंप देनी चाहिए, क्योंकि वह हमारी परवाह करता है (1 पतरस 5:7)। इसलिए, हमें जीवन की "बहुत सी बातों" के बारे में चिंता

नहीं करनी चाहिए (लूका 10:41)। हमें इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि "हम क्या खाएँगे, क्या पिएँगे या क्या पहनेंगे" (मत्ती 6:31)। अगर हम ज़िंदगी की चिंताओं में डूबे रहते हैं, तो हमारा मन बोझिल हो जाता है (लूका 21:34), और परमेश्वर का वचन दब जाता है, जिससे हम फल नहीं ला पाते—यानी, वचन के अनुसार जी नहीं पाते (मत्ती 13:22)। आइए हम सब यह तय करें कि हम आने वाले कल की चिंता नहीं करेंगे (मत्ती 6:34)।

दूसरी और आखिरी बात, परमेश्वर की अद्‌भुत शांति—एक ऐसी शांति जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती—का अनुभव करने के लिए हमें हर बात में प्रार्थना और विनती के ज़रिए, धन्यवाद के साथ अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखनी चाहिए।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:6 को देखिए: "किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हर बात में प्रार्थना और विनती के ज़रिए, धन्यवाद के साथ अपनी बातें परमेश्वर को बताओ।" अगर आपको पता चले कि आपका कोई प्रिय व्यक्ति मुश्किलों और परेशानियों से गुज़र रहा है, तो क्या आप उसके लिए प्रार्थना नहीं करेंगे? खासकर अगर वह व्यक्ति ऐसी स्थिति में हो जिससे आपको बहुत चिंता हो रही हो, तो क्या आप उसकी ओर से परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना नहीं करेंगे? आपको कैसा लगेगा अगर आप ऐसी स्थिति में हों जिससे आपके चाहने वालों को भी चिंता हो—और आपको पता हो कि वे आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं? व्यक्तिगत रूप से, मुझे बहुत कृतज्ञता महसूस होती है। यह जानकर कि दूसरे मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं, मुझे सुकून और हिम्मत मिलती है। असल में, कई बार जब मैं संघर्ष कर रहा होता हूँ या परेशानी में होता हूँ, तब भी मैं परमेश्वर की कृपा का अनुभव करता हूँ, अपनी हिम्मत वापस पाता हूँ और अपनी आत्मा में नई जान महसूस करता हूँ। उन पलों में, मेरे मन में यही विचार आता है, "अरे, ऐसा इसलिए है क्योंकि इतने सारे लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं..."

कभी-कभी, मैं इस बात पर सोचता हूँ कि परमेश्वर शायद हमें ऐसी स्थितियों में ले जाते हैं जहाँ हमारे पास प्रार्थना करने के अलावा कोई चारा नहीं होता। ऐसी मुश्किल घटनाएँ एक के बाद एक हमारी ज़िंदगी में क्यों आती हैं? ऐसा लगता है कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम घुटनों के बल झुकें और उनसे पुकारें। इसलिए, हम घुटने टेकते हैं और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। मुश्किलों और तकलीफ़ों से घिरे होने पर, हम बेचैन मन से उन्हें सच्चे दिल से खोजते हैं। हम अपने चाहने वालों के साथ भी अपनी प्रार्थना की बातें साझा करते हैं और मिलकर परमेश्वर से विनती करते हैं, क्योंकि हम मिलकर की जाने वाली प्रार्थना की शक्ति में विश्वास करते हैं। हमारे लिए यह बहुत

ज़रूरी है कि हम एकता में प्रार्थना करें और विश्वास के साथ परमेश्वर के वादों पर मज़बूती से बने रहें। बाइबल में प्रेरितों के काम (Acts) के पहले अध्याय में एक दृश्य दिखाया गया है जहाँ यीशु के लगभग 120 चेले एक साथ प्रार्थना करने के लिए 'ऊपरी कमरे' (Upper Room) में इकट्ठा हुए थे। वे "सब एक मन होकर लगातार प्रार्थना में लगे रहे" (पद 14)। प्रार्थना करते समय उन्होंने प्रभु के जिस वादे को थामे रखा, वह प्रेरितों के काम 1:8 में मिलता है: "लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम्हें शक्ति मिलेगी; और तुम यरूशलेम, पूरे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह बनोगे।" इसका नतीजा यह हुआ कि पेंटेकोस्ट के दिन, यीशु के चेले पवित्र आत्मा से भर गए और सताहट के बावजूद उन्होंने निडर होकर यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया (प्रेरितों के काम 2)। इसी तरह, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में हमें एक साथ इकट्ठा होने और प्रभु द्वारा हमारे चर्च को दिए गए वादे—"मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा" (मत्ती 16:18)—को थामे रखकर एकजुट होकर प्रार्थना करने का प्रयास करना चाहिए। जब हम प्रार्थना करें, तो हमें एक मन होकर प्रार्थना करनी चाहिए (प्रेरितों के काम 1:14)। जहाँ दिलों में एकता होती है, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह भरपूर होता है। जहाँ आपस में शिकायतें और झगड़े होते हैं, वहाँ सच्ची प्रार्थना का माहौल नहीं बन सकता (पार्क युन-सन)। याकूब 4:2–3 के शब्दों पर विचार करें: "तुम झगड़ते और लड़ते हो... तुम्हारे पास इसलिए नहीं है क्योंकि तुम परमेश्वर से मांगते नहीं हो। जब तुम मांगते हो, तो तुम्हें मिलता नहीं है, क्योंकि तुम गलत इरादों से मांगते हो, ताकि जो तुम्हें मिले उसे तुम अपनी मौज-मस्ती में खर्च कर सको।" हमें एकजुट होकर प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसा करते समय, हमें विश्वास के साथ अपनी विनती करनी चाहिए और मत्ती 18:19 के वादे को थामे रखना चाहिए: "...यदि तुममें से दो जन पृथ्वी पर किसी भी बात के लिए सहमत हों, तो स्वर्ग में मेरे पिता द्वारा वह तुम्हारे लिए किया जाएगा।" परमेश्वर की इच्छा पूरी होने के लिए एक साथ प्रार्थना करना हमारे और परमेश्वर के बीच साझेदारी का सबसे बड़ा रूप है। इसके अलावा, हमें प्रार्थना में "लगातार" लगे रहना चाहिए (प्रेरितों के काम 1:14)। इसका अर्थ है अंत तक डटे रहना और प्रयास करते रहना (पार्क युन-सन)। ऐसी कई रुकावटें हैं जो हमें प्रार्थना के प्रति समर्पित होने से रोकती हैं; व्यस्तता उनमें से एक है (नाउवेन)। ऐसी व्यस्तता के बीच, इस बात का खतरा रहता है कि हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्रार्थना को प्राथमिकता न दे पाएं। इसलिए, हमें जान-बूझकर समय निकालकर एक साथ मिलकर पूरे मन से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। आज के वचन, फिलिप्पियों 4:6 को फिर से देखें तो पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को सलाह देते हैं: "किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हर बात में प्रार्थना और विनती के साथ धन्यवाद करते हुए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखो।" यहाँ तीन बातें हैं जिन पर हमें सोचना चाहिए और उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

(1) हमें "हर बात" के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

ऐसा लगता है कि हम मुख्य रूप से तब परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं जब कोई बड़ी घटना होती है—खासकर तब जब बोझ इतना भारी या मुश्किल हो कि हम उसे अकेले न उठा सकें। इसके विपरीत, हम अक्सर छोटी-छोटी बातों के लिए प्रार्थना करना छोड़ देते हैं क्योंकि हमें ऐसा करने की कोई खास ज़रूरत महसूस नहीं होती। हालाँकि, अब से हमें हर बात के लिए—चाहे वह बड़ी हो या छोटी—परमेश्वर से प्रार्थना करने की आदत डालनी चाहिए। हमें न केवल अपनी बड़ी चिंताओं को, बल्कि अपनी छोटी-छोटी परेशानियों को भी उनके सामने लाने की आदत डालनी चाहिए। हमें प्रार्थना के ज़रिए अपनी सभी चिंताओं को प्रभु को सौंप देना चाहिए (1 पतरस 5:7)।

(2) हमें उन चीज़ों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जिनकी हमें "ज़रूरत" है।

आप परमेश्वर से क्या माँगते हैं? दूसरे शब्दों में, आपकी "ज़रूरतें" क्या हैं? मेरा मानना है कि कम से कम पाँच ऐसी चीज़ें हैं:

(a) हमारी सबसे बुनियादी ज़रूरत हमारी "रोज़ की रोटी" है।

यह प्रभु की प्रार्थना में दिखाई देता है, जहाँ यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया: "आज हमें हमारी रोज़ की रोटी दे" (मत्ती 6:11)। भोजन, कपड़े और रहने की जगह हमारे लिए ज़रूरी हैं। इन चीज़ों के बारे में चिंता करने के बजाय, हमें इनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

(b) हमारी एक और ज़रूरत "स्वास्थ्य" है। इसीलिए यीशु ने कहा, "स्वस्थ लोगों को डॉक्टर की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि बीमारों को होती है" (मत्ती 9:12)। हालाँकि इस वचन का गहरा अर्थ कुछ और है, मेरा मानना है कि यह हम सभी की एक बुनियादी ज़रूरत को उजागर करता है: स्वास्थ्य। जब हम स्वस्थ होने के बजाय बीमार होते हैं, तो हमें डॉक्टर की ज़रूरत होती है। हालाँकि, आदर्श रूप से, हमें डॉक्टर की ज़रूरत नहीं पड़नी चाहिए;

ऐसा करने के लिए हमें अपना स्वास्थ्य बनाए रखना होगा। हमें अपने स्वास्थ्य के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उसकी अच्छी तरह से देखभाल करनी चाहिए।

(c) हमें "भौतिक संसाधनों" की ज़रूरत होती है। प्रेरितों के काम 2:45 में शुरुआती कलीसिया—पवित्र आत्मा से भरी एक मंडली—के बारे में बताया गया है, जहाँ विश्वास करने वाले "अपनी संपत्ति और सामान बेचकर ज़रूरतमंदों को देते थे।" उसी उदाहरण की तरह, इस धरती पर रहते हुए हमें भी संपत्ति या भौतिक साधनों की ज़रूरत होती है। इसलिए, मेरा मानना है कि हमें उन भौतिक साधनों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जिनकी हमें ज़रूरत है।

(d) हमें "वफ़ादार दोस्तों" की ज़रूरत है (अय्यूब 6:14)।

हमें विश्वास में वफ़ादार साथियों की ज़रूरत है। हमें ऐसे वफ़ादार दोस्तों की ज़रूरत है जो प्यार से हमें टोक सकें जब हम परमेश्वर के वचन को न मानें और पाप करें (नीतिवचन 27:5)। हमें ऐसे वफ़ादार दोस्तों की ज़रूरत है जो हमारे लिए प्रार्थना करें और मुश्किल समय में हमें दिलासा दें। हमें विश्वास रखने वाले ऐसे दोस्तों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जिनके साथ हम प्रभु में अपने दिल की बातें साझा कर सकें।

(e) हमें “बुद्धि” की ज़रूरत है (प्रकाशितवाक्य 17:9)।

इस दुनिया में चलते हुए, अपने विश्वास को बचाने और सही ढंग से आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए हमें उस बुद्धि की बहुत ज़रूरत है जो परमेश्वर देता है। इसलिए, हमें उस “परमेश्वर से बुद्धि माँगनी चाहिए, जो बिना किसी दोष निकाले सबको उदारता से देता है,” क्योंकि उसने हमें बुद्धि देने का वादा किया है (याकूब 1:5)।

बेशक, ऐसी और भी बहुत सी चीज़ें हैं जिनकी हममें से हर एक को ज़रूरत है। हमें ये ज़रूरतें परमेश्वर के सामने रखनी चाहिए। फिर भी, हमें इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए। इस सोच का मतलब है कि हम सिर्फ़ इस बात पर ध्यान न दें कि "मुझे क्या चाहिए," बल्कि इस बात पर विचार करें कि "परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है।" मैं यह सवाल इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि हमारे विचार और परमेश्वर के विचार अलग-अलग हो सकते हैं; दूसरे

शब्दों में, जिन चीज़ों को हम अपनी ज़रूरत समझते हैं, हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें हमारे लिए ज़रूरी न समझे। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा अपने माता-पिता से कोई ऐसी चीज़ माँगता है जिसकी उसे ज़रूरत लगती है, तो माता-पिता को लग सकता है कि बच्चे को असल में किसी और चीज़ की ज़रूरत है। इसलिए, मेरा मानना है कि जैसे-जैसे हमारा विश्वास परिपक्व होता है, हमें उन चीज़ों के लिए प्रार्थना करने की आदत डालनी चाहिए जिनकी परमेश्वर के अनुसार हमें ज़रूरत है—यानी चीज़ों को उसके नज़रिए से देखना—न कि सिर्फ़ अपनी सोच के आधार पर यह सोचना कि हमें क्या चाहिए। अपनी इच्छाओं के बजाय परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने की आदत डालना बहुत ज़रूरी है; हमें भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को जानता है और हमें उसके उद्देश्यों के अनुसार प्रार्थना करनी चाहिए।

आज के वचन में—फिलिप्पियों 4:6 (*कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* से)—पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को सलाह देता है कि वे प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर के सामने "अपनी ज़रूरतें" रखें। तो फिर, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों की क्या ज़रूरतें समझीं? या कलीसियाई समुदाय की अपनी क्या ज़रूरतें थीं? बेशक, उनके नज़रिए एक जैसे हो सकते थे; विश्वासियों को जो ज़रूरतें महसूस होती थीं, वे शायद वैसी ही थीं जैसी पौलुस उनके लिए ज़रूरी समझता था। फिलिप्पियों की पूरी पत्री पर मनन करके, मैं इनमें से सात ज़रूरतों पर विचार करना चाहूँगा:

(a) ऐसा लगता है कि पौलुस और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों की ही भौतिक ज़रूरतें थीं। पॉल के सुसमाचार प्रचार के काम में मदद करने के लिए, फिलिप्पी के विश्वासियों ने भौतिक संसाधन दिए... पॉल को जो मदद मिली, उससे साफ़ है कि पॉल और फिलिप्पी की कलीसिया के सदस्यों, दोनों को ही भौतिक संसाधनों—खासकर मिशनरी काम के लिए फंड—की ज़रूरत थी (फिलिप्पियों 1:5, 7; 4:15–17)।

(b) चूँकि पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों को ही अपने सुसमाचार प्रचार के काम में परमेश्वर की मदद की बहुत ज़रूरत थी, इसलिए उन्हें प्रार्थना की आवश्यकता थी (1:4, 9)।

(c) क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार की वजह से पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों को ही विरोधियों का सामना करना पड़ा—और नतीजतन मुश्किलें झेलनी पड़ीं—इसलिए उन्हें परमेश्वर की सुरक्षा की ज़रूरत रही होगी (1:28–29; फिलिप्पियों 3)।

(d) पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों को ही यीशु जैसी सोच की ज़रूरत थी (फिलिप्पियों 2:5; 4:2)।

यीशु जैसी उस सोच के साथ, फिलिप्पी के विश्वासियों को एक-दूसरे से प्यार करने और प्यार का समुदाय बनाने की ज़रूरत थी।

(5) एपफ्रुदितुस के बारे में—जो पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों के लिए प्रभु में एक प्रिय भाई था—उसकी बीमारी की खबर ने परमेश्वर से चंगाई पाने की बहुत ज़रूरत पैदा कर दी होगी (2:25 और आगे)।

(6) पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों को ही यीशु मसीह के श्रेष्ठ ज्ञान की ज़रूरत थी (3:8)।

(7) पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों, दोनों को ही संतोष का रहस्य सीखने की ज़रूरत थी—यानी सिर्फ़ यीशु में संतुष्टि पाना (4:11–12)।

हमें परमेश्वर से इन सभी चीज़ों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए: हमारी रोज़ की रोटी, सेहत, भौतिक संसाधन, विश्वास में वफ़ादार दोस्त, (परमेश्वर की) बुद्धि, परमेश्वर की सुरक्षा, यीशु जैसी सोच, परमेश्वर से चंगाई, यीशु का ज्ञान, और सिर्फ़ यीशु में मिलने वाला संतोष का रहस्य। ...हम ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर से ऐसी चीज़ें मांगते हैं।

(3) हमें परमेश्वर से "धन्यवाद के साथ" प्रार्थना करनी चाहिए।

ऐसी स्थिति में—जो स्वाभाविक रूप से हमें चिंता करने पर मजबूर करती है—बिना किसी चिंता के परमेश्वर से "धन्यवाद के साथ" प्रार्थना करना कैसे मुमकिन है? हमारे नज़रिए से, हालात साफ़ तौर पर धन्यवाद का कोई कारण नहीं देते; तो फिर हम धन्यवाद भरे दिल से प्रार्थना कैसे कर सकते हैं? पिछले साल, योना की किताब पर

मनन करते हुए, मुझे एक बात समझ आई जिससे मैंने एक छोटा सा लेख लिखा, जिसका शीर्षक था "वह ईसाई जो ऐसी स्थितियों में भी धन्यवाद की प्रार्थना करता है जहाँ धन्यवाद देना असंभव लगता है।" मैं इसे अब आपके साथ साझा करना चाहता हूँ: "ऐसी स्थिति में परमेश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना करने की उम्मीद कैसे की जा सकती है जहाँ धन्यवाद देना बिल्कुल असंभव लगता है? हम विश्वास के साथ ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं यदि हमें उस बचाने वाली कृपा की याद हो जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर की है। भविष्यद्वक्ता योना जिस स्थिति का सामना कर रहे थे, वह निश्चित रूप से धन्यवाद देने वाली स्थिति नहीं थी। उन्होंने तीन दिन और तीन रातें एक बड़ी मछली के पेट के अंदर बिताईं (योना 1:17)। वह कष्ट में थे (2:2)। उन्हें समुद्र की गहराइयों में फेंक दिया गया था (पद 3)। उन्हें प्रभु की उपस्थिति से दूर कर दिया गया था (पद 4)। उनका जीवन धीरे-धीरे खत्म हो रहा था (पद 7)। वह मृतकों की भूमि में कैद थे (पद 6)। फिर भी, ऐसी परिस्थितियों में भी, योना ने परमेश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना की (पद 1, 9)। यह कैसे संभव हुआ? यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि उन्हें याद था कि परमेश्वर ने अतीत में उन पर बचाने वाली कृपा की थी। परमेश्वर की वह कौन सी पिछली कृपा थी जो योना को याद थी? वह यह बात थी कि जब उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया था (1:14), तो परमेश्वर ने उन्हें निगलने के लिए एक बड़ी मछली तैयार की थी, जिससे वह तीन दिन और तीन रातें उसके पेट के अंदर जीवित रह सके (1:17)। यह वही उद्धार था जो परमेश्वर ने योना को अतीत में दिया था।" यह निश्चित रूप से उस तरह का उद्धार नहीं था जिसकी कल्पना योना ने प्रार्थना करते समय की थी। उन्हें शायद उम्मीद थी कि परमेश्वर मछली को आदेश देंगे कि वह उन्हें सूखी ज़मीन पर उगल दे (2:10)। फिर भी, अपनी सर्वोच्च इच्छा के अनुसार, परमेश्वर ने उद्धार का जो तरीका चुना, वह यह था कि एक बड़ी मछली उन्हें निगल ले (1:17)। इसके बावजूद, योना ने परमेश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना की (2:1, 9)। अक्सर, जब हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर वैसा नहीं मिलता जैसा हमने उम्मीद की थी, तो हम परमेश्वर को धन्यवाद देने में विफल रहते हैं। हालाँकि, प्रार्थना का उत्तर मिलने का तरीका हमारी प्रार्थनाओं की विशिष्ट बातों या उम्मीदों के अनुरूप होना ज़रूरी नहीं है; उत्तर परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा में निहित है। इसलिए, हमें धन्यवाद की प्रार्थना करनी चाहिए और यह भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा पूरी हो गई है। हमें अतीत में परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए उद्धार को याद करके धन्यवाद देना चाहिए। हमें इस सच्चाई पर विश्वास करते हुए धन्यवाद देना चाहिए कि "उद्धार प्रभु की ओर से मिलता है" (पद 9)। हमें यह भरोसा रखते हुए धन्यवाद देना चाहिए कि जिस परमेश्वर ने अतीत में हमें बचाया था, वह वर्तमान में भी हमें बचाएगा। हमें उद्धार देने वाले परमेश्वर के प्रति विश्वास के साथ धन्यवाद देना चाहिए, जो कल, आज और हमेशा एक समान हैं (इब्रानियों 13:8)। हमें उद्धार के भरोसे और आशा को थामे रखकर विश्वास के साथ धन्यवाद देना चाहिए। जब योना ने धन्यवाद की प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने मछली को आज्ञा दी कि वह उसे सूखी ज़मीन पर

उगल दे (योना 2:10)। योना की प्रार्थना का उत्तर मिला। योना ने परमेश्वर द्वारा छुटकारा पाने का अनुभव किया। आखिरकार उसकी स्थिति बदल गई—वह मछली के पेट से निकलकर सूखी ज़मीन पर आ गया। जब हम उद्धार देने वाले परमेश्वर के प्रति विश्वास के साथ धन्यवाद की प्रार्थना करते हैं, तो हमें भी अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा। हम परमेश्वर द्वारा छुटकारा पाने का अनुभव करेंगे। परमेश्वर न केवल हमारे दिलों को, बल्कि हमें और हमारी परिस्थितियों को भी बदल देंगे। उद्धार परमेश्वर का है (पद 9)।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:6 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों को सलाह देते हैं कि वे "धन्यवाद के साथ अपनी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने रखें।" जेल से लिखते हुए, पौलुस ऐसी स्थिति में भी परमेश्वर से धन्यवाद के साथ प्रार्थना कैसे कर पाए, जबकि ऐसी हालत में शुक्रगुजार होना नामुमकिन लग सकता है? फिलिप्पियों 1:3–5 को देखिए: "जब भी मैं तुम्हें याद करता हूँ, तो अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। तुम सबके लिए अपनी सभी प्रार्थनाओं में, मैं हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ क्योंकि पहले दिन से लेकर अब तक सुसमाचार के काम में तुम्हारी भागीदारी रही है।" फिलिप्पी विश्वासियों के बारे में सोचते हुए—इतनी मुश्किल परिस्थितियों में भी—पौलुस ने परमेश्वर से धन्यवाद के साथ प्रार्थना इसलिए की क्योंकि वे शुरू से ही सुसमाचार के काम (सुसमाचार प्रचार की सेवा) में शामिल थे। आखिर फिलिप्पी विश्वासियों ने पौलुस की सुसमाचार प्रचार की सेवा में कैसे साथ दिया? फिलिप्पियों 4:15–16 को देखिए: "इसके अलावा, जैसा कि तुम फिलिप्पियों को पता है, सुसमाचार से तुम्हारे परिचय के शुरुआती दिनों में, जब मैं मकिदुनिया से निकला, तो लेन-देन के मामले में किसी भी कलीसिया ने मेरा साथ नहीं दिया, सिवाय तुम्हारे; क्योंकि जब मैं थिस्सलुनीके में था, तब भी जब मुझे ज़रूरत थी, तुमने एक से ज़्यादा बार मेरी मदद भेजी।" फिलिप्पी विश्वासियों ने पौलुस की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भौतिक मदद देकर उनकी सुसमाचार प्रचार की सेवा में सहयोग किया। वह मदद मिलने पर, जब भी पौलुस प्रार्थना में उनके बारे में सोचते, तो परमेश्वर का धन्यवाद करते थे। इसके अलावा, फिलिप्पियों 1:6 उस कारण को बताता है कि क्यों पौलुस हमेशा धन्यवाद के साथ प्रार्थना करते थे जब भी वे फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों के बारे में सोचते थे: "इस बात का पूरा भरोसा रखते हुए कि जिसने तुममें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूरा करेगा।" फिलिप्पी पवित्र लोगों को याद करते हुए पौलुस का हमेशा धन्यवाद के साथ प्रार्थना करने का कारण उनका गहरा विश्वास था। यह विश्वास क्या था? यह पक्का भरोसा था कि परमेश्वर उस अच्छे काम को—यानी उद्धार के काम को—जो उन्होंने उनके बीच

शुरू किया था, ज़रूर पूरा करेंगे। पौलुस का यह विश्वास खुद पवित्र लोगों पर आधारित नहीं था; बल्कि, यह परमेश्वर पर टिका था। क्योंकि पौलुस को पक्का भरोसा था कि परमेश्वर निश्चित रूप से उन पवित्र लोगों का उद्धार करेंगे जिन्हें उन्होंने प्यार से चुना है, इसलिए जब भी वे उनके लिए प्रार्थना करते थे, तो वे हमेशा धन्यवाद से भरे रहते थे।

हमें भी हर परिस्थिति में परमेश्वर से धन्यवाद के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। जब हालात ऐसे हों कि शुक्रगुज़ार होने की कोई वजह न दिखे, तब भी हमें विश्वास की नज़र से उद्धार करने वाले परमेश्वर को देखना चाहिए और धन्यवाद की प्रार्थना करनी चाहिए। खासकर, हमें इस भरोसे के साथ धन्यवाद की प्रार्थना करनी चाहिए कि जिस विश्वासयोग्य परमेश्वर ने हमारे अंदर उद्धार का काम शुरू किया है, वही मसीह यीशु के दिन तक इसे पूरा करेगा। जब हम अपनी कलीसिया के उन मिशनरियों के साथ मिलकर काम करते हैं जो दुनिया भर में सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो हमें धन्यवाद की प्रार्थना भी करनी चाहिए। हमारे धन्यवाद का आधार यह होना चाहिए कि परमेश्वर का उद्धार का काम यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार के ज़रिए आगे बढ़ रहा है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि धन्यवाद की यह भावना हमारे जीवन और हमारी कलीसिया में और भी ज़्यादा बढ़े। बाइबल क्या कहती है कि हम क्या अनुभव करेंगे जब—आज के वचन, फिलिप्पियों 4:6 के अनुसार—हम किसी भी बात की चिंता न करें, बल्कि प्रार्थना और विनती के साथ धन्यवाद करते हुए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखें? फिलिप्पियों 4:7 को देखिए: "और परमेश्वर की शांति, जो समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे दिलों और तुम्हारे मन की रक्षा करेगी" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "तब, परमेश्वर की अद्‌भुत शांति—ऐसी शांति जो कल्पना से परे है—मसीह यीशु में तुम्हारे दिलों और मन की रक्षा करेगी"]। बाइबल हमें बताती है कि जब हम उसके वचन का पालन करते हैं—यानी चिंता से दूर रहते हैं और हर बात में धन्यवाद के साथ अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखते हैं—तो परमेश्वर की अद्‌भुत शांति, जो कल्पना से परे है, मसीह यीशु में हमारे दिलों और मन की रक्षा करेगी। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? क्या आप खुद को परमेश्वर की अद्‌भुत शांति का आनंद लेते हुए देख सकते हैं—एक ऐसी शांति जो इंसानी समझ से परे है—तब भी जब आप ऐसे हालात का सामना कर रहे हों जिनसे आम तौर पर बहुत चिंता होती है? यह अद्‌भुत शांति ऐसी चीज़ है जो दुनिया कभी नहीं दे सकती। इसका कारण यह है कि दुनिया परमेश्वर की इस अद्‌भुत शांति को न तो जानती है और न ही समझती है। इसके अलावा, दुनिया में कोई भी इसका अनुभव नहीं कर सकता; केवल परमेश्वर के लोग—उसके बच्चे—

ही ऐसा कर सकते हैं। यह परमेश्वर की "पूरी शांति" (यशायाह 26:3, समकालीन कोरियाई संस्करण) है, जो केवल परमेश्वर के उन बच्चों को मिलती है जो अटूट दिल से उस पर भरोसा करते हैं (यशायाह 26:3) और अपनी सभी चिंताओं के बारे में धन्यवाद के साथ प्रार्थना करते हैं (फिलिप्पियों 4:6)। बाइबल हमें बताती है कि जब हम प्रार्थना और धन्यवाद के साथ अपनी सारी चिंताएँ परमेश्वर के सामने रखते हैं, तो परमेश्वर की वह अद्भुत शांति हमारे दिलों और मन की रक्षा करती है (फिलिप्पियों 4:7)। ठीक वैसे ही जैसे सैनिक रात भर नागरिकों की सुरक्षा के लिए पहरा देते हैं, परमेश्वर की शांति हमारे दिलों और मन को—जो अक्सर चिंता करने लगते हैं—उन चिंताओं, परेशानियों, डर और शक से बचाएगी जो मुश्किल हालात में पैदा होते हैं (मैकआर्थर)। आइए हम किसी भी बात की चिंता न करें; इसके बजाय, हर स्थिति में प्रार्थना और विनती के साथ, धन्यवाद करते हुए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखें।

हमें सोचना और काम करना चाहिए।

[फिलिप्पियों 4:8-9]

क्या आप परमेश्वर का धन्यवाद कर रहे हैं? जब आप 2016 के साल को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो किन बातों के लिए आप परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं? कल सुबह-सुबह, मैंने यह लिखा था: “जब हम किसी मुश्किल हालात को इंसानी नज़रिए से देखते हैं, तो धन्यवाद देना नामुमकिन लग सकता है; लेकिन, जब हम उसे प्रभु पर विश्वास की नज़र से देखते हैं, तो हमें ऐसे हालात में भी शुक्रगुजार होने की वजहें मिल सकती हैं जहाँ कोई उम्मीद नहीं दिखती।” क्या आप अभी किसी ऐसे हालात का सामना कर रहे हैं जहाँ, इंसानी नज़रिए से, शुक्रगुजार होना नामुमकिन लगता है? ऐसे मुश्किल समय में भी, क्या आप प्रभु पर विश्वास के साथ हालात को देखकर अभी शुक्रगुजार होने की वजहें खोजने की कोशिश नहीं करेंगे?

पिछले शुक्रवार, सिस्टर जिन-क्यूंग का काकाओटॉक (KakaoTalk) मैसेज मिलने के बाद, मैं जल्दी से उस इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में गया जहाँ इवेंजलिस्ट आन भर्ती थे। क्वोन-सा आन और सिस्टर जिन-क्यूंग के साथ मिलकर, हमने इवेंजलिस्ट को देखा और परमेश्वर की स्तुति की; बाद में, एक और भाई और बहन हमारे साथ परमेश्वर की आराधना करने के लिए शामिल हुए। इसके बाद, जब इवेंजलिस्ट का डायलिसिस हो रहा था, तो हम कमरे से बाहर निकलकर वेटिंग एरिया में बैठकर बातें करने लगे। बातचीत के दौरान, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करने की एक साझा वजह मिली: भले ही इवेंजलिस्ट का शरीर बहुत कमज़ोर हो गया था और उन्हें शायद दर्द भी हो रहा था, फिर भी वे होश में थे—वे अपनी आँखें खोल रहे थे, हमें देख रहे थे और हमारे बोलने पर सिर हिला रहे थे। हालाँकि वे वेंटिलेटर पर थे और हम उनके बोले गए शब्दों को समझ नहीं पा रहे थे, फिर भी हम शुक्रगुजार थे कि वे अपनी आँखें खोल सकते थे, हमें देख सकते थे और हमारी बातें समझ सकते थे।

सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसे हालात में भी परमेश्वर की स्तुति और आराधना धन्यवाद के साथ करने की वजह यीशु मसीह हैं। जब हम उस उद्धार की कृपा पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के ज़रिए हमें दी है, तो हम हर बात में और अपनी पूरी ज़िंदगी में उनका धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकते।

आज जब हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए उनके घर आए हैं, तो मेरी इच्छा है कि हम विश्वास के साथ उन वजहों पर विचार करें जिनके लिए हम शुक्रगुजार हो सकते हैं। इसके अलावा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब शुक्रगुजार दिलों के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना करें, और इस तरह उन्हें महिमा दें। आज के अंश—फिलिप्पियों 4:8–9—में हम देखते हैं कि जेल में रहते हुए पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के उन पवित्र लोगों को लिख रहे हैं जिनसे वे मसीह में बहुत प्रेम करते थे; वे उन्हें दो खास बातें करने के लिए कहते हैं। मैंने हर आयत में दिए गए खास शब्दों के आधार पर इन दो बातों का सारांश दिया है। पहली बात, आयत 8 के दूसरे हिस्से में, पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों से कहते हैं कि वे "इन बातों पर सोचें।" अगली बात, आयत 9 के पहले हिस्से में, वे उन्हें सलाह देते हैं कि "जो कुछ तुमने मुझसे सीखा है, पाया है और देखा है, उसे अमल में लाओ।" इन दो बातों पर ध्यान देते हुए, मैं इस बात पर मनन करना चाहता हूँ कि पौलुस असल में फिलिप्पियों से किन बातों पर सोचने और क्या करने के लिए कह रहे थे, ताकि हम उन सीखों को पा सकें जो परमेश्वर हमें देना चाहते हैं।

पहली बात, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को किन बातों पर सोचने के लिए कहा?

फिलिप्पियों 4:8 को देखिए: "आखिर में, भाइयों और बहनों, जो कुछ भी सच है, जो कुछ भी नेक है, जो कुछ भी सही है, जो कुछ भी पवित्र है, जो कुछ भी प्यारा है, जो कुछ भी तारीफ के काबिल है—अगर कोई चीज़ बेहतरीन या तारीफ के लायक है—तो ऐसी ही बातों पर सोचो।" आजकल आपके मन में क्या बातें चलती रहती हैं? क्या आप ज़्यादातर अपने परिवार के बारे में सोचते रहते हैं? या आपका मन अपने काम की जगह या नौकरी के बारे में सोचता रहता है? हो सकता है कि हम अपनी सेहत और भविष्य के बारे में बहुत कुछ सोचते हों।

हमें अपने विचारों की जाँच करने की ज़रूरत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अभी जो सोच रहे हैं, उस पर मनन करके हम अपनी आत्मिक हालत को समझ सकते हैं। अगर हम अलग-अलग मामलों को लेकर चिंता और

घबराहट में डूबे रहते हैं, या भविष्य के बारे में बेचैनी भरे विचार मन में रखते हैं, तो हमारी आत्मिक हालत कमज़ोरी वाली होती है (भजन संहिता 77:7–10 देखें)। या फिर, अगर हम ऐसे विचार मन में रखते हैं जो परमेश्वर की नज़र में बुरे हैं—और उन्हें दूर करने के बजाय, लंबे समय तक उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं—तो हमारी आत्मिक हालत पाप वाली होती है। यहाँ, "बुरे विचारों" का मतलब उन विचारों से है जो दिल से निकलते हैं (मत्ती 15:19) और शरीर की इच्छाओं पर केंद्रित होते हैं (रोमियों 8:5)। "शरीर के कामों" के बारे में गलातियों 5:19–21 में कहा गया है: "शरीर के काम साफ़ दिखाई देते हैं: व्यभिचार, अशुद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, जादू-टोना, दुश्मनी, झगड़े, जलन, गुस्से के दौरे, होड़, मतभेद, गुटबाज़ी, ईर्ष्या, नशेबाज़ी, अय्याशी और ऐसी ही दूसरी बातें..." अगर हमारे मन में ऐसे विचार आते हैं, तो प्रभु हमसे पूछते हैं, "तुम कब तक बुरे विचार मन में रखोगे?" (यिर्मयाह 4:14)।

क्या आप जानते हैं कि फिलिप्पियों की जिस आयत पर हम आज बात कर रहे हैं, उसमें पौलुस क्या सोच रहा था? फिलिप्पियों 1:3–4 पर गौर करें: "जब भी मैं तुम्हें याद करता हूँ, तो अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ; तुम सबके लिए अपनी हर प्रार्थना में हमेशा खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ।" पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों के बारे में सोच रहा था। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह उनसे यीशु के दिल से प्यार करता था (आयत 8)। इसके अलावा, जब भी पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के प्यारे संतों के बारे में सोचता था, तो वह परमेश्वर का धन्यवाद करता था (आयत 3)। इसका कारण सुसमाचार की सेवा में उनकी साझेदारी थी (आयत 5)। उन्होंने न केवल एपफ्रुदितुस को उसकी मदद के लिए भेजकर (2:25–30) बल्कि भौतिक मदद देकर भी उसके काम में सहयोग किया (4:15–16)। पौलुस के परमेश्वर का धन्यवाद करने का एक और कारण यह भरोसा था कि परमेश्वर ने उनके बीच एक "अच्छा काम" (मुक्ति का काम) शुरू किया था और निश्चित रूप से उसे पूरा करेगा (1:6)। दोस्तों, क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि हम भी पौलुस की तरह उन लोगों के बारे में सोचें जिनसे हम प्यार करते हैं? इस पर गौर करें: हम किसी से जितना ज़्यादा प्यार करते हैं, उतनी ही बार उनकी याद आती है और उनके बारे में सोचते हैं, है ना? तो सवाल यह है कि क्या हम—पौलुस की तरह—जब अपने प्रियजनों के बारे में बार-बार सोचते हैं, तो परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता महसूस करते हैं? या, जब हम उन लोगों के बारे में सोचते हैं जिनसे हम प्यार करते हैं, तो क्या हमारे मन में कृतज्ञता के बजाय शिकायत और नाराज़गी के विचार ज़्यादा आते हैं?

आज की आयत, फिलिप्पियों 4:8 में, पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के प्यारे संतों को संबोधित करते हुए कहता है, "आखिर में, भाइयों," और उन्हें "इन बातों पर सोचने" के लिए प्रोत्साहित करता है। पौलुस यहाँ किन "बातों" की ओर इशारा कर रहा है? मैंने उन्हें तीन बिंदुओं में संक्षेप में बताया है:

(1) पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के संतों को उन बातों पर सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जो सच और सही हैं (फिलिप्पियों 4:8)।

पौलुस ने फिलिप्पी के संतों से सच और सही बातों पर सोचने के लिए क्यों कहा? इस संदर्भ में "सच और सही" से उनका असल में क्या मतलब था? डॉ. पार्क युन-सन के अनुसार, "सच्चाई" का अर्थ है अच्छे विवेक की ईमानदारी और उसके परिणाम, जबकि "सही होने" का अर्थ है परमेश्वर के नियम का पालन करना। इसे देखते हुए, ऐसा लगता है कि पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को अच्छे विवेक के साथ ईमानदारी से जीवन जीने और साथ ही परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए और उसके अनुसार जीने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। मेरा मानना है कि यही वह "सुसमाचार के योग्य जीवन" है जिसके बारे में पौलुस फिलिप्पियों 1:27 में बात करते हैं। संक्षेप में, पौलुस उन्हें ऐसा जीवन जीने के लिए कह रहे हैं जो सुसमाचार के अनुकूल हो। इसके अलावा, ऐसा जीवन जीने के लिए, वह उन्हें सच्चे सुसमाचार पर विचार करने और यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि इसे सही तरीके से कैसे फैलाया जाए। मेरी यह राय इसलिए है क्योंकि, जैसा कि फिलिप्पियों की शुरुआत से देखा जा सकता है, हालाँकि विश्वासी सुसमाचार के काम में भाग ले रहे थे (1:5), उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो गलत इरादों से इसका प्रचार कर रहे थे। पौलुस ने शायद यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वह चाहते थे कि जो लोग गलत इरादों (वचन 17) से प्रचार कर रहे थे, वे सही इरादे अपनाएँ—यानी "अच्छी इच्छा" (वचन 15) और "प्रेम" (वचन 16)—ठीक वैसे ही जैसे दूसरे विश्वासी करते थे। यदि यह व्याख्या सही है, तो हमें भी पौलुस की सलाह को गंभीरता से लेना चाहिए; हमें न केवल यीशु मसीह के सच्चे सुसमाचार पर विचार करना चाहिए बल्कि यह भी सोचना चाहिए कि इसे सही तरीके से कैसे फैलाया जाए। यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि, पौलुस के समय की तरह ही, आज भी बहुत से लोग सच्चे सुसमाचार के साथ-साथ झूठे सुसमाचार का भी प्रचार करते हैं। इसके अलावा, चूँकि बहुत से लोग सच्चे सुसमाचार का भी गलत तरीके से प्रचार करते हैं, इसलिए हमें इस बात पर गंभीरता से और बार-बार सोचना चाहिए कि हम सच्चे सुसमाचार का सही तरीके से प्रचार कैसे कर सकते हैं।

(2) पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को उन बातों पर सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जो नेक और पवित्र हैं (फिलिप्पियों 4:8)। इस संदर्भ में, जब मैं "नेक" और "शुद्ध" शब्दों पर विचार करता हूँ, तो बाइबल की दो आयतें मन में आती हैं:

(a) प्रेरितों के काम 17:11: "बेरिया के लोग थिस्सलुनीके के लोगों से ज़्यादा नेक थे, क्योंकि उन्होंने बड़े उत्साह से वचन को ग्रहण किया और रोज़ाना धर्मशास्त्र की जाँच-पड़ताल की कि क्या ये बातें सच हैं।"

यह अंश हमें बताता है कि बेरिया के लोग थिस्सलुनीके के लोगों की तुलना में ज़्यादा नेक-दिल थे। इसका मतलब है कि बेरिया के लोगों में एक नेक भावना थी (पार्क युन-सन)। यहाँ, "नेक भावना" का अर्थ है हर दिन धर्मग्रंथों की लगन से जाँच करने का रवैया (पार्क युन-सन)। इसलिए, यह कहने का मतलब है कि बेरिया के लोग नेक-दिल थे, वे ऐसे लोग थे जो रोज़ाना धर्मग्रंथों का लगन से अध्ययन करते थे। ऐसे नेक-दिल लोग, सबसे पहले, परमेश्वर के वचन को उत्सुकता से ग्रहण करते हैं (पद 11)। वचन को "उत्सुकता" से ग्रहण करने का अर्थ है इसे "पूरे जोश" (पार्क युन-सन) या "पूरी इच्छाशक्ति" (यू सांग-सेओप) के साथ ग्रहण करना। जब पौलुस ने यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया, तो बेरिया के लोगों ने सुसमाचार के संदेश को पूरी इच्छाशक्ति वाले दिल से अपनाया (यू सांग-सेओप)। दूसरे शब्दों में, बेरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन का स्वागत किया और उसे स्वीकार किया (देखें 8:14, 11:1) (यू सांग-सेओप)। जैसे नदी के किनारे लगे पेड़ की जड़ें बहते पानी को सोख लेती हैं, वैसे ही नेक-दिल लोगों में परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने की क्षमता होती है। जैसे एक स्पंज—जिसे कसकर निचोड़ा गया हो और फिर पानी के बर्तन में रखा गया हो—तरल पदार्थ को सोख लेता है, वैसे ही नेक-दिल लोग परमेश्वर के वचन के लिए तरसते हैं, उसे लगन से पढ़ते हैं, सीखते हैं और अपने दिलों में बसाते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हममें भी वचन को ग्रहण करने की यह क्षमता हो। एक स्पंज की तरह, मुझे उम्मीद है कि जब भी हम परमेश्वर का वचन पढ़ेंगे, उसका अध्ययन करेंगे या सुनेंगे, तो वह आसानी से हमारे कानों और दिलों में गहराई तक उतर जाएगा। इसके अलावा, नेक-दिल लोगों की एक विशेषता यह है कि वे केवल वचन को ग्रहण ही नहीं करते; वे व्यक्तिगत रूप से—हर दिन धर्मग्रंथों के माध्यम से—यह भी जाँचते हैं कि क्या संदेश परमेश्वर के लिखित वचन के अनुरूप है। पद 11 को देखें: "... उन्होंने बड़े उत्साह के साथ वचन को ग्रहण किया, और रोज़ाना धर्मग्रंथों की जाँच की कि क्या ये बातें सच थीं।" बेरिया के लोगों ने, जिन्होंने पौलुस के माध्यम से परमेश्वर का वचन सुना, बिना किसी सवाल के उसके संदेश को स्वीकार नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने

धर्मग्रंथों के आधार पर रोज़ाना उसके उपदेशों की जाँच की। मेरा मानना है कि यह वास्तव में कोई आसान काम नहीं है। दूसरे शब्दों में, वचन को ग्रहण करने की तत्परता और उसे सही ढंग से जाँचने की क्षमता के बीच संतुलन बनाना मुश्किल है। अगर हममें सिर्फ़ बातों को स्वीकार करने की ही इच्छा हो, तो इस बात का खतरा रहता है कि हम बिना सोचे-समझे पादरी के उपदेश में मौजूद गलतियों को भी मान लें। लेकिन, मेरा मानना है कि इस खुलेपन के साथ-साथ संदेश को धर्मग्रंथों (बाइबल) से परखने की क्षमता का होना सबसे अच्छा है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए—और आज के वचन, फिलिप्पियों 4:8 पर विचार करते हुए, जो हमें उन बातों के बारे में सोचने का निर्देश देता है जो ईश्वरीय हैं—हम इस शिक्षा को कैसे अपना सकते हैं? हमें धर्मग्रंथों की सावधानी से जाँच करनी चाहिए और साथ ही प्रभु के सेवकों द्वारा दिए गए परमेश्वर के वचन को उत्सुक हृदय से ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, हमें धर्मग्रंथों के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से यह जाँचने की आदत डालनी चाहिए कि क्या वह संदेश परमेश्वर के लिखित वचन के अनुरूप है।

(b) जब मैं "शुद्ध" शब्द पर विचार करता हूँ, तो मुझे याकूब 1:27 याद आता है: "परमेश्वर पिता की दृष्टि में शुद्ध और निष्कलंक धर्म यह है: अनाथों और विधवाओं की उनकी विपत्ति में देखभाल करना, और स्वयं को संसार के दाग-धब्बों से बचाकर रखना।"

यह वचन बताता है कि परमेश्वर पिता की दृष्टि में शुद्ध और निष्कलंक ईश्वरीय जीवन के दो पहलू हैं: पहला, अनाथों और विधवाओं की उनकी विपत्ति में देखभाल करना; और दूसरा, स्वयं को संसार के दाग-धब्बों से बचाकर रखना। हम इस शिक्षा को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं? जब भी हम ईश्वरीय जीवन से संबंधित विषयों पर विचार करते हैं, तो हमें उन अनाथों और विधवाओं की देखभाल करने का प्रयास करना चाहिए जो कठिन और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, हमें संसार के प्रभाव से खुद को दूषित होने से बचाना चाहिए। हमें न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि एक कलीसिया के रूप में भी इस कार्य के प्रति समर्पित होना चाहिए, क्योंकि आज कलीसिया बहुत हद तक सांसारिक हो गई है। हमें सांसारिक सोच का विरोध करना चाहिए और इसके बजाय बाइबल के चरित्र को अधिक से अधिक अपनाना चाहिए; इस बात पर हमें गहराई से और बार-बार विचार करना चाहिए। हमें इस दृढ़ विश्वास को भी थामे रखना चाहिए कि यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर बहाए गए बहुमूल्य लहू से हमारे सभी पाप पहले ही धुल चुके हैं। भजन 264, "देयर इज़ अ फाउंटेन फिल्ड विद ब्लड" (लहू से भरा एक स्रोत है) के पहले पद और कोरस के बोल याद आते हैं: (पद

1) "लहू से भरा एक स्रोत है... पवित्र आत्मा मुझे अपने पापों को धोने के लिए प्रेरित करता है।" (कोरस) "मैं स्तुति करूँगा, मैं उस मेमने की स्तुति करूँगा जिसकी बलि दी गई थी; उस प्रभु की महिमा करूँगा जिसने हमारे पापों को धो दिया।" यीशु में विश्वास करने वालों के तौर पर, जो क्रूस पर मरे और कब्र से जी उठे, हम पहले ही सभी पापों से शुद्ध हो चुके हैं। हमें विश्वास के साथ इस सच्चाई पर लगातार मनन करना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें वर्तमान में एक पवित्र जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। इसे पाने के लिए, हमें परमेश्वर के शुद्ध सत्य के वचन का पालन करके अपनी आत्माओं को शुद्ध करना चाहिए (1 पतरस 1:22)। हमें संतों जैसा पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया गया है। इस बीच, हमें यह पक्की उम्मीद रखनी चाहिए कि जिस दिन प्रभु इस दुनिया में लौटेंगे, हम तुरंत बदल जाएंगे और एक शानदार, पवित्र और आध्यात्मिक शरीर धारण कर लेंगे। 1 कुरिन्थियों 15:51–52 पर विचार करें: "देखो, मैं तुम्हें एक भेद बताता हूँ: हम सब सोएंगे नहीं, लेकिन हम सब बदल जाएंगे—एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही बजने पर। क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी होकर जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे।" फिलिप्पियों 3:20–21 पर विचार करें: "क्योंकि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, जहाँ से हम उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, जो हमारे साधारण शरीर को बदलकर अपने शानदार शरीर जैसा बना देंगे, उस शक्ति के अनुसार जिससे वे सब कुछ अपने अधीन करने में समर्थ हैं।"

(3) पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के संतों को उन बातों पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया जो प्यारी हैं, जिनकी अच्छी ख्याति है, जिनमें गुण है, और जो प्रशंसा के योग्य हैं (फिलिप्पियों 4:8)।

यहाँ, "जो कुछ भी प्यारा है" वाक्यांश का ग्रीक अर्थ है "सुहावना" या "मिलनसार" (मैकआर्थर)। इस शब्द का मतलब है कि विश्वासियों के तौर पर हमें दयालु या कृपापूर्ण होना चाहिए (मैकआर्थर)। इसके अलावा, "जिसकी अच्छी ख्याति है" और "जो प्रशंसा के योग्य है" वाक्यांश एक जैसे विचार बताते हैं; पौलुस फिलिप्पी के संतों से ऐसे काम करने का आग्रह कर रहे थे जो प्रशंसा के योग्य हों और इस तरह वे ऐसे विश्वासी बनें जिनकी दूसरों द्वारा सराहना की जाए। इस सलाह को अपनी कलीसिया पर लागू करते हुए, मैं समझता हूँ कि हमारी कलीसिया को प्रशंसा के योग्य कलीसिया बनना चाहिए। इसे पाने के लिए, हमें दया के साथ नैतिक रूप से अच्छे काम करने चाहिए (पार्क युन-सन, मैकआर्थर)। जब हमारा चर्च उदारता और असरदार ढंग से ऐसे काम करता है जिनकी हमारे पड़ोसी तारीफ़ करें, तो हम सच में तारीफ़ के काबिल चर्च बन सकते हैं। इस हिस्से पर सोचते

हुए, मुझे प्रेरितों के काम 2:47 की याद आई: "वे परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उन्हें पसंद करते थे। और प्रभु रोज़ाना उनकी संख्या में उन्हें जोड़ता जाता था जो उद्धार पा रहे थे" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यह हिस्सा शुरुआती चर्च के बारे में है; दूसरे शब्दों में, बाइबल हमें बताती है कि शुरुआती चर्च की सब लोग तारीफ़ करते थे। ऐसा चर्च बनने के लिए हमारे चर्च को क्या करना चाहिए? हमें ऐसे मसीही बनना होगा जिनकी दूसरे लोग इज़्ज़त करें। इसका एक बेहतरीन उदाहरण तीमुथियुस है, जो पौलुस का आध्यात्मिक बेटा था, जिसका ज़िक्र प्रेरितों के काम 16:2 में है: "लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों के बीच तीमुथियुस की अच्छी चर्चा थी।" तीमुथियुस—जो यीशु का चेला था—लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों (साथी विश्वासियों) की तारीफ़ और पहचान इसलिए पा सका क्योंकि उसका विश्वास सच्चा था और उसमें कोई दिखावा नहीं था (1 तीमुथियुस 1:5)। इसके अलावा, मेरा मानना है कि उसके आस-पास के भाइयों ने उसकी तारीफ़ इसलिए की क्योंकि उसने अपने जीवन से सच्चे चेलेपन का उदाहरण पेश किया। अगर हम सब अपने जीवन से सच्चे चेलेपन का उदाहरण पेश कर सकें—तीमुथियुस की तरह सच्चा और बिना दिखावे वाला विश्वास रखकर—तो हमारा चर्च भी ऐसा चर्च बन सकता है जिसकी दूसरे लोग इज़्ज़त करें। एक ऐसा चर्च जिसकी तारीफ़ होती हो, जिसमें ऐसे चेले हों जो यीशु जैसे बन रहे हों, वह—अंताकिया के चर्च की तरह—सच में "मसीहियों का चर्च" है (प्रेरितों के काम 11:26)। जब बरनबास और शाऊल (पौलुस) ने अंताकिया चर्च में एक साल बिताया और बड़ी भीड़ को व्यवस्थित रूप से सिखाया और उन्हें चेलों के तौर पर अच्छी तरह तैयार किया (वचन 26; यू सांग-सेओप), तो चेलों में इतनी ज़बरदस्त गुणात्मक परिपक्वता आई कि उन्हें पहली बार गैर-विश्वासियों से "मसीही" (Christians) का उपनाम मिला। इस शब्द का मतलब है "मसीह के अनुयायी।" अंताकिया चर्च के विश्वासियों ने ज़रूर इतनी बेहतरीन चेलेपन की ट्रेनिंग ली होगी और यीशु मसीह का इतनी वफ़ादारी से पालन किया होगा कि उनके आस-पास के लोगों—गैर-विश्वासियों—ने उन्हें पहचाना और उन्हें "मसीह के अनुयायी" कहा।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च, एंटिओक के चर्च की तरह ही "मसीह का चर्च" बन जाए। मेरी इच्छा है कि हम सब यीशु का अपने दिलों में स्वागत करें और उनके ऐसे चेले बनें जो उन्हीं की तरह दिखें और उन पर गर्व करें। रिचर्ड फोस्टर ने एक बार कहा था, "शायद आज चर्च की सबसे बड़ी समस्या ऐसे लोगों का होना है जो चर्च के सदस्य तो हैं, लेकिन मसीह के चेले नहीं हैं। इसका असर चर्च के जीवन के हर पहलू पर पड़ता है और यही कारण है कि स्थानीय मंडलियों में आध्यात्मिक स्तर कम होता है।" हमें कभी भी कम

आध्यात्मिक स्तर से समझौता नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:1 में कहा है, हमें "मसीह का अनुकरण करने वाला" बनना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारा चर्च प्रशंसा के योग्य बन जाएगा।

दूसरी बात, पौलुस ने फिलिप्पी के चर्च के संतों को क्या करने के लिए प्रोत्साहित किया? उन्होंने उनसे आग्रह किया कि जो कुछ उन्होंने उनसे सीखा, प्राप्त किया और देखा है, उसे वे अपने जीवन में अपनाएँ।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:9 को देखें: "जो कुछ तुमने मुझसे सीखा, प्राप्त किया, सुना या मुझमें देखा है—उसे अमल में लाओ। और शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।" तो फिर, फिलिप्पी के लोगों ने प्रेरित पौलुस से क्या सीखा, प्राप्त किया, सुना और देखा था? डॉ. पार्क युन-सन के अनुसार, पौलुस ने पहले फिलिप्पी के लोगों को—पिछली आयत (फिलिप्पियों 4:8) में—विभिन्न गुणों पर विचार करने और उन्हें महत्व देने के लिए प्रोत्साहित किया; फिर, आयत 9 में, उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे उन सभी गुणों को अमल में लाएँ जैसा कि उन्होंने उन्हें पौलुस में सीखा, प्राप्त किया, सुना और देखा था। फिर भी, जब मैंने इस सवाल पर विचार किया, तो मुझे प्रेरितों के काम 16:12 से शुरू होने वाले वचन की याद आई। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे आयतें पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान फिलिप्पी में बिताए गए समय की कहानी बताती हैं। उस वृत्तांत पर ध्यान केंद्रित करते हुए—और फिलिप्पियों 4 के उस वचन के साथ जिसे हम अभी देख रहे हैं—मैंने नौ खास बातों पर विचार किया है जो फिलिप्पी के विश्वासियों ने संभवतः पौलुस से सीखीं, प्राप्त कीं, सुनीं और देखीं।

(1) फिलिप्पी के विश्वासियों ने पौलुस से जो बातें सीखीं, प्राप्त कीं, सुनीं और देखीं, उनमें से एक बात परमेश्वर से प्रार्थना करने की उनकी आदत थी। प्रेरितों के काम 16:13 के अनुसार, जब प्रेरित पौलुस और उनके साथी सीलास और तीमुथियुस फिलिप्पी पहुँचे, तो वे सब्त के दिन शहर के दरवाज़ों के बाहर नदी के किनारे प्रार्थना करने की जगह ढूँढ़ने गए। वहाँ, उन्हें वहाँ जमा महिलाओं में लूदिया मिली; प्रभु ने उसका मन खोल दिया ताकि वह पौलुस का संदेश सुने और यीशु को अपनाए (आयत 14), और आखिरकार, उसका पूरा परिवार भी यीशु पर विश्वास करने लगा (आयत 15)। लूदिया के अलावा, प्रेरितों के काम 16 में उस जेलर का भी ज़िक्र है जिसने जेल में पौलुस और सीलास की रखवाली की थी; उसने भी पौलुस को प्रार्थना करते देखा होगा या कम से कम उनकी प्रार्थनाओं की आवाज़ साफ़ सुनी होगी (आयत 25)। उसने भी यीशु को अपनाया, और उसके पूरे परिवार

ने विश्वास किया और उद्धार पाया (आयत 33)। हालाँकि ये घटनाएँ फिलिप्पी की कलीसिया के औपचारिक रूप से स्थापित होने से पहले हुई थीं, लेकिन हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि कलीसिया के बनने के बाद, विश्वासियों ने पौलुस के प्रार्थना जीवन को देखा होगा—क्योंकि वे हमेशा की तरह प्रार्थना करते रहे। पक्की बात यह है कि जब फिलिप्पी के विश्वासियों को पौलुस का पत्र मिला (जब वे जेल में थे), तो उन्हें अच्छी तरह पता था कि वे उनके लिए दिल से प्रार्थना कर रहे थे (1:4, 9)। पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के संतों को यह सलाह भी दी: "किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हर बात में प्रार्थना और विनती के साथ धन्यवाद करते हुए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखो" (4:6)। इस सलाह को देखते हुए, हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि फिलिप्पी के संतों ने पौलुस से जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह असल में परमेश्वर से प्रार्थना करने का तरीका ही था।

(2) फिलिप्पी के संतों ने पौलुस से जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार था।

जैसा कि हमने प्रेरितों के काम अध्याय 16 में देखा है, लूदिया, जेलर और उनके पूरे परिवारों ने—जो फिलिप्पी में रहते थे—पौलुस के ज़रिए यीशु मसीह का सुसमाचार सुना, यीशु पर विश्वास किया और उद्धार पाया। इस तरह शुरू हुई फिलिप्पी की कलीसिया के बारे में, फिलिप्पियों 1:5 से पता चलता है कि संत सुसमाचार के काम में (सुसमाचार फैलाने में सहयोग करते हुए) "उस समय से जब उन्होंने पहली बार मसीह पर विश्वास किया, आज तक" हिस्सा लेते रहे हैं। फिलिप्पी के संतों ने सुसमाचार का बचाव किया और उसकी गवाही दी, तब भी जब पौलुस जेल में था (पद 7)। इसलिए, पौलुस ने उन्हें सुसमाचार की गवाही देते रहने के लिए प्रोत्साहित किया—न केवल निडरता और अधिक साहस के साथ (पद 14), बल्कि अच्छी नीयत (पद 15) और शुद्ध इरादों (पद 17) के साथ भी।

(3) फिलिप्पी के संतों ने पौलुस में जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह था आनंद मनाने का नज़रिया।

मैंने इस आनंद के पाँच पहलू पहचाने हैं:

(a) पहला पहलू फिलिप्पियों 1:18 में मिलता है: "तो क्या हुआ? बस यही कि हर तरह से, चाहे दिखावे के लिए हो या सच्चाई से, मसीह का प्रचार हो रहा है, और इसमें मैं आनंद मनाता हूँ। हाँ, और मैं आनंद मनाता रहूँगा।"

जेल में होने के बावजूद, पौलुस ने बहुत आनंद मनाया, यह समझते हुए कि उसकी स्थिति ने वास्तव में सुसमाचार के प्रसार को आगे बढ़ाने में मदद की थी। ऐसे आनंद से भरे हुए, उसने फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह किया: "अंत में, मेरे भाइयों, प्रभु में आनंद मनाओ" (3:1, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। इस प्रकार, पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को सुसमाचार की प्रगति पर अपने आनंद में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

(b) दूसरा उदाहरण फिलिप्पियों 2:17–18 में मिलता है: "भले ही मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा पर पेय-बलिदान की तरह उँडेल दिया जाऊँ, मैं आनंद मनाऊँगा और तुम सबके साथ अपना आनंद साझा करूँगा। इसलिए तुम्हें भी आनंद मनाना चाहिए और मेरे साथ अपना आनंद साझा करना चाहिए" (*कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को अपने साथ आनंद मनाने के लिए प्रोत्साहित किया, ठीक वैसे ही जैसे वह खुद आनंद मनाता, भले ही वह उनके त्यागी विश्वास और सेवाकार्य के साथ काम करते हुए शहीद हो जाता।

(c) तीसरा उदाहरण फिलिप्पियों 2:29 है: "इसलिए, प्रभु में उसका बड़े आनंद के साथ स्वागत करो और ऐसे लोगों का सम्मान करो।"

पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह किया कि वे एपफ्रुदीतुस का प्रभु में बड़े आनंद के साथ स्वागत करें और ऐसे लोगों का बहुत आदर करें। इसका कारण यह था कि उसने मसीह के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली—यहाँ तक कि मौत के कगार तक पहुँच गया (पद 30)। हमें भी ऐसे व्यक्ति का बड़े आनंद के साथ स्वागत करना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए (पद 29, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

(d) चौथा उदाहरण फिलिप्पियों 4:1 है: "इसलिए, मेरे भाइयों, जिनसे मैं प्यार करता हूँ और जिनसे मिलने की इच्छा रखता हूँ—जो मेरी खुशी और ताज हैं—प्रभु में इसी तरह मज़बूती से खड़े रहो।" पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों से कहा कि वे "मेरी खुशी" हैं। पौलुस के इस रवैये को देखकर, सुनकर और उससे सीखकर, विश्वासियों को भी प्रोत्साहित किया गया कि वे प्रभु में अपने भाई-बहनों को अपनी खुशी का स्रोत मानें।

(e) पाँचवीं बात फिलिप्पियों 4:10 से आती है: "मैं प्रभु में बहुत खुश हूँ कि तुमने मेरे लिए अपनी चिंता फिर से दिखाई है। तुम मेरी भौतिक रूप से मदद करना चाहते थे, लेकिन तुम्हें मौका नहीं मिला" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

पौलुस प्रभु में बहुत खुश था क्योंकि उसने फिलिप्पी विश्वासियों की अपने प्रति चिंता और सुसमाचार प्रचार के काम में भौतिक मदद करने की उनकी इच्छा को पहचाना। इसलिए, पौलुस ने उनसे आग्रह किया—अपनी खुशी के बारे में सुनकर—कि वे भी उस खुशी में शामिल हों।

(4) फिलिप्पी विश्वासियों ने पौलुस में जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह सुसमाचार का विरोध करने वालों के हाथों उसका दुख सहना था।

फिलिप्पियों 1:28–30 पर विचार करें: "जो तुम्हारा विरोध करते हैं, उनसे किसी भी तरह डरो मत। यह उनके लिए विनाश का संकेत है, लेकिन तुम्हारे लिए उद्धार का—और यह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी सौभाग्य मिला है, क्योंकि तुम उसी संघर्ष से गुज़र रहे हो जो तुमने मुझे करते देखा था, और अब सुनते हो कि मैं अभी भी कर रहा हूँ।" यह अंश बताता है कि फिलिप्पी विश्वासियों ने पौलुस के बारे में जो देखा और सुना, वह विरोधियों के कारण उसका दुख सहना था। पौलुस की तरह, वे भी यीशु मसीह और सुसमाचार के लिए दुख सह रहे थे। पौलुस ने उनसे आग्रह किया कि वे इस रास्ते पर चलते रहें और यीशु और सुसमाचार के लिए सहे गए दुख को परमेश्वर की कृपा का काम मानें।

(5) फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों ने पौलुस में जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह उसका विनम्र स्वभाव था।

फिलिप्पियों 2:5 को देखें: "एक-दूसरे के साथ अपने रिश्तों में, वही सोच रखो जो मसीह यीशु की थी।" पौलुस एक विनम्र व्यक्ति था। उसने विनम्र हृदय से प्रभु की कलीसिया की सेवा की। एफ़िसस की कलीसिया इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। हम इसे 'प्रेरितों के काम' (Acts) 20:19 और उस विदाई भाषण से समझ सकते हैं

जो पौलुस ने एफ़िसस की कलीसिया के बुज़ुर्गों (एल्डर्स) को दिया था, जिन्हें उसने मिलेटुस बुलाया था। उसने उनसे कहा: "मैंने पूरी विनम्रता और आँसुओं के साथ प्रभु की सेवा की, जबकि मेरे यहूदी विरोधियों की साज़िशों के कारण मुझे कड़ी परीक्षाओं का सामना करना पड़ा।" पौलुस का एफ़िसस के बुज़ुर्गों से यह कहना कि उसने उस कलीसिया के सदस्यों की विनम्रता से सेवा की थी, यह दिखाता है कि उसने सचमुच विनम्र हृदय से प्रभु की कलीसिया की सेवा की थी। पौलुस चाहता था कि फिलिप्पी के विश्वासी भी उसी विनम्रता के साथ अपनी कलीसिया की सेवा करें जो उसमें थी; इसलिए, उसने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे उस बात को अमल में लाएँ जो उन्होंने उससे सीखी, प्राप्त की, सुनी और देखी थी।

(6) फिलिप्पी कलीसिया के संतों ने पौलुस में जो कुछ सीखा, पाया, सुना और देखा, वह मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊँचे बुलावे के इनाम को पाने के लिए लक्ष्य की ओर दौड़ने वाले पौलुस की एक तस्वीर थी।

फिलिप्पियों 3:13–14 को देखिए: “भाइयो, मैं यह नहीं मानता कि मैंने इसे अभी पा लिया है; लेकिन मैं एक काम करता हूँ: जो पीछे है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर पूरी ताकत से बढ़ते हुए, मैं मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊँचे बुलावे के इनाम के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ।” जब पौलुस ने फिलिप्पी के संतों को लिखा, तो उसने कहा, “मैं एक बात साफ कर रहा हूँ” (पद 13)। वह एक बात थी “जो पीछे है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर पूरी ताकत से बढ़ते हुए, मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊँचे बुलावे के इनाम के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ना” (पद 13–14)। पौलुस का पूरा ध्यान उस लक्ष्य या मकसद की ओर दौड़ने पर था। ठीक वैसे ही जैसे दौड़ में कोई धावक अपनी पूरी ताकत से दौड़ता है और उसकी नज़रें फिनिश लाइन पर टिकी होती हैं, पौलुस भी अपने लक्ष्य की ओर दौड़ रहा था। तो फिर, वह लक्ष्य क्या था जिसकी ओर पौलुस दौड़ रहा था? वह था “वह जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा” (पद 12) और “मसीह यीशु में परमेश्वर का ऊँचा बुलावा” (पद 14)। वह लक्ष्य पौलुस का मिशन था—मसीह यीशु में परमेश्वर का ऊँचा बुलावा। बाहरी तौर पर, वह मिशन यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही देना था (प्रेरितों के काम 20:24); अंदरूनी तौर पर, यह यीशु मसीह जैसा बनकर सुसमाचार के योग्य जीवन जीना था (फिलिप्पियों 1:27)। पौलुस इस मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित था। इसलिए, जब पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा, तो उसने खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में बताया जिसे मसीह यीशु में परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वर्गीय मिशन ने पकड़ लिया था—एक ऐसा व्यक्ति जो उस मिशन को पूरा करने के लिए “आगे

बढ़ रहा" था (पद 12, 14)। उसने फिलिप्पी के विश्वासियों से आग्रह किया कि वे उसके उदाहरण को देखें, सुनें और उससे सीखें ताकि वे भी प्रभु द्वारा दिए गए मिशन से प्रेरित होकर जीवन जी सकें और उसे पूरा करने के लिए आगे बढ़ सकें। (7) फिलिप्पी के विश्वासियों ने पौलुस से जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह यीशु के दोबारा आने का इंतज़ार करते हुए स्वर्ग के नागरिकों की तरह जीने का उदाहरण था।

फिलिप्पियों 3:20 पर गौर करें: "लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, और हम वहाँ से एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार करते हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। और हम अपने उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से दोबारा आने का इंतज़ार कर रहे हैं"]। फिलिप्पियों 3:17 में, पौलुस ने विश्वासियों को अपनी, और साथ ही तीमुथियुस और एपफ्रुदीतुस की नकल करने और कलीसिया के उन परिपक्व सदस्यों पर नज़र रखने के लिए प्रोत्साहित किया जो उसी उदाहरण का पालन करते थे; फिर उन्होंने मसीह के क्रूस के दुश्मनों के बारे में बात की (पद 18)। इसके बाद, पौलुस ने घोषणा की कि उनकी, तीमुथियुस, एपफ्रुदीतुस और फिलिप्पी के सभी विश्वासियों की नागरिकता स्वर्ग में है (पद 20)। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि "मसीह के क्रूस के दुश्मनों"—जो अपना ध्यान सांसारिक चीज़ों पर लगाते थे (पद 18-19)—और खुद, अपने साथियों और फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच अंतर दिखाया जा सके; इन सभी ने यीशु मसीह और क्रूस पर विश्वास के ज़रिए उद्धार पाया था। मेरा मानना है कि पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों के लिए यह अंतर इसलिए दिखाया ताकि वे उनमें से उन लोगों को—जिनका विश्वास परिपक्व नहीं था और जो प्रलोभन में पड़ने के जोखिम में थे—यह समझा सकें कि वे "बहुत से लोगों" (पद 18) की नकल न करें जो मसीह के क्रूस के दुश्मनों की तरह जीते थे। इसके बजाय, वह चाहते थे कि वे उन लोगों के साथ जुड़ें जिन्होंने पहले ही अनंत जीवन पा लिया था और, स्वर्ग के नागरिकों के रूप में, सांसारिक चीज़ों के बजाय ऊपर की चीज़ों पर अपना ध्यान केंद्रित करें, और साथ ही उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार करें, जो स्वर्ग से आएंगे। फिलिप्पियों को यह बताने के बाद कि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है और हम उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का इंतज़ार करते हैं, जो वहाँ से आएंगे, पौलुस ने इस इंतज़ार का कारण समझाया: "वह अपनी उस शक्ति के ज़रिए हमारे साधारण शरीरों को अपने महिमामयी शरीर जैसा बना देंगे, जो उन्हें सभी चीज़ों को अपने नियंत्रण में लाने में सक्षम बनाती है" (पद 21)। दूसरे शब्दों में, हम प्रभु यीशु मसीह के दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु—जिनके पास सब कुछ अपने अधीन करने की शक्ति है—उस महान शक्ति का इस्तेमाल करके हमारे

साधारण शरीरों को अपने महिमामय शरीर जैसा बना देंगे। इसलिए, पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के संतों को सलाह दी कि वे यीशु की वापसी का इंतज़ार करते हुए स्वर्ग के नागरिकों की तरह जीवन जिएं।

(8) फिलिप्पी की कलीसिया के संतों ने पौलुस से जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह प्रभु में दृढ़ता से खड़े रहने वाला जीवन था।

फिलिप्पियों 4:1 को देखिए: "मेरे भाइयों, जिनसे मैं प्यार करता हूँ और जिनसे मिलने की इच्छा रखता हूँ, तुम मेरी खुशी और मेरा ताज हो। इसलिए, प्रभु में दृढ़ता से खड़े रहो।" मेरा मानना है कि पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों से इतनी ज़ोरदार अपील क्यों की, इसके दो मुख्य कारण थे:

(a) पहला कारण कलीसिया के बाहर का था: पौलुस ने उन्हें "कुत्तों," "बुरे काम करने वालों," और "शरीर को काटने-छाँटने वालों"—यानी उन यहूदी-प्रेमी लोगों (Judaizers) से सावधान रहने की चेतावनी दी जो शरीर पर भरोसा करते थे (फिलिप्पियों 3:2)। उन्होंने "मसीह के क्रूस के दुश्मनों" के खिलाफ भी चेतावनी दी, जो "अपना मन सांसारिक चीज़ों में लगाते थे," "अपनी शारीरिक इच्छाओं को ही अपना ईश्वर मानते थे," और "उस चीज़ पर गर्व करते थे जिस पर उन्हें शर्म आनी चाहिए थी" (पद 18–19)।

(b) दूसरा कारण अंदरूनी था: कलीसिया समुदाय के भीतर के मुद्दों के कारण एक मन और एक सोच के साथ दृढ़ता से खड़े होने में नाकाम हो रही थी—खासकर वे लोग जो "ईर्ष्या और होड़" से प्रेरित थे (1:15), जो "गलत इरादों और स्वार्थी महत्वाकांक्षा से मसीह का प्रचार करते थे" (17), और जो घमंड के कारण ऐसा कर रहे थे (2:2–3)।

इसीलिए पौलुस ने दो महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे—का नाम लेकर उनसे अपील की कि वे "प्रभु में एक मन की हों" (4:2)। इसी कारण से, अपना पत्र लिखते समय, पौलुस ने 4:1 में फिलिप्पी के विश्वासियों से "प्रभु में दृढ़ता से खड़े रहने" का आग्रह किया।

तो, प्रभु में दृढ़ता से खड़े रहने के लिए फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को क्या करने की ज़रूरत थी, जैसा कि पौलुस ने आग्रह किया था? (a) प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, विश्वासियों को प्रभु में एक मन का होना ज़रूरी था (4:2)।

बाइबल में मरकुस 3:25 कहता है: "यदि किसी घर में फूट पड़ जाए, तो वह घर टिक नहीं सकता।" यही बात कलीसिया पर भी लागू होती है। अगर कलीसिया के भाई-बहन प्रभु में एक मन नहीं रखते और आपस में झगड़ते हैं, और हर कोई अपनी मर्ज़ी चलाता है, तो वह कलीसिया मज़बूती से खड़ी नहीं रह सकती। पास्टर जॉन मैकआर्थर ने कहा, "आध्यात्मिक स्थिरता इस बात पर निर्भर करती है कि विश्वासी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, उनमें तालमेल है और वे शांति से रहते हैं या नहीं।" फिलिप्पी की कलीसिया में, दो महिलाएँ—यूओदिया और सुन्तुखे—प्रभु में एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर नहीं रह पा रही थीं। उनके मतभेद का कारण यह था कि उनकी सोच अलग-अलग थी। इसलिए, फिलिप्पी के पवित्र लोगों को पत्र लिखते समय, पौलुस ने खास तौर पर इन दोनों महिलाओं का नाम लिया और उनसे आग्रह किया कि वे "प्रभु में एक मन की हों" (4:2)। ऐसा करने के लिए, उन्हें एक नम्र हृदय की आवश्यकता थी (2:5)।

(b) प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, फिलिप्पी के पवित्र लोगों को एक-दूसरे की मदद करने की ज़रूरत थी (4:3)।

पौलुस ने फिलिप्पी के पवित्र लोगों को निर्देश दिया—खास तौर पर एक "सच्चे साथी" को संबोधित करते हुए जिसने उनके साथ मिलकर काम किया था—कि वे यूओदिया और सुन्तुखे की मदद करें (4:3)। उन्होंने उस व्यक्ति से आग्रह किया कि वह उन दोनों महिलाओं की सहायता करे ताकि वे प्रभु में एक मन हो सकें और प्रभु के कामों में मिलकर काम कर सकें। कलीसिया—जो मसीह की देह है—के प्रभु में मज़बूती से खड़े रहने के लिए, हमें उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिनके बीच मतभेद हैं, ताकि वे एक मन हो सकें और प्रभु के लिए सहयोग करते हुए मिलकर काम कर सकें।

(9) फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों ने पौलुस से जो सीखा, पाया, सुना और देखा, वह था सबके प्रति सहनशीलता (दूसरों के साथ उदारता से पेश आना) का रवैया।

फिलिप्पियों 4:5 को देखें: "तुम्हारी कोमलता (या सहनशीलता) सब पर प्रकट हो। प्रभु निकट है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "सबके साथ उदारता से पेश आओ। प्रभु के आने का दिन निकट है"]। यहाँ, "कोमलता" (या सहनशीलता) के लिए मूल ग्रीक शब्द का अर्थ है 'कानून या रीति-रिवाज से मिले हर अधिकार पर अड़े न रहना' या 'झुकना और दूसरों का खयाल रखना।' कलीसिया के भाई-बहनों के लिए प्रभु में दृढ़ बने रहने के लिए ज़रूरी है कि वे एक-दूसरे के साथ उदारता और सहनशीलता से पेश आएँ। खासकर कलीसिया के अगुवों को झगड़ा नहीं करना चाहिए, बल्कि सहनशीलता दिखानी चाहिए और एक-दूसरे के साथ नरमी से पेश आना चाहिए। हालाँकि, फिलिप्पी कलीसिया में दो महिलाओं—यूओदिया और सुन्तुखे—ने ऐसा नहीं किया। नतीजतन, पौलुस ने इन दोनों महिलाओं का नाम लेकर ज़िक्र किया और उनसे पुरज़ोर आग्रह किया कि वे प्रभु में एक मन हों। इसे हासिल करने के लिए "मसीह की कोमलता" (2 कुरिन्थियों 10:1) की ज़रूरत है। मसीह की यह कोमलता वह बुद्धि है जो केवल ऊपर से आती है (याकूब 3:17)। पौलुस ने फिलिप्पी विश्वासियों से कहा कि "अपनी कोमलता सब पर प्रकट करो" क्योंकि प्रभु के आने का दिन निकट है (फिलिप्पियों 4:5)। कलीसिया परिवार में हम सबके प्रभु में दृढ़ बने रहने के लिए, हमें एक-दूसरे के प्रति सहनशीलता दिखानी चाहिए। हमें एक-दूसरे के साथ उदारता से पेश आना चाहिए। ऐसा करते समय, हमें प्रभु के वचन के अनुसार एक-दूसरे के साथ उदारता से पेश आना चाहिए और दूसरी बार आने (Second Coming) के नज़रिए को ध्यान में रखना चाहिए—कि प्रभु की वापसी का दिन निकट है। इसके अलावा, हमें न केवल कलीसिया के अपने साथी सदस्यों के साथ, बल्कि हर किसी के साथ ऐसी उदारता से पेश आना चाहिए।

हमें इस पर सोचना चाहिए। हमें किन बातों पर सोचना चाहिए? पहला, हमें उन बातों पर सोचना चाहिए जो सच और सही हैं। दूसरा, हमें उन बातों पर सोचना चाहिए जो ईश्वरीय और पवित्र हैं। तीसरा, हमें उन बातों पर सोचना चाहिए जो प्यारी और सराहनीय हैं—जो गुणकारी या प्रशंसा के योग्य हैं। इसके अलावा, हमने जो सीखा, पाया, सुना और देखा है, उसे हमें अमल में लाना चाहिए। हमें क्या करना चाहिए? पहला, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी

चाहिए। दूसरा, हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। तीसरा, हमें आनंद मनाना चाहिए। चौथा, हमें कष्ट सहना चाहिए। पांचवां, हमें विनम्र होना चाहिए। छठा, हमें अपने बुलावे के प्रति वफादार रहना चाहिए। सातवां, हमें यीशु के दोबारा आने की प्रतीक्षा में जीना चाहिए। आठवां, हमें प्रभु में दृढ़ रहना चाहिए। नौवां, हमें सबके प्रति नम्रता दिखानी चाहिए।

“मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ...”

[फिलिप्पियों 4:10–23]

इस साल हमारे चर्च का ध्येय-वाक्य है “एक ऐसा चर्च जो देता है।” खास तौर पर, हमारा लक्ष्य एक ऐसा चर्च बनना है जो “प्रेम,” “सांत्वना,” और “आनन्द” देता है। इन तीनों में से, मैं आज “आनन्द” पर विचार करना चाहता हूँ। जैसा कि हम फिलिप्पियों की पत्री पर मनन कर रहे हैं, हमने पहले फिलिप्पियों 4:4 के शब्दों पर विचार किया था: “प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो!” हम प्रभु में कैसे आनन्दित हो सकते हैं? हमने नहेमायाह अध्याय 8 के आधार पर तीन बातों पर पहले ही चर्चा की है: (1) हमें शोक या विलाप नहीं करना चाहिए (पद 9)। इस्राएल के लोग रोए क्योंकि व्यवस्था ने उन्हें उनके पाप का एहसास कराया था। उस समय, नहेमायाह, एज्रा और लेवीवंशी, जो लोगों को सिखा रहे थे, ने उनसे शोक न करने या न रोने का आग्रह किया, क्योंकि यह परमेश्वर को समर्पित एक पवित्र दिन था। (2) हमें चिंता नहीं करनी चाहिए (पद 10–11)। इस्राएलियों के चिंतित होने का कारण यह था कि वे लंबे समय से प्रभु की सही ढंग से सेवा करने में विफल रहे थे; वे पूरी तरह से यह नहीं समझ पाए थे कि परमेश्वर को क्या प्रसन्न करता है और क्या अप्रसन्न। (3) हमें परमेश्वर के वचन को समझना चाहिए (पद 12)। नहेमायाह, एज्रा और लेवीवंशियों—जिन्होंने उन्हें मूसा की व्यवस्था को समझने में मदद की थी—की बातों को सुनकर इस्राएलियों ने अपना शोक, विलाप और चिंता छोड़ दी और बहुत आनन्दित हुए। इसका कारण यह था कि उन्हें वे शब्द स्पष्ट रूप से समझ आ गए थे जो उन्हें पढ़कर सुनाए गए थे (पद 12)। मूसा की व्यवस्था हमें हमारे पाप का एहसास कराती है, और यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा—जिनकी ओर व्यवस्था इशारा करती है—हम धर्मी ठहराए जाते हैं। इस्राएल के लोगों ने, इस सच्चाई को स्पष्ट रूप से समझकर, अपना दुख, आँसू और चिंता छोड़ दी और बहुत आनन्दित हुए। जो विश्वासी परमेश्वर के वचन को स्पष्ट रूप से समझते हैं, वे विश्वास के साथ यीशु मसीह की ओर देखते हैं, जिनकी ओर वह वचन इशारा

करता है। नतीजतन, जब वे क्रूस पर यीशु के बहुमूल्य लहू की शक्ति पर भरोसा करते हुए पश्चाताप के आँसू बहाते हैं, तो वे शांति का आशीष पाते हैं—जहाँ प्रभु उनके दिलों से सारा दुख और चिंता दूर कर देते हैं। आज के वचन, फिलिप्पियों 4:10 में, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी कलीसिया के पवित्र लोगों से कहते हैं: "मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ कि तुमने एक बार फिर मेरे प्रति चिंता दिखाई है; तुम मेरी मदद करना चाहते थे, लेकिन तुम्हें मौका नहीं मिला" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ कि तुमने मुझमें अपनी रुचि फिर से जगाई है। तुम मेरी भौतिक रूप से मदद करना चाहते थे, लेकिन तुम्हें ऐसा करने का मौका नहीं मिला"]। इस वचन और शीर्षक "मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ..." पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं फिलिप्पियों 4:10 से लेकर अंतिम वचन 23 तक के अंश पर मनन करना चाहता हूँ। मैं उन तीन तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे हम सचमुच प्रभु में बहुत आनंदित हो सकते हैं और उन शिक्षाओं को प्राप्त कर सकते हैं जो परमेश्वर हम सभी को देते हैं।

पहला, प्रभु में बहुत आनंदित होने के लिए, हमें एक-दूसरे में रुचि लेनी चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

फिलिप्पियों 4:10 को देखें: "मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ कि तुमने मुझमें अपनी रुचि फिर से जगाई है। तुम मेरी भौतिक रूप से मदद करना चाहते थे, लेकिन तुम्हें ऐसा करने का मौका नहीं मिला" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इन दिनों आपकी गहरी रुचि किस चीज़ में है? हालाँकि हमारी व्यक्तिगत रुचियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन संभवतः हमारी कुछ चिंताएँ समान भी होती हैं। ऐसी ही एक समान रुचि निस्संदेह हमारा परिवार है। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि हम सभी अपने परिवारों से प्यार करते हैं। माता-पिता स्वाभाविक रूप से अपने प्यारे बच्चों की बहुत परवाह करते हैं, और बच्चे भी अपने माता-पिता की परवाह करते हुए, उन दोस्तों पर भी बहुत ध्यान देते हैं जिन्हें वे प्यार करते हैं। दादा-दादी न केवल अपने बच्चों की, बल्कि अपने प्यारे पोते-पोतियों की भी परवाह करते हैं और उनके लिए लगातार प्रार्थना करते हैं। फिर भी, इन प्रियजनों के बीच, हम अनिवार्य रूप से उन लोगों पर विशेष ध्यान देते हैं और उनके लिए विशेष प्रार्थना करते हैं जो शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से कमजोर हैं, न कि उन पर जो स्वस्थ और मजबूत हैं। इस तरह, परिवार देखभाल और प्रेम से जुड़े होते हैं। यही बात कलीसिया पर भी लागू होती है। कलीसिया, जो एक आध्यात्मिक परिवार के रूप में कार्य करती है, वह भी देखभाल और प्रेम के माध्यम से एकजुट होती है। इसलिए, कलीसिया

के सदस्यों के लिए यह उचित है कि वे प्रभु के प्रेम से बंधकर एक-दूसरे की परवाह करें। ऐसी प्रेमपूर्ण चिंता से एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना स्वाभाविक है। खासकर, जब हमारे चर्च परिवार के भाई-बहन बीमारी या दुर्घटना का शिकार होते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमारा मन करता है कि हम उनकी देखभाल करें और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें। इसके अलावा, हमें उन लोगों का भी खास ख्याल रखना चाहिए जिनका विश्वास कमज़ोर है; हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उनके विश्वास को बढ़ाने में मदद करनी चाहिए। हमें उन मिशनरियों का भी गहरा ख्याल रखना चाहिए जो यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ मिशन के काम में लगे हुए हैं, और उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सहारा देते रहना चाहिए। प्रभु में मिशनरियों को इसी बात से बहुत खुशी मिलती है।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:10 में, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखते हैं, "मैं प्रभु में बहुत खुश हुआ।" इसका क्या कारण था? पौलुस प्रभु में इतने खुश क्यों हुए? इसलिए क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि फिलिप्पी चर्च के भाई-बहनों ने—जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे—एक बार फिर अपना ध्यान और देखभाल उनकी ओर की थी। पौलुस जानते थे कि फिलिप्पी चर्च के विश्वासी उन्हें भौतिक मदद देना चाहते थे (वचन 10, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। यह उनके लिए कितनी बड़ी हिम्मत और दिलासा की बात रही होगी। मुश्किल समय में फिलिप्पी के विश्वासियों से मदद मिलना उनके लिए खास तौर पर हिम्मत और दिलासा देने वाला था। आज का वचन, फिलिप्पियों 4:14 (*कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*), कहता है: "फिर भी, जब मैं मुसीबत में था, तब मेरी मदद करके तुमने सचमुच बहुत अच्छा काम किया।" क्या आप कभी उस व्यक्ति को भूल सकते हैं जिसने आपके सबसे मुश्किल समय में दया का छोटा सा काम करके आपकी मदद की हो? मुझे आज भी वह पल अच्छी तरह याद है जब मेरा पहला बच्चा इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में था; मैं और मेरे जीवनसाथी बहुत परेशान थे, लेकिन एक दिन मेरे सेमिनरी के एक सीनियर पादरी हमसे मिलने आए और बच्चे के पालने के पास एक छोटी सी गुड़िया रख गए। हालाँकि वह एक छोटी सी मुलाक़ात थी, लेकिन दया का वह छोटा सा काम—बिना ज़्यादा कुछ कहे एक छोटी सी गुड़िया तैयार करना और उसे हमारे बच्चे के पास रख देना—आज भी मेरे दिल में एक प्यारी याद बनकर बसा हुआ है। अगर बच्चा स्वस्थ होता और उसे पहले जन्मदिन के जश्न में वह गुड़िया तोहफ़े के तौर पर मिलती, तो शायद मुझे वह इतनी अच्छी तरह याद नहीं रहती। गुड़िया या तोहफ़ा चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, बच्चा जब स्वस्थ होता है तब मिले प्यार भरे तोहफ़े शायद ही किसी को याद रहते हैं। फिर भी, वह छोटी सी गुड़िया, जो हमें तब मिली थी जब बच्चा और हम माता-पिता, दोनों ही बहुत मुश्किल दौर

से गुज़र रहे थे, हमारे दिलों में प्यार की एक गहरी निशानी के तौर पर बसी हुई है। इस नज़रिए से देखें तो मुझे लगता है कि पॉल उस मदद को कभी नहीं भूल पाए जो उन्हें फिलिप्पी के लोगों से तब मिली थी जब वे मुश्किल में थे; इसीलिए उन्होंने उन्हें लिखे अपने पत्र के आखिर में इसका ज़िक्र फिर से किया। इसके अलावा, आज के हिस्से की आयत 15 और 16 में, पॉल ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को यह लिखा: "फिलिप्पी के लोगों, जैसा कि आप खुद जानते हैं, सुसमाचार के शुरुआती दिनों में, जब मैं मकिदुनिया से निकला, तो आपके अलावा किसी और कलीसिया ने लेन-देन के मामले में मेरे साथ साझेदारी नहीं की। यहाँ तक कि जब मैं थिस्सलुनीके में था, तब भी आपने मेरी ज़रूरतों के लिए एक बार नहीं, बल्कि दो बार मदद भेजी।" यह पत्र दिखाता है कि प्रेरित पॉल और फिलिप्पी के विश्वासियों के बीच का रिश्ता कोई थोड़े समय का नहीं, बल्कि एक लंबे समय का बंधन था। जैसा कि आयत 15 बताती है, यह बात कि जब पॉल पहली बार मकिदुनिया से निकले थे, तो फिलिप्पी की कलीसिया ही एकमात्र ऐसी कलीसिया थी जिसने आपसी सहयोग में पॉल का साथ दिया था, उनके रिश्ते की कीमती और खूबसूरत प्रकृति को दर्शाती है। साथ ही, यह तथ्य कि उन्होंने थिस्सलुनीके में रहने के दौरान उन्हें दो बार ज़रूरी चीज़ें भेजीं, यह दिखाता है कि फिलिप्पी की कलीसिया ने लगातार उनके सुसमाचार के काम में सहयोग किया (आयत 16)। इस प्रकार, पॉल ने विश्वासियों से कहा: "मुझे आप लोगों से सब कुछ मिल गया है और मेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा है; एपफ्रुदीतुस के हाथों जो कुछ आपने भेजा था, उसे पाकर मेरी सारी ज़रूरतें पूरी हो गई हैं।" उन्होंने कहा, "जो तोहफ़े आपने भेजे, वे एक सुगंधित भेंट हैं जिसे परमेश्वर खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं" (आयत 18, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। इसलिए, जब भी पॉल फिलिप्पी की कलीसिया के पवित्र लोगों के बारे में सोचते और प्रार्थना करते, तो वे खुशी और परमेश्वर के प्रति धन्यवाद के साथ ऐसा करते थे। इसका कारण यह था कि "पहले दिन" से लेकर उस पल तक जब वे जेल से यह पत्र लिख रहे थे, वे सुसमाचार के काम में हिस्सा ले रहे थे (1:3–5)।

मेरा मानना है कि सच्चे प्यार और सच्ची दिलचस्पी पर बने रिश्ते बहुत ज़रूरी हैं। मैं सच में चाहता हूँ कि हमारा चर्च उन मिशनरियों के साथ ऐसे ही लगातार रिश्ते बनाए रखे जिनकी हम मदद करते हैं—चाहे चीज़ों से हो या आध्यात्मिक रूप से। बेशक, हर मिशनरी के साथ ऐसा करना हमारे लिए शायद मुमकिन न हो। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिनकी हम पूरे दिल और मकसद के साथ सिर्फ़ एक या दो बार मदद करें—शायद बहुत मुश्किल समय में या जब उन्हें मदद की बहुत ज़रूरत हो। लेकिन, मैं चाहता हूँ कि हमारा चर्च उन मिशनरियों को

लगातार, वफ़ादारी से और हमेशा मदद दे जिन्हें प्रभु ने हमारी मंडली से चुना और भेजा है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि इस मदद में सच्ची दिलचस्पी हो। भले ही हमारी कुछ सीमाएँ हों, मुझे उम्मीद है कि हम उनके काम में सच्ची दिलचस्पी ले सकते हैं, यह जान सकते हैं कि वे सुसमाचार का प्रचार कैसे कर रहे हैं, और—बढ़ती चिंता और दिल से निकली सच्चाई के साथ—उनके और उनके मिशन के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। इसके लिए, हम जनवरी के दूसरे रविवार के अलावा जून में भी एक "मिशन शेयरिंग" सेशन करने की योजना बना रहे हैं। उनके काम के बारे में थोड़ा और जानकर, हमें उम्मीद है कि हम ज़्यादा दिलचस्पी और प्यार के साथ प्रार्थना कर पाएँगे। इसके अलावा, जब मिशनरी हमारे चर्च के KakaoTalk ग्रुप में फ़ोटो या छोटी-छोटी जानकारी शेयर करते हैं, तो इन पोस्ट से हमें उनके काम में और गहरी दिलचस्पी लेने का मौका मिलता है। हमें ग्वाटेमाला में सियो जिन-गुक जोड़े जैसे मिशनरियों से नियमित ईमेल अपडेट और प्रार्थना के अनुरोध भी मिलते हैं; मैं इन्हें बुलेटिन बोर्ड पर लगाता हूँ, और अगर आप समय निकालकर उन्हें पढ़ें और प्रार्थना करें—भले ही मन ही मन—तो मैं आपका आभारी रहूँगा। साथ ही, जो लोग अंग्रेज़ी बोलते हैं, उनसे मेरा अनुरोध है कि वे बुलेटिन बोर्ड पर जॉन और जेन वैगनोर के मासिक मिशनरी अपडेट लेटर में दिलचस्पी लें—यह जोड़ा एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी में कैंपस में सुसमाचार का प्रचार कर रहा है, एक ऐसा काम जिसे हम लंबे समय से सपोर्ट कर रहे हैं। हमारे प्यार भरी दिलचस्पी और लगातार मदद से, ये मिशनरी प्रभु में बहुत आनंद ले पाएँगे, और उनकी खुशी हमारी खुशी बन जाएगी।

प्रभु में बहुत आनंद लेने के लिए, हमें एक-दूसरे में दिलचस्पी लेनी चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। हमें उन मिशनरियों और उनके परिवारों की परवाह करनी चाहिए और लगातार उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए—साथ ही चीज़ों से और आध्यात्मिक रूप से उनकी मदद करनी चाहिए—जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है और जो यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। हमें परमेश्वर के उन सेवकों में भी दिलचस्पी लेनी चाहिए और हर तरह से उनका साथ देना चाहिए जो प्रभु के राज्य को बढ़ाने के लिए ईमानदारी से काम करते हैं। ऐसा करने से परमेश्वर खुश होते हैं और हम प्रभु में बहुत आनंद ले पाते हैं।

दूसरी बात, प्रभु में बहुत आनंद लेने के लिए, हमें संतोष का रहस्य सीखना होगा।

कृपया आज का वचन देखें, फिलिप्पियों 4:11–12: “मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मुझे किसी चीज़ की कमी है, क्योंकि मैंने हर हाल में संतोष करना सीख लिया है। मैं जानता हूँ कि कमी में रहने का क्या मतलब है, और यह भी कि भरपूर होने का क्या मतलब है। मैंने हर स्थिति में संतोष करने का रहस्य सीख लिया है, चाहे पेट भरा हो या भूखा, चाहे भरपूर हो या तंगी में।" एक बात जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्व देता हूँ, वह है सीखने वाले का नज़रिया। मेरा मानना है कि हममें से जो लोग परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए बुलाए गए हैं, उनके लिए सिखाने की इच्छा से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है सीखने की इच्छा। इसे बाइबल की भाषा में कहें तो: हममें से जो लोग वचन सिखाते हैं, उन्हें मंडली को सिखाने पर ध्यान देने से पहले खुद को भी ध्यान से सिखाना चाहिए। रोमियों 2:21 देखें: “तो तुम, जो दूसरों को सिखाते हो, क्या खुद को नहीं सिखाते? तुम जो चोरी न करने का उपदेश देते हो, क्या तुम खुद चोरी करते हो?” अगर हम परमेश्वर के वचन से खुद को ध्यान से नहीं सिखाते, तो हम फरीसियों जैसे बन सकते हैं—जो मंडली को चोरी न करने के लिए कहते हैं, जबकि खुद चोरी करते हैं। इसलिए, परमेश्वर के वचन को असरदार ढंग से सिखाने के लिए, हमें पहले खुद उसे सीखने में मेहनत करनी होगी।

परमेश्वर के वचन का एक पहलू जिसे हमें ध्यान से सीखना चाहिए, वह है "संतोष का रहस्य"—एक ऐसी बात जो प्रेरित पौलुस ने आज के वचन, फिलिप्पियों 4:11–12 में फिलिप्पी के विश्वासियों को बताई थी ("मैंने हर हाल में संतोष करना सीख लिया है... मैंने हर स्थिति में संतोष करने का रहस्य सीख लिया है, चाहे पेट भरा हो या भूखा, चाहे भरपूर हो या तंगी में")। अपनी बेस्टसेलिंग किताब *पाथफाइंडर्स* (Pathfinders) में, अमेरिकी लेखिका गेल शीही ने सच्चे संतोष के साथ जीने वाले लोगों का वर्णन इस प्रकार किया है: (1) वे लोग जो अपने जीवन का अर्थ और अपनी दिशा जानते हैं; (2) वे लोग जो निराश या पछतावे में नहीं रहते कि उनका जीवन अर्थहीन रहा है; (3) वे लोग जिनका अपना एक साफ़ और लंबा प्लान है और वे धीरे-धीरे उसे पूरा कर रहे हैं; (4) वे लोग जिनका कोई ऐसा साथी है जिससे वे सच में प्यार करते हैं; (5) वे लोग जिनका कोई अच्छा दोस्त है जिसके साथ वे अपने दिल की बातें शेयर कर सकते हैं; (6) वे लोग जो खुशमिजाज़ हैं और मुश्किलों का सामना करते समय भी उन्हें एक पॉज़िटिव और सही नज़रिए से देखते और संभालते हैं; और (7) वे लोग जो दूसरों की आलोचना या बेइज़्ज़ती को बिना ज़्यादा परेशान हुए खुले दिल से सुन सकते हैं। (8) वह व्यक्ति जिसमें डर और चिंता से उबरने की मानसिक ताकत हो। क्या आप सच में संतुष्ट जीवन जी रहे हैं? शायद आज के लोग लंबे समय से संतुष्टि की कमी से जूझ रहे हैं। जब हमें वह चीज़ मिल जाती है जिसकी हमें चाहत होती है, तो वह संतुष्टि कुछ ही पल की

लगती है; हमें तुरंत ही किसी और चीज़ की चाहत होने लगती है। अक्सर ऐसा लगता है कि इंसानी चाहत की कोई सीमा नहीं है। कहा जाता है कि दार्शनिक सुकरात ने कहा था, "दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति वह है जो कम से कम चीज़ों में भी संतुष्ट रहना जानता है" (इंटरनेट)। आप क्या सोचते हैं? क्या हम सच में बहुत कम चीज़ों में संतुष्ट हैं? क्या आप भी संतुष्टि का राज़ नहीं जानना चाहते, जैसा कि आज के पैसेज में प्रेरित पौलुस ने जाना था? क्या आप यह नहीं कह पाना चाहते, "मैंने संतुष्ट रहना सीख लिया है," चाहे हालात कैसे भी हों—चाहे बहुत कुछ हो या ज़रूरत का समय हो? इसे पाने के लिए हमें क्या करना होगा? हमें सिर्फ़ प्रभु में संतुष्टि पाना सीखना होगा। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम भरपूर समय में बिना लालच के संतुष्टि से जी सकते हैं, और प्रभु की कृपा से मिली चीज़ों का इस्तेमाल प्रभु की महिमा के लिए कर सकते हैं; वहीं, ज़रूरत के समय में हम शिकायत करने के बजाय प्रभु का धन्यवाद कर सकते हैं—जो हमें हमारी रोज़ की रोटी देते हैं। इस तरह, हम यह कह पाएँगे, "मैं वह सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे ताकत देने वाले के ज़रिए संभव है" (वचन 13)। यहाँ ज़रूरी बात "मैं सब कुछ कर सकता हूँ" वाला वाक्यांश नहीं है। ज़रूरी बात है "वह जो मुझे ताकत देता है" (वचन 13)। जब प्रभु हमें ताकत देते हैं, तभी हम संतुष्टि का जीवन जी सकते हैं और सिर्फ़ उनमें संतुष्ट रह सकते हैं, चाहे हमारे सामने भरपूर समय हो या कमी का समय।

तो, वह प्रभु कौन है जो हमें ताकत देता है और हमें हर हाल में संतुष्टि से जीने के काबिल बनाता है? भजन 23 के रचयिता दाऊद के इस कथन पर ध्यान देते हुए—"यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे किसी बात की घटी न होगी" (पद 1)—मैं प्रभु के उन छह पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो हमें सामर्थ्य देते हैं और हमें केवल उसी में संतुष्ट जीवन जीने के योग्य बनाते हैं:

(1) जो प्रभु हमें सामर्थ्य देता है, वही हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है।

भजन 23:2 को देखिए: "वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे शांत जल के पास ले जाता है।" एक सच्चा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए ज़रूरी भोजन और पानी का इंतज़ाम करता है। चरवाहा अपनी भेड़ों को "हरी-हरी चराइयों" में इसलिए ले जाता है क्योंकि ऐसी जगहों पर कोमल घास होती है जिसे भेड़ें बहुत पसंद करती हैं। इस तरह, अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को खिलाता-पिलाता है। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को "शांत जल" के पास भी ले जाता है। कैल्विन के अनुसार, "शांत जल" का अर्थ है धीरे-धीरे बहने वाला पानी—जिसे भेड़ें

आसानी से पी सकती हैं और जो उनके स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा होता है। हमारा प्रभु हमें—अपनी भेड़ों को—न केवल शारीरिक भोजन देता है, बल्कि आत्मिक भोजन भी देता है: परमेश्वर का वचन। इसके अलावा, वह हमें भरपूर मात्रा में भोजन देता है। वह "यहोवा यिरे" (प्रभु ही सब कुछ देगा) है—वही प्रभु जो हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है (उत्पत्ति 22:14)।

(2) जो प्रभु हमें शक्ति देता है, वही हमारी आत्माओं को फिर से जीवित करता है।

भजन संहिता 23:3 के पहले हिस्से को देखें: "वह मेरी आत्मा को फिर से जीवित करता है..." यहाँ, "आत्मा को फिर से जीवित करने" का अर्थ है पाप करने वाली आत्मा को पश्चाताप की ओर ले जाना ताकि उसे सच्चा जीवन मिल सके (पार्क युन-सन)। जब हम पाप करने के बाद पश्चाताप नहीं करते, तो हमारी आत्माएँ बोझ से दब जाती हैं। दाऊद ने इसे महसूस किया था: "जब मैं चुप रहा, तो दिन भर कराहने के कारण मेरी हड्डियाँ गल गईं। क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; मेरी शक्ति गर्मी के मौसम की तरह सूख गई थी" (भजन संहिता 32:3-4)। जिस आत्मा में पाप का समाधान नहीं हुआ होता, वह हमेशा किसी चीज़ की कमी महसूस करती है। आत्मा न केवल दबी हुई होती है, बल्कि पाप से बंधी होती है और उसमें आज़ादी की कमी होती है। बिना पश्चाताप वाले दिल को संतुष्टि नहीं मिल सकती। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "चूंकि आत्मा केवल पाप के कारण मरती है, इसलिए उसे केवल उस पाप के लिए पश्चाताप करके ही फिर से जीवित किया जा सकता है।" यह सही है। अपने पापों के लिए पश्चाताप करके, हमारी दबी हुई आत्माओं को फिर से जीवन मिल सकता है। हालाँकि, यह केवल परमेश्वर की कृपा से ही संभव है। केवल तभी जब हमारा प्रभु अपने पवित्र वचन के माध्यम से हमारे पापों को उजागर करता है, हम पाप को पाप के रूप में पहचान सकते हैं; और पवित्र आत्मा की मदद से उस पाप को स्वीकार करके ही हम वास्तव में पश्चाताप कर सकते हैं। संक्षेप में, केवल प्रभु, जो हमारा चरवाहा है, हम अपनी भेड़ों की आत्माओं को फिर से जीवित कर सकता है।

(3) जो प्रभु हमें शक्ति देता है, वही हमारा मार्गदर्शन करता है।

भजन संहिता 23:3 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...वह अपने नाम के लिए मुझे धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है।" "वह मुझे धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है" वाक्यांश का अर्थ है कि प्रभु, हमारे चरवाहे के रूप में, हमें एक

सीधे—यानी, एक समतल और आसान—मार्ग पर ले जाते हैं (पार्क युन-सन)। हालाँकि, ऐसा लगता है कि इस पापी दुनिया में जहाँ हम रहते हैं, लोग धार्मिकता का मार्ग चुनने के बजाय बुराई का मार्ग चुनते हैं और उस पर चलते हैं। इसलिए, प्रभु के मार्गदर्शन के बिना धार्मिकता के मार्ग पर चलना असंभव है। 2 पतरस 2:8 में बताए गए धर्मी लूत की तरह, हम भी उन लोगों के बीच रहते हैं जो बुराई के मार्ग पर चलते हैं; उनके गैर-कानूनी कामों को रोज़-रोज़ देखने और सुनने से, हमारी नेक आत्माओं को ज़रूर तकलीफ़ होती है। इसलिए, जब प्रभु—हमारे चरवाहे—अपने वचन के ज़रिए हमारी परेशान, नेक आत्माओं को फिर से ताज़गी देते हैं, तभी हम उठकर नेकी के रास्ते पर चल सकते हैं। एक खास बात यह है कि जब प्रभु, हमारे चरवाहे, हमें नेकी के रास्ते पर ले जाते हैं, तो वे ऐसा "इंसानों की किसी अच्छी हालत की वजह से नहीं, बल्कि परमेश्वर के अपने 'नाम' की खातिर" करते हैं (पार्क युन-सन)। हमारे परमेश्वर न सिर्फ़ अपने नाम की खातिर पाप मिटाते हैं, बल्कि वे ऐसे प्रभु भी हैं जो हमारी आत्माओं को बहाल करते हैं और अपने नाम की खातिर हमें नेकी के रास्ते पर ले जाते हैं।

(4) जो प्रभु हमें ताकत देते हैं, वही हमारी रक्षा भी करते हैं।

भजन संहिता 23:4 देखिए: "भले ही मैं मौत की छाया की घाटी से गुज़रूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि आप मेरे साथ हैं; आपकी लाठी और आपकी छड़ी मुझे दिलासा देती हैं।" यहाँ, "मौत की छाया की घाटी" का मतलब है बहुत ज़्यादा ख़तरा (पार्क युन-सन)। क्योंकि दाऊद ने प्रभु को अपना चरवाहा बनाया था, इसलिए उन्हें किसी भी तरह के ख़तरे से डर नहीं लगता था। इसकी वजह यह थी कि उन्हें यकीन था कि परमेश्वर उनके साथ हैं। यूसुफ़ के बारे में सोचिए: परमेश्वर उनके साथ थे, और उन्हें खुशहाली का आशीर्वाद मिला; चाहे वे पोतीफ़र के घर में गुलाम के तौर पर सेवा कर रहे हों या उन्हें बिना किसी कसूर के जेल में डाल दिया गया हो, वे हमेशा परमेश्वर की सुरक्षा में रहे। प्रभु, चरवाहे के तौर पर, दाऊद के साथ थे और अपनी लाठी और छड़ी से उनकी रक्षा करते थे। जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को जंगली जानवरों से बचाने और उन्हें हरे-भरे चरागाहों और शांत पानी तक ले जाने के लिए लाठी और छड़ी का इस्तेमाल करता है, वैसे ही प्रभु—हमारे चरवाहे—हमें, यानी अपने लोगों को, शैतान और उसके साथियों (जो जंगली जानवरों जैसे हैं) से बचाते हैं और हमारी अगुवाई करते हैं।

(5) जो प्रभु हमें ताकत देते हैं, वही हमें ऊँचा भी उठाते हैं।

भजन संहिता 23:5 देखिए: "आप मेरे दुश्मनों के सामने मेरे लिए मेज़ सजाते हैं; आप मेरे सिर पर तेल लगाते हैं; मेरा प्याला लबालब भरा है।" हमारे प्रभु ही हैं जो हमारे दुश्मनों के सामने हमारे लिए मेज़ सजाते हैं। एक चरवाहे के तौर पर, प्रभु ने दाऊद को दुश्मनों के सामने—जो उसे खत्म करना चाहते थे—एक शानदार जीत दी, जैसे किसी दावत में मेज़बानी की जाती है (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, "तुम मेरे सिर पर तेल लगाते हो; मेरा प्याला लबालब भरा है" ये शब्द दावत में खास मेहमान के सिर पर तेल लगाने की रस्म को दिखाते हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ने दाऊद के साथ—जो अपने दुश्मनों के ज़ुल्म का सामना कर रहा था—एक खास मेहमान जैसा बर्ताव किया जिसे दावत में बुलाया गया हो। सचमुच, दाऊद को जो सम्मान और हिस्सा मिला, वह बहुत ज़्यादा और भरपूर था (पार्क युन-सन)।

(6) जो प्रभु हमें ताकत देता है, वही हमें प्यार और उम्मीद से भरता है।

भजन संहिता 23:6 को देखिए: "निश्चित रूप से भलाई और करुणा मेरे जीवन के सभी दिनों में मेरे साथ रहेगी, और मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा।" इस हिस्से में, दाऊद अतीत में मिली कृपा के अनुभव के आधार पर भविष्य की ओर देखता है। दाऊद ने पहले परमेश्वर के प्यार और मदद का अनुभव किया था (पद 1–5)। उसे यकीन था कि उसका भविष्य हमेशा सुरक्षित और शांतिपूर्ण रहेगा क्योंकि उसे भरोसा था कि प्रभु की भलाई और करुणा हमेशा उसके साथ रहेगी। इसलिए, दाऊद को प्रभु के घर—परमेश्वर के राज्य—में हमेशा रहने की पक्की उम्मीद थी। ऐसी उम्मीद से भरा जीवन वह है जिसमें किसी चीज़ की कमी नहीं होती।

प्रभु में बहुत ज़्यादा खुशी मनाने के लिए, हमें संतोष का राज़ सीखना होगा। चाहे भरपूर समय हो या ज़रूरत का समय, हमें सिर्फ़ उस प्रभु में संतुष्टि ढूँढ़नी चाहिए जो हमें ताकत देता है। मेरी प्रार्थना है कि हम हर दिन सिर्फ़ प्रभु में संतुष्ट रहकर जिएँ—वही जो हमें राह दिखाता है, हमारी रक्षा करता है और हमारी ज़रूरतें पूरी करता है; जो हमारी आत्मा को नया करता है और हमें ऊपर उठाता है; और जो हमें प्यार और उम्मीद से भरता है।

तीसरी बात, प्रभु में बहुत ज़्यादा खुशी मनाने के लिए, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जिससे परमेश्वर की महिमा हो।

आज के वचन, फिलिप्पियों 4:20 को देखिए: "हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा हमेशा-हमेशा होती रहे। आमीन।" हमारे जीवन का एक साफ़ मकसद होना चाहिए। जब हमारा मकसद साफ़ होता है, तो हम उसी लक्ष्य से प्रेरित होकर अपना जीवन जी सकते हैं। तो, हमारे जीवन का मकसद क्या है? यह परमेश्वर की महिमा है। 1 कुरिन्थियों 10:31 को देखिए: "इसलिए चाहे तुम खाओ या पियो या कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म यह सवाल पूछता है: "इंसान का मुख्य मकसद क्या है?" इसका जवाब है: "इंसान का मुख्य मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना है।" हम परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकते हैं? हम उसे महिमा कैसे दे सकते हैं? मैंने संक्षेप में तीन तरीकों पर विचार किया है:

(1) हमें धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए।

बाइबल में भजन संहिता 50:23 को देखिए: "जो कोई धन्यवाद का बलिदान चढ़ाता है, वह मेरी महिमा करता है; और जो अपने चाल-चलन को सही रखता है, उसे मैं परमेश्वर का उद्धार दिखाऊंगा।" जब हम उस उद्धार की कृपा पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के द्वारा दी है, तो हमें धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए। यही बात परमेश्वर को प्रसन्न करती है, उसकी महिमा करती है, और ऐसा जीवन बनाती है जो उसे महिमा देता है।

(2) परमेश्वर को महिमा देने के लिए, हमें पवित्र यीशु जैसा बनना होगा।

1 कुरिन्थियों 11:1 को देखिए: "मेरे उदाहरण का पालन करो, जैसे मैं मसीह के उदाहरण का पालन करता हूँ।" पौलुस ने यीशु का अनुकरण किया, और उसने कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों से भी उसका अनुकरण करने का आग्रह किया। जैसा कि यह सलाह बताती है, हमें यीशु मसीह का अनुकरण करना चाहिए। जब हम यीशु का अनुकरण करते हैं और उनके जैसे बनते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा कर रहे होते हैं। मत्ती 5:48 में, यीशु कहते हैं, "इसलिए सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" जब हम पिता परमेश्वर का अनुकरण करते हैं और सिद्ध बनते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा कर रहे होते हैं और उसे महिमा दे रहे होते हैं।

(3) परमेश्वर को महिमा देने के लिए, हमें विश्वास के द्वारा परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए।

इब्रानियों 11:6 को देखिए: "और विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई उसके पास आता है, उसे यह विश्वास करना चाहिए कि वह है और वह उन्हें प्रतिफल देता है जो सच्चाई से उसे खोजते हैं।" उदाहरण के लिए, विश्वास के पिता अब्राहम ने अपने विश्वास को डगमगाने नहीं दिया, तब भी नहीं जब वह सौ साल का था और उसे एहसास हुआ कि उसका अपना शरीर लगभग मृत हो चुका था और सारा का गर्भ बांझ था (रोमियों 4:19)। इसके अलावा, परमेश्वर के इस वादे पर शक किए बिना कि "तुम्हारे वंशज ऐसे ही होंगे" (वचन 18), उन्होंने तब भी विश्वास और उम्मीद रखी जब उम्मीद करने की कोई वजह नहीं थी (क्योंकि जो बात हो रही थी, वह पूरी तरह नामुमकिन लग रही थी)। उन्हें पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने जो वादा किया है, उसे पूरा करने की शक्ति उनमें है (वचन 21); इसलिए अब्राहम का विश्वास मज़बूत हुआ और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की (वचन 20)। आइए, हम भी ऐसे विश्वासी बनें जो अब्राहम की तरह परमेश्वर की महिमा करें। जब कोई स्थिति हमारी आँखों को पूरी तरह नामुमकिन लगे, तब भी हम विश्वास की नज़रों से सर्वशक्तिमान प्रभु की ओर देखें; हम परमेश्वर के वादों पर शक न करें, बल्कि पक्का विश्वास रखें कि वे उन्हें ज़रूर पूरा करेंगे। मेरी प्रार्थना है कि हम विश्वास में मज़बूत बने रहें और परमेश्वर के वचन को मानकर उनकी महिमा करें।

मैं अपनी इन बातों को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। प्रभु में भरपूर आनंद पाने के लिए, हमें एक-दूसरे का ध्यान रखना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। इसके अलावा, हमें संतोष का रहस्य सीखना चाहिए—यानी हालात चाहे कैसे भी हों, चाहे कमी का समय हो या भरपूर संपन्नता का, हमें सिर्फ़ प्रभु में ही संतुष्टि ढूँढ़नी चाहिए। सबसे बढ़कर, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जिससे परमेश्वर की महिमा हो। जब हम ऐसा करते हैं, तभी हम सचमुच प्रभु में आनंद मना सकते हैं।

निष्कर्ष

हमारी खुशी यीशु मसीह हैं। जब यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया जाता है, तो हमें बहुत खुशी मनानी चाहिए। इसलिए, हमारी सामूहिक कोशिश यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने की दिशा में होनी चाहिए। हमें मसीह के सुसमाचार का प्रचार निडर होकर और बिना डरे करना चाहिए। इसके अलावा, हमें सुसमाचार के काम में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। खास तौर पर, हमें उन लोगों का भौतिक और आध्यात्मिक मदद से समर्थन करना चाहिए जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं। साथ ही, यह बहुत ज़रूरी है कि हम यीशु मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जिएं।

हमें एक मन होकर खड़े रहना चाहिए और सुसमाचार के विश्वास के लिए मिलकर कोशिश करनी चाहिए। हमें एक ही सोच, एक ही प्यार और एक ही मकसद रखना चाहिए। हमें स्वार्थ या घमंड में आकर कुछ भी नहीं करना चाहिए। हमें कभी भी शरीर पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, हमें यीशु के नम्र दिल का अनुकरण करना चाहिए, दूसरों को खुद से बेहतर समझना चाहिए और उनके भले का ध्यान रखना चाहिए, जिससे प्रभु को खुशी मिले। हमें एक-दूसरे की परवाह करनी चाहिए और मदद करनी चाहिए। हमें संतोष का रहस्य भी सीखना चाहिए और केवल यीशु में ही संतुष्टि पानी चाहिए। हम सभी को ऐसा जीवन जीने के लिए बुलाया गया है जिससे परमेश्वर की महिमा हो। इसके लिए, जो कुछ भी सच और सही है, जो कुछ भी ईश्वरीय और पवित्र है, जो कुछ भी प्यारा और सराहनीय है—अगर कुछ भी उत्कृष्ट या प्रशंसा के योग्य है—तो हमें इन बातों के बारे में सोचना चाहिए और उन्हें अपनाना चाहिए।

हम सभी को यीशु मसीह को जानने की कोशिश करनी चाहिए। हमें इस सच्चाई को समझना चाहिए कि यीशु मसीह का ज्ञान सबसे ज़्यादा कीमती है। हमें यीशु का अनुकरण भी करना चाहिए। ऐसा करने से हमारा विश्वास बढ़ना चाहिए। विश्वास में इस प्रगति के बीच, हमें आध्यात्मिक परिपक्वता की ओर बढ़ना चाहिए। इसके अलावा, यीशु मसीह के उदाहरण का पालन करते हुए, हमें प्रभु में दृढ़ रहना चाहिए। चाहे कोई भी उत्पीड़न या मुसीबत

आए, हमें चिंता नहीं करनी चाहिए; इसके बजाय, हर बात में हमें धन्यवाद के साथ प्रार्थना और विनती के ज़रिए अपनी बातें परमेश्वर के सामने रखनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर की अद्‌भुत शांति का अनुभव करेंगे—जो हमारी कल्पना से परे है—और जो हमारे दिलों और दिमागों की रक्षा करेगी। इसके अलावा, हमें यीशु मसीह के लिए सहे गए दुखों को परमेश्वर की कृपा मानना चाहिए, और हमें ऐसी सभी मुश्किलों का सामना करते हुए डटे रहना चाहिए और उन पर जीत हासिल करनी चाहिए। भले ही मसीह के काम के लिए जान देने की नौबत आए, हमें अपनी जान से चिपके नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे पूरी तरह से यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए समर्पित कर देना चाहिए। हमारी सच्ची उम्मीद और आशा यही होनी चाहिए कि हमारे शरीरों में मसीह की महिमा हो, चाहे हम जीवित रहें या मर जाएँ। क्योंकि हमारे लिए जीना मसीह है और मरना लाभ है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम प्रभु की कलीसिया बनें—मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जिएँ और उस सुसमाचार का प्रचार केवल यीशु के लिए करें।